सूर्योदय : 5:45
सूर्यास्त : 6:28
अधिकतम तापमान : 40.0
न्यूनतम : 22.0

RNI NO : UPHIN/2010/31173

डाक पंजीकरण संख्या: SSP/LW/NP-422/2014-2016

वर्ष-18 अंक-298 पेज-16
मूल्य : 3 रुपया

लखनऊ, बुधवार, 23 अप्रैल 2025
24 शव्वाल 1446 हिजरी

हिन्दी दैनिक
अवधनामा
www.avadhnama.com

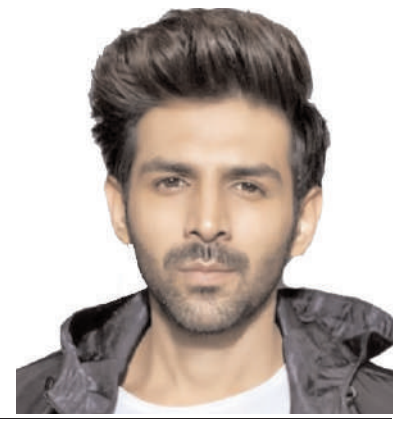

जम्मू कश्मीर में पुलवामा के बाद पहलगाम में बड़ा आतंकी हमला

- जहां हंसी गूंज रही थी वहां मच गई चीख पुकार
- सेना की वर्दी में आए थे आतंकी
- मरने वालों में दो विदेशी, सुबह घटनास्थल पर जाएंगे शाह

खून से लाल भारत का मिनी स्विट्जरलैंड, 27 मरे

- सेना और सुरक्षाबलों ने की घेराबंदी
- दिल्ली से लेकर यूपी तक जारी हुआ हाईअलर्ट
- दक्षिण कश्मीर के खूबसूरत इलाके में सैकड़ों पर्यटक थे मौजूद, छुट्टियों का ले रहे थे आनंद

श्रीनगर। दक्षिणी कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार दोपहर तीन बजे के करीब आतंकियों ने पर्यटकों को निशाना बनाकर गोलीबारी की। हमले में करीब 27 लोगों की मौत की जानकारी सामने आई है। मरने वालों में दो विदेशी नागरिक और दो स्थानीय लोग भी शामिल हैं। हमला उस वक्त किया गया, जब दक्षिण कश्मीर के इस खूबसूरत इलाके में सैकड़ों पर्यटक मौजूद थे, वो अपनी छुट्टियों का आनंद ले रहे थे। इस दौरान हथियारों से लैस आतंकवादी जंगल से निकले और उन पर गोलियां बरसानी शुरू कर दी।

अचानक हुई इस गोलीबारी से शांत घाटी में चीखें गूंज उठी। हर तरफ लोग भाग रहे थे, आतंकियों की गोलियों से खुद को बचाने की कोशिश कर थे। लोग अपने को बचाने की कोशिश में जुटे। कुछ मिनट पहले जहां माहौल खुशनुमा था, वह हर तरफ मौत का भयावह मंजर देखने को मिला। घायलों के परिजन लोगों से मदद की गुहार लगा रहे थे, जहां दर्जनों पर्यटक खून से लथपथ पड़े हुए थे। जानकारी के मुताबिक, आतंकी सेना की वर्दी में आए और पर्यटकों से परिचय-पत्र मांगना शुरू कर दिया। इसके बाद उन्होंने पर्यटकों का मजहब जानकर और उनपर गोलियां बरसानी शुरू कर दी। जब तक सुरक्षा बल मौके पर पहुंचते, आतंकी कई पर्यटकों की हत्या कर पहाड़ियों की तरफ भाग गए। उनके मारे जाने या पकड़े जाने की फिलहाल कोई सूचना नहीं है। रिपोर्ट्स के अनुसार, आतंकियों ने लगभग 40 पर्यटकों के एक समूह को घेर लिया और अचानक उन पर गोलियां बरसानी शुरू कर दी। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि जैसे ही गोलियां चलनी शुरू हुई, मौके पर दुकान लगाए तमाम स्थानीय लोग वहां से भाग गए, मैदान में सिर्फ पर्यटक बचे। जिन पर आतंकियों का कहर टूट पड़ा। दक्षिण कश्मीर के इस रिसॉर्ट में बैसरन घास के मैदानों में मदद के लिए चीखें गूंज रही थीं, क्योंकि जम्मू-कश्मीर में हाल के वर्षों में नागरिकों पर हुए सबसे घातक आतंकी हमलों में से कई पर्यटक खून से लथपथ पड़े थे। हथियारों से लैस आतंकवादी बैसरन के जंगल से निकले, जो एक पहाड़ी के ऊपर एक घास का मैदान है और उन्होंने लगभग 40 पर्यटकों के एक समूह को घेर लिया। आतंकवादियों ने पर्यटकों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिसमें कई लोग मारे गए और कम से कम 20 घायल हो गए। बता दें कि, इस मैदान तक पहुंचने के लिए कोई भी सीधी सड़क नहीं है। इस प्रसिद्ध घास के मैदानों तक केवल पैदल या टट्टुओं की मदद से ही पहुंचा जा सकता है। वहीं इस वारदात के बाद सेना ने घायलों को वहां से निकालने के लिए हेलीकॉप्टर बुलाए है। हालांकि, हेलीकॉप्टर के घटनास्थल पर पहुंचने से पहले ही स्थानीय लोगों ने अपने टट्टुओं पर कुछ घायलों को नीचे उतार लिया था। सामने आए वीडियो में स्थानीय पर्यटक गाइड और टट्टूवालों ने जिंदा बचे लोगों की मदद की। उन्होंने घायल पर्यटकों को अपने कंधों पर पास के मोटरेबल प्वाइंट तक पहुंचाया।

घोड़ों की मदद से लाए गए घायल

हमले के तुरंत बाद सुरक्षाबलों ने इलाके की घेराबंदी कर घायलों को वहां से निकालना शुरू किया। ऊंचाई वाला इलाका होने के कारण घायलों को घोड़े वालों की मदद से सड़क तक लाया गया, जहां से उन्हें नौ एंबुलेंस से अस्पताल पहुंचाया पहलगाम के नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। वहां से कुछ को राजकीय मेडिकल कॉलेज अनंतनाग भी ले जाया गया। दो घायलों को एयरलिफ्ट भी किया गया।

गृह मंत्री अमित शाह ने श्रीनगर में की हाईलेवल मीटिंग

गृह मंत्री अमित शाह श्रीनगर पहुंचे और सीधे राजभवन पहुंचे। वहां वह आईबी चीफ और उपराज्यपाल के साथ हाईलेवल मीटिंग की। इसके बाद वह घायलों से मिलने अस्पताल जाएंगे। जानकारी आ रही है कि कल सुबह पहलगाम जाने का कार्यक्रम है। गृह मंत्री अमित शाह ने आतंकी हमले के दोषियों पर कड़ी कार्रवाई करने का संकल्प लिया। शाह ने कहा कि उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को घटना के बारे में जानकारी दी है, जो वर्तमान में सऊदी अरब में हैं और आतंकी हमले के बाद संबंधित अधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए बैठक की। उन्होंने कहा, पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले से दुखी हूं। मेरी संवेदनाएं मृतकों के परिवार के सदस्यों के साथ हैं। इस नृशंस आतंकी हमले में शामिल लोगों को बख्शा नहीं जाएगा और हम दोषियों पर कड़ी कार्रवाई करेंगे और उन्हें कड़ी से कड़ी सजा देंगे।

घृणित हमले के पीछे जो लोग हैं बख्शा नहीं जाएगा: एलजी

उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने अपने पोस्ट में लिखा, मैं पहलगाम में पर्यटकों पर हुए कायरतापूर्ण आतंकी हमले की कड़ी निंदा करता हूँ। मैं लोगों को भरोसा दिलाता हूं कि इस घृणित हमले के पीछे जो लोग हैं, उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। डीजीपी और सुरक्षा अधिकारियों से बात की है। सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस की टीमें इलाके में पहुंच गई हैं और तलाशी अभियान शुरू कर दिया है। जिला प्रशासन और स्वास्थ्य अधिकारियों को पहलगाम में भर्ती लोगों को तुरंत चिकित्सा सुविधा प्रदान करने का निर्देश दिया है। एक घायल पर्यटक को जीएमसी अनंतनाग ले जाया गया है। मैं सभी घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूँ।

भैया मेरे पति को बचा लो....

वहीं हमले की शिकार हुई एक महिला ने पीटीआई को बताया, मेरे पति को सिर में गोली मारी गई... उनसे उनका धर्म पूछकर गोली मारी गई। महिला ने अपनी पहचान नहीं बताई, लेकिन घायलों को अस्पताल पहुंचाने में मदद की गुहार लगाई। महिला ने मौके पर लोगों से विनती करते हुए कहा, भैया, कृपया मेरे पति को बचा लो।

अमरनाथ यात्री निवास से महज 15 किमी दूर वारदात

आतंकियों ने ये वारदात अमरनाथ यात्री निवास नुनवान बेस कैंप से महज 15 किमी. दूर इस वारदात को अंजाम दिया है। यह यात्रा के पारंपरिक मार्ग का हिस्सा है। 3 जुलाई से अमरनाथ यात्रा शुरू हो रही है। माना जा रहा है कि इससे पहले ही पर्यटकों और तीर्थयात्रियों में दहशत फैलाने के लिए यह वारदात अंजाम दी है। अमरनाथ यात्रा के लिए 15 अप्रैल से पंजीकरण शुरू हुआ है और अब तक 2 लाख से ज्यादा श्रद्धालु पंजीकरण करवा चुके हैं।

सख्त कदम उठाए सरकार : राहुल

कांग्रेस ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में निर्दोष पर्यटकों पर बर्बर आतंकी हमले की कड़ी निंदा करते हुए कहा है कि पूरा देश सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ एकजुट है। पहलगाम आतंकी हमले को मानवता पर धब्बा बताते हुए पार्टी ने कहा है कि जम्मू-कश्मीर में सामान्य स्थिति के खोखले दावे करने की बजाय केंद्र सरकार को जवाबदेही लेते हुए इसके खिलाफ ठोस कदम उठाने चाहिए।

हमला कायरतापूर्ण : राजनाथ

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ट्वीट कर लिखा कि पहलगाम (जम्मू और कश्मीर) में आतंकवादी हमले की खबर से बहुत दुख हुआ। निर्दोष नागरिकों पर यह नृशंस हमला कायरतापूर्ण और अत्यधिक निंदनीय कृत्य है।

मैं अविश्वसनीय रूप से स्तब्ध हूं : उमर अब्दुल्ला

जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने आतंकी वारदात पर गुस्सा जताते हुए अपने पोस्ट में लिखा- मैं अविश्वसनीय रूप से स्तब्ध हूं। हमारे आगंतुकों पर यह हमला एक घृणित कार्य है। इस हमले के अपराधी जानवर, अमानवीय और घृणा के पात्र हैं। निंदा के लिए कोई भी शब्द पर्याप्त नहीं है।

आतंकी हमले पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने जताया दुख

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इस हमले पर दुख जताया है। राष्ट्रपति भवन की तरफ से किए गए पोस्ट में लिखा गया- जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुआ आतंकवादी हमला चौंकाने वाला और दर्दनाक है। यह एक नृशंस और अमानवीय कृत्य है जिसकी स्पष्ट रूप से निंदा की जानी चाहिए। निर्दोष नागरिकों, इस मामले में पर्यटकों पर हमला करना बेहद भयावह और अक्षम्य है। जिन परिवारों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके प्रति मेरी संवेदना है और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करती हूं।

नापाक एजेंडा कभी सफल नहीं होगा : प्रधानमंत्री मोदी

पीएम मोदी ने हमले की निंदा करते हुए दुख जताया है। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट में लिखा- मैं जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की कड़ी निंदा करता हूं। जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके प्रति मेरी संवेदनाएं। मैं प्रार्थना करता हूं कि घायल लोग जल्द से जल्द ठीक हो जाएं। इस जघन्य कृत्य के पीछे जो लोग हैं, उन्हें न्याय के कटघरे में लाया जाएगा उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। उनका नापाक एजेंडा कभी सफल नहीं होगा। आतंकवाद से लड़ने का हमारा संकल्प अडिग है और यह और भी मजबूत होगा।

आतंकी हमला कायरतापूर्ण : योगी आदित्यनाथ

उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुआ आतंकी हमला कायरतापूर्ण, अक्षम्य और घोर निंदनीय है। उन्होंने इस दुखद घटना में अपने प्रियजनों को खोने वालों के प्रति शोक संवेदनाएं जताते हुए सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर लिखा कि प्रभु श्रीराम से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्माओं को सद्गति एवं घायलों को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्रदान करें।

पहलगाम में आतंकी हमला निंदनीय : अखिलेश यादव

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले की भयावह तस्वीरें दिल दहला देने वाली हैं। ये हमला हर दृष्टिकोण से निंदनीय है। उन्होंने कहा कि घायलों के शीघ्रातिशीघ्र उपचार के लिए देश की सबसे अच्छी चिकित्सा सेवाएं तत्काल सुनिश्चित की जाएं। केंद्र की सरकार को सबसे पहले सुरक्षा के वातावरण को सुनिश्चित करने की जरूरत है, तभी स्थानीय निवासियों और पर्यटकों का जीवन सुरक्षित रह सकता है।

पूरा देश आतंकवाद के खिलाफ एकजुट है : प्रियंका गांधी

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा कि पर्यटकों पर कायराना आतंकी हमला अत्यंत निंदनीय एवं शर्मनाक कृत्य है। निहत्थे-निर्दोष आम नागरिकों को निशाना बनाना मानवता के खिलाफ अपराध है। यह पूरी तरह अस्वीकार्य है। पूरा देश आतंकवाद के खिलाफ एकजुट है और कड़े स्वर में इसकी निंदा करता है।

बढ़ी रेलवे-बस स्टेशनों की निगरानी

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले के बाद यूपी में भी सतर्कता बढ़ा दी गई है। देर शाम डीजीपी प्रशांत कुमार की अध्यक्षता में वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में इस बाबत अहम दिशा-निर्देश भी दिए गए हैं। वहीं नेपाल सीमा पर भी चौकसी बढ़ाई गई है। तीन जुलाई से शुरू होने जा रही श्री अमरनाथ यात्रा से पहले मंगलवार को आतंकियों ने जम्मू-कश्मीर में बड़ी वारदात को अंजाम दिया है।

ट्रंप और पुतिन ने की कड़ी निंदा

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कश्मीर में हुए आतंकवादी हमले पर दुख जताते हुए इसे परेशान करने वाली खबर बताया। उन्होंने कहा कि अमेरिका भारत के साथ आतंकवाद के खिलाफ खड़ा है और हमले में जान गंवाने वालों की आत्माओं के लिए प्रार्थना करते हैं। वहीं रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की है। पुतिन ने इसे भयानक अपराध करार दिया और कहा कि ऐसे हमलों का कोई भी औचित्य नहीं हो सकता। उन्होंने इस हमले में मारे गए पर्यटकों के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त की और आतंकवाद के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता को भी रेखांकित किया।

विशाल सिंह बने नए सूचना निदेशक

शिशिर को विशेष सचिव एमएसएमई का चार्ज

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। प्रदेश सरकार ने गतः रात सूचना निदेशक शिशिर सिंह समेत 33 आईएएस अधिकारियों का स्थानांतरण किया है। स्थानांतरण किए गए अधिकारियों में 11 जिलों के जिलाधिकारी भी शामिल हैं। प्रदेश सरकार ने विशाल सिंह को नया सूचना निदेशक बनाया है। वाराणसी, आजमगढ़, हापुड़, बरेली, अंबेडकर नगर, गाजीपुर, झाँसी, कुशीनगर, महोबा, भदोही व संतकबीर नगर सहित 11 जिलो के जिलाधिकारी भी बदले गए हैं। वाराणसी के मंडल आए तो कौशल राज शर्मा को सचिव मुख्यमंत्री बनाया गया है। वाराणसी के जिलाधिकारी एस राज लिंगम को वाराणसी का मंडल आयुक्त, विशेष सचिव मुख्यमंत्री सत्येंद्र कुमार को वाराणसी का जिलाधिकारी, हापुड़ की जिलाधिकारी प्रेरणा शर्मा को निदेशक सूडा, प्रमुख सचिव स्टैंप एवं पंजीयन अमित गुप्ता को प्रमुख सचिव परिवहन एवं अध्यक्ष उत्तर प्रदेश परिवहन निगम, मेरठ विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष अभिषेक पांडे को जिलाधिकारी हापुर, मुख्य विकास अधिकारी गोरखपुर संजय कुमार मीणा को उपाध्यक्ष विकास प्राधिकरण मेरठ, संयुक्त मजिस्ट्रेट अलीगढ़ शाश्वत त्रिपुरारी को मुख्य विकास अधिकारी गोरखपुर, जिलाधिकारी बरेली रविंद्र कुमार 2 को जिलाधिकारी आजमगढ़, जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल आजमगढ़ को विशेष सचिव मुख्यमंत्री, जिलाधिकारी अंबेडकर नगर अविनाश सिंह को जिलाधिकारी बरेली, विशेष सचिव ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा अनुपम शुक्ला को जिलाधिकारी अंबेडकर नगर, नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह को विशेष सचिव ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा, विकास अधिकारी प्रयागराज गौरव कुमार को नगर आयुक्त नगर निगम लखनऊ, संयुक्त मजिस्ट्रेट चंदौली हर्षिका सिंह को मुख्य विकास अधिकारी प्रयागराज बनाया गया है।

सिविल सेवा रिजल्ट घोषित: यूपी की बेटियों ने किया कमाल, टॉप 5 में तीन लड़कियां शामिल

प्रयागराज की शक्ति दुबे ने किया टॉप

- हरियाणा की हर्षिता गोयल दूसरे नंबर पर
- शहर के मेधावियों ने भी किया लखनऊ का नाम रोशन
- कुमुद को 69वीं और प्रशांत को 102वीं रैंक

नई दिल्ली। संघ लोक सेवा आयोग ने मंगलवार को सिविल सेवा परीक्षा 2024 परिणाम घोषित कर दिए हैं। यूपीएससी द्वारा घोषित किए गए परिणामों में टॉप 5 में से 3 लड़कियां शामिल हैं। जिसमें प्रथम स्थान पर उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले की रहने वाली शक्ति दुबे हैं।

संघ लोक सेवा आयोग 2024 में दूसरा स्थान हर्षिता गोयल, तीसरा स्थान डोंगरे अचित पराग, चौता स्थान शाह मार्गी चिराग और पांचवा स्थान आकाश गर्ग ने हासिल किया है। वहीं छठे नंबर पर सहारपुर जिले की कोमल पूनिया ने हासिल किया है। संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की ओर से घोषित किए गए सिविल सेवा परीक्षा 2024 परिणाम में प्रयागराज की शक्ति दुबे ने प्रथम रैंक प्राप्त किया है। उन्हें यह सफलता तीसरे प्रयास में मिली है। शक्ति दुबे पढ़ाई में बचपन से होनहार रही हैं। एसएमसी घूरपुर में 12वीं तक की पढ़ाई करने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बीएससी किया। उसमें गोल्ड मेडलिस्ट रहीं। फिर 2018 में बीएचयू से बायोकैमेस्ट्री में एमएससी किया। इसमें भी गोल्ड मेडलिस्ट रहीं। एमसएसी के बाद प्रयागराज आकर प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने लगीं। तैयारी के लिए बीच-बीच में दिल्ली भी जारी थीं। 2020 में कोरोना काल में प्रयागराज आ गई। इसके बाद तैयारी जारी रखी। 2023 की परीक्षा में दो नंबर कम होने पर उनका सेलेक्शन नहीं हो पाया। इससे थोड़ी हताश हुई, लेकिन हौसला नहीं खोया और तैयारी जारी रखी। कड़ी मेहनत के बाद उन्होंने इतिहास रच दिया। रूरा के पालीवाल नगर की अक्षिता त्रिवेदी ने परीक्षा उत्तीर्ण की हैं और उनकी रैंक 394 आई है।उनके पिता प्रदीप अधिवक्ता हैं और पूर्व बार कोषाध्यक्ष भी रहे हैं। इससे पूरा परिवार व कस्बा खुश हैं।

सिविल सेवा परीक्षा में लखनऊ की कुमुद मिश्रा ने 69 रैंक, प्रशांत सिंह ने 102 रैंक, रजत सिंह ने 132 रैंक, अनुश्री सचान ने 220 रैंक, आकाश निगम ने 418 रैंक और उत्कर्ष नारायण ने 850 रैंक हासिल करके लखनऊ का नाम रोशन किया।

अनुपस्थित कर्मचारियों पर गिरी गाज सीडीओ ने काटा एक दिन का वेतन

अवधनामा संवाददाता

लखीमपुर खीरी। विकास भवन में मंगलवार को उस वक्त हड़कंप मच गया जब सीडीओ अभिषेक कुमार ने औचक निरीक्षण किया। बिना पूर्व सूचना पहुंचे सीडीओ ने विभिन्न विभागों की उपस्थिति पंजिका, कार्यालय की व्यवस्था, सफाई और जनसुनवाई प्रणाली की बारीकी से जांच की। जैसे ही सीडीओ ने उपस्थिति रजिस्टर पलटना शुरू किया, कई विभागों के कर्मचारियों की गैरहाजिरी उजागर हो गई। साफ-सफाई से लेकर जनसुनवाई तक की व्यवस्था की पड़ताल करते हुए सीडीओ ने यह साफ कर दिया कि अब काम में कोताही और देरी किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं होगी निरीक्षण के दौरान कई विभागों के कर्मचारी अनुपस्थित पाए गए। अर्थ एवं संख्याधिकारी विभाग के चार, लघु सिंचाई 03, सहकारिता और समाज कल्याण विभागों के दो-दो, पशुपालन विभाग के पांच, ग्रामीण अभियंत्रण विभाग के तीन तथा पंचायती राज विभाग का एक कर्मचारी मौके पर नहीं मिला इस पर सीडीओ ने गहरी नाराजगी जताते हुए सभी अनुपस्थित कर्मचारियों को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है, साथ ही उनका एक दिन का वेतन काटने के निर्देश भी दिए हैं।सीडीओ अभिषेक कुमार ने साफ शब्दों में कहा कि कार्यालय में समय की पाबंदी अनिवार्य है। अब किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने सभी अधिकारी, कर्मचारियों को सुबह समय पर उपस्थित रहने, रोजाना 10 से 12 बजे तक जनसुनवाई सुनिश्चित करने और सहकारिता विभाग में एडीसीओ की उपस्थिति के लिए रोस्टर तय करने के निर्देश दिए साथ ही, अवकाश संबंधित आवेदन सुबह 10 बजे तक पंजिका में दर्ज कराना अनिवार्य किया गया है निरीक्षण के दौरान अनुपस्थित कर्मचारियों की सूची भी लंबी रही। सीडीओ ने निरीक्षण के दौरान डीपीआरओ दफ्तर से सहायक लेखाकार बीएल राना, पशुपालन दफ्तर के वरिष्ठ सहायक अंकुर, कनिष्क सहायक अमित कुमार वर्मा, रवि कुमार, राहुल सिंह, रजत प्रताप सिंह, सहकारिता दफ्तर में वरिष्ठ सहायक भगवानदास राना,सहयोगी साधना सिंह, ग्रामीण अभियंत्रण दफ्तर से आशुलिपिक हरद्वारी लाल, वरिष्ठ सहायक समीर शरण सिंह, अमित कुमार कश्यप, समाज कल्याण दफ्तर से वरिष्ठ सहायक भूपराम राना, पर्यवेक्षक विकास गुप्ता, डीएसटीओ दफ्तर से श्रीमती नीति शर्मा, डा. मंजू दीक्षित, अरविन्द, डा. उदय सिंह, लघु सिंचाई दफ्तर से सहायक अभियंता श्याम सुंदर यादव, वरिष्ठ सहायक श्रीमती सुनीता, कनिष्ठ सहायक अजय कुमार अनुपस्थित पाए गए।

पैदल जा रहे चार युवकों को तेज रफ्तार कार ने रौंदा

लखीमपुर-खीरी। शहर में गोला रोड पर सोमवार की आधी रात के बाद पैदल जा रहे चार युवकों को तेज रफ्तार कार ने रौंद दिया टक्कर इतनी तेज हुई कि एक युवक उछलकर पड़ोस में बने नाले में गिर गया मौके पर पहुंची पुलिस ने तीन घायलों को जिला अस्पताल भेज दिया लेकिन नाले में युवक के पड़े होने की किसी को कोई जानकारी नहीं हो सकी इससे पूरी रात नाले में पड़े रहने से युवक की मौत हो गई सुबह पुलिस ने शव बाहर निकाला और पोस्टमार्टम के लिए भेजा है हादसा सोमवार की देर शाम हुआ शहर के मोहल्ला कमलापुर निवासी नागेंद्र कुमार 22 पुत्र विनोद अपने साथियों अमित, यशवंत व अंश निवासी उदयपुर महेवा के साथ गोला रोड पर पैदल राज पैलेस की तरफ जा रहा था।

सभी सड़क पर अपनी साइड से किनारे चल रहे थे। इसी बीच आई तेज रफ्तार अनियंत्रित कार ने चारों युवकों को रौंद दिया। वहीं कार की टक्कर से नागेंद्र उछलकर नाले में जा गिरा, जबकि अमित, यशवंत और अंश सड़क पर ही गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए उनके पैर और कमर की हड्डी टूट गई।चीख पुकार और तेज आवाज सुनकर तमाम लोगों की भीड़ मौके पर जुट गई और सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने सड़क किनारे पड़े अमित, यशवंत व अंश को एंबुलेंस 108 की मदद से जिला अस्पताल भेज दिया, जबकि नागेंद्र नाले में पूरी रात पड़ा रहा। पुलिस कार को कब्जे में लेकर वापस लौट गई। इससे उसकी मौत हो गई। सुबह कुछ लोगों ने एक युवक का शव नाले में पड़ा देखा।शव देखे जाने से हड़कंप मच गया। सूचना पर शहर कोतवाल हेमंत राय मौके पर पहुंचे। पुलिस ने शव को नाले से बाहर निकलवाया और उसकी पहचान कराई। शव की पहचान नागेंद्र कुमार के रूप में हुई। इससे उसके परिवार में चीख पुकार मच गई। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े ऐतिहासिक दस्तावेज़ों अभिलेखों की लगायी गई प्रदर्शनी

अवधनामा संवाददाता

लखीमपुर-खीरी। युवराज दत्त महाविद्यालय लखीमपुर खीरी के स्वर्ण जयंती सभागार में राजकीय अभिलेखागार, संस्कृति विभाग लखनऊ द्वारा उत्तर प्रदेश में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े ऐतिहासिक दस्तावेज़ों /अभिलेखों की प्रदर्शनी प्रोफ़ेसर नूतन सिंह कार्यक्रम समन्वयक के नेतृत्व में लगायी गई प्रदर्शनी का उद्घाटन 11ः30 बजे आर्यकन्या महाविद्यालय लखीमपुर की प्राचार्या डॉ0 गीता शुक्ला के कर कमलों से संपन्न हुआ तत्पश्चात् संपन्न हुई संगोष्ठी का सफल संचालन रचित कुमार असिस्टेंट प्रोफ़ेसर इतिहास विभाग ने किया मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए राजनीति विज्ञान के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर विजय प्रताप सिंह ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रकृति एवं इतिहास लेखन की प्रवृत्तियों पर चर्चा की उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार लखनऊ से आए हुए आर्काइव एवं कंज़र्वेटर शैलेंद्र , संतोष तथा शिव कुमार ने इतिहास लेखन में अभिलेखों के उपयोग , अभिलेखों के रखरखाव, आर्काइव में इतिहास छात्रों के लिए रोज़गार के अवसरों की जानकारी दी अपने अध्यक्षीय उद्बोधन प्राचार्य प्रो0 हेमंत पाल ने इतिहास लेखन में आर्काइव का समुचित उपयोग करने की जानकारी दी साथ ही इस बात पर ज़ोर दिया कि अभिलेखागार एवं महाविद्यालय के बीच करार किया जाएगा कि भविष्य में भी इस तरह के प्रदर्शनी लगायी जाती रहे छात्राओं में जैनब ने बेगम हज़रत महल के योगदान पर तथा शोध छात्र यशवंत ने स्वतंत्रता आंदोलन में तवायफ़ों की भूमिका पर प्रकाश डाला प्रदर्शनी देखने विभिन्न विद्यालयों के स्टूडेंट आये प्रदर्शनी में उत्तर प्रदेश की स्वतंत्रता आन्दोलन के दस्तावेज थे साथ ही लखीमपुर खीरी से जुड़े अनेक अभिलेख भी दिखाये गये कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षकों सहित छात्र छात्राओं की भारी मात्रा में उपस्थिति रही ।

भाजपाइयों द्वारा आयोजित किया गया,एक राष्ट्र एक चुनाव के समर्थन में महिला सम्मेलन

बदायूं। भाजपाइयों द्वारा उझानी के बांके बिहारी कॉलेज आफ लॉ प्रांगण में एक राष्ट्र एक चुनाव के समर्थन में महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में तिलहर विधायक सलोना कुशवाहा मौजूद रही। मुख्य अतिथि तिलहर विधायक सलोना कुशवाहा ने कहा एक राष्ट्र एक चुनाव से सरकारी संसाधनों की बर्बादी रुकेगी। उन्होंने कहा कि सुरक्षा बलों पर दबाव कम होगा और नागरिक एक साथ मतदान कर पाएंगे,जो भारत जैसे विशाल लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण समाधान हो सकता है। उन्होंने कहा कि भारत में हर साल किसी न किसी राज्य में चुनाव होते हैं। इससे न केवल सरकारी खर्च पड़ता है बल्कि सुरक्षा प्रशासन और संसाधनों पर बोझ पड़ता है। एक साथ चुनाव कराने से चुनावी खर्च में भारी कटौती की जा सकती है और इन संसाधनों को देश के विकास में लगाया जा सकता है।कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद भाजपा जिला अध्यक्ष राजीव कुमार गुप्ता ने कहा एक राष्ट्र एक चुनाव से होने वाली बचत से देश में विकास के नए अध्याय लिखे जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि एक राष्ट्र एक चुनाव का निर्णय व्यक्तिगत हित से ऊपर उठकर राष्ट्र में परिवर्तन कार्यक्रम सिद्ध होगा।सम्मेलन की अध्यक्षता कॉलेज की प्रवक्ता डॉ. रुचि गुप्ता द्वारा की गई। कार्यक्रम का संचालन पूर्व पूर्व पालिकाध्यक्ष दीपमाला द्वारा किया गया। इस मौके पर अध्यक्ष जिला पंचायत वर्षा यादव, चेयरमैन उझानी पूनम अग्रवाल, चेयरमैन बिल्सी ज्ञानवती सागर, दीपमाला गोयल, पूनम यादव, अमिता उपाध्याय, प्रतिभा सिंह, करुणा सोलंकी, दीक्षा माहेश्वरी, रजनी मिश्रा, रेनू सिंह, सीमा राठौर आदि मौजूद रहीं।

एसएसपी ने किया मेडिकल परीक्षण कार्यक्रम का निरीक्षण

बदायूं। पुलिस भर्ती परीक्षा में चयनित हुए अभ्यर्थियों हेतु किए जा रहे मेडिकल परीक्षण कार्यक्रम का वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ बृजेश कुमार सिंह द्वारा जायज़ा लेते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। मंगलवार को पुलिस लाइन के विवेकानंद हॉल में आयोजित आरक्षी नागरिक पुलिस भर्ती परीक्षा में चयनित अभ्यर्थियों के किये जा रहे मेडिकल परीक्षण को सकुशल एवं निष्पक्ष सम्पन्न कराए जाने के दृष्टिगत वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉक्टर बृजेश कुमार सिंह द्वारा निरीक्षण कर अभ्यर्थियों से वार्ता की गयी। श्री सिंह द्वारा मेडीकल परीक्षण कार्यक्रम में मौजूद अधिकारियो व कर्मचारियों से वार्ता करते हुए निष्पक्षता को बनाये रखने हेतु निर्देशित किया गया। आगामी रिक्रूट आरक्षियों के प्रशिक्षण के दृष्टिगत रिजर्व पुलिस लाइन, में की जा रही व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया गया।

एडीएम प्रशासन की अध्यक्षता में किया गया बैठक का आयोजन

अवधनामा संवाददाता

बदायूं। जिला बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति की त्रैमासिक बैठक व मिशन शक्ति अंब्रेला स्कीम के तहत संचालित योजनाओं एवं वन स्टॉप सेंटर की कलेक्ट्रेट स्थित अटल बिहारी वाजपेयी सभागार में जिलाधिकारी अवनीश कुमार राय के निर्देश पर बैठक की अध्यक्षता कर रहे अपर जिलाधिकारी प्रशासन अरुण कुमार ने अधिकारियों को अपने-अपने विभागीय दायित्वो का निर्वहन ठीक प्रकार से करने के लिए कहा है। अपर जिलाधिकारी प्रशासन द्वारा जिला प्रोबेशन अधिकारी को निर्देशित किया कि जनपद में बाल विवाह को रोकने के लिए सभी संपर्क नंबरों जिसमें कलेक्ट्रेट कंट्रोल रूम, जिला प्रोबेशन अधिकारी का सीयूजी व अन्य टोल फ्री नंबरों को वॉल पेंटिंग कराकर प्रदर्शित कराए ताकि बाल विवाह को रोकने में वह सहायक सिद्ध हो। उनको निर्देशित किया गया कि 30 अप्रैल को अक्षय तृतीया पर बाल विवाह ना हो यह सभी संबंधित विभागों से समन्वय कर सुनिश्चित कराए। बैठक में मिशन शक्ति अंब्रेला स्कीम के अंतर्गत संचालित योजना के अनुश्रवण एवं पर्यवेक्षण पर चर्चा के दौरान प्रकाश में आया कि वर्तमान में वन स्टॉप सेंटर जिला महिला अस्पताल में संचालित है तथा एक स्थाई वन स्टॉप सेंटर जिला पुरुष चिकित्सालय में तैयार किया जा रहा है जो कि लगभग बनकर तैयार है। मिशन शक्ति अंब्रेला अंतर्गत योजना के दो मुख्य बिंदु है जिसमें प्रथम संबल व दूसरा सामर्थ है।वन स्टॉप सेंटर पर अच्छा भोजन उपलब्ध कराने, 05 दिन से ज्यादा पीड़ितों को वन स्टॉप सेंटर पर रोकना, किराए पर वाहन लेने सहित विभिन्न बिंदुओं पर एक-एक कर चर्चा की गई।

इस अवसर पर नगर मजिस्ट्रेट सूरजपाल, नंदकिशोर पाठक,जिला प्रोबेशन अधिकारी, जिला दिव्यांगजन कल्याण अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी, जिला समाज कल्याण अधिकारी, सहायक आयुक्त सहायक श्रमायुक्त व मीना सिंह सहित समिति के अन्य सदस्य मौजूद रहे।

नकली ऑक्सीटोक्सिन इंजेक्शन सप्लाई करने वाले तीन शातिर आरोपी दबोचे

सहारनपुर। थाना गंगोह पुलिस ने अवैध रुप से प्रतिबन्धित नकली ऑक्सीटोक्सिन इन्जैक्शन तैयार कर सप्लाई करने वाली माबाईल गाडियों के साथ अन्तर्राज्यीय गिरोह का भंडाफोड किया है। गिरोह के तीन सदस्यों को रंगे हाथो पकडकर पुलिस ने उनके पास से नगदी, दो गाडियां, पैकिंग मशीन, तैयार इंजैक्शन व 30 लीटर तैयार नकली केमिकल बरामद किया है। इनके दो साथी फरार होने में कामयाब रहे।

थाना गंगोह प्रभारी ने जानकारी देते हुए बताया कि जीवमात्र के स्वास्थ्य से खिलवाड करने वाले अन्तर्राज्यीय गिरोह सदस्यों को पुलिस ने लखनौती आलमपुर तिराहे के पास से उस वक्त दबोचा, जबकि ये लोग तैयार माल बेचने की तैयारी में थे। मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने संदिग्ध गाडियों की जांच में प्रतिबंधित दवाई बनाने व सप्लाई करने के अवैध कार्य का खुलासा हुआ।

वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

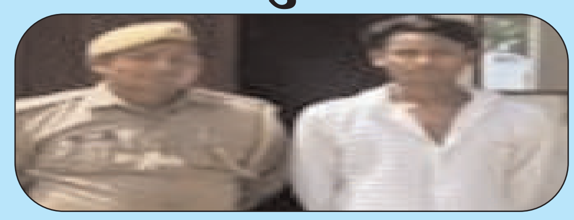

लखीमपुर-खीरी। थाना मझगई पुलिस द्वारा मु0अ0सं0 105/2025 धारा 137(2)/87/131/352/351(2) ब्नहस में वांछित अभियुक्त मोनू पुत्र लल्ला नि0ग्राम बल्लीपुर थाना मझगई गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा गया है।

40 डिग्री के पार हुआ पारा गर्मी में लोगों के छुटे पसीने

लखीमपुर खीरी। आज फिर पारा 40 डिग्री के पार हुआ भीषण उमस भरी गर्मी में लोगों के छुटे पसीने सोमवार की साप्ताहिक बन्दी के बन्द आज मंगलवार को खुले बाजार में भीषण गर्मी के चलते सन्नाटा पसरा जिनको बहुत जरूरी काम है वही दिन में बाहर निकल रहे हैंलेकिन स्कूलों के समय मे फिलहाल कोई बदलाव नही चिलचिलाती धूप में बच्चे तपते झुलसते दोपहर के 2 बजे स्कूलों से घर वापस आ रहे हैं।

यूपीएससी परीक्षा में पहले प्रयास में ही 418वीं रैंक प्राप्त कर आईपीएस अधिकारी बनने का गौरव प्राप्त किया

लखीमपुर-खीरी। धौरहरा तहसील के गांव अभयपुर निवासी मध्यमवर्गीय किसान परिवार के बेटे ने यूपीएससी परीक्षा में पहले प्रयास में ही 418वीं रैंक प्राप्त कर आईपीएस अधिकारी बनने का गौरव प्राप्त किया उसकी इस सफलता से पूरे क्षेत्र में हर्ष का माहौल है। डीएम ने उसे और उसके माता-पिता को शुभकामनाएं दी हैं आकाश निगम का जन्म 4 मार्च 2003 को अभयपुर गांव में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा रमियाबेहड़ के गोल्डन फ्यूचर पब्लिक स्कूल से प्राप्त की। फिर इंटरमीडिएट तक की पढ़ाई लखनऊ के सेंट अंजनीस पब्लिक स्कूल से की। इसके बाद इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से स्नातक और जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, दिल्ली से परास्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, बिना किसी कोचिंग के, स्वयं 18 घंटे की पढ़ाई कर पहले ही प्रयास में यूपीएससी परीक्षा में 418वीं ऑल इंडिया रैंक प्राप्त की और आईपीएस अधिकारी बन गए आकाश निगम अपनी इस सफलता का श्रेय अपने माता-पिता और गुरुजनों को देते हैं। आकाश निगम की इस उपलब्धि पर जहां क्षेत्र में खुशी का माहौल है, वहीं जिलाधिकारी दुर्गा शक्ति नागपाल ने भी उन्हें शुभकामनाएं दी हैं।

मिनी कोल्ड स्टोरेज में लगी भीषण आग, 20 लाख से अधिक का नुकसान होने का अनुमान

लखीमपुर-खीरी। कस्बे की मंडी समिति के पीछे स्थित मिनी कोल्ड स्टोरेज में सोमवार की देर शाम भीषण आग लग गई। आग की उठती लपटों को देखकर अफरा-तफरी मच गई। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड ने बालू और पानी आदि डालकर बमुश्किल आग पर काबू पाया। इस अग्निकांड में 20 लाख से अधिक का नुकसान होने का अनुमान है कस्बा मैगलगंज निवासी विमलेश शर्मा का मंडी समिति के पीछे कोल्ड स्टोरेज है। विमलेश शर्मा पुत्र मेवालाल शर्मा, निवासी मैगलगंज, जनपद खीरी का बना हुआ है। सोमवार की देर शाम कोल्ड स्टोरेज में अचानक आग भड़क उठी। आग लगने की जानकारी उठती लपटों से हुई। लपटें देखकर आसपास के लोगों में हड़कंप मच गया। बड़ी संख्या में लोग मौके पर पहुंच गए।

कांग्रेस ने कभी भी बाबा साहेब को सम्मान नही दियाः राजेन्द्र

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। पूर्व सांसद राजेन्द्र अग्रवाल ने कहा कि आज के भारत को बनाने में भारत रत्न डॉ भीमराव अंबेडकर का अतुलनीय योगदान है।

भाजपा द्वारा अम्बेडकर जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित किये जा रहे कार्यक्रमो की श्रृंखला में आज चमन पैलेस में आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मेरठ से पूर्व सांसद राजेन्द्र अग्रवाल ने कहा कि कांग्रेस ने कभी भी बाबा साहेब को सम्मान नही दिया और षड्यंत्र के तहत उन्हें चुनाव भी हरवाया। बाबा साहेब ने अपने पूरे जीवन संघर्ष किया और गरीबी में जीवन को आगे बढ़ाया, उसी में पढ़ लिख कर जिस प्रकार राष्ट्र को आगे बढ़ाने का काम किया वह अपने आप में एक अविस्मरणीय उदाहरण है। स्वतंत्रता के बाद बाबा साहेब भारत सरकार में मंत्री बने और पिछड़े, कमजोर, दलितों को समानता के अधिकार दिलाये और उनके हक के लिए काम किया। कांग्रेस नही चाहती थी कि बाबा साहेब संविधान सभा के सदस्य बने, कांग्रेस ने उन्हें चुनाव हराया, कॉंग्रेस ने इतने लंबे समय तक सरकार में रहने के बाद भी बाबा साहेब को भारत रत्न नही दिया जब केंद्र में हमारे समर्थन वाली सरकार आयी तब उन्हें भारत रत्न दिया गया हालांकि उनके योगदान के सामने भारत रत्न बहुत छोटा है।

रेलवे की यात्री सलाहकार समिति के पूर्व चेयरमैन रमेश चंद्र रतन ने कहा कि बाबा साहेब ने जीवन पर्यंत सामाजिक समरसता के लिए काम किया। आज जिस जगह भारत है उसमें बाबा साहेब का सबसे बड़ा योगदान है। वह हमेशा भारत और भारतीयता के लिए खड़े रहे, उनकी विचारधारा के अनुरुप व संविधान के अनुसार काम करने का काम मोदी सरकार कर रही है। बाबा साहेब से जुड़े पंच तीर्थो का विकास मोदी सरकार द्वारा कराया गया जो कि अपने आप ऐतिहासिक है। मोदी सरकार ने जम्मू कश्मीर में धारा 370 खत्म कर बाबा साहेब के संविधान को लागू किया गया। कांग्रेस और सपा ने बाबा साहेब और महापुरषो की स्मृति मिटाने का काम किया, दलित महापुरषो के स्मारकों को मिटाने का काम किया। कांग्रेस ने हमेशा समाज को जाती के रूप में वोट बैंक समझा जबकि भाजपा ने बाबा साहेब के आदर्शों को मानते हुए सामाजिक समरसता का काम किया। बाबा साहेब ने संविधान के द्वारा हमे ताकत दी और हम समृद्ध और विकसित राष्ट्र बनाने के लिए मिल कर काम कर रहे है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने संत रविदास जी की बड़ी मूर्ति बनवाई और जो बाबा साहेब ने रास्ता दिखाया उसी पर चलते हुए एक शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण किया जा रहा है। संगोष्ठी में प्रमुख रुप से भाजपा महानगर अध्यक्ष शीतल बिश्नोई, विधायक राजीव गुम्बर, पूर्व सांसद राघव लखनपाल शर्मा, पूर्व विधायक जगपाल सिंह, एससी आयोग सदस्य महिपाल सिंह, मुकुल वाल्मीकि, जसवीर मोगा, विपिन कुमार, जोगिंदर लाला, पार्षद सुलेख चंद, सीमा कात्यान, राकेश कल्याण, नीरज शर्मा, संजीव कर्णवाल, अंकित जाटव, विश्वदयाल छोटन, कार्यक्रम संयोजक ललित कटारिया सहित बड़ी संख्या में जनसमूह उपस्थित रहा।

निगम गौशाला बनी विश्व रिकॉर्ड बनाने वाली विश्व की पहली गौशाला

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। 'इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्डर्स' ने सहारनपुर में नगर निगम द्वारा संचालित मां शाकंभरी कान्हा उपवन गौशाला को सर्वाधिक गौ-उत्पाद निर्मित करने के लिए 'विश्व रिकॉर्ड' से सम्मानित किया है। यह सम्मान प्राप्त करने वाली निगम की यह गौशाला देश ही नहीं समूचे विश्व की प्रथम गौशाला बन गयी है। गौशाला के वरिष्ठ प्रभारी/मुख्य अभियंता बी के सिंह, गौशाला प्रभारी/पशु चिकित्सा एवं कल्याण अधिकारी डॉ. संदीप मिश्रा तथा अपर नगरायुक्त राजेश यादव व मृत्युंजय ने नगरायुक्त शिपू गिरि को कान्हा गौशाला को प्राप्त विश्व रिकॉर्ड प्रमाण पत्र भेंट किया। इस उपलब्धि पर महापौर डॉ. अजय कुमार, नगरायुक्त शिपू गिरि ने हर्ष व्यक्त करते हुए निगम की टीम को बधाई दी हैं। वरिष्ठ प्रभारी गौशाला बी के सिंह ने बताया कि नगर निगम की मां शाकंभरी कान्हा उपवन गौशाला द्वारा 25 गौ-उत्पादों के साथ फरवरी 2025 में विश्व रिकार्ड के लिए आवेदन किया था। हालांकि अब निगम गौशाला में करीब 30 गौ उत्पाद बनाये जा रहे हैं। इन उत्पादों में दूध, घी व छाछ के अलावा गोबर से प्राकृतिक पेंट, वर्मी कम्पोस्ट, दिए, गणेश-लक्ष्मी व शिव की प्रतिमा, गाय बछड़े की मूर्ति, ओइ्म, स्वास्तिक, धूप बत्ती, हवन स्टिक, उपले, गौ-काष्ठ, प्राकृतिक गुलाल, पंचगव्य साबुन, सम्भ्रानी कप, राखी, नेम प्लेट, तोरणद्वार, तिरंगा चेष्ट बैज, कमल का फूल तथा बायो गैस और गौमूत्र से गौ-अर्क व गोनाइल(फिनाइल) आदि शामिल हैं। गौशाला प्रभारी/पशु चिकित्सा कल्याण अधिकारी डॉ. संदीप मिश्रा ने बताया कि 'इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्डर्स' के पास डेढ़ सौ से अधिक देशों के विभिन्न क्षेत्रों में वर्ल्ड रिकॉर्ड संग्रहित हैं। उन्होंने बताया कि यह सम्मान प्राप्त करने वाली निगम की यह गौशाला देश ही नहीं समूचे विश्व की प्रथम गौशाला बन गयी है।

निगम ने तीन सौ से ज्यादा अवैध होर्डिंग-बैनर उतरवाए

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। नगर निगम ने महानगर में अवैध होर्डिंग व बैनरों के खिलाफ एक विशेष अभियान चलाते हुए करीब सवा तीन सौ होर्डिंग व बैनर उतरवाए हैं। निगम द्वारा यह अभियान प्रदेश शासन के निर्देश पर चलाया जा रहा है। महानगर के खंभों, चौराहों एवं तिराहों पर अवैध होर्डिंग व बैनरों के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान के लिए दो टीमें लगायी गयी हैं। अपर नगरायुक्त राजेश यादव के दिशा निर्देशन तथा कर अधीक्षक सुरेंद्र सिंह व आर आई लोकेश कुमार के नेतृत्व में टीम ने मल्हीपुर रोड, सर्किट हाउस रोड, गंगोह रोड, दिल्ली रोड के अलावा घण्टाघर से राकेश केमिकल तक तथा घण्टाघर से नेहरु मार्किट होते हुए साईं मंदिर बेहट रोड तक अभियान चलाकर करीब सवा तीन सौ अवैध होर्डिंग व बैनर उतरवाए हैं। अपर नगरायुक्त राजेश यादव ने लोगों से कहा है कि वे शहर के खंभों व चौराहों-तिराहों पर सार्वजनिक सम्पत्ति पर अवैध होर्डिंग-बैनर न लगाएं।

गोबर बहाने वाली डेरियो की जांच कर कार्रवाई करें: नगरायुक्त

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। नगरायुक्त शिपू गिरि ने निगम के पशु चिकित्सा कल्याण अधिकारी को शहर में चल रही सभी डेरियों में साफ सफाई के सम्बंध में निर्देश दिए है। उन्होंने कहा कि यह जांच कर ले कि पशु डेरियों द्वारा नालियों में गोबर तो नहीं बहाया जा रहा है। नगरायुक्त ने कहा कि डेरियो द्वारा नालियों में बहाया जाने वाला गोबर नालियों को चौक करने का कारण बनता है। उन्होंने ऐसी डेरियों पर कार्रवाई के निर्देश दिए। नगरायुक्त ने यह निर्देश आज जनसुनवाई में वार्ड नंबर 4 सिद्धार्थ नगर के लोगों द्वारा की गयी एक पशु डेरी की शिकायत पर दिए। मौहल्लावासियों का कहना था कि एक डेरी द्वारा नालियों में गोबर बहाकर गंदगी फैलाई जा रही है। आज जनसुनवाई में आयी 8 शिकायतों में से 2 शिकायतों का निस्तारण किया गया। नगरायुक्त शिपू गिरि सहारनपुर नगर निगम में नगरायुक्त का पदभार ग्रहण करने के बाद आज पहली बार जनसुनवाई कर रहे थे। एक अन्य शिकायत के संदर्भ में उन्होंने मुख्य अभियंता निर्माण को शहर में टूटी पुलियों की मरम्मत कराने के भी निर्देश दिए। इसके अलावा सफाई सम्बंधी दो शिकायतों पर तत्काल कार्रवाई कराते हुए उनका निस्तारण किया गया। वार्ड 52 किला नवाग गंज के नवाब खान द्वारा गली नंबर दो में खराब पड़े हैण्ड पम्प को हटवाये जाने तथा वार्ड 13 चकहरेटी निवासी अगम शर्मा द्वारा दो प्याऊ में टंकी लगवाने हेतु प्रार्थना पत्र दिया गया। जिस पर सम्बंधित अधिकारियों को स्थलीय निरीक्षण कर कार्रवाई के निर्देश दिए गए। होटल रॉयल रेजिडेंसी के पास से दो बंदरों को पकड़वाने के लिए अनवार अहमद द्वारा प्रार्थना पत्र दिया गया। जिस पर निगम के पशु चिकित्सा कल्याण अधिकारी को निरीक्षण कर कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए।

मानव कल्याण के लिए करनी होगी जल जीव, जंगल की रक्षा : स्वामी प्रभाकर

अवधनामा संवाददाता

गोरखपुर। गोरखपुर जनर्लिस्ट्स प्रेस क्लब की तरफ से मंगलवार को विश्व पृथ्वी दिवस पर 'समाज, राष्ट्र एवं प्रकृति के संरक्षण में युवाओं की जवावदेही विषयक संवादपरक विमर्श' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित शिव आध्यात्मिक पीठ त्रिवेणी धाम से आए आध्यात्मिक-सामाजिक चिंतक स्वामी प्रभाकर शिव ने कहा कि पृथ्वी की रक्षा सीधे तौर पर मानव कल्याण से जुड़ा है और मानव कल्याण के लिए जल, जीव और जंगल की रक्षा करनी होगी। जल, जीव और जंगल की रक्षा के माध्यम से पृथ्वी के संरक्षण की आज सबसे बड़ी जिम्मेदारी युवाओं के कंधे पर है। कार्यक्रम में स्वामी प्रभाकर शिव ने कहा कि समय के बीतते कालखंड के साथ धरती माता

से हम लोग सबकुछ लेते गए लेकिन उनके संरक्षण के प्रति अपनी जवावदेही को कहीं न कहीं भूलते गए। उन्होंने कहा कि जैसे हम अपने पाल्यों को बचपन से ही ज्ञान की अनेक बातें सिखाते हैं, वैसे ही पृथ्वी के प्रति सम्मान और इसके संरक्षण के लिए किए जा सकने वाले कार्यों के प्रति भी जागरूक करना होगा। उन्होंने कहा कि प्रकृति का संरक्षण करने के हमें खुद ही पहल करनी होगी अन्यथा प्रकृति जब अपने हिसाब से खुद को संरक्षित करने की दिशा में आगे बढ़ेगी तो उसका असर झेल पाना दुनिया के बड़े से बड़े देशों के लिए मुश्किल होगा। उन्होंने कोविड काल का उदाहरण देते हुए कहा कि यह आपदा का ऐसा दौर था जब सभी लोग किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति में थे। उन्होंने कहा कि प्रकृति के प्रति दोहक या शोषक की मानसिकता की बजाय पोषक की मानसिकता का भाव वर्तमान और आने वाली पीढ़ी के मन में जगाना होगा। उन्होंने कहा कि किसी भी समाज या राष्ट्र का युवा जवावदेह बन जाएगा तो प्रकृति से जुड़ी सभी समस्याओं का काफी हद तक समाधान हो जाएगा। स्वामी प्रभाकर ने एक खुले सत्र में कई पत्रकारों के सवालों का सविस्तार जवाब दिया। विषय प्रवर्तन करते हुए वरिष्ठ पत्रकार डॉ. विश्वमित्र भट्ट ने कहा कि भारत की विचार परम्परा और संस्कृति में पृथ्वी को माता माना गया है। आज पृथ्वी पर जो भी संकट हैं उनका समाधान तभी संभव है जब धरती का ख्याल उसी भाव से रखा जाए जैसे अपनी मां का रखा जाता है। कार्यक्रम में स्वागत संबोधन गोरखपुर जर्नलिस्ट्स प्रेस क्लब के अध्यक्ष रीतेश मिश्र और आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष भूपेंद्र द्विवेदी ने किया।

स्वर्गीय भरत लाल उपाध्याय की 27वीं पुण्यतिथि मनी

गोरखपुर। नगर पंचायत सहजनवा वार्ड नंबर 4 में स्वर्गीय भरत लाल उपाध्याय की 27वी पुण्यतिथि मनाई गई। कार्यक्रम के दर्जनों लोग शरीक हुए। इस मौके पर उनकी पत्नी गायत्री देवी ने अपने पति को श्रद्धांजलि देते हुए कही कि एयर फोर्स में रहते उन्होंने देश की सेवा की वे हमेशा समाजसेवा में संघर्षरत रहे। उन्होंने अपना जीवन मानव व समाज सेवा में अर्पित कर दिया। वहीं उनके पुत्र आनंद कुमार उपाध्याय ने अपने पिता के बताएं रास्तों पर चलने की बात कही, और कहा कि हम सब सदैव में समाज सेवा के लिए तत्पर है। उनका सामाजिक समरसता का सपना था। वे अपने पिता के सपनों को पूरा करने को सतत प्रयत्नशील हू। इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत स्व. भरत लाल उपाध्याय के चित्र पर परिजन द्वारा पुष्प अर्पित कर किया गया। इसके बाद आगंतुकों ने पुष्प अर्पित किया। तत्पश्चात दो मिनट का मौन रखकर मृत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई। श्रद्धांजलि देने वालों में स्व. उपाध्याय की पत्नी गायत्री देवी, पुत्र आनंद मोहन उपाध्याय, श्रवण कुमार पाडेय, प्रभात क्याल, जयकरन यादव अमरनाथ यादव, सूर्योदय सिंह सोलंकी, अजय शुक्ल, सर्वेश पांडेय केशव त्रिपाठी, योगेंद्र यादव, पवन सिंह आदि उपस्थित रहे।

श्रीमती रवि कैंसर सेवा केंद्र ने केजीएमयू में कैंसर ग्रस्त बच्चों को बांटा पानी व बिस्कुट

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। अस्पताल में एक बार जाकर देखिए समझ में आ जाएगा कि अपनों की जिंदगी बचाने के खातिर लोग किस कदर लाचार है। गंभीर मरीजों की तो बात ही छोड़िए. ऐसे मरीजों के इलाज के लिए पूरे प्रदेश से राजधानी लखनऊ की किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी उम्मीद की आखिरी किरण है। जहां बेकाबू बीमारी से जिंदगी बचाने के लिए लोग इस तेज गर्मी में खुली धूप के नीचे पड़े रहते हैं .ना खाने पीने की फिक्र,ना लखनऊ जैसे बड़े शहर में कोई परिचित . फिर भी एक भरोसे के बल पर अपने मरीज का इलाज महीना यहां रुक कर लोग करवा रहे हैं कि उनका मरीज जरूर ठीक हो जाएगा।

श्रीमती रवि कैंसर सेवा केंद्र मरीजों की सेवा में विगत 5 वर्षों से अनवरत कार्य कर रहा है. प्रत्येक रविवार को केजीएमयू एवं ट्रॉमा सेंटर में मरीज एवं तीमारदारों के लिए खाने पीने का सामान तथा जरूरत की चीज

निशुल्क वितरित की जाती है। इसी क्रम में आज केजीएमयू परिसर में ठंडा पानी की बोतल व बिस्किट का निशुल्क वितरण किया गया। आज वितरण कार्यक्रम के अंतर्गत श्रीमती रवि कैंसर सेवा केंद्र के संयोजक अमित कुमार 3 साल के बच्चे इकबाल से मिले। जिसके माता-पिता बाल रोग विभाग के बाहर बैठे थे. बच्चे को जब पानी की बोतल व बिस्किट का पैकेट दिया तो उसने प्यारी सी मुस्कुराहट दी। लेकिन झटका तब लगा जब उसके पिता शमशुल ने बताया कि उसको ब्लड कैंसर है और उसे शाहजहांपुर से यहां रेफर किया गया है। कल डॉक्टर उसके इलाज को शुरू करेंगे। 3 साल के बच्चे को देखकर और उसे मुस्कुराते हुए देखकर उसके अंदर के दर्द को नहीं समझा जा सकता। फिलहाल श्रीमती रवि कैंसर सेवा केंद्र ने इलाज के लिए पूरी मदद देने का विश्वास उसके माता-पिता को माता-पिता को दिलाया। इसी तरह 11 साल के बबलू के गले में गांठ है। बाराबंकी निवासी बबलू का इलाज करने के लिए उसके पिता साथ आए हैं। इसी तरह बाल रोग विभाग में कैंसर बीमारी से पीड़ित बच्चे अपने इलाज के लिए यहां आए हैं। आज के वितरण कार्यक्रम में अशोक श्रीवास्तव, नव लता वर्मा का बहुत सहयोग रहा। जो भले ही केजीएमयू नहीं पहुंच पाए. लेकिन ऐसे पानी के दानी व मानवता के सेवकों ने मरीजों के लिए पानी की ठंडी बोतले, व खाने का सामान सेवा केंद्र को उपलब्ध कराया।

एमएनसी में चयनित एमजीयूजी के दो विद्यार्थी

संबद्ध स्वास्थ्य संकाय के विद्यार्थी हैं दोनों, एक छात्रा ने आईआईटी जेम क्वालीफाई किया

गोरखपुर अवधनामा संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के दो विद्यार्थियों का चयन मल्टीनेशनल कंपनियों (एमएनसी) में हुआ है। एमएससी बायोटेक्नोलॉजी के छात्र राजेश्वर कुमार का चयन सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ़ फार्मेसी दिल्ली में 4.35 लाख रुपये के वार्षिक पैकेज पर जबकि अमित मल्ल का चयन हिंदुस्तान यूनिलिवर लिमिटेड रुड़की में क्वालिटी कण्ट्रोलर के पद पर 2.55 लाख वार्षिक पैकेज पर हुआ है। संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने बताया कि दो छात्रों के एमएनसी में चयन होने पर विश्वविद्यालय में हर्ष का माहौल है। विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के प्लेसमेंट के लिए निरंतर कंपनियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर ज्यादा से ज्यादा प्लेसमेंट कराने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि उपलब्धियों के क्रम में ही संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय की बीएससी बायोटेक्नोलॉजी अंतिम वर्ष की छात्रा सौम्या सिंह ने आईआईटी जेम क्वालीफाई किया है। मल्टीनेशनल कंपनियों में छात्रों के चयन और एक छात्रा के आईआईटी जेम क्वालीफाई करने पर गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव सहित समूचे विश्वविद्यालय परिसर ने बधाई दी है।

भारतीय किसान यूनियन भानू ने मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन उपजिलाधिकारी कायमगंज को सौंपा

अवधनामा संवाददाता

फर्रुखाबाद। दिनांक 22/04/2025 को भारतीय किसान यूनियन भानु ने जनसमस्याओं को लेकर मुख्यमंत्री को संबोधित 5 सूत्रीय ज्ञापन ज्ञापन उपजिलाधिकारी कायमगंज को सौंपा। जनहित में भारतीय किसान यूनियन (भानू) का ज्ञापन/मांग-पत्र निम्न प्रकार से है उत्तर प्रदेश में शिक्षा जैसा बुनियादी अधिकार निजी संस्थाओं के लिए मुनाफा का जरिया वन चुका है। प्राइवेट स्कूल सुविधाओं की आढ में अभिभावको से मनमाना शुल्क वसूल रहे है, ड्रेस, किताबे, यूनीफार्म, कोचिंग, एडमीशन, जूते, बैग, प्रतिवर्ष मंहगी फीस को इन्होने अनिवार्य वना दिया है। स्कूल दाखिले के लिए लाखो का डोनेशन ले रहे है, किताबें स्कूल के किसी अधिकृत वेण्डर से ही खरीदनी होती है जिसका मूल्य बाजार दर से कई गुना अधिक होता है जिसमें किताबों में स्कूल का कमीशन सामिल रहता है।

पढाई के नाम की चीज नही है, स्कूलो में 4-5 हजार रूपया प्रतिमाह के अध्यापक डियूटी कर रहे है जो सरकारी मानक से कही बहुत कम बेतन पाते है, बच्चे दिन भर स्कूल फिर कोचिंग, होमवर्क बच्चो

को खेलने का मौका ही नही मिलता है बच्चे हीन भावना से ग्रसित हो रहे है। उत्तर प्रदेश सरकार ऐसी समस्याओं पर जांच कर तत्काल अंकुश लगाये। स्वास्थ्य जैसी समस्यायें भी भयावह है। प्राइवेट अस्पतालो ने कमाई का जरिया बना लिया है, उद्योग का दर्जा हासिल कर रहे है। प्राइवेट अस्पतालो ने मंहगी दवाईयां, आई0सी0यू0 और एडवांश पेमेन्ट की मांग जो भी विना बताये मरीज की स्थिति क्या है, सामान्य सर्दी, खासी, बुखार को भी डाक्टर ऐसा बताते है कि मानो जीवन संकट में है, मराऊ मरीजो का भी जवरदस्ती इलाज होता है, यदि मरीज ठीक भी हो गया तो बिल देखकर मर जाता है दस रूपये वाली दवा 200/-रू0 की मिलती है, यहां तक मौत के बाद भी लाश को एक दो दिन रोककर मोर्चरी चार्जेज, फ्रीजर चार्जेज आदि के नाम पर अवैध वसूली होती है, मरीज की अन्तिम सास तक पैसा वसूला जाता है। उस परिवार के साथ बहुत बडा क्रूर मजाक होता है तो अपनो को खो चुका है, जांच कर प्राइवेट अस्पतालो पर सख्त कार्यवाही की जावे।

महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर की जागरूकता के लिए वीमेंस कार रैली का आयोजन

लखनऊ अवधनामा संवाददाता। बाराबंकी, फैजाबाद सहित लखनऊ के सभी 10 इनर व्हील क्लब ने मिलकर वुमेन कार रैली का आयोजन सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम की थीम पर किया जिसका उद्देश्य महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर के प्रति जागरूकता फैलाना था। रैली का शुभारंभ इंटरनेशनल इनर व्हील क्लब की प्रेसिडेंट ममता गुप्ता और जिला अध्यक्ष आशा अग्रवाल ने हरी झंडी दिखाकर रवाना की। रैली गोमती नगर के मरीन ड्राइव से प्रारंभ होकर जी 20 चौराहे होते हुए गोमती नगर स्थित होटल ग्रैंड जी बी आर पर समाप्त हुई। रैली में 50 से अधिक गाड़ियों ने हिस्सा लिया। कार रैली के सफल आयोजन में इनर व्हील क्लब ऑफ़ लखनऊ की सेक्रेटरी कविता अग्रवाल और अन्य सदस्य अनुराधा अग्रवाल अनामिका वोहरा,पूजा अग्रवाल का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस अवसर पर रैली की कन्वीनर डॉक्टर वर्षा कुमार को- कन्वीनर मधु भार्गव, अध्यक्ष सरिता अग्रवाल, प्रेसिडेंट संगीता मित्तल और कोषाध्यक्ष अनुपम अग्रवाल उपस्थित रही।

अपर निदेशक ने किया सहजनवा सीएचसी का निरीक्षण

गोरखपुर अवधनामा संवाददाता। अपर निदेशक स्वस्थ डा. जयंत कुमार ने सहजनवा के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का आकस्मिक निरीक्षण किया। अचानक अपर निदेशक को वहां देखकर स्टाफ में हड़कंप मच गया। निरीक्षण के दौरान डा जयंत कुमार ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर ओपीडी, कोल्ड चैन, दवाओं का स्टॉक, अस्पताल परिसर की साफ -सफाई और पेयजल व्यवस्था का जायजा लिया। प्रसव कक्ष में निरीक्षण के दौरान उन्होंने अनियमितताओं को लेकर नाराजगी जताई। उन्होंने स्टाफ नर्स को उपकरणों के प्रयोग करने के तरीके बताए और कहा कि प्रसूता को प्रसव होने के अड़तालीस घटे के बाद ही घर जाने दें। प्रसूता के खानपान के लिए शासन के द्वारा जो खाद्य सामग्री मेन्यू में बताई गई है उसे नियमानुसार प्रसूता को खाने को अवश्य दें। अस्पताल परिसर में साफ सफाई कराने के निर्देश दिए। संबंधित पत्रावली का निरीक्षण किया। दवाओं की अनुपलब्धता और चिकित्सकों की कमी के बारे में अपर निदेशक डा जयंत कुमार ने बताया कि इस बारे में शासन को अवगत कराया जाएगा। निरीक्षण के दौरान आदि मौजूद रहे।, डा डब्लू पाण्डेय, डीपीएम अरविंद पाण्डेय, के एन बरनवाल डा ब्यास कुशवाहा, अरुण दीक्षित, विवेक कुमार सहित कई लोग मौजूद रहे।

जिला सहकारी बैंक फर्रुखाबाद के मुख्यालय भवन में एक राष्ट्र एक चुनाव विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई

अवधनामा संवाददाता

फर्रुखाबाद। दिनांक 22 अप्रैल 2025 दिन मंगलवार को जिला सहकारी बैंक लिमिटेड फर्रुखाबाद के मुख्यालय भवन में एक राष्ट्र एक चुनाव विषय पर एक महत्वपूर्ण संगोष्ठी का आयोजन बैंक के अध्यक्ष कुलदीप गंगवार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ जिसमें मुख्य अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष फतेहचंद वर्मा ने एक राष्ट्र एक चुनाव विषय की महत्वता के बारे में विस्तार से बताया एवं इससे होने वाले लाभ के बारे में भी चर्चा की।

मुख्य अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष फतेहचंद वर्मा ने कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने देश में एक राष्ट्र एक चुनाव को लागू करने की बात कही है भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए वन नेशन वन इलेक्शन लागू होना जरूरी है इसके लिए सामाजिक संस्थाओं एवं हर वर्ग के बीच इसको

लेकर चर्चा चल रही है यह मुद्दा राष्ट्र के लिए बेहद जरूरी है 1951 से लेकर 1967 तक देश में एक साथ चुनाव होते रहे हैं लेकिन राजनीतिक पार्टियों की महत्वाकांक्षाओं के कारण यह सिलसिला रुका जिसके कारण देश में हो रहे विकास की गति मंद पड़ गई।

आज फिर एक बार इसको लेकर चर्चा चल रही है देश की 80त्न आबादी और 80त्न राजनीतिक दल इसके पक्ष में है। इस पर सार्थक चर्चा के बीच यह देश में जब लागू होगा तो भारत मजबूत राष्ट्र के रूप में विकसित होगा। कोऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष कुलदीप गंगवार ने कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस महत्वपूर्ण विषय पर जो पहल शुरू की है वह बहुत ही सराहनीय है प्रधानमंत्री के नेतृत्व बल्कि सरकार निरंतर कई ऐसे ऐतिहासिक निर्णय ले रही है जिससे भविष्य में देश की आर्थिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था मजबूत हो रही है। कोऑपरेटिव बैंक के उपाध्यक्ष डॉ भूदेव सिंह राजपूत ने कहा विकसित राष्ट्र तभी होगा जब एक राष्ट्र एक चुनाव लागू होगा इसके लिए हर वर्ग को आगे आने की जरूरत है या सिर्फ मुद्दा ही नहीं बल्कि आंदोलन है जल्द से जल्द सरकार इस पर फैसला करें।

छठी माता मंदिर का होगा पर्यटन विकास

उरई (जालौन)। प्रदेश सरकार द्वारा जनपद में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से छठी माता मंदिर में पर्यटन विकास कार्य प्रारंभ किए जा रहे हैं। इस परियोजना के अंतर्गत कुल 95.28 लाख रुपये की धनराशि स्वीकृत की गई है। क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी कीर्ति सिंह ने बताया कि यह कार्य उत्तर प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम लिमिटेड के माध्यम से संपन्न कराया जाएगा। परियोजना का उद्देश्य श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराना है, जिससे न केवल स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि प्रदेश में पर्यटन अवस्थापना सुविधाओं में भी व्यापक विकास होगा। छठी माता मंदिर परिसर में प्रस्तावित कार्यों में यात्री हॉल का निर्माण, पेयजल व्यवस्था एवं बोरिंग, प्रसाधन (शौचालय), कोटा पत्थर से फर्श एवं प्लेटफॉर्म निर्माण, प्लेटफॉर्म शेड, गजीबो (विश्राम स्थल), इंटरलॉकिंग टाइल्स, डस्टबिन, सोलर लाइट, म्यूरल (चित्रांकन) और साइन बोर्ड आदि शामिल हैं। परियोजना के पूर्ण होने से न केवल स्थानीय जनता को सुविधाएं मिलेंगी।

अलीगढ़ आवास विकास के इंजीनियरों द्वारा भारी भ्रष्टाचार, बिना नक्शा अवैध निर्माण, आवासीय भूमि पर हॉस्पिटल का निर्माण

अलीगढ़ अवधनामा संवाददाता। आवास विकास परिषद अलीगढ़ के अधिकारियों के भ्रष्टाचार की पोल की परत दर परत खुलती जा रही है। जानकारी अनुसार शहर की सबसे पुरानी आवास विकास कालोनी सासनी गेट पर पुनः विक्री किए गए एमआईजी, एचआईजी बिना नक्शा पास 4 से 5 मंजिल घरों का

निर्माण जारी है। यही नहीं इसी जगह पर आवासीय भूमि पर शहर की एक डॉक्टर अंजुला भार्गव द्वारा अस्पताल का निर्माण कार्य कराया जा रहा है। यह निर्माण कार्य 4 मंजिल तक पूरा हो चुका है। इस संबंध में विभाग के अधिशाषी अभियंता सस्मित कटियार से वार्ता की गई तो उन्होंने कहा कि ऐसा कोई कार्य नहीं हो रहा है और इसकी जानकारी मुझे नहीं है। जब उनसे कहा गया कि एक नहीं 5 भूखंडो में 4 -4 मंजिल के 4 निर्माण कार्य हो रहे हैं वही एक अस्पताल भी बनवाया जा रहा है। उसके बाद यह सब सुन उन्होंने चुप्पी साधी। इसके बाद सहायक अभियंता मुकेश पाल सिंह का हमारे प्रतिनिति पर फोन आया और कहा की हम जांच कराकर नोटिस जारी करेंगे। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि सहायक अधिशाषी अभियंता मुकेश पाल सिंह, जेई आदित्य मिश्रा सहित सभी अधिकारियों ने घूस लेकर अपनी आंखों पर पट्टी बांध मौखिक परमिशन दे रखी है इसी लिए बेधड़क निर्माण कार्य जारी है। यहां यह भी अवगत कराना है कि आवास विकास परिषद का नोटिस नोटिस का खेल पुराना है। नोटिस भेज यह अपने भ्रष्टाचार पर पर्दा डालते हैं। जिले के डीएम और आयुक्त ईमानदार की श्रेणी में आते हैं फिर ऐसे भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही क्यों नहीं कर पा रहे हैं।

सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का निकली कलश यात्रा

गोरखपुर अवधनामा संवाददाता। सहजनवां तहसील अन्तर्गत विकासखंड खण्ड पाली क्षेत्र के ग्राम पंचायत माधोपुर में भव्य मंगल कलश शोभायात्रा व मंत्र ध्वनि के साथ सात दिवसीय श्रीमद्भागवत महापुराण सप्ताह महायज्ञ का शुभारंभ माधोपुर में हुआ। शोभायात्रा में अयोध्या से पधारे कथा वाचक सुधांशु जी महाराज के नेतृत्व में गाजे बाजे व ढोल नगाड़ों के साथ रंग बिरंगे परिधानों में कुंवारी कन्याएं और विवाहित महिलाओं ने सिर पर कलश लेकर यज्ञ स्थल से तीन किलोमीटर दूर राप्ती नदी घाट से पवित्र जल भर कर पैदल पुनः यज्ञ स्थल पहुंची. सभी ने महाप्रसाद ग्रहण किया। माधोपुर निवासी मुख्य यजमान ओम प्रकाश सिंह से भगवान विष्णु के विशेष पूजा से प्रारंभ करवाया गया। मौके पर कथा वाचक सुधांशु जी महाराज ने श्रीमद् भागवत महापुराण कथा ज्ञान यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डाला।

विश्व पृथ्वी दिवस पर पौधारोपण, पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

उरई (जालौन)। विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर जनपद में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए कलेक्ट्रेट परिसर में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय, अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) संजय कुमार तथा नगर मजिस्ट्रेट राजेश कुमार वर्मा सहित कलेक्ट्रेट के अन्य कर्मचारियों ने सहभागिता निभाई। कार्यक्रम के तहत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पांच-पांच पौधे रोपित किए और उन्हें संरक्षित रखने का संकल्प लिया। जिलाधिकारी ने अपने संबोधन में कहा कि पृथ्वी दिवस का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण और जल संरक्षण के प्रति जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि यदि हम आज सजग नहीं हुए तो भविष्य में प्राकृतिक संसाधनों का संकट और गहराता जाएगा। जिलाधिकारी ने पौधों की देखभाल एवं संरक्षण की जिम्मेदारी डिप्टी कलेक्टर अतुल कुमार को सौंपी है, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि लगाए गए पौधे सुरक्षित रूप से विकसित हों।

सूचना

मा.सिविल जज (सीडि) चतुर्थ सहारनपुर वाद सं.122 सन 2020 कुमारी शिवांसी पुत्री स्व. श्री पवन किशोर निवासी इन्द्रप्रस्थ कालोनी, रोहतेश्वर मंदिर के पीछे ब्लॉक बलियाखेडी के पास, दिल्ली रोड, परगना तहसील व जिला सहारनपुर। द्वारा अपनी माता हकीकी व न्यायालय द्वारा नियुक्त संरक्षक श्रीमती पूनम पत्नी अश्वनी कुमार नि. इन्द्रप्रस्थ कालोनी, रोहतेश्वर मंदिर के पीछे ब्लॉक बलियाखेडी के पास, दिल्ली रोड, प., तह. व जिला सहारनपुर (वादनी).बनाम कमल किशोर आदि बनाम. .5 -श्रीमती रेखा रानी पत्नी श्री कंवरपाल सिहं निवासी ग्राम गोपालपुर डाकखाना मुन्डलाना जिला हरिद्वार।उत्तराखण्ड (प्रतिवादिनी) हरगाह वादी ने आपके नाम एक नालिश बाबत के दायर की है कि लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप दिनांक 9/5/2025 को 10 बजे दिन के स्वयं या मार्फत वकील जो मुकदमा के हालात से वाक़िफ़ किया गया हो और मुकदमे के सवालात का जवाब दे सके या कोई शख्स हो कि जवाब ऐसे प्रश्नों का दे सके हाजिर हो और जवाब देही दावा करे अगर वक्त मुक़र्र पर आप हाज़िर ना होंगे तो मुक़दमा बग़ैर हाज़िरी आपके समात एवं हुक्म मुनासिब निस्ब दर्खास्त से सादिर होगा। मेरे द्वारा दि.9/4/25 को न्याय मुद्रा सहित जारी हुआ।

आज्ञा से मुंसरिम. सिविल जज (सीडी 4th) सहारनपुर

उत्तर रेलवे

ई–ऑक्शन सूचना

वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबन्धक, उत्तर रेलवे, लखनऊ के द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु ई–ऑक्शन से सम्बन्धित सूचना

एडमिन यूनिट/जोन	लखनऊ-उ.रे.- मण्डल-वाणिज्य/उ.रे.	नीलामी सूची सं./लॉट सं.	ADVT-LKO-LKO-OSN-505-24-3 (Advertising On Station Premise (Non Digital)
नीलामी सूची प्रकाशन तिथि	11.04.2025	नीलामी प्रारम्भ तिथि (समस्त लॉट)	26.04.2025 समय 10:00 बजे
नीलामी बन्द करने की तिथि व समय	26.04.2025 समय 10:30 बजे	नीलामी का प्रकार	Close Ended
वेबसाइट विवरण जहाँ पंजीकृत बोलीदाताओं द्वारा नीलामी का पूरा विवरण देखा जा सकता है।			E- Auction Module of www.ireps.gov.in

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ 1184/2025

अवैध अल्ट्रासाउंड और पैथोलॉजी सेंटरों का जाल, मरीजों के स्वास्थ्य से खिलवाड़

अवधनामा संवाददाता

बस्ती। जनपद बस्ती में मरीजों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने वाले अवैध अल्ट्रासाउंड सेंटरों, नर्सिंग होम और पैथोलॉजी सेंटरों का जाल फैला हुआ है। स्थानीय निवासी राजेश कुमार पाण्डेय ने आयुक्त महोदय, बस्ती को पत्र लिखकर इस गंभीर समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया है। उनके अनुसार, जिले में कई अवैध सेंटर बिना वैध लाइसेंस और नियमानुसार संचालित हो रहे हैं, जो मरीजों से मोटी रकम वसूल कर गलत रिपोर्ट दे रहे हैं। इससे न केवल मरीजों का आर्थिक शोषण हो रहा है, बल्कि उनके स्वास्थ्य और जीवन को भी गंभीर खतरा उत्पन्न हो रहा है।

राजेश कुमार पाण्डेय ने अपने पत्र में कई अवैध रूप से संचालित सेंटरों के नाम उजागर किए हैं, जिनमें फातिमा क्लीनिक, जीवन दायनी क्लीनिक, मंसूरी फातिमा क्लीनिक, पलक क्लीनिक, एस.आर.एस. पैथोलॉजी, कृष्णा पैथोलॉजी, हेल्थ सिटी पैथोलॉजी, एच.आर. पैथोलॉजी और पी.एम.राव. क्लीनिक शामिल हैं। उन्होंने आरोप लगाया है कि ये सेंटर न तो स्वास्थ्य विभाग के नियमों

का पालन करते हैं और न ही उनके पास आवश्यक मानकों के अनुरूप उपकरण और प्रशिक्षित कर्मचारी हैं। इसके बावजूद, ये सेंटर मरीजों को भ्रामक रिपोर्ट देकर उनकी जान से खिलवाड़ कर रहे हैं। पाण्डेय ने पत्र में बताया कि कई बार मरीजों को गलत निदान के आधार पर अनावश्यक और खतरनाक उपचार दिए जा रहे हैं, जिससे उनकी स्थिति और बिगड़ रही है। उन्होंने आयुक्त महोदय से मांग की है कि इन अवैध सेंटरों की गहन जांच कराई जाए और दोषी पाए जाने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए। उन्होंने यह भी जोड़ा कि यदि समय रहते इस समस्या पर ध्यान नहीं दिया गया, तो यह जनपद के लिए एक बड़ा स्वास्थ्य संकट बन सकता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस तरह के अवैध सेंटरों की मौजूदगी से आम जनता में भय और अविश्वास का माहौल है। कई मरीजों ने शिकायत की है कि इन सेंटरों में जांच के नाम पर उनसे हजारों रुपये वसूले जाते हैं, लेकिन नतीजे या तो गलत होते हैं या अस्पष्ट। एक स्थानीय निवासी राम प्रसाद ने बताया, ÷हमारे पास कोई विकल्प नहीं होता, क्योंकि सरकारी अस्पतालों में भीड़ और सुविधाओं की कमी है। मजबूरी में हमें इन सेंटरों पर जाना पड़ता है, लेकिन वहां भी ठगी का शिकार होना पड़ता है। स्वास्थ्य विभाग के सूत्रों के अनुसार, अवैध अल्ट्रासाउंड और पैथोलॉजी सेंटरों के खिलाफ कार्रवाई के लिए समय-समय पर अभियान चलाए जाते हैं, लेकिन स्थानीय स्तर पर मिलीभगत और लापरवाही के कारण ये सेंटर फिर से संचालित होने लगते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि इन सेंटरों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई के लिए नियमित निगरानी, कड़े नियम और जन जागरूकता की आवश्यकता है। राजेश कुमार पाण्डेय ने अपने पत्र के अंत में जोर देकर कहा, मरीजों का जीवन अनमोल है। इन अवैध सेंटरों को बंद करना और दोषियों को सजा देना न केवल प्रशासन की जिम्मेदारी है, बल्कि यह समाज के प्रति हमारा नैतिक कर्तव्य भी है। उनकी इस शिकायत ने जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग पर दबाव बढ़ा दिया है। अब देखना यह है कि इस गंभीर मुद्दे पर प्रशासन कितनी तत्परता से कार्रवाई करता है।

सूचना

मैं मान सिंह व कुलदीप सिंह पुत्रगण भीम सिंह व आरती सिंह व कंचन सिंह पुत्री गण भीम सिंह निवासी 276/40 ख छेदा ख्वास पुरवा नाका हिंडोला लखनऊ सर्व साधारण को सूचित करते हैं। मेरा भाई अमरदीप सिंह उर्फ़ भोलू जो की भीषण नशे का आदि है एवं झगड़ालू प्रवृत्ति के साथ ही गलत चाल चलन का है जिसको काफी समझाया लेकिन वह मानने को तैयार नहीं है जिससे समाज में छवि काफी ख़राब हो रही है। हम लोगों से भी गाली गलौज और मारपीट करता है। हम सब आज से घोषणा करते हैं कि अमरदीप सिंह उर्फ़ भोलु का हम लोगों से कोई संबंध नहीं है न ही उसके किसी कृत्य से हम लोगों का कोई संबंध होगा।

मान सिंह व कुलदीप सिंह पुत्रगण भीम सिंह व आरती सिंह व कंचन सिंह पुत्री गण भीम सिंह निवासी 276/40 ख छेदा ख्वास पुरवा नाका हिंडोला लखनऊ

अवधनामा

लखनऊ, बुधवार, 23 अप्रैल, 2025

डिप्टी सीएम केशव मौर्य का बड़ा हमला-ममता सरकार को बताया दंगाइयों की संरक्षक, 2027 में भाजपा की जीत का दावा

अवधनामा संवाददाता

अयोध्या। प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने मंगलवार को अयोध्या में भारतीय जनता पार्टी के एक कार्यक्रम के दौरान पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि आगामी चुनावों में न तो तृणमूल कांग्रेस को बहुमत मिलेगा और न ही ममता बनर्जी सत्ता में लौटेंगी।डिप्टी सीएम ने कहा, पश्चिम बंगाल में तुष्टिकरण की राजनीति ने सारी सीमाएं लांघ दी हैं। वहां दंगाइयों को सरकार का संरक्षण प्राप्त है। हिंदुओं की हत्याएं हो रही हैं और उन्हें पलायन के लिए मजबूर किया जा रहा है। महिलाओं के साथ जो अत्याचार हो रहे हैं, वे अमानवीय हैं और शब्दों में बयान नहीं किए जा सकते।÷पुलिस लाइन में पत्रकारों से अनौपचारिक बातचीत के दौरान उन्होंने सपा प्रमुख अखिलेश यादव के पुलिस भर्ती को लेकर दिए गए बयान पर पलटवार करते हुए कहा, ÷अखिलेश यादव 2027 में सत्ता पाने का सपना देख रहे थे, लेकिन अब उनका सपना चकनाचूर हो चुका है। बौखलाहट में वह उल्टे-सीधे बयानबाजी कर रहे हैं।÷डिप्टी सीएम ने आगे कहा कि ÷समाजवादी पार्टी के शासनकाल में भर्ती में पैसों का खेल होता था, जबकि हमारी सरकार में पारदर्शी तरीके से भर्ती हो रही है। प्रदेश का युवा संतुष्ट है, और अगर कोई असंतुष्ट है तो वो सिर्फ सपाई हैं।÷वक्फ संशोधन बिल पर बोलते हुए मौर्य ने कहा कि यह देश के 90त्न मुसलमानों के हित में है और जैसे ही बीजेपी ने जन जागरण अभियान चलाया, विपक्षी दलों में हलचल मच गई। ÷सपा, कांग्रेस और टीएमसी को डर है कि कहीं यह जन जागरण अभियान सफल न हो जाए और 2027 में मुस्लिम वोटों पर भी उनका दावा खत्म न हो जाए।÷ डिप्टी सीएम के अयोध्या आगमन पर पुलिस लाइन हेलीपैड पर उनका भाजपा नेताओं ने भव्य स्वागत किया। स्वागत करने वालों में पूर्व विधायक इंद्र प्रताप तिवारी (खब्बू तिवारी), गोरखनाथ बाबा, पूर्व जिलाध्यक्ष अवधेश पांडे बादल और पूर्व महानगर अध्यक्ष अभिषेक मिश्रा समेत कई पार्टी पदाधिकारी मौजूद रहे।

ससुराल पहुंचते ही नवविवाहिता ने किया शमी वृक्ष का पौधारोपण, दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

बीकापुर, अयोध्या। विकास खंड बीकापुर क्षेत्र के पातूपुर गांव में एक अनोखी मिसाल सामने आई जब विवाह के बाद नई नवेली दुल्हन ने ससुराल पहुंचते ही पारंपरिक रस्मों के साथ पर्यावरण संरक्षण की अनूठी पहल की। दुल्हन पुष्पा ने अपने पति मुकुल आनंद के साथ शमी के पौधे का रोपण कर गृहस्थ जीवन की शुरुआत की और लोगों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।मुकुल आनंद, जो प्रधान संघ के जिला सचिव हैं, का विवाह हैरिंग्टनगंज विकासखंड के परुवा गांव निवासी परास्नातक शिक्षित पुष्पा से संपन्न हुआ। सोमवार शाम जब नवविवाहिता अपने ससुराल पातूपुर पहुंची, तो उन्होंने गृह शांति और मंगलकामना के लिए पौधरोपण की इच्छा जताई।शास्त्रों के अनुसार सुख, समृद्धि और शांति का प्रतीक माने जाने वाले शमी वृक्ष का विधिवत रोपण आचार्य पंडित दिनेश तिवारी द्वारा मंत्रोच्चार के बीच कराया गया। इस अवसर पर बुद्धम शरणं गच्छामि का उद्घोष कर वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया गया।

नवीन सब्जी मंडी अव्यवस्थाओं की भेंट चढ़ी, लाइसेंसधारी व्यापारी परेशान

गोशाईगंज-अयोध्या। नवीन सब्जी मंडी गोशाईगंज में व्याप्त अव्यवस्थाएं अब विकराल रूप ले चुकी हैं। वर्षों से लाइसेंसधारी व्यापारी मंडी परिसर में स्थायी जगह की मांग कर रहे हैं, लेकिन प्रशासन की उदासीनता के चलते अब तक उन्हें समाधान नहीं मिल सका है। मंडी में कुल 269 लाइसेंसधारी व्यापारी पंजीकृत हैं, जो नियमित रूप से राजस्व भी देते हैं, जबकि 3,000 से 3,500 अवैध रूप से दुकानें लगाकर व्यापारी व्यापार कर रहे हैं।

सूत्रों के अनुसार, ये अवैध दुकानदार प्रतिदिन 50-100 रुपये उन लाइसेंसधारी व्यापारियों को देते हैं जिनके सामने वे दुकानें लगाते हैं। व्यापारियों का आरोप है कि यह पूरी वसूली मंडी सचिव की मिलीभगत से संचालित हो रही है, जो वर्षों से चले आ रहे इस भ्रष्टाचार को संरक्षण दे रही है।

हीट वेवः अवध विवि विद्यार्थियों, शिक्षकों व कर्मचारियों को करेगा जागरूक

अवधनामा संवाददाता

अयोध्या। डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो0 प्रतिभा गोयल के निर्देश पर विश्वविद्यालय ने हीट वेव से बचाव के लिए छात्रों, शिक्षकों, कर्मचारियों को जागरूक करने की रणनीति बनाई। विश्वविद्यालय स्वास्थ्य केन्द्र की चिकित्सा प्रभारी डॉ0 दीपशिखा चौधरी ने हीट वेव से बचाव के लिए पोस्टर डिजाइन किया जिसमें बचाव के टिप्स दिए गए है। कुलसचिव उमानाथ ने स्वास्थ्य केन्द्र पर पहुँच कर चिकित्सकों का उत्साहवर्धन किया। सभी विभागों में पोस्टर लगाने व जागरूक करने की अपील की। उन्होंने बताया कि हीट वेव से सुरक्षित रहने के लिए खूब सारे तरल पदार्थो का सेवन करें। अल्कोहल, कैफीन युक्त या शर्करा युक्त पेय लेने से बचे। चिकित्सा प्रभारी डॉ0 दीपशिखा ने बताया कि हीट वेव से बचाव के लिए सभी स्वच्छ पानी का सेवन जरूर करे। इसके अलावा इलेक्ट्रोलाइट पेय, लस्सी व छाछ जैसे घर के बने तरल पदार्थो को अपनी दिनचर्या में शामिल करे। गर्मी के मौसम में हल्के, ढीले-ढाले और हल्के रंग के कपड़े पहनें। धूप से सुरक्षा के लिए चैड़ी टोपी और धूप का चश्मा पहनने आदत डाले। दोपहर 12 से सायं 3 बजे तक बाहरी गतिविधियों से बचने का प्रयास करना होगा।

परिषदीय विद्यालय में समय परिवर्तन की मांग

महराजगंज। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के तत्वावधान में मंगलवार को शिक्षकों का एक प्रतिनिधि मंडल बेसिक शिक्षा अधिकारी से मिलकर ज्ञापन दिया। जिसमें उन्होंने तेज धूप के कारण विद्यालय का संचालन सुबह 7.30 बजे से 12.30 तक करने की मांग की हैं। महासंघ के जिलाध्यक्ष ऋषिकेश गुप्त ने कहा कि इस समय काफी तेज धूप हो रहा है और गर्म हवा चल रही हैं। जिसके कारण बच्चों को असुविधा हो रही हैं। जिला महामंत्री पवन कुमार शुक्ल ने बताया कि मौसम के कारण बच्चों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है इस लिए बीएसए से मिलकर समय परिवर्तन की मांग की गई हैं। इस दौरान जिला मंत्री अभय कुमार दूबे, आनन्द पाल, जिला कोषाध्यक्ष ब्रजेंद्र पटेल, जिला संयुक्त महामंत्री महेंद्र चौहान, जिला संयुक्त मंत्री रामसूरत प्रसाद, नागेंद्र प्रसाद मंत्री मिठौरा सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

जिला जज स्व पंकज की याद में जिला बार लाइब्रेरी का नामकरण किया गया

अवधनामा संवाददाता

बाराबंकी। ज़िला बार ने अपनी लाइब्रेरी का नामकरण दिवंगत ज़िला जज स्व. पंकज कुमार सिंह जी के नाम पर रखकर बार और बेंच के एक ही कुटुंब होने की अवधारणा को चरितार्थ किया है, उक्त उद्गार प्रभारी जनपद न्यायाधीश विनय कुमार सिंह ने बार के पुस्तकालय के नामकरण के अवसर पर व्यक्त किए, जबकि ज़िलाधिकारी शशांक त्रिपाठी ने बार सभागार में वातानुकूलन संयत्र के इंस्टालेशन के शुभारंभ के मौक़े पर ख़ुशी ज़ाहिर करते हुए बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर को किसी भी तंत्र की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक क़रार दिया। ज्ञात हो कि ज़िला बार की वर्तमान कैबिनेट ने अधिवक्ताओं की धनराशि से सभागार में सेंट्रल ए सी प्लांट का इंस्टालेशन प्रारंभ किया है, जिसके लिए गत फ़रवरी माह में वकीलों की आम सभा द्वारा उन्हें निर्देशित किया गया था। मौजूदा कार्यकारिणी उक्त कार्य को बहुत तेज़ी से अंजाम पर पहुंचा रही है। आज उक्त इंस्टालेशन के शुभारंभ के शिलापट्ट का महामंत्री अशोक वर्मा के संचालन में बार अध्यक्ष हिसाल बारी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष देवेंद्र यादव सहित पूरी कैबिनेट एवं सभी अतिरिक्त ज़िला न्यायाधीश की उपस्थिति में प्रभारी ज़िला जज विनय कुमार सिंह व ज़िलाधिकारी शशांक त्रिपाठी ने तमाम प्रबुद्ध अधिवक्ताजन के बीच अनावरण किया। इसके पश्चात उक्त अधिकारी द्वय ने बार कैबिनेट के निर्णय के अनुसार ज़िला बार लाइब्रेरी का नामकरण स्वर्गीय ज़िला जज पंकज कुमार सिंह के नाम पर किया। उनके साथ समस्त अपर ज़िला जज और अन्य न्यायाधिकारी भी थे। इस मौक़े पर मौजूद अंशुमान सिंह, विजय पांडे, प्रदीप बाजपेयी, राकेश तिवारी, विनोद यादव, अतुल वर्मा, दौलता, सुमेर सिंह, पंकज श्रीवास्तव, रवि कुमार सिंह, शिव कुमार वर्मा, नवीन वर्मा, मदन यादव और पूर्व अध्यक्ष हरीश अग्निहोत्री, प्रदीप सिंह के साथ तमाम अधिवक्ताजन भी शामिल रहे।

जहांगीराबाद इंस्टिट्यूट में एक दिवसीय वर्कशॉप एवं कैंपस प्लेसमेंट का आयोजन

अवधनामा संवाददाता

बाराबंकी। जहांगीराबाद इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी में एक दिवसीय वर्कशॉप एवं कैंपस प्लेसमेंट का आयोजन किया गया जिसमे लखनऊ की प्रतिष्ठित कंपनी इन्फोसिक शामिल हुई। कार्यक्रम की शुरुआत संस्थान के अकादमिक हेड डॉ ऐ के मिश्रा द्वारा की गयी जिसमे उन्होंने कॅरियर रोज़गार की चुनातियों और अवसर समेत तमाम विषयों पर जानकारी दी।

रजिस्ट्रार डॉ मसर्रत अली खान ने कहा कि आगामी सत्र में छात्र छात्रों की ट्रेनिंग पर और अधिक फोकस रहेगा जिससे कि प्लेसमेंट और पैकेज दोनों बढे तथा विभिन्न कम्पनीज से एमओयू साइन किये जायेगे जिसमे नौकरी के अलावा पढाई साथ इन सर्विस ट्रेनिंग के भी होंगे। कार्यशाला के उपरांत प्लेसमेंट का आयोजन किया गया जिसमे बीटेक कंप्यूटर साइंस और डिप्लोमा इंजीनियरिंग के लगभग 20 छात्र छात्राओं ने भाग लिया जिसमे 6 छात्रों का विभिन्न पदों पर 2.40 से 3.00 लाख के वार्षिक पैकेज पर चयन हुआ। इस अवसर पर प्रशासनिक अधिकारी श्री अब्दुल नावेद ने कहा कि यह हमारे छात्रों की मेहनत और ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट अफसर श्री नियाज़ अहमद अंसारी के प्रयासों का परिणाम है कि बड़ी संख्या में हमारे छात्रों का विभिन्न कम्पनीज में चयन हो रहा है। अंत में प्रिंसिपल इंजीनियरिंग डॉ फ़ैज़ान ने कंपनी के अधिकारी और एचआर एस हसन श्री समर मलिक अभिषेक श्रीवास्तव एवं मिस निशा समेत उपस्थित सभी शिक्षकों के सहयोग के लिए आभार व धन्यवाद व्यक्त किया।

न्यू रेनबो वेलफेयर सोसाइटी द्वारा आयोजित हुआ पृथ्वी दिवस कार्यक्रम

बाराबंकी। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रायोजित एवं न्यू रेनबो वेलफेयर सोसाइटी बाराबंकी द्वारा आयोजित पृथ्वी दिवस कार्यक्रम महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज बरेठी मे मनाया गया। बच्चों द्वारा किये गये प्रतिभाग में बच्चो की रैली,ड्राइंग/ पेंटिंग, स्लोगन राइटिंग, सोलर मॉडल मेकिंग मे कम्पटीशन हुआ। जिसमे प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, एवं तृतीय पुरस्कार श्रीमती डॉ नेहा शर्मा बीडीओ ब्लॉक देवा द्वारा पुरस्कार वितरित कराया गया। उपस्थितगण श्रीमती संतोष श्रीवास्तव, ग्राम प्रधानपति मोहम्मद रियाज़ अहमद, समाज सेवी हाजी सरवर अली रिज़वी, योगेंद्र बहादुर सिंह महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज प्रबंधक, धर्म कुमार यादव जन कलयाण किसान एसोसिएशन अध्यक्ष, ऊषा श्रीवास्तव, प्राची शुक्ला, कुलदीप शर्मा, विकास सिंह, करन श्रीवास्तव, शत्रुहन लाल श्रीवास्तव, एवं कॉलेज शिक्षकगण आदि उपस्थित रहे। अंत मे अनुराग श्रीवास्तव प्रबंधक ने सभी का आभार व्यक्त किया।

हाईकोर्ट के आदेश के बाद बैडवर्क में बदल सकता है जैदपुर पुलिस का गुडवर्क

हाईकोर्ट के आदेश से पुलिस महकमे में मचा हड़कंप

अवधनामा संवाददाता

बाराबंकी। 21 नवंबर 2023 को जैदपुर पुलिस ने जिस मार्फीन तस्करों को पकड़ लेने का गुड वर्क करके अपनी पीठ ठोकी दर असल वह बिल्कुल सहीम पुत्र तसव्वर टिकरा के केश जैसी राह पर पहुच गया है। इस मामले में हाईकोर्ट ने 21 अप्रैल 2025 फहीम जैसा आदेश जारी करके पुलिस खेमे की नींद उड़ा दी है। इस आदेश के बाद अगर यह ÷गुड वर्क÷ दूसरी बार भी ÷बैडवर्क÷ में बदला तो यह जैदपुर थाने का दूसरा ऐसा केस साबित होगा जो सरासर मनगढंत स्टोरी तैयार करके युवकों को पुलिस फिल्मी स्टाइल में स्मगलर बना कर अच्छी खासी जिंदगी में अपराध की नुकीली कील ठोंकने की माहिर खिलाड़ी बनती नजर आएगी है। फिलहाल स्पस्ट आदेश में हाईकोर्ट ने कहा है कि आरोपी व पुलिस वालों का लोकेशन साक्ष्य सीसी फुटेज सुरक्षित किया। पुलिस अपनी ईएफआईआर में लिखा की मुखबिर की सूचना हरक जाने वाली रोड पर चंदौली नहर पुलिया आरोपी हसनैन समेत चार लोगों को पकड़ कर जमा तलाशी ली जिसमे मार्फीन पायी गयी । जबकि पीड़ित का दावा है कि वह खुर्रम नगर सी ब्लाक पर जूस और फल की दुकान लगाकर खड़ा था इसी बीच पुलिस ने उसे उठा लिया और बाराबंकी लाकर पहले उगाही की कोसिस की फिर मार्फीन में चलाना कर दिया

..आइये आपको ले चलते है जैदपुर थाना

एक साल पूर्व एक तस्कर को 3 किलो मारफीन में जेल भेजने के मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने अपर एवं जिला सत्र न्यायाधीश कोर्ट नंबर 10 बाराबंकी के 22 दिसंबर 2023 के फैसले को रद्द करते हुए नया आदेश जारी किया था। इस मामले की पैरवी कर रहे उच्च न्यायालय के अधिवक्ता फारूक अय्यूब ने बताया कि हाईकोर्ट ने अपने आदेश मे कहा है कि निचली अदालत ने आवेदक मो. सहीम पुत्र तसव्वर की दलील पर विचार किये बिना ही उसे सरसरी तौर पर खारिज कर दिया। श्री अय्यूब ने बताया कि हाईकोर्ट ने (राज्य बनाम सहीम) मामले में अतिरिक्त जिला और सत्र न्यायाधीश, कोर्ट संख्या 10, बाराबंकी द्वारा पारित आदेश दिनांक 22.12.2023 को रद्द कर दिया है और ट्रायल कोर्ट को निर्देश दिया है कि वह हाईकोर्ट द्वारा पारित आदेश में की गई टिप्पणियों को ध्यान में रखते हुए आवेदक द्वारा दायर आवेदन पर नए सिरे से निर्णय ले। हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश सुभाष विद्यार्थी ने अपने आदेश में स्पष्ट रूप से कहा था कि लखनऊ से लेकर बाराबंकी तक सहीम को पकड़ कर लाने वाले दरोगा आलोक सिंह, सिपाही अमित, महेश सिंह और आरोपी का लोकेशन सार्वजनिक स्थानों पर लगे कैमरों के सीसीटीवी फुटेज और कॉल डिटेल रिकॉर्ड, बतौर साक्ष्य इकठ्ठा किये जायें। इस मामले जब सबूत इकठ्ठा किये गए तो पुलिस की कहानी के सब कुछ विपरीत मिला और केश छूट गया। इसी तर्ज पर दूसरा मामला सामने गया जो बिल्कुल सेम है।

जानिए क्या था पूरा मामला

थाना जैदपुर के टिकरा गांव निवासी सहीम पुत्र तसव्वर ने हाईकोर्ट से गुहार लगाते हुए बताया था कि साढू के लड़के मुन्तसिर को बोर्ड की परीक्षा दिलाने वह दिनांक 26.02.23 को लखनऊ गया था। रात हो जाने के कारण वह मलेशेमऊ लखनऊ में रूक गया था। दिनांक 27.02.23 को समय लगभग 10 बजे प्रातः कुछ पुलिस वाले वहाँ आकर जबरन अपने साथ पकड़ कर जैदपुर थाने ले आये और थाने पर बैठा कर घर वालो से नाजायज धन की मांग करते रहे। मांग पूरी न होने पर मार्फीन बरामदगी का फर्जी केस बनाकर जेल भेज दिया।

क्या फर्जी साबित होगा यह भी पुलिस का गुडवर्क ?

हाईकोर्ट के अधिवकता वकील फारूक अय्यूब ने बताया कि 21 अप्रैल 2025 को बाराबंकी के मरकामऊ निवासी हसनैन पुत्र कमरुद्दीन ने हाईकोर्ट ने में अर्जी लगाई की मुझे फंसाया गया है। हसनैन ने कुछ खास स्थानों पर लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज और गिरफ्तार करने वाले पुलिस महेश शैलेश अखिलेश चौधरी गुफरान के मोबाइल नम्बरो की सीडीआर तलब करने के लिए निचली अदालत में अर्जी दी थी लेकिन निचली अदालत ने उसकी अर्जी को खारिज कर दिया था। जिसके बाद पीड़ित ने हाईकोर्ट में गुहार लगाई थी। पीड़ित का दावा है कि उसके मामले से जुड़ी सीसीटीवी फुटेज और मोबाइल नम्बरो की सीडीआर सामने आने के बाद पुलिस का गुडवर्क फर्जी साबित हों जाएगा।

ब्लॉक अध्यक्ष के नेतृत्व में कर्मचारियों ने काली पट्टी बांधकर किया प्रदर्शन

बाराबंकी। सिद्धौर ब्लॉक के कर्मचारी और अधिकारियों ने पुरानी पेंशन बहाली की मांग को लेकर एकजुटता दिखाई। मंगलवार को ब्लॉक परिसर में सभी कर्मचारी एकत्र हुए। उन्होंने काली पट्टी बांधकर अपना विरोध प्रदर्शन किया। इसकी अध्यक्षता ग्राम विकास अधिकारी एसोसिएशन के ब्लॉक अध्यक्ष रवि प्रकाश अवस्थी ने किया। कर्मचारियों ने बीडीओ कार्यालय के मुख्य गेट पर जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शन के दौरान सभी ने सरकार से पुरानी पेंशन योजना को बहाल करने की मांग की। कुछ समय के प्रदर्शन के बाद सभी कर्मचारियों ने बाजू पर काली पट्टी बांधे रखते हुए अपने-अपने कार्यों में वापस लौट गए।इस मौके पर एडीओ पंचायत सिद्धौर उमेश कुमार पटेल, एडीओ कोऑपरेटिव सिद्धौर शैलेंद्र कुमार, सचिव रेखा चौधरी, गीता वर्मा, दीपक कुमार, जनार्दन चौहान, संजय चौधरी, सियाराम, पुष्पेंद्र कुमार, राकेश कुमार और राघवेंद्र आदि मौजूद थे।

निर्माण में विलंब पर जिलाधिकारी ने जताई नाराजगी

अवधनामा संवाददाता

महराजगंज। जिलाधिकारी अनुनय झा द्वारा कलेक्ट्रेट सभागार में कार्यदायी संस्थाओं के साथ निर्माण कार्यों की समीक्षा बैठक की गई। जिसमें उन्होंने विभिन्न कार्यदायी संस्थाओं से निर्माण परियोजनाओं के प्रगति की जानकारी ली। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी कार्यदायी संस्थाओं के अधिशासी अभियंता और परियोजना प्रबंधक नियमित समीक्षा करते हुए निर्माण कार्यों को ससमय पूर्ण कराएं। निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण ढंग से समयांतर्गत पूर्ण करें। जिलाधिकारी महोदय ने कहा जो परियोजनाएं पूर्ण हो गई हैं, उनमें थर्ड पार्टी ऑडिट कराते हुए हैंडओवर की प्रक्रिया कार्यदाई संस्था पूर्ण करें। उन्होंने वन विभाग द्वारा संचालित निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए वन क्षेत्र में निर्माणधीन सड़कों के निर्माण की गति को तेज करने और बरसात से पूर्व पूर्ण करने हेतु निर्देशित किया गया। जिलाधिकारी ने सोहगीबरवा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के निर्माण में विलंब को लेकर परियोजना प्रबन्धक यूपीपीसीएल गोरखपुर को स्पष्टीकरण जारी करने का निर्देश दिया। उन्होंने कड़ा निर्देश देते हुए स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण 01 माह के भीतर पूर्ण करने के लिए कहा। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अनुराज जैन, सीएमओ डॉ श्रीकांत शुक्ल, एसीएमओ डॉ राजेंद्र प्रसाद, जिला एवं अर्थ संख्या अधिकारी शीश कुमार सहित कार्यदायी संस्थाओं के अधिकारी और अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

वन नेशन, वन इलेक्शन पर विस्तार से हुई चर्चा

अवधनामा संवाददाता

महाराजगंज। जिला पंचायत सभागार में भारतीय जनता पार्टी द्वारा वन नेशन, वन इलेक्शन विषय पर प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में भारत सरकार के केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि भारत जैसे विशाल और विविधताओं से भरे देश में बार-बार चुनाव कराना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। लोकसभा और राज्यों के विधानसभा चुनावों की कोई निश्चित समय-सीमा नहीं होती, क्योंकि ये सांसदों और विधायकों के विश्वास मत एवं सरकार की मंशा पर निर्भर करते हैं। पंकज चौधरी ने कहा कि अगर लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराए जाएं तो मतदाता एक ही दिन में दोनों स्तरों की सरकार के लिए मतदान कर सकेंगे। इससे न केवल चुनाव प्रक्रिया अधिक संगठित होगी, बल्कि प्रशासन पर पड़ने वाला दबाव भी कम होगा और खर्च में भी भारी कमी आएगी। भाजपा जिलाध्यक्ष संजय पाण्डेय ने कहा कि सम्मेलन का उद्देश्य विषय से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श करना तथा नागरिकों से सुझाव प्राप्त करना था ताकि वन नेशन, वन इलेक्शन के क्रियान्वयन की दिशा में सार्थक पहल की जा सके।कार्यक्रम मे पनियरा विधायक ज्ञानेंद्र सिंह, बलराम भट्ट, अरुण शुक्ल, समीर त्रिपाठी, शैलेंद्र उपाध्याय, डॉ. अजय मिश्र, दिवाकर सिंह, धर्मेंद्र सोनकर, दिनेश सिंह, अमरेन्द्र मणि ने भी विचार रखे। सभी वक्ताओं ने एक देश, एक चुनाव को समय की मांग बताते हुए इसे लोकतंत्र को मजबूत करने की दिशा में अहम कदम बताया। सम्मेलन का संचालन राजीव द्विवेदी ने किया। इस अवसर पर बजरंग बहादुर सिंह, शिवेन्द्र सिंह, संतोष सिंह, बबलू यादव, कृष्ण गोपाल जायसवाल, अमरनाथ पटेल, ओमप्रकाश पटेल, शैलेश पाण्डेय, विजेन्द्र श्रीवास्तव, बैजनाथ पटेल, अरुणेश शुक्ल, प्रदीप उपाध्याय, संतोष जायसवाल, दुर्गा अग्रहरी, गोलू सिंह, दिनेश जायसवाल, गोविंद जायसवाल, बेद शुक्ला, रामहरख गुप्ता सहित बड़ी संख्या में प्रबुद्ध जन उपस्थित रहे।

बेखौफ होकर दौड़ा रहे ट्रैक्टर ट्रॉली, राहगीरों के लिए मुसीबत

मिठौरा(महराजगंज)। चौक थानाक्षेत्र में अवैध खनन तेजी से हो रहा है। सर्वाधिक मिट्टी खनन इस क्षेत्र में हो रहा है। प्रतिदिन हजारों ट्राली मिट्टी निकालकर कृषि योग्य भूमि को ऊसर बनाने में खनन माफिया लगे हुए हैं। चौक थाने के पडरी खुर्द, मिश्रौलियां, पिपरा सोनाड़ी आदि गांवों में अवैध तरीके से ऊंचे खेतों की मिट्टी खनन करने का कार्य बे खौफ ढंग से किया जा रहा है और ट्रैक्टर ड्राइवर द्वारा मिट्टी लदी ट्रैक्टर बे खौफ होकर रोड पर दौड़ा रहे हैं जिससे राहगीरों को आने-जाने में संकट का सामना करना पड़ रहा है राहगीर एवं ग्रामीणों ने बताया कि मिट्टी लदी ट्रैक्टर ट्राली के ड्राइवर कान में एयर फोन लगाकर और तेज साउंड बजाकर स्पीड में ट्रैक्टर ट्राली चला रहे हैं तेज रफ्तार से हम लोग आतंकित है साथ ही कोई अप्रिय घटना ना हो जाए। वही स्पीड गांव में हो या गांव के बाहर हो स्पीड को कम नहीं कर रहे हैं।

अवैध तरीके से घुसपैठ कर रहा बांग्लादेशी नागरिक गिरफ्तार

अवधनामा संवाददाता

निचलौल (महराजगंज)। थानाक्षेत्र के भारत नेपाल बार्डर पर तैनात 22 वाहिनी सशस्त्र सीमा बल व पुलिस टीम ने मटरा गांव के पास पगडंडी के रास्ते सोमवार रात करीब साढ़े नौ बजे एक बांग्लादेशी नागरिक घुसपैठ कर रहा था। जिसे मुखबिर की सूचना पर पुलिस और एसएसबी की संयुक्त टीम ने गिरफ्तार कर लिया। टीम गिरफ्तार बांग्लादेशी नागरिक को कब्जे में लेकर पूछताछ करने में जुट गई है। वही सरहद पर अवैध तरीके से घुसपैठ को लेकर हलचल तेज हो गई है।जानकारी के मुताबिक सोमवार रात में एक बांग्लादेशी अंधेरे का फायदा उठाते हुए नेपाल राष्ट्र से भारतीय सीमा क्षेत्र में अवैध तरीके से घुसपैठ करने के फिराक में था। इसी बीच इसकी भनक सुरक्षा एजेंसियों को लग गई। फिर पुलिस और एसएसबी की संयुक्त टीम बार्डर से सटे मटरा गांव के पास से होकर गुजरी पगडंडी रास्ते की घेराबंदी कर ली। इसी बीच नेपाल की ओर से भारतीय सीमा क्षेत्र में एक संदिग्ध शख्स पैदल आता हुआ दिखाई दिया। जिसे टीम ने रोक पूछताछ करना शुरू की, तो वह घबरा गया। उसके बाद टीम शख्स को गिरफ्तार कर सख्ती से पूछताछ करने में जुट गई।

सिर्फ एक इमारत बनकर रह गया है पंचायत भवन हल्लौर : कसीम रिजवी

अवधनामा संवाददाता

डुमरियागंज सिद्धार्थनगर। हल्लौर गांव की जनता की उम्मीदें, शिकायतें और समस्याएं लेकर जब पंचायत भवन जाती है, तो वहां बड़ा सा ताला दिखता है, न कोई समाधान। ना कोई जिम्मेदारी, ना कोई जवाबदेही। यह भवन जो कभी जन सेवा का केंद्र होना चाहिए था, आज ताले, खाली कुर्सियाँ ग्राम प्रधान और अफसरों की गैरहाजिरी का अड्डा बन चुका है। लोगों को चक्कर पर चक्कर लगाने पड़ते हैं, लेकिन नतीजा शून्य। भाजपा के नेता व समाज सेवी कसीम रिजवी का कहना है कि आधार कार्ड, मृत्यु प्रमाण पत्र, जन्म प्रमाण पत्र, और सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए जनता दर-दर भटक रहे हैं। कभी ब्लॉक के चक्कर,कभी तहसील के चक्कर , सिर्फ फोटो खिंचवाने और मीटिंग की खानापूर्ति के लिए है ये पंचायत भवन अगर जनता का कोई काम नहीं होता तो इसका यह वजूद क्यों है। गांव की असली जरूरत पंचायत भवन की सुविधा हर द्वार तक पहुंचे जैसे आधार कार्ड यहीं बने मृत्यु व जन्म प्रमाण पत्र यहीं बने सरकारी योजनाओं की जानकारी और फॉर्म यहीं भरें जाएं लोगों को तहसील के चक्कर न काटने पड़ें परन्तु यहां तो हर वक्त ताला बन्द रहता है। वहीं ग्राम प्रधान ताकीब रिजवी का कहना है कि पंचायत भवन हफ्ते में तीन दिन खुलता है और सब कर्मचारी वहां बैठते हैं।

प्रशासन ने हटाया अवैध अतिक्रमण

डुमरियागंज सिद्धार्थनगर अवधनामा संवाददाता। उपजिलाधिकारी डॉ संजीव दीक्षित के दिशा निर्देश पर तहसीलदार डुमरियागंज की उपस्थिति में आज मंगलवार को ग्राम चकमझारी तप्पा हल्लौर, तहसील ड्मारियगंज में स्थित गाटा संख्या 103 (खाद गड्ढा) व गाटा संख्या 106 (नवीन परती) पर कुछ ग्रामीणों द्वारा किए गए अवैध अतिक्रमण को राजस्व टीम और पुलिस बल की उपस्थिति में हटवा दिया गया। इस दौरान एस आई अजय तिवारी मय पुलिस बल, राजस्व निरीक्षक लाल कृष्ण श्रीवास्तव, राज प्रताप, आयुष, पवन आदि उपस्थित रहे।

वितरित किए गए अंक पत्र, बच्चों के चेहरे खिले

पथरा बाजार सिद्धार्थनगर अवधनामा संवाददाता। मंगलवार को तहसील क्षेत्र के

आरआर, एसएस एम पब्लिक स्कूल भग्गोभार में गत वर्ष उत्तीर्ण हुए छात्रों का अंक पत्र वितरण किया गया। विद्यालय के प्रबंधक शिवशंकर मिश्र तथा विद्यालय परिवार एवं अभिभावकों की उपस्थित में मेधावी छात्रों एवं छात्राओं को उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर उन्हें मेडल देकर पुरस्कृत करके उत्साह वर्धन किया गया। इस दौरान बच्चों के चेहरे ख़ुशी से खिल उठे। इस विषय में प्रबंधक शिवशंकर मिश्र ने कहा उत्कृष्ट शिक्षा देना हमारे विद्यालय का लक्ष्य है। पुरस्कार से बच्चों की मनोवृत्ति पढ़ने के प्रति बढ़ती है। हम सभी छात्रों एवं छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। इस दौरान राकेश मौर्य, धीरज पाठक, दीपनारायण गुप्ता राजेन्द्र प्रसाद शमशाद प्रवीण पांडे हरीश पाठक बसंत चौधरी के अलावा अन्य अभिभावक व अध्यापकों की उपस्थिति रही।

पीड़ित मां ने डीएम को दिया पत्र, सुनाई अपनी आपबीती

शोहरतगढ़ सिद्धार्थनगर अवधनामा संवाददाता। जिलाधिकारी सिद्धार्थनगर डा0 राजा गणपति आर0 को पीड़ित मां कमलावती ने पत्र देकर अपनी आपबीती सुनाई। डीएम को पत्र में पीड़ित मां कमलावती ने बताया कि पीड़िता कमलावती पत्नी गिरपरन साकिन मदरहना लाला, थाना कोतवाली बांसी जिला सिद्धार्थनगर की निवासिनी है। पीड़िता ने अपनी पुत्री संगीता (मृतक) की शादी 2022 में थाना शोहरतगढ़ अन्तर्गत ग्राम पंचायत सेमरा निवासी धर्मेन्द्र पुत्र पल्टू पासवान के साथ हिन्दू रीति रिवाज से किया था। मृतक संगीता के पास करीब एक वर्ष का लड़का भी था। पीड़िता मां कमलावती ने बताया कि मेरी पुत्री संगीता (मृतक) को उसके ससुराल के पति धर्मेन्द्र पुत्र पल्टू, पल्टू पुत्र पिरथी, गुजराती पत्नी पल्टू व रामदत्त पुत्र दुक्खी दहेज के लिए बराबर मारते पीटते व मानसिक रूप से परेशान करते थे। कई बार पीड़ित मां कमलावती अपने परिवार के साथ पुत्री के ससुराल जाकर सुलह समझौता कराये थे। जिसके क्रम में दिनांक 19.04.2025 की रात्रि मे उपरोक्त चारों मुल्जिमान एक राय व गोलबन्द होकर मेरी पुत्री संगीता को दहेज के लिए गला दबाकर मार दिये। जिसको लेकर पीड़िता कमलावती ने परिवार सहित सूचना पर गये तो मृतका संगीता के लाश का पोस्टमार्टम होने के बाद स्थानीय थाना शोहरतगढ़ में केवल हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया गया। जबकि दहेज हत्या, डी0पी0 एक्ट व अन्य उचित धाराओं में मुकदमा नही दर्ज किया गया, जिससे पीड़िता मां कमलावती व परिवार जन काफी दुखी है। इसलिए पीड़िता मां कमलावती ने अपने मृतक पुत्री संगीता के ससुराल के धर्मेन्द्र पुत्र पल्टू, पलटू पुत्र पिरथी, गुजराती पत्नी पल्टू, रामदत्त पुत्र दुक्खी के विरूद्ध हत्या सहित दहेज हत्या, डी0पी0 एक्ट व अन्य उचित धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कराया जाना परम आवश्यक एवं न्यायसंगत है, ताकि उपरोक्त मुल्जिमानों को उचित दण्ड मिल सकें।

आयशा सिद्दीक़ा झंडानगर की शाखा फातिमा ज़हरा लिलबनात में हिफ्ज़े-क़ुरआन कोर्स का शुभारंभ

- उद्घाटन समारोह में जानी-मानी धार्मिक हस्तियों का प्रेरणादायक संबोधन शिक्षा और आत्मिक क्रांति की ओर कदम

अवधनामा संवाददाता

कपिलवस्तु, नेपाल। आज सोमवार को फातिमा ज़हरा लिलबनात, चंद्रोटा में एक रूहानी और प्रेरणास्पद उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं के लिए हिफ्ज़े-कुरआन कोर्स की औपचारिक शुरुआत की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के अध्यक्ष शैख़ शमीम अहमद नदवी ने की। इस विशेष अवसर पर नेपाल की प्रतिष्ठित धार्मिक और शैक्षिक हस्तियों ने शिरकत की और ईमान और यक़ीन से भरे विचार प्रस्तुत किए।

शैख़ शमीम अहमद नदवी ने कहा यह संस्थान केवल लड़कियों की शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि उनके रौशन भविष्य की बुनियाद है। हिफ्ज़े-कुरआन की शुरुआत एक इबादत भी है और उम्मत की बेटियों को अल्लाह की वह्य से जोड़ने की बरकत भी, जिससे नस्लें रौशन होंगी। आयशा सिद्दीक़ा झंडानगर के अध्यक्ष डॉ. मंज़ूर अहमद ख़ान अलीग ने कहा हमारी बेटियाँ हाफ़िज़ा-ए-कुरआन बनकर समाज में दीन की रौशनी फैलाएंगी, यही हमारे संस्थान का मक़सद और मिशन है।

जामिया सिराजुल उलूम सलफ़िया के शैख़ुल जामिया, शैख़ अब्दुर्रशीद मदनी ने कहा कुरआन की सेवा पैग़म्बरों की विरासत है। बेटियों के ज़रिए इस मिशन का आग़ाज़ उम्मत के लिए फख़्र की बात है। जामिया सिराजुल उलूम के वरिष्ठ उस्ताद डॉ. अब्दुल ग़नी अलकूफ़ी ने कहा हिफ्ज़े-कुरआन दिलों को नूर, चरित्र को पवित्रता और जीवन को स्थिरता देता है। यह कदम वक्त की अहम ज़रूरत है, एक इंक़लाबी शुरुआत है। देश में बेटियों के लिए ऐसे संस्थान विरले हैं– यह एक बड़ी नेमत है। शैख़ुल हदीस, शैख़ ख़ुर्शीद अहमद सलफ़ी ने कहा जो क़ौमें अपनी बेटियों को कुरआन का वारिस बनाती हैं, वो कभी पिछड़ती नहीं, बल्कि बुलंदी की तरफ बढ़ती हैं। Plus TV मुंबई के डायरेक्टर शैख़ ज़ैद पटेल ने कहा मीडिया के माध्यम से कुरआन की रौशनी फैलाना हमारी ज़िम्मेदारी है। ऐसे संस्थान इस मिशन की मज़बूत नींव हैं। राष्ट्रिय मदरसा संघ नेपाल के महासचिव और जामिया सिराजुल उलूम के प्रवक्ता मौलाना मशहूद ख़ान नेपाली ने कहा यह संस्थान बेटियों के लिए कुरआन की रौशनी लेकर आया है। हम इस इल्मी तहरीक का दिल से इस्तक़बाल करते हैं और हरसंभव सहयोग का वादा करते हैं। संस्थान के वरिष्ठ शिक्षक शैख़ुल हदीस, मुजीबुर्रहमान मदनी ने कहा फातिमा ज़हरा का मिशन केवल शिक्षा नहीं, बल्कि तर्बियत और तज़किया है, और हिफ्ज़े-कुरआन इसी मिशन की एक मुक़द्दस कड़ी है। संस्थान के वरिष्ठ शैख़ ताजुद्दीन सिराजी ने संक्षिप्त मगर प्रभावशाली शब्दों में कहा यह क़दम रौशन भविष्य की बुनियाद है, हम इस नेक काम में संस्था के साथ हैं। कार्यक्रम का संचालन जामिया सिराजुल उलूम सलफ़िया, झंडानगर नेपाल के उस्ताद मौलाना ख़ालिद रशीद सिराजी ने किया। समारोह के अंत में अध्यक्ष शैख़ शमीम अहमद नदवी ने सभी मेहमानों का शुक्रिया अदा करते हुए कहा हमें पूरा यक़ीन है कि यह संस्थान निकट भविष्य में ऐसी हाफ़िज़ात-ए-कुरआन तैयार करेगा जो इल्म, अमल और दावत का सुंदर मेल होंगी।

ई पास मशीन से नहीं स्काइन कर रहे शराब

अम्बेडकरनगर। आबकारी विभाग की तरफ से जिलेभर की सभी दुकानों पर ई-पास मशीन से शराब की बिक्री किए जाने का प्रयोग तो शुरू कर दिया गया है। बावजूद शराब के दुकानदार इसके प्रयोग में रुचि नहीं ले रहे हैं। इसके जरिए बोतल पर लगे बार कोड, रेट को स्कैन करने के बाद रसीद दी जा रही है। इससे अवैध शराब की बिक्री पर रोक लगने के लिए साथ ओवररेटिंग भी खत्म की जा सकेगी। विभाग की तरफ से एक अप्रैल 2024 से इसका पूर्ण रूप से अनुपालन कराया जाना था।पीओएस मशीन पर स्कैन करने के बाद ही शराब की बिक्री हो सकेगी। इससे एक ओर जहां नकली शराब की बिक्री पर लगाम लगेगी।

खुनुवा पुलिस चौकी प्रभारी की हुई विदाई, स्थानीय लोगों व नवागत पुलिस चौकी प्रभारी ने दी शुभकामनाएं

अवधनामा संवाददाता

शोहरतगढ़ सिद्धार्थनगर। इंडो नेपाल बॉर्डर पर स्थित पुलिस चौकी खुनुवा के इंचार्ज सर्वेश यादव का स्थानांतरण थाना मोहाना पर होने से खुनुवा पुलिस चौकी पर विदाई समारोह आयोजित किया गया।

समारोह में पुलिस व स्थानीय नागरिक शामिल हुए। सर्वेश यादव के कार्यकाल में पुलिस चौकी खुनुवा क्षेत्र की कानून व्यवस्था बेहतर रही। उन्होंने स्थानीय समुदाय के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखे। इस दौरान पुलिस विभाग और स्थानीय लोगों ने उनकी सेवाओं की सराहना की।समारोह में मौजूद सभी लोगों ने सर्वेश यादव के उज्जवल भविष्य की कामना की। सर्वेश यादव ने भी अपने कार्यकाल के दौरान सभी से मिले सहयोग के लिए आभार जताया। पुलिस चौकी खुनुवा पर नवागत चौकी प्रभारी सुधीर त्रिपाठी ने कार्यभार संभाल लिया है। और उन्होंने खुनुवा इलाके की भौगोलिक स्थितियों की जानकारी ली। और उन्होंने कहा कि मेरी पहली प्राथमिकता पीड़ितों को न्याय दिलाना। इस दौरान नवागत चौकी प्रभारी खुनुवा सुधीर त्रिपाठी, उपनिरिक्षक सर्वेश यादव, दीपू तिवारी,बहरैची बाबा, गुडडू गुप्ता, संतोष गुप्ता, नजाबू, राजन सिह, जियाउल्ला, जयकुमार, तुफैल, रमेश, अनिल गुप्ता, उपेन्द्र द्विवेदी, चन्दन, निशान्त, राणा आदि लोग मौजूद रहे।

पुलिस टीम पर हुए जानलेवा हमले के बाद 42 लोगो के खिलाफ दर्ज हुआ मुकदमा

अवधनामा संवाददाता

बांसी सिद्धार्थनगर। समोगरा गांव में राजस्व विभाग व पुलिस टीम पर हुए जानलेवा हमले के बाद 42 लोगो के खिलाफ दर्ज हुए मुकदमा के बाद से ही पूरे गांव में भय का माहौल है। कोई किसी से न तो बात करने को तैयार है और न ही घटना के बाबत कुछ बताने को तैयार है। घटना की जानकारी होने के बाद मंगलवार को सपा जिला अध्यक्ष व पूर्व विधायक लालजी यादव की अगुवाई में एक प्रतिनिधि मंडल पहले समोगरा गांव पहुंचा और वहां लोगो से घटना की जानकारी लेने के बाद एस डी एम बांसी शशांक शेखर राय के पहुंचा और समोगरा के लोगो के साथ हो रही उत्पीड़न की कार्यवाही की निंदा किया।

प्रतिनिधि मंडल ने कहा कि एक दलित व्यक्ति अपनी भूमि में बाबा साहब भीम राव आंबेडकर की प्रतिमा स्थापित कर रहा था। जिसे एक भाजपा कार्यकर्ता के कहने पर जबरन हटा दिया गया विरोध करने पर महिलाओं को लाठियों से पीटा गया और अब उनके खिलाफ उत्पीड़न की कार्यवाही किया जा रहा है जिसका हम सब विरोध कर रहे है। प्रतिनिधि मंडल ने एस डी एम से ग्रामीणों के साथ हो रही उत्पीड़न की कार्यवाही पर रोक लगाते हुए मुकदमा वापस लेने तथा एक सप्ताह में बाबा साहब भीम राव आंबेडकर की प्रतिमा स्थापित किए जाने की मांग किया साथ ही चेतावनी दिया कि यदि मांग पूरी नहीं हुई तो समाजवादी पार्टी आंदोलन करेगी। पूर्व विधायक विजय पासवान ने कहा कि अभी कुछ दिनों पूर्व बाबा साहब के जन्म दिन पर भाजपा गांव गांव उत्सव मना रही जो सिर्फ दिखावा है। इनका असली रूप समोगरा गांव में देखने को मिल गया। प्रतिनिधि मंडल में पूर्व सपा प्रत्याशी मोनू दूबे, राम मिलन भारती सहित सपा व सपा आंबेडकर वाहिनी के पदाधिकारी शामिल थे।

सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के प्रदेश सचिव व पूर्व विधायक रामानंद बौद्ध के साथ पार्टी के कार्यकर्ताओं ने एसडीएम बांसी शशांक शेखर राय को ज्ञापन सौंपा।

सैलून की दुकान चलाने वाले की ड्रीम इलेवन मे बदली किस्मत

दानिश मेहदी/इब्ने अली जाफरी

जलालपुर अम्बेडकरनगर। औरंगाबाद में सैलून चलाने वाले जिले के एक युवक की किस्मत ड्रीम-11 में एक दिन में बदल गई। सैदापुर गांव के मोहम्मद तुफैल अंसारी ने महज 49 रुपए लगाकर चार करोड़ रुपए जीत लिए। अकबरपुर तहसील क्षेत्र के सैदापुर निवासी मोहम्मद तुफैल ने बीते रविवार को पंजाब और आरसीबी के बीच हुए आईपीएल मैच में अपनी टीम बनाई। उन्होंने एक करोड़ 58 लाख 9 हजार 140 प्रतिभागियों के बीच 959 पॉइंट्स के साथ पहला स्थान हासिल किया। तुफैल पिछले कई सालों से ड्रीम-11 पर क्रिकेट टीम बनाकर गेम खेल रहे थे। उनके करीबी दोस्त मोहम्मद अकबर के अनुसार, तुफैल ने अब तक एक हजार से भी ज्यादा कॉन्टेस्ट खेले हैं। तुफैल के पिता मोहम्मद सिराजुद्दीन औरंगाबाद में सिलाई का काम करते हैं। इस बड़ी जीत से पूरा परिवार खुशी से झूम रहा है। आसपास के गांवों में भी इस जीत की चर्चा हो रही है।

सपाइयों ने समोगरा गांव के ग्रामीणों से की मुलाकात

- नई मूर्ति स्थापित को लेकर पुलिस व ग्रामीणों के बीच बीते दिन हुई थी पत्थरबाजी

अवधनामा संवाददाता

बांसी सिद्धार्थनगर। थाना क्षेत्र बांसी के समोगरा गांव में सोमवार को बाबा भीमराव अम्बेडकर की नई मूर्ति स्थापित करने को लेकर पुलिस व ग्रामीणों के बीच पत्थरबाजी हुई थी, जिसको लेकर पुलिस ने ग्रामीणों को दौड़ा-दौड़ा कर पीटा था। आपको बता दें कि विवादित नई मूर्ति स्थापित को लेकर पुलिस द्वारा ग्रामीणों को मारने व पीटने को लेकर मंगलवार को पूर्व विधायक विजय पासवान और सपा के जिलाध्यक्ष लालजी यादव की अगुवाई में पूर्व विधानसभा प्रत्याशी मोनू दूबे सहित सपा नेता व कार्यकर्ताओं ने समोगरा गांव जाकर पीड़ित ग्रामीणों से मुलाकात किया। वहीं समोगरा गांव में पीड़ित ग्रामीणों से मुलाकात के दौरान सपा नेताओं ने कहा कि ये सरकार दलित विरोधी सरकार है। जिले से लेकर प्रदेश में दलितों पर अत्याचार हो रहा है। दलित समाज यह अपमान कतई बर्दाश्त नहीं करेगा। प्रत्येक घर का एक-एक बच्चा घर से निकालकर अपने हक की लड़ाई लड़ेगा। इस दौरान जिलाध्यक्ष सपा लालजी यादव, पूर्व विधायक कपिलवस्तु विजय पासवान, पूर्व विधानसभा प्रत्याशी बांसी मोनू दूबे, प्रदेश सचिव राममिलन भारती सहित सपा के तमाम पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहें।

नहर की पटरी पर बनी सड़क क्षतिग्रस्त ग्रामीणों को आने जाने में परेशानी

डुमरियागंज सिद्धार्थनगर अवधनामा संवाददाता। तहसील क्षेत्र के हल्लौर गांव स्थित

पुल से चौरा बंगवा रेहरा होते हुए बिथरिया तक इस सड़क का निर्माण बहुत जोर शोर से हुआ इसके बनने से ग्रामीणों में एक खुशी की लहर दौड़ गई कि अब हम लोगों के आवागमन में आसानी हो जायेगी मगर दो साल भी नहीं बीता कि सड़क जहां जगह से उखड़ने लगी है जिससे राहगीरों को आने जाने में बड़ी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। बार-बार शिकायत करने के बावजूद जिम्मेदार अनजान बने बैठे है क्षेत्र के ताकीब रिजवी, संतोष अग्रहरी, अमानत, जफरूल, सलमान, कसीम रिजवी, सैय्यद अली मास्टर ने नहर की सड़क को जल्द मरम्मत करवाने की मांग की है।

इण्डो-इजराइल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, बस्ती में ड्रिप इरीगेशन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ

बस्ती अवधनामा संवाददाता। औद्यानिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केंद्र, बस्ती के अंतर्गत संचालित इण्डो-इजराइल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर फ्रूट्स बंजरिया बस्ती में राष्ट्रीय बागवानी विकास मिशन, भारत सरकार, मशाव, एम्बेसी ऑफ इजराइल नई दिल्ली तथा उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग उत्तर प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 22 से 25 अप्रैल 2025 तक मैनेजमेंट ऑफ इरिगेशन एंड फर्टीगेशन विषय पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ आज मुख्य अतिथि मुख्य विकास अधिकारी बस्ती सार्थक अग्रवाल द्वारा किया गया। सार्थक अग्रवाल ने अपने संबोधन में ड्रिप इरीगेशन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस तकनीक के माध्यम से कम पानी का उपयोग कर दोगुना फसल उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने देश के विभिन्न राज्यों से आए अधिकारियों से आग्रह किया कि वे इस प्रशिक्षण को अपने-अपने क्षेत्रों में किसानों तक पहुंचाएं ताकि कृषि उत्पादकता में वृद्धि हो सके। प्रशिक्षण कार्यक्रम की अध्यक्षता यूरी रूविन्सटीन एग्रीकल्चर अटैच मशाव एम्बेसी ऑफ इजराइल नई दिल्ली ने की। उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग उत्तर प्रदेश के अपर मुख्य सचिव बी.एल. मीणा ने प्रतिभागियों को ड्रिप इरीगेशन को किसानों के खेतों में व्यवहारिक रूप से लागू करने के लिए प्रेरित किया।

आई.जी.आर.एस. की समीक्षा बैठक

बस्ती अवधनामा संवाददाता। मंगलवार को जिलाधिकारी रवीश गुप्ता की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आई.जी.आर.एस. की समीक्षा बैठक आहूत की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि पोर्टल पर अपने विभाग से सम्बन्धी प्रकरण ना होने पर प्रकरण को लाल बटन पर क्लिक कर वापस कर दिया जाय। आईजीआरएस प्रकरणों की रैंकिंग में गिरावट पर जिलाधिकारी ने नाराजगी जताते हुए सम्बंधित अधिकारियों को रैंकिंग में सुधार के सख्त निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने सम्बंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी अधिकारी अपने-अपने विभाग से सम्बंधित आईजीआरएस के प्रकरणों का गुणवत्तापूर्ण व त्वरित निस्तारण कराना सुनिश्चित करें। जिलाधिकारी ने कहा कि शासन की प्राथमिकता है कि सभी जन-शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण व ससमय किया जाए।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में हुई बेसिक शिक्षा विभाग के कार्यों की समीक्षा बैठक

अवधनामा संवाददाता

सिद्धार्थनगर। बेसिक शिक्षा विभाग के कार्यों की समीक्षा बैठक जिलाधिकारी डा0 राजा गणपति आर0 की अध्यक्षता एवं मुख्य विकास अधिकारी श्री जयेंद्र कुमार की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी डा0 राजा गणपति आर0 द्वारा स्कूल चलो अभियान 2025 -26 की प्रगति के बारे में जानकारी प्राप्त किया गया। जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि पाठ्य पुस्तकों का वितरण 30 अप्रैल तक प्रत्येक दशा में करा दें।

सभी खंड शिक्षा अधिकारी को निर्देश दिया कि सभी शिक्षक घर घर जाकर अभिभावकों को जागरुक कर बच्चों का नामांकन परिषदीय विद्यालय में कराए। जिलाधिकारी ने विद्यालयों में सभी व्यवस्थाओं को ठीक करने का निर्देश दिया। शासन द्वारा जारी एसओ पी के अनुसार शिक्षण कार्य कर विद्यालय को निपुण बनाए। जिलाधिकारी द्वारा पी0एम0 श्री स्कूल में कराए जा रहे कार्यों की समीक्षा की गयी। जिलाधिकारी ने निर्देश देते हुए कहा कि विद्यालयों में बाउन्ड्रीवाल, अतिरिक्त कक्षा कक्ष व अन्य कार्यों को समय से पूर्ण कराया जाये। कम्प्यूटर लैब, एमडीएम शेड, टाइलीकरण, छत मरम्मत आदि कार्यों को समय से पूर्ण कराना का निर्देश दिया। साप्ताहिक वेस्ट परफार्मेन्स, स्मार्ट क्लास, लाइब्रेरी, खेल प्रतियोगिता आदि आयोजित कराया जाये। जिन बच्चो का आधार कार्ड नही बना है उनकी सूची उपलब्ध कराये। डी सी निर्माण को निर्देश दिया कि जिन विद्यालय में पुनर्निर्माण का कार्य हो रहा है उसका सत्यापन करा कर हैंड ओवर कराये। कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयो में नामांकन की स्थिति की समीक्षा की गयी। इसके अलावा रसोइया के मानदेय का भुगतान कराने का निर्देश दिया। एम डी एम योजना अंतर्गत लाभांवित बच्चो की समीक्षा, यू डायस पोर्टल की समीक्षा की गयी। जिन विद्यालयो में विधुतीकरण नही है अधीक्षण अभियंता विधुत को निर्देश दिया कि 15 मई तक विधुतीकरण का कार्य पूर्ण कराने का निर्देश दिया। अच्छे कार्य के लिए शिक्षकों को सम्मानित किया जा रहा है। सभी शिक्षक अच्छा कार्य कर शिक्षा में सुधार लाये। टीम द्वारा विद्यालयों का निरीक्षण करने का निर्देश दिया। इस बैठक में उपरोक्त अतिरिक्त जिला विकास अधिकारी गोपाल प्रसाद कुशवाहा, पी डी नागेंद्र मोहन राम त्रिपाठी, डी सी मनरेगा संदीप सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी शैलेश कुमार, वित्त लिखा अधिकारी बेसिक शिक्षा नीलोत्तम चौबे, जिला पंचायत राज अधिकारी पवन कुमार, जिला पूर्ति अधिकारी देवेंद्र प्रताप सिंह, जिला अल्प संख्यक कल्याण अधिकारी तंमय, समस्त खण्ड शिक्षा अधिकारी तथा अन्य संबधित अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़नी की पहचान वॉलीबॉल से होती है : नंदेश्वर सिंह

अवधनामा संवाददाता

बढ़नी सिद्धार्थनगर। जागृति स्पोर्टिंग क्लब द्वारा इंडो-नेपाल सीमावर्ती बढ़नी कस्बे के रामलीला मैदान में आयोजित तीन दिवसीय 44वें ऑल इंडिया वॉलीबॉल टूर्नामेंट का उद्घाटन मैच एलपीएन दिल्ली व एसएसबी लखनऊ के बीच दूधिया रोशनी में खेला गया। पहला सेट एलपीएन दिल्ली ने 25-20 से जीतकर बढ़त बनाई लेकिन दूसरे सेट में एसएसबी लखनऊ ने 25-20 से जीत दर्ज कर मुकाबला बराबर कर लिया। इसके बाद खेले गए तीसरे व निर्णायक सेट को एलपीएन दिल्ली ने 31-29 से जीतकर मैच को 2-1 से अपने नाम कर लिया। दूसरा मैच महिला वर्ग का वीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज, गोरखपुर व जागृति स्पोर्टिंग क्लब, बढ़नी के खिलाड़ियों के बीच खेला गया। देर रात तक चले एकतरफा मुकाबले में वीबीएस गोरखपुर ने 25-3 व 25-8 से जागृति स्पोर्टिंग क्लब को हराकर जीत दर्ज की। बतौर मुख्यातिथि डिप्टी कमिश्नर (कस्टम) लखनऊ नंदेश्वर सिंह ने कहा कि बढ़नी की तस्वीर बदलने में वॉलीबॉल की अहम भूमिका है।

आज बढ़नी की पहचान राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर वॉलीबॉल के खेल से होती है, उन्होंने जागृति स्पोटिंग क्लब के सभी पदाधिकारियों को इस सराहनीय कार्य के लिए धन्यवाद दिया। मैच का आंखों देखा हाल नेशनल कमेंट्रेटर जुग्गीराम राही, निजाम अहमद व अब्दुल हलीम ने सुनाया स्कोरिंग सहर्ष गुप्ता ने किया।

नेशनल रेफरी संकटा सिंह, राम शिरोमणि सिंह, उपेंद्र बहादुर सिंह, अंकित सिंह, पंकज दूबे, सीबी मिश्र, अलीमुद्दीन आदि ऑफिशियल्स की भूमिका में रहे। इस दौरान उत्तर प्रदेश ओलंपिक संघ के महासचिव, हैंडबॉल एसोसिएशन इंडिया के कार्यकारी निदेशक तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 2016 में यश भारती सम्मानित डॉ. आनंदेश्वर पांडेय, कांग्रेस जिलाध्यक्ष काजी सुहेल अहमद, कृष्णनगर उद्योग वाणिज्य संघ के अध्यक्ष रितेश शर्मा, पीस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अयूब अहमद, जागृति स्पोर्टिंग क्लब के अध्यक्ष अकील अहमद उर्फ मुन्नू, उत्तर प्रदेश वालीबॉल एसोसिएशन के कोषाध्यक्ष व आयोजन सचिव मोहम्मद इब्राहिम, गांधी आदर्श विद्यालय इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य विजय कुमार वर्मा, मुन्नू अल्वी, अब्दुल कय्यूम, अजय प्रताप गुप्त, हाड़ा विकास सिंह, शाकिर अली, संजय गुप्ता, डॉ. राज नरायन उपाध्याय, राहुल मोदनवाल, शंभूनाथ गुप्ता, शकील अहमद, जावेद अहमद, सगीर अहमद, जहीर आलम, पंकज चतुर्वेदी, मसूद अहमद, रामलीला समिति के मनोज पांडेय आदि मौजूद रहे।

चोकसी की चौकसी

चोकस्की की चौकसी बेल्जियम के वकील और अन्तरराष्ट्रीय प्रत्यापर्ण नियमों में व्याप्त लूप होल कर रहे है। यद्यपि तसव्वुर को राणा की गिरफ्तारी भारत लाना भारत के अन्तरराष्ट्रीय दबदबे का सबूत है बेल्जियम चोकसी की गिरफ्तारी भी भारत के दबदबे का सबूत है। पर राणा को तो आसानी सके भारत लाया जो सका पर चोकसी को भारत लाना आसान नहीं है। पंजाब नेशलन बैंक के साथ 13500 करोड़ का सोना घोटाला करके पता चलने के पहले ही और सुरक्षा एजेंसियों के पहुंचे के पहले ही दोनो देश छोड़ कर भाग चुके थे। इतना बड़ा घोटाला भारत बौकिंम सिस्टम की खामियों और व्याप्त भ्रष्टाचार का फायदा उठाकर चोकसी और भतीजा नीरव मोदी भाग निकले चार महीनों को बीच अलग अलग तरह की खबरे आती रही। फरार होने से अब तक सब सील चार महीने के बीच तरह तरह की खबरे आती रही। प्रत्यार्पण की कोशिशे जारी है पर सफलता नही दिख रही है। मई 2029 में जब गिरफ्तार हुआ भारतीय एजेन्सियों उसे भारत लाने में सफल दिख रही थी पर चोकसी और उसके वकीलों ने दलील दी वह एन्टीगुआ का नागरिक है। चूकी भारत एन्टीगुआ के बीच प्रत्यार्पण सोन्धि नही है इसलिये प्रत्यार्पण नही होगा चोकसी का आरोप था भारतीय एजेन्सियों के इशारे पर उसे एन्टीगुमा लाया गया।

बेल्जियम के साथ भारत की प्रत्यार्पण सन्धी है। लेकिन डोमीनिका में जो हुआ भारत के सामने मुशकिल खड़ा कर सकता है। तब चोकसी के आरोपों ने भारत को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर कमजोर किया था। बाद में इन्टररपोल ने अपना रेड कार्नर नोटिस वापस ले लिया था। प्रत्यार्पण को लेकर योरोपीय देश का रवैया बेहद सख्त है। जब तक उन्हें यकीन न हो जाये। कि आरोपो को निष्पक्ष कारवाई का मौका मिलेगा। सही न्याय मिलेगा तब तक वह किसी आरोपी को प्रत्यार्पित नही करते है। चोकसी के मामले यकीन दिलाना होगा कि बेल्जियम को चोकसी के द्वारा किया गया घोटाला बहुत गम्भीर है उसे निष्पक्ष जांच के बाद उचित सजा जरूर मिलनी चाहिये। उसे भारतीय कानून के अनुसार ही केस साबित हो जाने पर सजा मिलेगी। भारत को वेल्जियम से अपने प्रभाव और रिश्ते को लेकर उसका इस्तेमाल पुरजोर तरीके से करना चाहिये।

आटीफिसियल इन्टेलिजेन्स आ जाने से अन्तरराष्ट्रीय घोटाले हो रहे है। विभिन्न देशो में घोटालेबाज अपना दल बना रक्खे है। लोगो के फसनिक के लिये हनीट्रैप का सहारा लेते है। जिसके द्वारा लोगो को फसाने के लिये डरा धमका कर गैरकानूनी धन का घोटाला करते है, मोटी रकम ऐठते है। आर्टीफीसियल इन्टेलिजेन्स लोगो के फायदा कम दे रहा नुकसान जाने दे रहा है। कुछ भोले भाले लोग खासकर अवकाश प्राप्त अधिकारी लोग इसमें फंस जाते है। उन्हें बदनामी का डर दिखाकर उनकी बातें प्रसारित करने की धमकी देकर अच्छी खासी एकम ऐठते है। इसमें महिलायें भी फंस रही है। सरकार इसे लेकर सुरक्षा के कानून बना रही है पर उसका असर नहीं हो रहा है इस तरह के अपराध बढ़ते जा रहे है। बहुत से नौजवान इसमें फंस कर अपना कैरियर तबाह कर रहे है। बदमाश इसके द्वारा महिलाओं की तस्करी भी कर रहे है। अच्छी नौकरी और मोटी रकम का झांसा दे उन्हें विदेश भेज रहे है। कुछ को बीच में ही छोड़कर भाग खड़े होते है। ऐसे अपराधों की बढ़ोतरी चिन्ता का विषय है। आज नौकरियां तो बढी है खासकर निजी क्षेत्र में फिर भी बड़ी संख्या बेकारों की है। हमारा टेलेन्ट के विदेशो की ओर ज्यादा रूख कर रहा है। उनके टैलेन्ट के बल पर विदेशी सरकारें अपने देश को समृद्ध बना रही है। प्रश्न उठता है हमारे टैलेन्ट का हुनर विदेशों में क्यों निखरता है अपने देश में वे निष्क्रिय दिखते देते नियोक्त्यों को इस ओर ध्यान देना चाहिये। अमेरिका भारतीय टेलेन्ट का सबसे ज्यादा फायदा उठा अमेरिका को समृद्ध कर रहा है।

'शेरशहाबादी : एक खोई हुई पहचान का सवाल'

मोहम्मद एहसान

आप किस जात के हो? यह सवाल सुनने में छोटा लगता है, मगर एक शेरशहाबादी के लिए यह सवाल किसी चाकू की धार से कम नहीं। जब मुझसे कोई पूछता है, तो मैं चुप हो जाता हूँ। जुबान रुक जाती है, दिल में एक आवाज़ आती है – मैं क्या जवाब दूं?

मैं शेरशहाबादी हूँ। लेकिन आज भी यह कहना इतना आसान नहीं। लोग अक्सर हमारी ज़ुबान को बांग्लादेशी, हमारे पहनावे को ग़रीब, और हमारी शक्ल को अजनबी समझ लेते हैं। नज़रों का रुख बदल जाता है, और हम और भी छोटे महसूस करने लगते हैं। शेरशहाबादी समाज का इतिहास कोई नया नहीं है। कहा जाता है कि जब शेरशाह सूरी का दौर था (16वीं सदी), तो उनके भरोसेमंद सैनिक, मजदूर और कारोबारियों को बंगाल और बिहार की सरहद पर बसाया गया।

इन लोगों को पहले जल, ज़मीन और सुरक्षा की जिम्मेदारी दी गई। यही लोग धीरे-धीरे मुसलमान बने कुछ इस्लाम की तालीम से, कुछ सामाजिक असर से, और कुछ रहन-सहन और निकाह के रिवाजों से। शेरशाह सूरी कौन थे? शेरशाह सूरी, जिनका असली नाम फ़रीद ख़ान था, सूरी क़बीले से थे और उन्होंने बिहार के सासाराम से अपना राज शुरू किया। उन्होंने अपनी शासनकाल के दौरान प्रशासनिक सुधार, सड़क निर्माण, और कानून व्यवस्था में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए थे। शेरशाह ने अफगान सुलतानत को हराकर दिल्ली सुलतानत पर कब्जा किया और 1540 से 1545 तक अपना साम्राज्य स्थापित किया। उनका शासन 1545 में उनकी मृत्यु के साथ समाप्त हुआ। इनकी आबादी पहले कटिहार, पूर्णिया, किशनगंज और अररिया जैसे ज़िलों तक सीमित थी। मगर जैसे-जैसे समय बदला, लोग रोज़गार और खेती की तलाश में मालदा, उत्तर दिनाजपुर (बंगाल) और यहां तक कि झारखंड व आसाम तक भी फैलते चले गए। गांवों के नाम बदले, मगर बोली, पहनावा और तहज़ीब में वही शेरशहाबादीपन रहा। गंगा और महानंदा नदियों के किनारे बसने का एक कारण यह भी था कि उस वक़्त यही इलाके खेती के लिए सबसे ज़्यादा उपजाऊ माने जाते थे, और पानी की आसानी से यहां रहन-सहन मुमकिन था। जैसे-जैसे नदियों के किनारे बस्तियां बसती गई, वैसे-वैसे शेरशहाबादी समाज की आबादी भी बढ़ती गई। मगर उनकी पिछड़ी हालत, तालीम की कमी, और सियासी अनदेखी ने उन्हें हमेशा हाशिये पर बनाए रखा।

1982 में मोहम्मद मुबारक हुसैन साहब, जो मनीहारी से विधायक थे, उन्होंने एक संगठन बनाया – ऑल बिहार शेरशाह आबादी एसोसिएशन इसका मकसद था शेरशहाबादी समाज के लोगों को इज़्ज़त और हक दिलाना। उन्होंने हमारे समाज की नागरिकता का सबूत पेश किया, बांग्लादेशी कहे जाने के आरोप का जवाब दिया, और हमें ओबीसी वर्ग में शामिल करवाने में अहम भूमिका निभाई। लेकिन अफसोस, आज भी हम तालीम (शिक्षा) में बहुत पीछे हैं। हमारे बच्चे स्कूल तो जाते हैं, मगर गरीबी, भाषा और पहचान की दीवारें उन्हें आगे बढ़ने नहीं देतीं।

हमारी बोली – जिसमें उर्दू की मिठास, हिंदी का असर, और बंगला की लहर है – उसे लोग गंवार समझते हैं। जब हम खाड़ी देश या बड़े शहरों में काम करने जाते हैं, लोग पूछते हैं, कहाँ के हो? हम कहते हैं, बिहार से। फिर सवाल आता है, और जात? तो हम चुप हो जाते हैं, या कोई और नाम ले लेते हैं। क्योंकि हमें डर लगता है – कहीं लोग हमें छोटा न समझें। मगर सवाल ये है – क्या हम वाकई में छोटी जात के हैं, या हमें छोटा महसूस कराया गया है?

अब वक्त आ गया है कि हम अपने बुजुर्गों की मेहनत, अपने इतिहास और अपने वजूद पर फख्र करें। शेरशहाबादी सिर्फ एक बोली नहीं, एक तहज़ीब है। शेरशहाबादी सिर्फ एक जात नहीं, एक सफर है। और हर सफर अपनी मंज़िल पा ही लेता है – अगर चलने वाला रुके नहीं। मैं मोहम्मद एहसान हूँ। मनीहारी से हूँ। और हाँ, मैं शेरशहाबादी हूँ – फख्र के साथ।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक तकदीस फ़ातिमा रिज़वी ने ग्रुप-5 प्रकाशन, 55-बी, वज़ीर हसन रोड, लखनऊ से मुद्रित कराकर प्रथम तल, मस्जिद नूर महल, साकेत पल्ली, नरही, लखनऊ से प्रकाशित किया।

किसी भी लेख में कोई विवाद के लिए 'अवधनामा' जिम्मेदार नहीं होगा, इसकी जिम्मेदारी लेखक की है। किसी भी समाचार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही होगा।

पोलिटिकल एडीटर : एम.एम. मोहसिन
स्थानीय संपादक
मोहम्मद आलम रिज़वी
RNI No UPHIN/2010/31173
टेली फैक्स नं. : 2288091, 4065716
avadhnamahindi@gmail.com,

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, राज्यसभा के सभापति भी हैं, ने तो सीधा सुप्रीम कोर्ट और न्यायपालिका के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। उन्होंने कहा कि कोर्ट सुपर संसद की तरह काम न करे। हालांकि, उपराष्ट्रपति के इस तेवर पर भी विधि विशेषज्ञ दो खेमों में बंट गए हैं, एक इस पर आपत्ति जता रहा है तो दूसरा इसे 'साहसिक' बता रहा है। तो क्या अब संविधान के दो मूलभूत अंग न्यायपालिका और कार्यपालिका ही एक दूसरे के खिलाफ खड़े हो गए हैं? क्या यह स्थिति हमारे लोकतंत्र के लिए सुखद है? वैसे, विधायिका और न्यायपालिका में टकराव कोई नई बात नहीं है।

विधायिका और न्यायपालिका टकराव ठीक नहीं

प्रेम शर्मा

भारत में, संविधान के अनुसार कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका को अलग-अलग शक्तियां दी गई हैं. विधायिका कानून बनाती है, कार्यपालिका कानून लागू करती है, और न्यायपालिका कानूनों की व्याख्या करती है। कार्यपालिका और विधायिका के नीतिगत लक्ष्य और प्राथमिकताएं अलग-अलग हो सकती हैं, जिससे टकराव हो सकता है। कार्यपालिका और विधायिका इस बात पर असहमत हो सकती हैं कि धन का आवंटन कैसे किया जाए.। कार्यपालिका के पास कुछ अधिकारियों को नियुक्त करने की शक्ति होती है, जबकि विधायिका के पास उन्हें हटाने की शक्ति होती है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा हाल में विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयको को सम्बन्धित राज्यपालों द्वारा अनंत काल तक रोक कर 'पॉकेट वीटो' करने की प्रवृत्ति के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट की दो सदस्यीय खंडपीठ ने जो निर्णय दिया है, उससे विधायिका में भारी कसमसाहट है। सत्तापक्ष का मानना है कि यह कार्यपालिका के क्षेत्र में न्यायपालिका का अनावश्यक हस्तक्षेप है। अदालतें कार्यपालिक प्रमुखों जैसे राष्ट्रपति और राज्यपालों को निर्देशित कैसे कर सकती हैं। दूसरी तरफ न्यायपालिका का मानना है कि यदि कार्यपालिक प्रमुख अपने संवैधानिक दायित्वों की व्याख्या मनमाने और सियासी गुणा भाग के हिसाब से करेंगे तो न्यायपालिका को न्यायदंड अपने हाथ में लेना ही पड़ेगा। तमिलनाडु सरकार बनाम राज्यपाल के इस मामले में सरकार तो सीधे तौर पर कुछ नहीं कह रही है, लेकिन उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, राज्यसभा के सभापति भी हैं, ने तो सीधा सुप्रीम कोर्ट और न्यायपालिका के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। उन्होंने कहा कि कोर्ट सुपर संसद की तरह काम न करे। हालांकि, उपराष्ट्रपति के इस तेवर पर भी विधि विशेषज्ञ दो खेमों में बंट गए हैं, एक इस पर आपत्ति जता रहा है तो दूसरा इसे 'साहसिक' बता रहा है। तो क्या अब संविधान के दो मूलभूत अंग न्यायपालिका और कार्यपालिका ही एक दूसरे के खिलाफ खड़े हो गए हैं? क्या यह स्थिति हमारे लोकतंत्र के लिए सुखद है? वैसे, विधायिका और न्यायपालिका में टकराव कोई नई बात नहीं है। वर्ष 1973 में केशवानंद भारती केस में ऐसा हुआ था। तब सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि संसद संविधान संशोधित तो कर सकती है, लेकिन संविधान के बुनियादी ढांचे को छू नहीं सकती। उस समय तक संसद खुद को सर्वोच्च मानती थी, लेकिन कोर्ट ने उसकी शक्ति पर सीमा लगा दी थी। ऐसे कई प्रकरण है जिनमें न्यायपालिका और विधायिका के बीच टकराव हो चुके है।

सुप्रीम कोर्ट तमिलनाडु सरकार बनाम राज्यपाल रवि के मामले में स्पष्ट फैसला देते हुए राज्य विधानसभा द्वारा पारित विधेयकों को मंजूरी की समय सीमा 3 माह तय कर दी। कोर्ट ने कहा कि यदि इस समयावधि में राज्यपाल विधेयक पर कोई फैसला नहीं लेते हैं तो उन्हें स्वतः कानून माना जाए। लिहाजा तमिलनाडु में ऐसे 10 विधेयक बिना राज्यपाल के हस्ताक्षर के कानून बन चुके हैं। यह अभूतपूर्व स्थिति है। यही नहीं न्यायपालिका ने राज्यपालों के साथ साथ राष्ट्रपति द्वारा भी किसी विधेयक पर मंजूरी की समयावधि तीन माह तय कर दी। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस जे.बी.पारदीवाला और जस्टिस आर. महादेवन की पीठ द्वारा दिए गए इन फैसलों को एक वर्ग न्यायपालिका द्वारा अपनी मर्यादा के उल्लंघन के रूप में देख रहा है तो समाज का दूसरा वर्ग इसे न्यायपालिका की सक्रियता और निर्भीकता का प्रमाण मान रहा है। इस दूसरे वर्ग का मानना है कि अब लोकतंत्र बचने की आस केवल न्यायपालिका से ही है, क्योंकि बाकी दूसरी लोकतांत्रिक संस्थाओं ने सत्तातंत्र की दबंगई के आगे घुटने टेक दिए हैं। क्या इस सैद्धांतिक द्वंद्व का कोई सकारात्मक नतीजा निकलेगा या फिर एक दूसरे की मुश्कें कसने की पूर्वपीठिका तैयार की जा रही है ? अगर ऐसा है तो यह लोकतंत्र के लिए घातक है। क्योंकि वैचारिक द्वंद्व होना अलग बात है और अधिकारों का अतिक्रमण और मर्यादा का सीमांकन की जिद होना दूसरी बात है।

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की सुप्रीम कोर्ट पर की गई टिप्पणियों ने कार्यपालिका और विधायिका के बीच के टकराव को सार्वजनिक कर दिया है। जजों की नियुक्ति का मामला हो या संविधान की व्याख्या मतभेद पहले भी रहे हैं। लेकिन, पहली बार संवैधानिक पद पर बैठे किसी जिम्मेदार ने इतनी तल्ख बातें की हैं। जिस मंच का इस्तेमाल किया गया, वह भी सही नहीं था। इससे किसी बदलाव की उम्मीद कम, बेकार की बहस बढ़ने का अंदेशा ज्यादा है। उपराष्ट्रपति ने संविधान के अनुच्छेद 142 को लोकतांत्रिक ताकतों के खिलाफ न्यूक्लियर मिसाइल बताया है। यह अनुच्छेद सुको को विशेष अधिकार देता है। जब पूर्ण न्याय के लिए कोई और रास्ता नहीं बचता, तब सुप्रीम अदालत इस अनुच्छेद से मिली पूर्ण शक्तियों का इस्तेमाल करती है। इसे किसी संवैधानिक संस्था के खिलाफ हथियार नहीं कहा जा सकता, बल्कि यह उम्मीद का दरवाजा है। उपराष्ट्रपति धनखड़ ने सुप्रीम कोर्ट को सुपर संसद कहा, अनुच्छेद 145 (3) में संशोधन की वकालत की है। यह अनुच्छेद तय करता है कि संविधान से जुड़े मामलों पर सुप्रीम कोर्ट की पीठ का गठन किस तरह किया जाएगा। ऐसे में इस तरह की टिप्पणियां जनता में भ्रम पैदा कर सकती हैं, अविश्वास का माहौल बनता है। उपराष्ट्रपति की कुछ चिंताएं अपनी जगह सही हैं। बहरहाल इस टकराव को रोकने के लिए कार्यपालिका और विधायिका को एक-दूसरे के साथ संवाद और सहयोग करना चाहिए। दोनों को नीतियों और बजट पर समझौता करना चाहिए। विधायिका को कार्यपालिका की गतिविधियों पर निगरानी रखने और उसे जवाबदेह ठहराने की शक्ति होनी चाहिए।

देश के दिल दिल्ली से राष्ट्र को संस्कृतमय करने की पहल

संस्कृत भारती विविध कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत को समाज तक ले जाती है। संस्कृत सम्भाषण शिविरों के माध्यम से संस्कृत भारती द्वारा दस दिन तक प्रतिदिन दो घंटे संस्कृत बोलने का प्रशिक्षण अत्यन्त रोचक विधि से अन्य भाषा के प्रयोग के बिना शब्द, वाक्य, कथा, अभिनय प्रदर्शन, गीत आदि के माध्यम से परस्पर वार्तालाप से दिया जाता है। देशभर में अब तक इस तरह के एक लाख से अधिक शिविरों का आयोजन किया जा चुका है। सम्भाषण शिवरों के माध्यम से संस्कृतभारती ने अभी तक विश्वभर में दो करोड़ लोगों को संस्कृत सम्भाषण में सक्षम करने का कीर्तिमान स्थापित किया है।

सुशील कुमार 'नवीन'

दिल्ली देश का दिल है। यहां पर हुई कोई भी हलचल या गतिविधि अंतरराष्ट्रीय पटल पर अपनी पहचान स्थापित करती है। देवभाषा संस्कृत के प्रचार और प्रसार में पिछले 44 वर्षों से समर्पित अंतरराष्ट्रीय संगठन संस्कृत भारती दिल्ली से ही 23 अप्रैल से संस्कृत संभाषण का विशेष महाभियान शुरू करने जा रहा है। इसके तहत दिल्ली के विभिन्न 1008 स्थानों पर संस्कृत संभाषण शिविरों के माध्यम से दस हजार से भी अधिक परिवारों को अपने साथ प्रत्यक्ष रूप से जोड़ा जाएगा। दस दिनों तक चलने वाले इन संभाषण शिविरों के माध्यम से प्रशिक्षित कार्यकर्ता शिक्षक का दायित्व निर्वहन कर 50 हजार से अधिक लोगों को संस्कृत संभाषण में दक्ष करने का कार्य करेंगे। इसका समापन 4 मई को एक बड़े आयोजन के साथ होगा।

संस्कृत भारती के अनुसार किसी भी राष्ट्र की अखण्डता के लिए सांस्कृतिक भाषा एक आवश्यक वैचारिक आधार है। संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी होने के कारण सभी देशवासियों को एकत्र करने की भूमिका बहुत प्रभावी ढंग से निभा सकती है। दर्शन, साहित्य, विज्ञान,ज्योतिष, वास्तुकला, आयुर्वेद, योग, गणित, संगीत आदि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के ज्ञानकोष की कुञ्जी संस्कृत है। संस्कृतभाषा को जन-जन की व्यवहार भाषा बनाने के लिए 1981 में संस्कृतभारती संगठन की शुरुआत हुई जो आज एक वटवृक्ष का रूप धारण कर चुका है। संस्कृत के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित शिक्षकों, संयोजकों, विद्वान् मार्गदर्शकों के साथ-साथ समाज में अनेक प्रकार से सहयोगीजनों का राष्ट्रव्यापी मंच देकर संस्कृतभारती ने कार्य को और गति प्रदान की है।

संस्कृत भारती विविध कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत को समाज तक ले जाती है। संस्कृत सम्भाषण शिविरों के माध्यम से संस्कृत भारती द्वारा दस दिन तक प्रतिदिन दो घंटे संस्कृत बोलने का प्रशिक्षण अत्यन्त रोचक विधि से अन्य भाषा के प्रयोग के बिना शब्द, वाक्य, कथा, अभिनय प्रदर्शन, गीत आदि के माध्यम से परस्पर वार्तालाप से दिया जाता है। देशभर में अब तक इस तरह के एक लाख से अधिक शिविरों का आयोजन किया जा चुका है। सम्भाषण शिवरों के माध्यम से संस्कृतभारती ने अभी तक विश्वभर में दो करोड़ लोगों को संस्कृत सम्भाषण में सक्षम करने का कीर्तिमान स्थापित किया है। डेढ़ लाख से अधिक कार्यकर्ताओं को संस्कृत में शिक्षण के लिए प्रशिक्षित किया जा चुका है। विश्व के 26 देशों में 45 सौ से अधिक केंद्र संचालित किए जा रहे हैं। संस्कृत भारत की सबसे प्राचीन भाषा है। इसे देश के जन जन तक पहुंचाने के लिए लगातार कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहते हैं। संस्कृत भारती दिल्ली द्वारा यहां से एक बड़े आयोजन की कार्य योजना बनाई गई। इसके तहत दिल्ली में एक साथ 1008 संस्कृत संभाषण शिविरों के संचालन पर सहमति बनी। इसके लिए 1000 से अधिक कार्यकर्ताओं को पहले विभिन्न स्थानों पर शिविर लगाकर प्रशिक्षित किया गया। इसी के तहत बुधवार 23 अप्रैल से शिविरों का महाभियान शुरू हो रहा है।

संस्कृत के प्रचार प्रसार के लिए संस्कृत भारती का यह कोई एक मात्र कार्यक्रम नहीं है। साप्ताहिक मेलन सम्भाषण शिविर का ही अनुवर्ती कार्यक्रम है। इसके तहत सप्ताह में एक दिन दो घण्टे के लिए एकत्र आकर संस्कृतवातावरण में रहकर पुनः संस्कृत सम्भाषण का अभ्यास करते हैं। नए लोगों का भी संस्कृत से परिचय कराने में भी यह लाभदायक साबित होता है। इसी क्रम में दस दिवसीय आवासीय प्रबोधन वर्ग का आयोजन किया जाता है। इसके तहत अखण्ड संस्कृत वातावरण में रहते हुए संस्कृत में ही चिन्तन मनन के लिए प्रेरित कर सहज भाव से संस्कृत को व्यवहार में लाने का सामर्थ्य पैदा किया जाता है। इसी कड़ी में प्रशिक्षणवर्ग संस्कृत सम्भाषण शिविर शिक्षकों के निर्माण के लिए विशेष वर्ग है। इसमें भाग लेने वाले प्रतिभागी समाज में जाकर सम्भाषण शिविर चलाते हैं। संस्कृत को संस्कृत माध्यम से पढ़ाने का प्रशिक्षण भी इसी वर्ग में प्राप्त होता है।

साहित्य प्रकाशन के माध्यम से संस्कृत भारती द्वारा सरल और रुचिकर पद्धति से व्याकरण, उपन्यास, कथा, बाल गीत, नाटक भगवद् गीता, सुभाषित, यात्रावृत्तान्त, वैचारिक लेख, भाषाभ्यास इत्यादि विषयों पर लगभग 300 पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष एकादशी तिथि को गीता जयन्ती के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण प्रदेश में अखण्ड गीता पाठ, गीता शोभायात्रा एवं गीता प्रतियोगिताओं का अनेक स्थानों पर आयोजन किया जाता है। प्रतिवर्ष रक्षा बन्धन के तीन दिन पूर्व तथा तीन दिन बाद तक संस्कृत सप्ताह का आयोजन अखिल भारतीय स्तर पर केन्द्र सरकार तथा विभिन्न संस्थाओं द्वारा होता है। संस्कृतभारती इन आयोजनों में सभी प्रकार का सहयोग एवं प्रोत्साहन करती है। स्वयं भी अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है।

बाल केंद्रों के माध्यम से अनेक स्थानों पर छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं को खेल, गीत, भजन, कथा स्तोत्र तथा अभिनय आदि के माध्यम से संस्कृत के साथ-साथ उत्तम संस्कार देने का कार्य संस्कृत भारती कर रही है। जिस घर में परिवार के सभी सदस्यों द्वारा संस्कृत बोली व समझी जाती है, जो परस्पर संस्कृत भाषा में व्यवहार करते हैं। उन्हें संस्कृत गृह का नाम दिया गया है। देश भर के हजारों कार्यकर्ताओं के परिवार ऐसे संस्कृतगृह है। बच्चों से लेकर बड़ों तक सबके लिए रोचक साहित्य से युक्त, वर्णमयी संस्कृत मासिकी पत्रिका संभाषण संदेश का प्रकाशन किया जाता है। इसमें अत्यन्त सरल संस्कृत में कथा, चुटकुले, विज्ञान, भाषाभ्यास, समसामयिक विचार, राष्ट्रीय चिन्तन, आधुनिक विषय से सम्बद्ध लेख और विश्व के संस्कृत जगत् की नवीनतम वार्ता आप पढ़ सकते हैं। पत्राचार द्वारा भी घर बैठे प्रतिदिन थोड़ा समय संस्कृताभ्यास के लिये निकाल कर आप दो वर्षों में गीता, रामायण, स्तोत्र इत्यादि स्वयं पढ़कर समझ सकते हैं। प्रत्येक छः महीने में इस बारे में परीक्षा भी ली जाती है। संस्कृत भारती द्वारा दिल्ली को संस्कृतमय करने की यह पहल के निश्चित रूप से सकारात्मक परिणाम होंगे। महाकवि कालिदास द्वारा रचित महाकाव्य 'रघुवंशम्' की यह उक्ति अभियान में लिए सार्थक साबित होगी। कालिदास जी कहते हैं कि काले खलु समारब्धाः फलं बध्नन्ति नीतयः अर्थ है, समय पर शुरू की गई नीतियां सफल होती हैं।

कॉपीराइट दिवस : साहित्य प्रेमियों के लिए विशेष दिन

आजादी के एक दशक बाद सन 1957 ई. को कॉपीराइट का कानून बना जो काफी लम्बे समय तक वही चलता रहा। फिर डिजिटल क्रांति के विस्तार को देखते हुए संशोधन की जरूरत महसूस हुई और 55 साल के बाद सन 2012 ई. में इसमे जरूरी संशोधन किए गएं। अब सवाल बनता है कि आखिर 23 अप्रैल को ही विश्व पुस्तक दिवस और कॉपीराइट क्यों मनाया जाता है । तो उसी 23 अप्रैल सन 1616 ई. को विश्व के तीन महान लेखकों व शिक्षाविदों की मौत हुई थी।

एनाएतुल्लाह नन्हे

आज 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस है। साहित्य से प्यार करने वालों के लिए यह विशेष दिन है। आप सबको पुस्तक दिवस तो बहुत आसानी से समझ आ गया होगा किन्तु उसके साथ है कॉपीराइट है जिसका भी दिवस साथ मे ही है। आज के डिजिटल दौर में विशेष कर सोसल साईट के इंफेलुएन्सर और यूट्यूबर को खूब पता है कि कॉपीराइट क्या है। अब विषय पर आते हैं कि कॉपीराइट केवल पुस्तक या किताब तक ही सिमित नही है बल्कि यह कानून अर्थात कॉपीराइट फ़िल्म, चलचित्र, सिनेमा, गाना, आलेख, डॉक्यूमेंट्री, धारावाहिक, पोर्टल, सेटेलाईट चैनल, एप्प्स व अन्य पेटेंट दस्तावेज के साथ लागू होता है। जिसके साथ छेड़छाड़, नकल, कॉपी-पेस्ट, किसी के कंटेंट को अपना नाम देना आदि कॉपीराइट का अपराध है। उस लक्ष्मण रेखा को पार करने पर आप उसकी पकड़ में आएंगे। जिसके तहत सजा और जुर्माना या दोनो हो सकता है। कॉपीराइट अंग्रेजी शब्द है जिसे हिन्दी मे प्रतिलिप्यधिकार कहते हैं जो कि उस व्यक्ति के द्वारा तैयार की गई कंटेंट उसका बौद्धिक संपदा होती है। जो लेखक के असली दस्तावेज को प्रकाशक और वितरक तक एक खाश निश्चित समय सीमा के लिए विशेष अधिकार देता है। उसे ही कॉपीराइट कहते हैं। इसी लिए विश्व पुस्तक दिवस के साथ कॉपीराइट दिवस जोड़ दिया गया है, ताकि पुस्तक लेखकों की लेखनी की सुरक्षा की गारंटी मिल सके। गौरतलब है कि कॉपीराइट के तहत किसी भी कन्टेंट से होने वाली आर्थिक लाभ का अधिकार उस कंटेंट के स्वामी (मालिक) का होता है । फिर भी ऐसे कंटेंट का प्राइवेट तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है। जो कि ये कानूनी तौर पर जायज भी है। किन्तु जब इसका प्रचार-प्रसार और कमर्शियल उद्देश्य से व्यवसायिक इस्तेमाल करेंगे तो यह कॉपीराइट का उल्लंघन होगा और आप इसके दायरे में आएंगे । अगर कोई भी फोटोग्राफ या उस किताब या अन्य कोई कंटेंट का इस्तेमाल करना चाहता है तो उसे अनुमति लेनी होगी और साथ ही रॉयल्टी पेमेंट करना होगा। कॉपीराइट इसी लिए बनाया गया कि पुस्तक के लेखकों को उनके मेहनताना (श्रमिक आय) भी मिले और उनकी किताब या अन्य फॉर्मेट में उनके द्वारा तैयार की गई कंटनेट भी उनके नाम से सुरक्षित रहे । यहाँ ये भी जानते चलें कि कॉपीराइट का रजिस्ट्रेशन ऑनलाईन होता है जो की बिल्कुल फ्री है । उसके लिए आप को फार्म संख्या 904 को भरना होता है। जिसके बाद कंटेंट के हिसाब से उसकी फीस भरी जाती है। भारत में कॉपीराइट का रजिस्ट्रेशन साल 1957 ई. में शुरु की गई, लेकिन साल 1958 ई. में 21 जनवरी से विधिवत रुप से काम करने लगा। याद रहे कि भारत मे कॉपीराइट का पहला कानून अंग्रेजों ने अपने ब्रिटिश राज में सन 1912 ई. में बनाया था। जिसमे आजादी से पहले तक उसमें जरूरत के हिसाब से कई संशोधन भी किए गएं। जबकि आजादी के एक दशक बाद सन 1957 ई. को कॉपीराइट का कानून बना जो काफी लम्बे समय तक वही चलता रहा। फिर डिजिटल क्रांति के विस्तार को देखते हुए संशोधन की जरूरत महसूस हुई और 55 साल के बाद सन 2012 ई. में इसमे जरूरी संशोधन किए गएं। अब सवाल बनता है कि आखिर 23 अप्रैल को ही विश्व पुस्तक दिवस और कॉपीराइट क्यों मनाया जाता है । तो उसी 23 अप्रैल सन 1616 ई. को विश्व के तीन महान लेखकों व शिक्षाविदों की मौत हुई थी। भले ही उन तीनों में से दो की मौत एक दिन पहले यानी 22 अप्रैल को हुई थी। लेकिन तीनों का अंतिम संस्कार 23 अप्रैल को ही हुआ था। उनमें सबसे पहला नाम शेक्सपियर का आता है जिनका पूरा नाम विलियम शेक्सपियर है। जिनका अंग्रेजी पोएम (कविता) बच्चा-बच्चा जानता है । इतना ही नही हर पढ़ा लिखा व्यक्ति चाहे वह किसी भी विषय का विद्यार्थी रहा हो वह शेक्सपियर को जरूर जानता है। दूसरे नम्बर पर मिगुएल डे सर्वेंट्स और तीसरे नम्बर पर इंका गार्सिलसो डेला वेगा का नाम आता है। इन्ही महान लेखकों, दार्शनिकों, चिंतकों और विचारकों को श्रद्धांजलि देने और पुस्तको के लेखको मे ऊर्जा संचार करने के उद्देश्य से यह दिवस विश्व स्तर पर मनाने का निर्णय यूएनओ की विशेष एजेंसी संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा 1995 ई. में शुरू किया गया था। इस तरह हर वर्ष यूनेस्को मेजबानी करते हुए किसी न किसी देश में विश्व पुस्तक दिवस और कॉपीराइट दिवस पर उस देश को राजधानी बनाता है और लेखनी से जुड़े मामलों पर शोध, सेमिनार, सिम्पोजियम, लेख प्रतियोगिता, लेखन कार्यशाला और कहानी लिखो प्रतिअस्पर्धा, वाद-विवाद प्रतियोगिता, डिबेट, सामुहिक संवाद और नए लेखकों और पुराने लेखकों के बीच संवाद स्थापित कराता है । जिससे साहित्य के साथ-साथ पुस्तक के लेखकों में ऊर्जा का संचार होता है। उन्हें उस दिन सम्मानित भी किया जाता है। इस दिवस को मनाने का मूल उद्देश्य पुस्तकों को पढ़ने के लिए लोगों को प्रेरित करना है। यह वर्ल्ड लेबल पर एक ऐसा उत्सव है जिसमे किताब की अहमियत, उसके लेखक व प्रकाशक तक ही सीमित नही है, बल्कि यह दिवस हमे यह बताता है कि जब एक लेखक कोई किताब लिखता है तो वह कितनी मेहनत करने के साथ-साथ काफी समय व्यतीत कर उसे तैयार करता है। इसलिए सबसे पहले उस किताब के कंटेंट को कैसे सुरक्षित किया जाए ताकि कोई उनके लेखनी को चुरा कर अपना नाम देकर उसे प्रकाशित न कर सके। विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस केवल लेखकों तक ही सीमित नही है बल्कि यह किताबों की दुकानों, पुस्तक मेला और पुस्तकालयों तक इसकी चर्चा होती है । क्योंकि यही वह जगह है जहाँ किताबों को आगे बढ़ाने का सबसे बड़ा स्टेज है । किताब ही वह माध्यम है जिससे किसी भी देश की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, क्षेत्रीय और सांस्कृतिक गतिविधियों को शब्दों में आकार देकर दस्तावेज बनाती है। जिस से पीढ़ी दर पीढ़ी उससे शिक्षा ग्रहण करने के बाद रहती दुनिया तक उस पर शोध चलता रहता है। विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस का मुख्य उद्देश्य साक्षरता को बढ़ावा देना और लोगों को अधिक से अधिक पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना है । इस दिन बहुत सारे जगहों पर किताब से जुड़ी कार्यक्रम कर के किताब को फ्री में बाँटने का काम भी लेखक, प्रकाशक और वितरक के आपसी सामंजस्य से होता है । इतना ही नही इस दिन पाठको के बजट से काफी दूर रहने वाली मंहगी किताबों पर विशेष छूट भी दी जाती है । इस तरह के प्रोगाम देश की राजधानी दिल्ली के साथ अन्य जगहों में भी होता है।

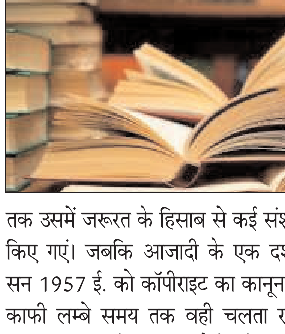

नोडल अधिकारी की अनुपालन आख्या न आने पर सीडीओ ने लगाई फटकार

अवधनामा संवाददाता

■ कल तक अनुपालन आख्या उपलब्ध कराने के सभी विभागों को दिये निर्देश

ललितपुर। सीईओ, बुन्देलखण्ड औद्योगिक विकास प्राधिकरण/नोडल अधिकारी अमृत त्रिपाठी (आईएएस) के द्वारा विगत माह में किये गए निरीक्षण के दौरान दिये गए निर्देशों की अनुपालन आख्या की समीक्षा हेतु आज सीडीओ के.के. पाण्डेय ने बैठक ली। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि नोडल अधिकारी ने 02 मार्च को निरीक्षण में जो निर्देश दिये थे, उनकी अनुपालन आख्या आज तक प्राप्त नहीं हो पायी है, यह स्थिति खेदजनक है, उन्होंने फटकार लगाते हुए निर्देश दिये कि कल तक सभी अधिकारी अपनी-अपनी अनुपालन आख्या इस कार्यालय को उपलब्ध करा दें ताकि शासन को रिपोर्ट भेजी जा सके। इसके अलावा बैठक में अधिशासी अभियंता विद्युत ग्रामीण, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका, बेसिक शिक्षा अधिकारी की अनुपस्थिति पर नाराजगी जाहिर करते हुए अलग से वार्ता करने के निर्देश दिये गए। बैठक में केसीसी की 55 प्रतिशत प्रगति पर एआर कोपरेटिव को कारण बताओ नोटिस के साथ तत्काल आख्या उपलब्ध कराने के निर्देश दिये गए। फसल बीमा की समीक्षा में डीडी एग्रीकल्चर को एक सप्ताह के भीतर क्रॉस सर्वे कराने के निर्देश दिये गए। बैठक में बताया गया कि नोडल अधिकारी के निरीक्षण के समय अम्बेडकर पार्क के पास अवैध कब्जों की शिकायत की गई थी, जिसके सम्बंध में मौके पर अस्थायी कब्जा पाया गया, जिसे तत्काल हटवाकर बाउंड्री से मैदान कवर करा दिया गया है। अम्बेडकर पार्क के पास ही लावारिस अवस्था में खड़ी एम्बुलेंस सहित जनपद में संचालित सभी एम्बेलेंसों की जांच करने के निर्देश दिये गए थे, जिसमें सम्बंध में अभी तक रिपोर्ट लम्बित पायी गई, इस पर सीएमओ को तत्काल सभी एम्बुलेंस की जांच आख्या भिजवाने के निर्देश दिये गए। नोडल अधिकारी ने इमरजेंसी में आईसीसीसी के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं को जोड़कर नागरिकों को इसका लाभ दिलाने के निर्देश दिये गए थे, जिसके क्रम में अधिशासी अधिकारी नगर पालिका और मुख्य चिकित्सा अधिकारी को आवश्यक कार्यवाही कर आख्या देने के निर्देश दिये गए। ग्रामीण क्षेत्रों में एमएसएमई के तहत पात्र इच्छुक लाभार्थियों की सूची उपलब्ध कराने के निर्देश दिये गए। निरीक्षण के समय आंगनबाड़ी केन्द्र में रिक्त पद के सापेक्ष वर्तमान में भर्ती कर ली गई है, साथ ही आंगनबाड़ी केन्द्रों पर उपलब्ध किटों का सत्यापन भी चल रहा है। नोडल अधिकारी ने निरीक्षण के समय विद्यालय में जल जीवन मिशन द्वारा पानी पहुंचाने के निर्देश सम्बंधी आख्या लम्बित होने पर अधिशासी अभियंता जल निगम ग्रामीण को तत्काल कार्यवाही कर रिपोर्ट देने के निर्देश दिये गए। जनपद में धार्मिक स्थलों/विद्यालयों के आसपास स्थापित शराब की दुकानों को चिन्हित कर अन्य स्थान पर स्थानान्तरित करने के सम्बंध में आबकारी विभाग के अधिकारियों को निर्देश किया गया।

रूपयो के लेन-देन में युवक पर धारदार हथियार से हमला, हालत गंभीर

उन्नाव। थाना गंगाघाट अन्तर्गत बीतीरात रुपयों के लेन-देन मे युवक पर धारदार हथियार से हमला कर घायल कर दिया गया। गभीर रूप से घायल युवक को उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मिली जानकारी के अनुसार गंगाघाट कोतवाली क्षेत्र की चौकी जाजमऊ क्षेत्र के डकारी निवासी ओमप्रकाश उर्फगुड्डू सिंह का रिजवाना निवासी लाखापुर से रूपये का लेन-देन चलता है रिजवाना का पति विदेश मे रहता है। बीतीरात रिजवाना ने पैसे देने के लिए गुड्डू को घर बुलाया था। पैसे लेने के लिए गुड्डू जैसे ही रिजवाना के घर के पास पहुचा तभी रिजवाना व उसके साथी सुएब उर्फ मुख्तार आलम ने धारदार हथियार से हमला कर घायल कर दिया। गुड्डू सिंह पर हमले की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची गंभीर रूप से घायल गुड्डू को उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया। पुलिस ने घायल युवक के परिजनों से जानकारी कर कुछ लोगो को हिरासत मे लिया है।

संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान को लेकर तैयारियां जोरों पर

अवधनामा संवाददाता

■ तृतीय अन्तर्विभागिय समीक्षा बैठक सम्पन्न

ललितपुर। विकास भवन सभागार में सीडीओ के.के.पाण्डेय की अध्यक्षता में माह अप्रैल 2025 में संचारी रोग नियंत्रण अभियान एवं दस्तक अभियान के सफल संचालन हेतु तृतीय अन्तर्विभागीय समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। सीडीओ ने निर्देश दिए कि माइक्रोप्लान के अनुसार फागिंग और एण्टीलार्वल गतिविधि करायी जाये। डीपीआरओ को झाडियों की कटाई, ठहरे हुए पानी एवं नालियो की सफाई आदि मे पाई गई कमियों को दूर करते हुए गुणात्मक सुधार करने को कहा। साथ ही उन्होने डीपीओ आई.सी.डी.एस. को आंगनबाडी कार्यकत्रियों का गृह भ्रमण बढाने को कहा। सीएमओ डा.इम्तियाज अहमद ने अधिक से अधिक आभा आई.डी. बनाने हेतु निर्देशित किया। उन्होने कहा सभी विभाग अपनी गतिविधियों से सम्बन्धित माइक्रोप्लान के अनुसार कार्य करना सुनिश्चित करें, जिससे जनपद का फीडबैक एवं रैंकिंग राज्य स्तर पर उच्च स्थान पर रहे एवं पिछली कमियों को दूर करते हुए इस अभियान में सभी गतिविधियां माइक्रोप्लान के अनुसार गुणवत्ता शत-प्रतिशत पूर्ण करायें। अभियान में किसी प्रकार की शिथिलता न बरती जाये।

पब्लिक हेल्थ स्पेशलिस्ट डा.सौरभ सक्सेना ने विभागों द्वारा किए गये कार्यो की तृतीय सप्ताह की उपलब्धि रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होनें बताया कि इन गतिविधियों के माध्यम से जनपद वासियों को वेक्टर जनित रोगों से बचाव व उपचार के बारे में जागरूक किया जा रहा है। साथ ही सम्बन्धित विभिन्न विभागों से नियमित सम्पर्क एवं समन्वय स्थापित कर अभियान को सफल बनाया जा रहा है। उन्होंने सभी अधिकारियों, कर्मचारियों से पूर्ण मनोयोग से कार्य करने के लिए कहा। मलेरिया अधिकारी अनिल क्रिस्टोफर मैसी ने बताया कि सभी ब्लॉकों पर 05-05 लीटर लार्वीसाइड दवा उपलब्ध करा दी गयी है तथा तीनों नगर पंचायतों एवं नगर पालिका को भी लार्वीसाइड दवा टेमीफॉस प्राप्त करायी है जो कि डीपीआरओ के सफाई कर्मचारियों के द्वारा गांव में छिड़काव किया जायेगा, जिससे संचारी रोगों से होने वाली बीमारियों से बचाव किया जा सके।

कांग्रेस में लगा गुटबाज़ी का कीड़ा नहीं छोड़ रहा पीछा

अवधनामा संवाददाता

मथुरा। कांग्रेस देश की सबसे पुरानी पार्टी रही है मथुरा जैसे क्षेत्र में कांग्रेस में किसी जमाने में धुरंधर नेताओं की फेहरिस्त हुआ करती थी, वर्तमान परिवेश में समय और हालात दोनों बदल गए और मथुरा से कांग्रेस प्राय विलुप्त हो गई जिसका मुख्य कारण कांग्रेस के धुरंधर नेताओं की गुटबाजी को माना जाता रहा है।

कांग्रेस में एक दशक तक दबदबा कायम रखने वाले मथुरा के चार बार के विधायक प्रदीप माथुर को कांग्रेस में एक बड़े चेहरे के रूप में माना जाता रहा है वर्तमान समय में वास्तविकता में मथुरा में कांग्रेस की गुटबाजी उन्हीं के इर्द गिर्द घूम रही है। इसका एक बड़ा कारण देखने को भी मिला मथुरा। कांग्रेस नेतृत्व द्वारा अभी कुछ समय पहले जिला और महानगर अध्यक्ष पद पर युवा चेहरों को आगे कर कांग्रेस में नई ऊर्जा भरने का काम किया गया है। जिसमें जिला अध्यक्ष पद पर मुकेश धनगर और महानगर अध्यक्ष पद पर यतेंद्र मुकद्दम को आगे कर कांग्रेस कार्यकर्ताओं में गुटबाजी समाप्त कर संगठन को मजबूती प्रदान कर आगे बढ़ने के लिए मौका दिया है। विगत लोकसभा चुनाव में मुकेश धनगर ने दमदार प्रदर्शन कर सम्मानजनक वोट पाये थे। जिससे कांग्रेस संगठन मैं संजीवनी मिलने का काम किया था जिससे कांग्रेसियों में नई ऊर्जा का उत्साह हुआ था । लोकसभा चुनाव लड़ने के बाद मुकेश धनगर में जो गुरूर भर गया वह अपरिपक्व और युवा नेता उससे अभी बाहर नहीं निकल पा रहे हैं ना ही गुटबाजी को समाप्त करने का कोई काम कर रहे हैं उसके उलट दबी हुई गुटबाजी को जनता के सामने खोद खोद कर बाहर निकालने का काम करते दिख रहे हैं जिसका जीता जागता प्रमाण सामने आया है।

छात्र-छात्राएं हुए विधिक जानकारी के रूबरू

मथुरा। आज राजकीय जिला पुस्तकालय, मथुरा में विधिक कार्यशाला का आयोजन करके छात्र - छात्राओं को जागरूक किया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जनपद न्यायालय मथुरा के प्रतिनिधि उमाशंकर शर्मा ने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्र - छात्राओं को संवैधानिक अधिकारों की जानकारी देकर विधिक सेवाओं से संबंधित कानूनों की जानकारी दी। बालिकाओं को महिला सशक्तिकरण, महिला हेल्पलाइन नंबर, घरेलू हिंसा अधिनियम कानून, पोक्सो एक्ट और आर.टी, आई,आ.टी.ई. की जानकारी देकर जागरूक किया। विधिक कार्यशाला की अध्यक्षता पुस्तकालयाध्यक्षा शारदा मिश्रा ने किया। साइबर विशेषज्ञ योगेंद्रने भी विचार व्यक्त किए। कानून संबंधित जानकारी से संबंधित अनेक प्रश्न पूछे। कार्यक्रम में धीरेन्द्र सिंह, पुस्तकालय समन्वयक पवन अवस्थी, कम्प्यूटर आपरेटर विवेक धीमान, सिध्या, सात्विक, संजय आदि इस विधिक जागरूकता अभियान कार्यक्रम में उपस्थिति रहे।

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए एक राष्ट्र एक चुनाव जरूरी : अर्चना

अवधनामा संवाददाता

उन्नाव। 1969 तक लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ ही होते थे। उस समय की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश को मध्यावधि चुनाव में धकेल दिया। अल्पमत की सरकार में वो शक्तियों का दुर्पयोग नहीं कर पा रही थी। बार बार चुनाव से खर्च बढ़ा जनता पर बोझ पड़ा। यह बात भाजपा प्रदेश मंत्री अर्चना मिश्रा ने संगोष्ठी में कही।

श्रीमती मिश्रा ने कहा अचार संहिता से बार बार व्यवस्थाएं ध्वस्त हो जाती है। नेता और राजनीतिक दल हमेशा चुनावी मोड में रहते हैं, इसकी वजह भी है। यहां कभी लोकसभा चुनाव, कभी राज्यों की विधानसभा के चुनाव और कभी स्थानीय निकायों के चुनाव चलते रहते हैं। विकास को गाड़ी पर विराम लगता है। हम विकसित राष्ट्र पहले ही बन जाते। हम राष्ट्र के पैसे का बड़ा हिस्सा चुनाव पर खर्च कर देते हैं। चुनाव में होने वाले खर्च से देश के गांव गरीब वंचित महिला शिक्षा पर उपयोग कर सकते है। एक साथ चुनाव में अधिक लोगों को अवसर मिलेगा। एक राष्ट्र एक चुनाव के लिए हम सबको संकल्पित होना है। जिलाध्यक्ष अनुराग अवस्थी ने कहा 47 राजनैतिक दलों में 32 राजनैतिक दलों ने इस बिल का समर्थन किया। इस प्रणाली के लागू होने से सरकारी संसाधनों की बर्बादी रुकेगी, सुरक्षा बलों पर दबाव कम होगा और नागरिकों की भागीदारी बढ़ेगी, जिससे लोकतंत्र और अधिक सशक्त होगा। निवर्तमान जिलाध्यक्ष अवधेश कटियार ने कहा 2047 तक विकसित भारत बनाने का सपना मोदी जी ने देखा है और हमें भी दिखाया। बार बार का चुनाव विकास में बाधक है। एक राष्ट्र एक चुनाव से विकसित भारत के स्वप्न में आने वाली एक बड़ी कठिनाई दूर होगी। एक राष्ट्र एक चुनाव से राष्ट्र आर्थिक रूप सशक्त होगा तो निश्चित ही विकसित भारत बनेगा।

पत्रकारों पर मुकदमें दर्ज कराये जाने का विरोध

अवधनामा संवाददाता

ललितपुर। खबरें प्रकाशित करने पर पत्रकारों पर झूठे मुकद्दमें लिखाये जाने का विरोध दर्ज कराते हुये यू.पी. जर्नलिस्ट एसोसिएशन (उपजा) ने जिलाध्यक्ष सूर्यकांत शर्मा के नेतृत्व में एक ज्ञापन मुख्यमंत्री को संबोधित करते हुये डीएम के ओएसडी अनिल दीक्षित को सौंपा गया है। ज्ञापन में बताया कि गैर कानूनी कृत्य और भ्रष्टाचार के विरोध में जिले के कुछ पत्रकार निष्पक्ष रूप से खबरों का प्रकाशन किया था। इसके बाद कुछ लोगों ने पत्रकारों पर झूठे, मनगढ़ंत तरीके से संगीन धाराओं में मुकद्दमें दर्ज कराये हैं। आरोप है कि एक दैनिक समाचार पत्र के सम्पादक आदि पत्रकारों पर गैंगस्टर जैसी धाराओं में पाबंद कर जेल पहुंचा दिया है, जबकि प्रदेश सरकार व हाईकोर्ट का स्पष्ट आदेश है कि बिना जांच-पड़ताल किसी प्रकार का कोई मुकद्दमा दर्ज नहीं होगा। उन्होंने इस कार्यवाही को चौथे स्तम्भ की निष्पक्षता पर कुठाराघात बताया। उपजा ने मुख्यमंत्री से मामला संज्ञान लेकर मामलों की जांच करायी जाने की मांग उठायी है।

सीएमएस के तीन छात्र बने आईएएस

अवधनामा संवाददाता

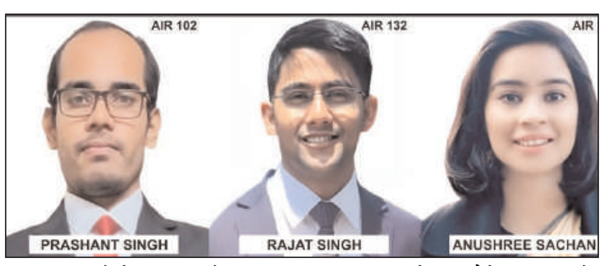

लखनऊ। सिटी मोन्टेसरी स्कूल के तीन छात्रों प्रशान्त सिंह (रैंक 102), रजत सिंह (रैंक 132) एवं अनुश्री सचान (रैंक 220) ने भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) में चयनित होकर लखनऊ का नाम रोशन किया है। इन तीनों छात्रों ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता एवं शिक्षकों के अलावा सी.एम.एस. के शैक्षिक वातावरण को दिया है। सी.एम.एस. प्रबन्धक प्रो. गीता गाँधी किंगडन ने सी.एम.एस. छात्रों की सफलता पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि ये होनहार छात्र उच्च पदों पर आसीन होकर सम्पूर्ण समाज में सी.एम.एस. की 'जय जगत' की विचारधारा को बढ़ावा देंगे। प्रो. किंगडन ने सी.एम.एस. शिक्षकों को भी बधाईयाँ प्रेषित की है, जिनकी लगन व परिश्रम से ही इन छात्रों की नींव मजबूत हुई है। यह जानकारी सी.एम.एस. के हेड, कम्युनिकेशन्स श्री ऋषि खन्ना ने दी है। श्री खन्ना ने बताया कि सी.एम.एस. के इन होनहार छात्रों की अभूतपूर्व सफलता पर पूरे सी.एम.एस. परिवार को गर्व है, जिन्होंने अपनी मेधा, प्रतिभा व लगन से सी.एम.एस. का गौरव बढ़ाया है।

श्री खन्ना ने बताया कि आई.ए.एस. में चयनित प्रशान्त सिंह (रैंक 102) ने सी.एम.एस. अलीगंज प्रथम कैम्पस से आई.एस.सी. (कक्षा-12) की परीक्षा उत्तीर्ण की एवं इसके उपरान्त दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक किया। प्रशान्त ने आई.ए.एस. में चयन के उपरान्त सी.एम.एस. का आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि मेरे मन में उच्च सफलता अर्जित करने के बीज सी.एम.एस. ने ही बोये। प्रशान्त के पिताजी सुशील कुमार सिंह पी.सी.एस. अधिकारी हैं जबकि माताजी कनकलता सिंह गृहणी हैं। इसी प्रकार, आई.ए.एस. में चयनित अनुश्री सचान ने सी.एम.एस. कानपुर रोड कैम्पस से आई.सी.एस.ई. की परीक्षा 90 प्रतिशत से अधिक अंको से उत्तीर्ण की एवं आई.आई.टी मुंबई से बीटेक किया। एक अनौपचारिक वार्ता में सी.एम.एस. के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अनुश्री ने कहा कि सी.एम.एस. का पाठ्यक्रम इस प्रकार डिजाइन किया गया है जो छात्रों को मेधावी व मेहनती बनाता है, ऐसे में आई.ए.एस. जैसी परीक्षाओं की लम्बी तैयारी करने में छात्रों को असुविधा नहीं होती।

आसमान से बरस रही आग गर्मी से लोगों का बुरा हाल

अवधनामा संवाददाता

महोबा। विकास खंड जैतपुर में भीषण गर्मी और बढते तापमान के चलते लोगों का जीना दुश्वार हो गया है। अप्रैल माह में ही तापमान बढकर 44 डिग्री सेल्सियस पहुंच जाने से लोगों का गर्मी से बुरा हाल है। आसमान से आग उगल रही सूरज की किरणों ने लोगों को घरों में कैद कर दिया है। हालात यह है कि तेज धूप और लू के थपेड़ों के कारण लोग सुबह 11 बजे से ही घरों में दुबक जाते है। जिससे सड़कों में सारा दिन सन्नाटा पसरा रहता है। शाम को पांच बजे के बाद सड़कों पर चहल पहल बढ जाती है।

तेज धूप और गर्म हवाओं के चलते जन जीवन अस्त व्यस्त होकर रह गया है। भीषण गर्मी में दोपहर 12 बजे से शाम चार बजे तक चार घंटे अजनर, इंद्रहटा सहित कई गांव में बिजली की काटौती किए जाने से लोगों को पंखें कूलर की हवा भी नही मिल पाती है

जिससे लोग दोपहर में तापमान बढने के समय ही बत्ती गुल हो जाने से गर्मी से बेहाल हो जाते है। बिजली की आपूर्ति दोपहर में ठप हो जाने से छोटे छोटे बच्चे गर्मी से बिलबिला जाते है।

ग्रामीणों का कहना है कि भीषण गर्मी के समय बिजली की सबसे ज्यादा जरूरत होती है, लेकिन विभाग की ओर से कोई स्थाई समाधान नही किया जाता है। जिससे ग्रामीण बिना पंखे और कूलर के पूरी दोपहर काटने को मजबूर है। बिजली की बेहिसाब कटौती के चलते पेयजल समस्या भी प्रभावित हो रही है। ग्रामीणों ने बिजली विभाग के अधिकारियों से भीषण गर्मी में बिजली आपूर्ति किए जाने की मांग की है।

डीएम सहाब एडेज विद्यालय जूझ रहे हैं वित्तीय संकट से

अवधनामा संवाददाता

■ जिले के एडेड विद्यालयों के प्रधानाचार्यो ने दिया मुख्यमंत्री के नाम डीएम को ज्ञापन

■ 6 सूत्रीय ज्ञापन में समस्याओं के सामाधान की मांग

मथुरा। आज एडेड विद्यालयों के प्रधानाचार्य अपनी समस्याओं को लेकर मुख्यमंत्री के नाम जिलाधिकारी को 6 सूत्रीय ज्ञापन देने के लिए पहुंचे। जिसमें कालेजों के संचालन में बढ़ती वित्तीय संकट के समाधान की मांग की गई।

जनपद के लगभग दो दर्जन से अधिक एडेड कालेजों के प्रधानाचायों ने मुख्यमंत्री के नाम जिलाधिकारी चंद्र प्रकाश सिंह को ज्ञापन सौंप कर कहा कि माध्यमिक विद्यालयों में विद्युत कनेक्शन शासन द्वारा व्यवसायिक दिए गए हैं । कक्षा 09 से 12 वीं में विद्यार्थियों से 20 रुपए वार्षिक की दर से विद्युत शुल्क लिया जाता है। जो कुल मिलाकर 15 - 20 हजार रुपए से अधिक किसी भी माध्यमिक विद्यालय को प्राप्त नहीं होते हैं। जबकि प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय में विद्युत बिल एक लाख से लेकर पांच लाख रुपए तक आते हैं। ऐसी स्थिति में माध्यमिक विद्यालयों में व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रधानाचार्यो द्वारा विद्यार्थी अभिभावकों से सहयोग लिया जाता है या विद्यालय की अन्य निधियों जिनमें भी बहुत ही नगण्य धन राशि होती है उनसे विद्युत बिल जमा किया जाता है तो प्रधानाचार्यो के विरुद्ध अनावश्यक शिकायतें, ऑडिट आपत्ति एवं ब्लैकमेलिंग जैसी परिस्थितियां पैदा हो रही हैं ।

प्रधानाचर्य डॉ. वेदप्रकाश ने सभी कालेजों के प्रधानाचार्यो का नेतृत्व करते हुए कहा कि वर्तमान में शासन द्वारा सभी कार्य डिजिटलीकरण कर दिए गए हैं , जो माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो को उच्च अधिकारियों के आदेश के पालन में बाजार (मार्केट) में कराने पड़ रहे हैं । शासन द्वारा आवंटित किए जा रहे डिजिटलीकरण के कार्यो को करने के लिए कोई सुविधा प्रधानाचार्य को प्रदान नहीं की जा रही है , ऐसी स्थिति में शासन के आदेश मानना या ना मानना माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो के गले की फांस बन गया है। माध्यमिक विद्यालयों में कंप्यूटर ऑपरेटर न होने की वजह से विद्यालय के अधिकांशतः कार्य जैसे डीबीटी, यू डायस , अपार आईडी , इको क्लब, पोषण माह फीडिंग , रजिस्ट्रेशन, बोर्ड फॉर्म आदि ऑनलाइन कार्य विषय कक्षा अध्यापकों को करने पड़ रहे हैं जिसकी वजह से विद्यालयों में शिक्षण कार्य बाधित हो रहे हैं।

अनुराग कश्यप पर हो देशद्रोही की धाराओं में कार्रवाई

अवधनामा संवाददाता

■ ब्राह्मण समाज पर की गई टिप्पणी के विरोध में सनातनियों ने डीएम को दिया ज्ञापन

मथुरा। फिल्म अभिनेता निर्देशक अनुराग कश्यप द्वारा ब्राह्मण समाज के लिए अपमानजनक टिप्पणी करने के विरूद्ध विभिन्न संगठनों के सनातनी लोगों ने एकत्रित होकर कलेक्ट्रेट पर विरोध प्रदर्शन किया। जिलाधिकारी चंद्र प्रकाश सिंह को दिए ज्ञापन में मांग की गई के अनुराग कश्यप को शीघ्र गिरफ्तार करके देश द्रोही घोषित करते हुए कार्रवाई की जाए।

उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ देवालय न्यास के अध्यक्ष रमाकांत गोस्वामी, आचार्य मृदुलकांत शास्त्री और अखिल भारतीय हिन्दु महासभा के प्रदेश उपाध्यक्ष संजय हरियाणा के नेतृत्व में विभिन्न संगठनों के पदाधिरी आज मध्याह्न में जिलाधिकारी कार्यालय पर ज्ञापन देने पहुंचे। जिसमें आचार्य मृदुल कांत शास्त्री ने कहा कि ब्राह्मण समाज ने सदैव अपने राष्ट एवं संस्कृति की रक्षा हेतु समाज में आदर्श रूप से हर जाति वर्ग के सनातनियों को एक जुट करने का काम किया है। लेकिन अनुराग कश्यप की टिप्पणी विदेशी ताकतों के इशारे पर सनातनियों में फूट डालने व जातियों में बांटने वाली है। यह एक सुनियोजित षड़यंत्र है। संविधान के सिद्धांतों एवं अवधारणाओं के विपरीत है। ज्ञापन देने वालों में पं. अमित भारद्वाज, पूजा शर्मा, सरोज गोला, योगेश आवा, आरएसएस के स्वयं सेवक भूपेश भारद्वाज, पं. दिनेश शर्मा एडवोकेट, विसधर दल के विपिन स्वामी, हेमंत चतुर्वेदी, गुंजन शर्मा आदि थे।

'देश विदेश से आने वाले श्रद्धालु अच्छी छवि लेकर जाएं'

उत्तर प्रदेश कैडर 2014 के आईपीएस हैं श्लोक कुमार, क्राइम नियंत्रण और बेहतर पुलिसिंग प्राथमिकता

अवधनामा संवाददाता

मथुरा। उत्तर प्रदेश शासन के द्वारा बुलंदशहर से तेज तर्रार और युवा पुलिस अधिकारी को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मथुरा का दायित्व सोपा गया है उन्होंने पत्रकारों के साथ पुलिस लाइन सभागार में परिचय के साथ अपनी प्राथमिकताओं को शेयर किया।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्लोक कुमार उत्तर प्रदेश कैडर के 2014 के आईपीएस अधिकारी पुलिस सेवा में आने से पहले इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन में इंजीनियर के पद पर रहे। मूल रूप से बिहार की जनपद पटना सीतामढ़ी के गांव के रहने वाले हैं उनकी पढ़ाई पटना बेंगलुरु और दिल्ली में हुई है।

इससे पूर्व अंडर ट्रेनिंग नोएडा के थाना जेवर के प्रभारी रहे आगरा में विभिन्न सर्किलों में एसीपी के पद पर तैनात रहे शामली में अपर पुलिस

अधीक्षक गाजियाबाद में एसपी सिटी हमीरपुर में एसपी और रायबरेली में एसपी के अलावा बुलंदशहर में 3 वर्ष तक वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के पद पर तैनात रहे।

नवजात कप्तान ने पत्रकारों से सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए सत्य को उजागर करने की बात कही, उन्होंने बताया सत्य तीन प्रकार का होता है एक वादी का सत्य, दूसरा प्रतिवादी का सत्य, और तीसरा पुलिस का सत्य मीडिया का कार्य इनमें असली सत्य को खोजना है किसी भी खबर में वर्जन अवश्य लिखें।

उन्होंने अपनी प्राथमिकताओं को गिनाते हुए बताया स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल कार्य करना ट्रैफिक व्यवस्था में सुधार , एनफोर्समेंट, क्राइम नियंत्रण, श्रद्धालुओं को बेहतर पुलिसिंग व्यवस्था देकर अच्छी छवि लेकर जाने पर ध्यान दिया जाएगा।

मथुरा की सीमा पड़ोसी राजस्थान और हरियाणा से जुड़ी हुई है उन पर होने वाली गैर कानूनी गतिविधियों गंभीरता से लिया जाएगा। त्योहार पर बेहतर पुलिसिंग व्यवस्था की जाएगी साइबर क्राइम के मामले में गोवर्धन थाने पर पूरी सतर्कता रखी जाएगी।

मथुरा जनपद में जमीनों की बढ़ती कीमतों की वजह से अनेक प्रकार की चुनौती बने हुए हैं किसी का धनहरण ना हो फर्जी तरीके से किसी को जमीनों की खरीद फरोक्त करने वालों बक्सा नहीं जाएगा लोगों की नजर में पुलिस की अच्छी छवि बनाकर रखने का प्रयास किया जाएगा।

जनपद स्तर पर वृहद्ध कार्रवाई की आवश्यकता

मथुरा ब्रज का प्रमुख तीर्थ स्थल है जहां पर अवैध मादक पदार्थों का बहुत बड़ा कारोबार चलता है जो स्थानीय पुलिस के संरक्षण के चलते अनवरत जारी है जिस पर प्रभावी कार्रवाई कर आने वाली पीढ़ी और वर्तमान जो पीढ़ी इस अवैध नशे की शिकार हो रही है उसको बचाने के लिए जनपद स्तर पर वृहद्ध कार्रवाई की आवश्यकता है ।

बीएसए कालेज में शिक्षा संकाय में प्रारंभ हुआ स्काउट गाइड शिविर

अवधनामा संवाददाता

मथुरा। बीएसए कॉलेज, मथुरा के शिक्षा संकाय द्वारा बी.एड. प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के छात्र-छात्राओं का स्काउट/गाइड प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ आज डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा से पधारे अतिथि जिला प्रशिक्षण आयुक्त रोवर विशाल कुमार, वरिष्ठ ट्रेनर काउंसलर युसुफ अली, वीरेन्द्र सिंह कुशवाह एवं महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. ललित मोहन ने मां सरस्वती एवं बाबू शिवनाथ अग्रवाल के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलित करके किया। 25 तक आयोजित होने वाले शिविर का उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सेवा-भाव, अनुशासन तथा नेतृत्व गुणों का विकास करना है। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा से पधारे अतिथि जिला प्रशिक्षण आयुक्त रोवर विशाल कुमार, वरिष्ठ ट्रेनर काउंसलर युसुफ अली व वीरेन्द्र सिंह कुशवाह, प्राचार्य प्रो. (डॉ.) ललित मोहन शर्मा, शिक्षा संकाय के विभागाध्यक्ष डॉ. बीके गोस्वामी द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर संयुक्त रूप से किया गया।

थ्रेसर में चिथड़े उड़े हाथ का कर दिया पुनर्निर्माण

■ दुनियां भर के अस्थि रोग विशेषज्ञों ने कहा- वाह क्या बात है

अवधनामा संवाददाता

ललितपुर। ललितपुर में एक ऐसी दुर्लभ सर्जरी हुयी है जिसने चिकित्सा के क्षेत्र में ललितपुर को किसी भी बड़े शहर की बराबरी में लाकर खड़ा कर दिया है। यह कमाल प्रतिष्ठित अस्थिरोग सर्जन डा.आकाश खैरा ने किया है। एक किशोर के दुर्घटनावश मृतप्राय हो चुके हाथ में नई जान फूंक दी गयी है।

बीते सप्ताह गेहूं की फसल की थ्रेशर करते समय एक किशोर का दायां हाथ मशीन में फंस जाने से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। उसके हाथ पर लगी खाल के चिथड़े उड़ गये थे। हथेली पर से और हाथ के पीछे की काफी ज्यादा खाल गायब हो गयी थी। हथेली की हड्डी टूट गयी थी। पीड़ित ने हाथ को बचाने की उम्मीद छोड़ दी थी। ऐसे में उसके सामने कोई चारा नहीं था। कई चिकित्सकों को दिखाने पर उसे निराशा ही हाथ लगी। ऐसे में उम्मीद की रोशनी बनकर आये डॉ आकाश खैरा ने इसके हाथ का पुनर्निर्माण करने का बीड़ा उठाया। उन्होंने प्लानिंग कर पहले टूटी हड्डी का ऑपरेशन किया। फिर उसके पेट के दायें कमर के पास वाले हिस्से की खाल को संभालकर पेट से हटाये बिना उसके जर्जर हाथ पर एक ओर से चढ़ा दिया और हाथ को फिर से सुरक्षित कर दिया। इसे चिकित्सा जगत में ग्रोइन फ्लैप फॉर हैण्ड रिकंस्ट्रक्शन सर्जरी बोलते हैं। इसके बाद मरीज के पेट के उस हिस्से से जहां की खाल हटायी गयी थी, वहां बायीं जांघ की खाल को उठाकर प्रत्यारोपित कर दिया। यह जटिल प्रयोग सफल रहा और अब युवा मरीज पूरी तरह स्वस्थ्य है। जल्द ही उसके पेट से जुड़े हाथ को पहले जैसा पेट से अलग कर दिया जायेगा। उसके हाथ की हरकत अब वापिस आ गयी है और वह पहले की तरह ही काम करने लगा है।

सर्जरी की इस दुर्लभ तकनीकी प्रयोग की सर्वत्र सराहना हो रही है। इस भाग्यशाली किशोर का नाम सचेन्द्र अहिरवार है जिसकी उम्र 17 साल है। वह ललितपुर की महरौनी तहसील के ग्राम सिंगैपुर के रामकंकन अहिरवार का पुत्र है। डा.आकाश खैरा की इस उपलब्धि पर दुनियां भर के चिकित्सा विशेषज्ञों ने सराहना कर इसे दुर्लभ और अद्वितीय सर्जरी बताया है। ललितपुर जैसे स्थान पर ऐसी सर्जरी किया जाना एक बड़ी उपलब्धि है। इस बड़े ऑपरेशन के दौरान ऋषिराज अस्पताल सदनशाह चौराहा के ऑपरेशन थियेटर में डा.विकास चौबे, ओमकरन सिंह, रोहित राजपूत, पवन प्रजापति, जाहरसिंह, नर्स सुषमा सेन, वर्षा यादव, शिवचरन रजक आदि का सहयोग रहा।

मरीज को मिला पुनर्जीवन

पीड़ित के पिता रामकंकन अहिरवार ने बताया कि उसके पुत्र को अब पुनर्जीवन मिल गया है। वे डॉ.खैरा को इस मामले में भगवान की तरह ही धन्यवाद देते हैं।

इनका कहना है-

यह ग्रोइन फ्लैप फॉर हैण्ड रिकंस्ट्रक्शन सर्जरी मैं पहले भी कर चुका हूँ और यह पूरी तरह सफल है। इससे मरीज का हाथ दोबारा पहले जैसा काम करने लगेगा।

डॉ.आकाश खैरा, ऑर्थो सर्जन।

घर में घुसकर मां बेटे से की मारपीट हमले में हुई कुत्ते की मौत

गुरसहायगंज, कन्नौज। नगर के मोहल्ला आजाद नगर निवासी माया देवी पत्नी अमर सिंह द्वारा पुलिस अधीक्षक के आदेश पर कोतवाली में दर्ज कराए गए मुकदमे में कहा गया है कि विगत 14 मार्च की शाम 07 उसके पड़ोसी आकाश, जितेंद्र, धर्मेंद्र, संतोष एवं ज्योति अपने मवेशियों को मेरे दरवाजे पर पेशाब कराने लगे। उसके द्वारा मना करने पर उक्तगण गाली गलौज करने लगे और एक राय होकर मारपीट पर आमादा हो गए। जिसके कारण वह उसका पुत्र घर में घुस गए तो उपरोक्तगणों ने घर में घुसकर लाठी डंडों लात घूसों से मारपीट शुरू कर दी। तभी आकाश ने धारदार हथियार से हमला कर दिया जिसमें उसका पुत्र बाल बाल बच गया और हसिया कुत्ते के लग गया। जिससे उसके पालतू कुत्ते की मौके पर ही मौत हो गई। उक्तगणों ने कार्रवाई करने पर जान से मारने की धमकी दी। घटना के संबंध में कोतवाली पुलिस द्वारा मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

दिव्यागों में प्रतिभा की कमी नहीं: सचिन

■ राष्ट्रीय युवा प्रमुख सक्षम ने दी कार्यकर्ताओं को सीख

■ ललितपुर में युवा सक्षम गठित, दीपक राठौर अध्यक्ष नितिन झा बने मंत्री

अवधनामा संवाददाता

ललितपुर। समदृष्टि विकास एवं अनुसंधान मंडल सक्षम के राष्ट्रीय युवा प्रमुख सचिन पाण्डे ने ललितपुर में स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन करते हुए कहा दिव्यागों की सेवा ईश्वरीय कार्य है इसको करने में आत्मसंतोष की अनुभूति होती है। दिव्यांग भले ही शरीर से होते हैं लेकिन उनकी प्रतिभा कम नहीं रहती है उनको समाज में सम्मानजनक जीने का अधिकार मिले इसके लिए सक्षम के स्वयंसेवक कार्य करते हैं। ललितपुर में प्रान्तीय कार्य योजना बैठक में पहुचे राष्ट्रीय युवा प्रमुख सचिन पाण्डे ने कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करते हुए युवाओं को सहभागिता पर बल लिया। प्रान्त युवा प्रमुख शिवम पाण्डे ने प्रान्त में किए जाने वाले कार्यों की समीक्षा की। बैठक की अध्यक्षता प्रान्त अध्यक्ष देवनारायण सोनी ने की एवं संचालन प्रान्त सचिव डा सुरेन्द्र विक्रम गोस्वामी द्वारा किया गया। जिलाध्यक्ष अक्षय अलया ने ललितपुर में युवा सक्षम के टीम गठन की प्रस्तावना बैठक में रखी इस दौरान सर्वसम्मति से राष्ट्रीय युवा प्रमुख सचिन पाण्डे ने दीपक राठौर को युवा सक्षम का प्रमुख एवं नितिन झा को मंत्री घोषित किया। प्रान्त कार्यकारिणी में शिव कुमार चतुर्वेदी को नामित किया गया। ललितपुर में युवा सक्षम की टीम की घोषणा का जिलाध्यक्ष अक्षय अलया सचिव अजय जैन साइकिल, संरक्षक जयशंकर प्रसाद द्विवेदी, गोविन्द व्यास, जिला पंचायत सदस्य नरेन्द्र झा महेश पटैरिया, डा0 तैजस्व श्रीवास्तव मनविंदर कौर, ध्रुव साहू, कौशल किशोर गोस्वामी, संजीव सौरया, वीरेन्द्र जैन सोनू राघवेन्द्र चौबे, रविप्रतापसिंह रविराजा, संजय अग्रवाल ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा युवा सक्षम के गठन से संगठन के कार्यों के विस्तार में मदद मिलेगी। इस मौके पर प्रन्त उपाध्यक्ष ब्रजेश कटियार, पीयूष द्विवेदी फतेहपुर, प्रान्त कोषाध्यक्ष शान्तिभूषण सिंह गौतम वांदा अधिवक्ता आयाम प्रमुख दीपक सिंह यादव एक प्रचार प्रसार प्रमुख डा शिवा मिश्रा, महिला आयाम प्रमुख डा मोनिका गोस्वामी ने प्रमुख रूप से सम्बोधित किया। योजना बैठक में अलितपुर प्रवास पर कानपुर प्रान्त अन्तर्गत चित्रकूट, बांदा, फतेहपुर कानपुर नगर, कन्नौज, इटावा, औरईया, कानपुर देहात हमीरपुर, महोवा, जालौन, झांसी ललितपुर के अध्यक्ष सचिव सहित प्रान्तीय पदाधिकारियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

भारत विकास परिषद की मासिक बैठक एवं कार्यकारिणी विस्तार समारोह संपन्न

उन्नाव। आवास विकास स्थित मुस्कान हॉस्पिटल एवं ब्लड बैंक में भारत विकास परिषद चंद्रशेखर आजाद शाखा (ब्रह्मावर्त प्रांत) की मासिक बैठक एवं कार्यकारिणी विस्तार का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता, स्वामी विवेकानंद एवं चंद्रशेखर आजाद को माल्यार्पण, पुष्पांजलि अर्पित कर दीपप्रज्वलन एवं राष्ट्रगीत के साथ किया गया। इस अवसर पर वर्ष 2025-26 के लिए नई कार्यकारिणी का विस्तार कर पदाधिकारियों को उनके दायित्व सर्वसम्मति से प्रदान किए गए। बैठक में परिषद द्वारा नवीन सत्र में संचालित किए जाने वाले कार्यक्रमों ,एवं उद्देश्यों की विस्तृत चर्चा की गई। अध्यक्ष के जी अग्रवाल द्वारा बताया गया कि गत सत्र में संस्था द्वारा आयोजित किए गए वृहद रक्तदान शिविर पर प्रांतीय स्तर पर सर्वाधिक रक्तदान कराए जाने पर चन्द्रशेखर आजाद शाखा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है इसपर सभी सदस्यों द्वारा हर्ष व्यक्त किया गया। कार्यकारिणी विस्तार में डीडी शुक्ला को शाखा गतिविधि संयोजक संपर्क का दायित्व, श्रीमती निम्मी अरोरा को शाखा गतिविधि संयोजक महिला सहभागिता का दायित्व, पुनीत श्रीवास्तव को शाखा गतिविधि संयोजक सेवा का दायित्व, प्रवीण शर्मा को शाखा गतिविधि संयोजक संस्कार का दायित्व, नृपेन्द्र शुक्ला को शाखा गतिविधि संयोजक पर्यावरण एवं अभिनय बाजपेयी को शाखा प्रबंधक का दायित्व प्रदान किया गया। सचिव आशीष शुक्ला ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभी को नवीन सत्र के लिए संकल्पित किया। नवीन योजनाओं पर प्रकाश डालते हुये सभी सदस्यों को शुभकामनायें प्रेषित की। इस अवसर पर डॉ अखिलेश सिंह द्वारा सर्वायकल कैंसर पर जागरूकता एवं महिला टीकाकरण पर शाखा के सहयोग से कैम्प लगाने का प्रस्ताव रखा गया। बैठक में शाखा के संस्थापक अध्यक्ष जीएस भदौरिया, वरिष्ठ संरक्षक कांतिमोहन गुप्ता, अरविन्द श्रीवास्तव, महेश गुप्ता, निशांत शुक्ला, सुधीर तिवारी, आदित्य बाजपेयी आदि लोग शामिल हुए।

विश्व पृथ्वी दिवस पर पनारी में पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता कार्यक्रम संपन्न

अवधनामा संवाददाता

■ जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा पर्यावरण कानूनों की दी गई जानकारी

ललितपुर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में अध्यक्ष/जिला जज नरेंद्र कुमार झा और एडीजे/सचिव यशवंत कुमार सरोज के दिशा-निर्देशन में मानव ऑर्गेनाइजेशन व जिला गंगा समिति के संयुक्त तत्वाधान में पूर्व माध्यमिक विद्यालय पनारी में विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों और समुदाय को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना और पर्यावरण कानूनों की जानकारी प्रदान करना है। कार्यक्रम में पर्यावरणविद् और जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पैनल अधिवक्ता पुष्पेंद्र सिंह चौहान ने पर्यावरण कानूनों पर विशेष जोर डालते हुए अपने संबोधन में बताया कि भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए कई महत्वपूर्ण कानून लागू हैं, जिनमें पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 जल (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1974, वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम 1981 और वन संरक्षण अधिनियम, 1980 शामिल हैं। उन्होंने बच्चों को समझाया कि ये कानून नदियों, जंगलों, वायु और जैव विविधता के संरक्षण के लिए बनाए गए हैं, और इनका पालन करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। प्लास्टिक कचरा प्रबंधन नियम, 2016 में एकल-उपयोग प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध और कचरे के पुनर्चक्रण पर जोर दिया गया है। हमारी पृथ्वी हमारी माँ है और इसे बचाने के लिए हमें छोटे-छोटे कदम उठाने होंगे, जैसे प्लास्टिक का उपयोग कम करना, पेड़ लगाना और जल स्रोतों को प्रदूषित होने से बचाना। उन्होंने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि वे अपने घरों और समुदायों में इन कानूनों के बारे में जागरूकता फैलाएं और पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएं। मानव ऑर्गेनाइजेशन संस्था के संस्थापक सदस्य इंग्लैंड के सॉफ्टवेयर डिजाइनर निष्काम त्रिपाठी ने तकनीकि के उपयोग से पर्यावरण संरक्षण के नए तरीकों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें अपनी आदतों में बदलाव लाना होगा प्लास्टिक का कम उपयोग, पेड़ लगाना, जल संरक्षण और ऊर्जा की बचत जैसे छोटे-छोटे कदम बड़ा बदलाव ला सकते हैं। आइए, आज हम सभी यह संकल्प लें कि पृथ्वी को बचाना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। नमामि गंगा के जिला परियोजना अधिकारी केतन दुबे ने बच्चों को नदी के संरक्षण और स्वच्छता के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि नमामि गंगा परियोजना के तहत नदियों को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए सामुदायिक सहयोग आवश्यक है। गौ पुत्र सेना के प्रभारी प्रशांत शुक्ला ने जैविक खेती और गौ-संरक्षण के माध्यम से पर्यावरण संतुलन बनाए रखने की बात कही। न्याय दूत के अध्यक्ष रामबाबू चौबे ने बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के लिए कानूनी जागरूकता के महत्व पर जोर दिया, कार्यक्रम में बच्चों ने सक्रिय भागीदारी करते हुए उत्साहपूर्वक भाग लिया।

वृद्धा की अज्ञात वाहन की टक्कर से मौत

अवधनामा संवाददाता

■ कुलपहाड़ जाने के लिए बस का इंतजार करते समय हुआ हादसा

महोबा। रिश्तेदारी में उरई गई वृद्धा लौटते समय जानकारी के अभाव में कुलपहाड़ में उतरने के बजाये जिले कस्बा खन्ना पहुंच गई। जहां पर बस चालक ने उसे यह कहकर उतार दिया कि दूसरी बस से कुलपहाड़ निकल जाना वृद्धा कस्बा खन्ना के बस स्टैंड में बस आने के इंतजार में खड़ी थी, लेकिन बस तो नही आई और अज्ञात वाहन ने वृद्धा को टक्कर मार दी, जिससे उसकी घटना स्थल पर ही मौत हो गई। दुर्घटना के बाद खन्ना बस स्टैंड में भारी भीड़ जमा हो गई। लोगों ने 112 डायल कर पुलिस को बुलाया पुलिस महिला को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र खन्ना ले गई जहां पर डॉक्टरों ने वृद्धा को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने वृद्धा के झोले को खंगालने के बाद उसमें से महिला का आधार कार्ड निकाल कर उस पते पर कुलपहाड़ पुलिस के जरिए मृतका के परिजनों को सूचना दी। कस्बा कुलपहाड़ के मुहल्ला सतियनपुरा निवासी बदरुन्निशा 82 पत्नी इमामी अपनी रिश्तेदारी में गई थी, वहां कुछ दिन रहने के बाद मंगलवार को वह वापस अपने घर कुलपहाड़ लौट रही थी। रिश्तेदारों ने भी महिला को उसके घर छोड़ने के वजाय एक बस में बैठा दिया। वृद्ध महिला भी कुलपहाड़ आने के बाद भी नही उतरी और बस के परिचालक ने भी कोई ध्यान नही दिया, जिससे वृद्धा कुलपहाड़ से करीब 65 किलो मीटर दूर खन्ना तक निकल गई। बस परिचालक की नजर वृद्धा पर पड़ी और उसने वृद्धा को कस्बा खन्ना मे यह कहकर उतार दिया कि महोबा जाने बस मे बैठ जाना। महिला बस से उतर कर बस स्टैंड मे दूसरी बस आने के इंतजार में खड़ी हो गई काफी देर तक महोबा जाने के लिए कोई बस नही आई और वृद्धा सड़क पर ही बस आने की उम्मीद में टकटकी लगाए खड़ी रही। लेकिन महोबा के लिए एक घंटे के इंतजार के बाद भी कोई बस नही आई, तभी वृद्धा ने चंद कदम सड़क की तरफ बढाकर देखा उसी बीच एक अज्ञात वाहन ने वृद्धा को पीछे से टक्कर मार दी, जिससे वृद्धा की सड़क पर गिरकर मौत हो गई।

संक्षिप्त समाचार

ई रिक्शा चालकों के शोषण के खिलाफ भाजपा जिलाध्यक्ष ने केन्द्रीय मंत्री को सौंपा ज्ञापन

महोबा। सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी द्वारा ई रिक्शा चालकों के अभियान चलाकर चालान किए जाने से भाजपाई नाराज है। मंगलवार को शहर के पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस में आई पूर्व केंद्रीय मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति को भाजपा जिलाध्यक्ष मोहनलाल कुशवाहा और भाजपा के वरिष्ठ नेता राहुल अग्रवाल ने ज्ञापन सौंपकर रिक्शा चालकों की मदद किए जाने की मांग की है। जिसपर पूर्व केन्द्रीय मंत्री ने एआरटीओ महोबा को तलब किया है। पूर्व केन्द्रीय मंत्री ने निर्देशित किया कि सभी बैटरी रिक्शा चालक वैध कागज लेकर दिखाएं उनका किसी भी तरह का कोई उत्पीड़न नही होगा। केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि ई रिक्शा चालकों का किसी भी प्रकार का उत्पीड़न या शोषण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। आरटीओ द्वारा पार्टी पदाधिकारी प्रतिनिधियों एवं सामाजिक संगठनों के सहयोग से शासन के मंतव्य को पूर्ण करने के लिए आश्वस्त किया। केन्द्रीय मंत्री ने समस्त ई रिक्शा चालकों से अपने ड्राइविंग लाइसेंस बीमा रजिस्ट्रेशन कागज पूर्ण कर ही संचालन सुनिश्चित करने को कहा उन्होने कहा कि रिक्शा चालक कागजों को दुरुस्त रख कर चलाएं इसके बाद एआरटीओ द्वारा कार्रवाई की जाती है तो एआरटीओ को बक्शा नही जाएगा। उन्होने किसी प्रकार की परेशानी होने पर जनप्रतिनिधियों या आरटीओ से संपर्क करने को कहा।

नवागंतुक जेल अधीक्षक ने ग्रहण किया पदभार, हुआ स्वागत

गुरसहायगंज, कन्नौज। जिला कारागार में नव नियुक्त जेल अधीक्षक भीमसेन मुकुन्द का बीएम सेवा समिति सदस्य/भाजपा नेता डा. शरद द्विवेदी नें भगवान श्री राम की प्रतिमा भेंट कर गर्मजोशी से स्वागत किया। इस दौरान उन्होने नवागंतुक जेल अधीक्षक को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में जेल प्रशासन में पारदर्शिता और अनुशासन की नई मिसाल कायम होगी। मंगलवार को क्षेत्र के ग्राम अनौगी स्थित जिला कारागार में पहुंचे बीएम सेवा समिति सदस्य/भाजपा नेता डा. शरद द्विवेदी नें जेल अधीक्षक भीमसेन मुकुन्द का स्वागत करनें के उपरान्त जेल में निरूद्ध कैदियों के बारे में चर्चा करते हुये गर्मी और हीट स्ट्रोक के बारे में बताया कि हमारी संस्था बीएमसेवा समिति जिला कारागार में सामाजिक कार्यो के लिए हमेशा तत्पर रहती है। कहा कि कानून व्यवस्था को मजबूत बनाए रखने के लिए जेल प्रशासन की भूमिका बेहद अहम है। इस अवसर पर जेल अधीक्षक भीमसेन मुकुन्द ने कहा कि वे अपने कार्यकाल में कैदियों के सुधार और पुनर्वास पर विशेष ध्यान देंगे।

एसपी ने पुलिस कर्मियो को दिया छाता व पानी की बोतल

उन्नाव। पुलिस अधीक्षक दीपक भूकर की सराहनीय पहल भीषण गर्मी से बचाव के लिए यातायात पुलिस कर्मियों को छाता एवं पानी की बोतल वितरित किया। उन्होंने कहा कि पुलिस कर्मियो को समाज की सेवा करने के साथ-साथ स्वयं की सुरक्षा भी करनी है। आप लोग पूरी सेफ्टी के साथ ड्यूटी करें। इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक (उत्तरी) अखिलेश सिंह एव अपर पुलिस अधीक्षक (दक्षिणी) प्रेमचंद्र, सदर क्षेत्राधिकारी सदर सोनम सिंह भी मौजूद रहीं।

प्रेमी की दूसरी शादी की भनक लगते ही घर पहुंची गर्भवती प्रेमिका

अवधनामा संवाददाता

उन्नाव। सदर कोतवाली क्षेत्र में प्रेम प्रसंग से उपजा एक अनोखा मामला सामने आया। जहां प्रेमी की दूसरी जगह शादी तय होने की भनक लगते ही उसकी गर्भवती प्रेमिका प्रेमी के घर पहुंच गई। मामला थाने तक पहुंचा फिर गांव के मंदिर में दोनों की शादी कराई गई। इस बीच रविवार को युवती ने मृत बच्ची को जन्म दिया। घटना के बाद दो परिवारों के बीच पुलिस की मध्यस्थता से सुलह कराई गई। प्रसूता ने नवजात का पोस्टमार्टम कराने से इनकार कर दिया है। सदर कोतवाली क्षेत्र के युवक का सफीपुर क्षेत्र की युवती से प्रेम प्रसंग चल रहा था। जिससे वह गर्भवती हो गई। इस बीच युवक ने माखी थाना क्षेत्र की एक अन्य युवती से शादी तय कर ली। 19 अप्रैल को जब बरात जाने की सूचना गर्भवती प्रेमिका को लगी तो वह सीधे प्रेमी के घर पहुंच गई। प्रेमिका के गर्भवती होने की सच्चाई जानकर युवक के परिजन व रिश्तेदार हैरान रह गए। मामला थाने तक पहुंचा, तो युवक मंदिर में प्रेमिका से शादी के लिए राजी हो गया। पुलिस की मौजूदगी में गांव के मंदिर में दोनों की शादी कराई गई। बरात न पहुंचने पर कन्या पक्ष माखी थाने पहुंच गया। माखी पुलिस ने सदर कोतवाली से संपर्क किया तो पूरी हकीकत सामने आई। दोनों पक्षों के बीच बातचीत कर पुलिस ने सुलह कराई। रविवार को युवती ने मृत बच्ची को जन्म दिया। प्रसूता ने पोस्टमार्टम कराने से मना कर दिया। सदर कोतवाल अवनीश कुमार सिंह और माखी थानाध्यक्ष संदीप मिश्रा ने बताया कि दोनों पक्षों में समझौता हो चुका है।

बदमाशों को नगदी व तमंचों सहित पकड़ा

■ एसपी ने गुरसहायगंज में ढावा स्वामी से हुई टप्पेबाजी का खुलासा किया

अवधनामा संवाददाता

कन्नौज। पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार के निर्देशन में जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक अजय कुमार के पर्यवेक्षण में क्षेत्राधिकारी नगर कमलेश कुमार के नेतृत्व में गुरसहायगंज प्रभारी निरीक्षक एवं प्रभारी एसओजी की संयुक्त टीम द्वारा छापेमारी कर साधु के भेष में ढावा स्वामी के साथ टप्पेबाजी करनें बाले अंतर्जनपदीय गिरोह के दो सदस्यों को हिरासत में लेकर विधिक कार्यवाही की गई है। मंगलवार को पुलिस कार्यालय में एसपी विनोद कुमार ने गुरसहायगंज से ढावा स्वामी के साथ टप्पेबाजी के मामले का खुलासा करते हुये बताया कि मंगलवार की सुवह गुरसहायगंज प्रभारी निरीक्षक आलोक कुमार दुबे, उपनिरीक्षक कमल भाटी प्रभारी एसओजी टीम ने उपनिरीक्षक मोहन लाल, प्रदीप कुमार, हेड कांस्टेवल सुधीर कुमार, दुष्यन्त यादव, रविन्द्र कुमार, मनोज सिंह, अजय सिंह, कांस्टेवल कृष्ण कान्त, नीरज कुमार, विक्षित, शिवराज यादव, अनिल कुमार, मनीष कुमार सिंह, अभिषेक त्यागी, विकास अग्रहरि, यगन, दीपक, शुभम बालियान, अभिषेक के साथ जयसिंहपुरवा अन्डरपास के नीचे थाना क्षेत्र गुरसहायगंज से गब्बरनाथ पुत्र नौरगंनाथ एवं सुनील नाथ पुत्र स्वराज नाथ निवासीगण विशरख जलालपुर एटीएस गोलचक्क सफेरा कालोनी थाना विशरख जनपद ग्रेटर नोएडा के पास से पीडित होटल मालिक रक्षपाल सिंह से लूटे हुए रूपयों में से 35 हजार रूपये, घटना में प्रयुक्त कार, काली राख, रूई का पैकेट, 02 तमंचा 315 बोर एवं 02 कारतूस बरामद कर हिरासत में लिया गया है। बताया कि अभियुक्तगण के विरुद्ध विभिन्न जनपदों में लूट, चोरी, एनडीपीएस, आर्म्स एक्ट आदि में आधा दर्जन से अधिक मुकदमें पंजीकृत हैं। उपरोक्त अभियुक्तगण के विरूद्ध विधिक कार्यवाही कर न्यायालय के समक्ष पेश किया गया है।

जिले में एक महिला समेत दो लोगों ने फांसी लगाकर दी अपनी जान

■ युवती ने शादी से 16 दिन पहले जिन्दगी को कहा अलविदा

अवधनामा संवाददाता

महोबा। जिले में दो अलग अलग स्थानों पर एक महिला समेत दो लोगों ने अपने अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। युवती नें शादी से 16 दिन पहले ही अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली, जिससे घर मे चल रही शादी विवाह की तैयारियां धरी रह गई। घर पर बचे शेष कार्ड भी अब रद्दी का ढेर बन गए है। जवान बेटी की मौत से घर वालों का रो रो कर बुरा हाल है।

कोतवाली कुलपहाड़ के ग्राम मुढारी निवासी नेहा 23 पुत्री पप्पू अहिरवार ने एमए पास कर लिया था, माता पिता ने भी बेटी के पढ लिख जाने के बाद जनपद हमीरपुर के धगवां गांव में नेहा की शादी तय कर दी थी। 20 अप्रैल को उसका फलदान भी कर दिया गया था, और सात मई को शादी की तिथि भी निर्धारित कर दी थी। सोमवार को परिवार के लोग नेहा की शादी के कार्ड बाटने जिले के ग्राम धर्वरा रिस्तेदारी में गए थे, नेहा अपने कमरे में शाम को खाना पीना खाने के बाद चली गई देर रात को कार्ड बांटकर लौटे माता पिता भी अपने कमरे में सो गए। सुबह नेहा का दरवाजा न खुलने पर परिजनों ने आवाज लगाई, लेकिन कोई जवाब नही आया इससे परेशान परिजनों ने दरवाजा तोड़कर अंदर देखा तो उसका शव फांसी के फंदे में लटक रहा था। सूचना पर पहुंची पुलिस शव का पंचनामा भर कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

दूसरी घटना थाना कबरई के ग्राम धरौन में घटी। ग्राम धरौन निवासी मातादीन 35 पुत्र ब्रजलाल शराब पीने का आदी था, मंगलवार को सुबह करीब आठ बजे उसने कमरे के अंदर फांसी लगाकर जान दे दी। काफी देर बाद परिवार के लोग दरवाजा खोलकर अंदर पहुंचे तो मातादीन को फांसी पर लटका देख उनके हाथ पांव फूल गए और चीखने चिल्लाने लगे। शोरगुल सुनकर मुहल्ले के लोग आ गए और पुलिस को सूचना दी, सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पंचनामा भर कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। गृहस्वामी की मौत से घर में गमगीन माहौल बना हुआ है।

विश्व पृथ्वी दिवस पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

अवधनामा संवाददाता

■ विश्व पृथ्वी दिवस (वर्ल्ड अर्थ डे) पर श्री वेंकेटेश्वरा विश्वविद्यालय / संस्थान में वृहद वृक्षारोपण एवं 'पर्यावरण संरक्षण वैश्विक जरुरत के साथङ्कसाथ मौलिक कर्तव्य भी' विषय पर प्रतियोगिता।

■ अन्धाधुन्ध प्रकृति दोहन के कारण ग्लोबल वार्मिंग से पूरा विश्व विनाश की ओर, सभी को पर्यावरण बचाने के लिए करने होंगे प्रयासङ्क डा. सुधीर गिरि संस्थापक अध्यक्ष, वेंकटेश्वरा समूह।

■ समय रहते वृक्षारोपण एवं प्रकृति संरक्षण पर नही दिया गया ध्यान तो भुगतने होंगे गम्भीर परिणामङ्क डा. राजीव त्यागी प्रतिकुलाधिपति एवं आधिकारिक प्रतिनिधि समूह अध्यक्ष, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय एवं संस्थान।

■ सिर्फ वृक्षारोपण नही बल्कि इनके आजीवन संरक्षण एवं संवर्धन की भी ले शपथ : प्रो. (डा.) कृष्णकान्त दवे कुलपति श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय।

■ संस्थान परिसर में पर्यावरण संरक्षण / संवर्धन के लिए जागरूकता रैली निकालकर परिसर एवं राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास पर पांच सौ एक (501) छायादार एवं फलदार पौधे किये रोपित।

गजरौला (अमरोहा) राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास स्थित श्री वेंकेटेश्वरा विश्वविद्यालय / संस्थान में 'विश्व पृथ्वी दिवस' पर 'वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम एवं पर्यावरण संरक्षण / संवर्धन पर जागरूकता रैली' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थापक अध्यक्ष डा. सुधीर गिरि ने उपस्थित स्टाफ एवं छात्र-छात्राओं को पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन की शपथ दिलाते हुए प्रकृति के अन्धाधुन्ध दोहन पर विराम लगाने की बात कही। 'विश्व पृथ्वी दिवस' पर राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास स्थित श्री वेंकेटेश्वरा विश्वविद्यालय / संस्थान के मुख्य परिसर में आयोजित 'पर्यावरण संरक्षण वैश्विक जरुरत के साथ-साथ मौलिक कर्तव्य भी' विषय पर डिबेट प्रतियोगिता का शुभारम्भ संस्थापक अध्यक्ष डा. सुधीर गिरि, प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी, कुलपति प्रो. कृष्णकान्त दवे, डा. मधु चतुर्वेदी आदि ने सरस्वती माँ की प्रतिमा के सन्मुख दीप प्रज्ज्वलित करके किया।-अपने सम्बोधन में संस्थापक अध्यक्ष डा. सुधीर गिरि ने कहा कि जलवायु परिवर्तन एवं प्रकृति के अन्धाधुन्ध अवैध दोहन से पूरा विश्व आज ग्लोबल वार्मिंग की चपेट में है। आज अप्रैल माह में ही औसत तापमान 40 डिग्री से 45 डिग्री के बीच है। यही हालात रहे तो पूरा विश्व विनाश की ओर होगा। हमे समय रहते अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर प्रकृति संरक्षण के लिए लगातार काम करना होगा। प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी ने कहा कि समय रहते वृक्षारोपण एवं प्रकृति संरक्षण पर ध्यान नही दिया तो सभी को इसके गम्भीर परिणाम भुगतने होंगे। इसलिए सिर्फ वृक्षारोपण नही बल्कि इसके लिए आजीवन संरक्षण एवं संवर्धन की भी शपथ ले।

-'पर्यावरण संरक्षण वैश्विक जरुरत के साथ-साथ मौलिक कर्तव्य भी' विषय पर आयोजित डिबेट कॉम्पिटिशन में लगभग 150 विद्यार्थियों ने अपने तर्क प्रस्तुत किये। जिनमें से निर्णायक मण्डल ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर छात्रों का चयन किया गया। इसके अतिरिक्त एक प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिया गया। जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार है। प्रथम स्थान- अर्पित गौतम, प्रदुम भाटी (स्कूल ऑफ पैरामेडिकल), द्वितीय स्थान- अंशिका पॉल, मुस्कान (स्कूल ऑफ कॉमर्स एंड मैनेजमेंट), तृतीय स्थान- हर्ष कुमार, यश शर्मा (स्कूल ऑफ फार्मेसी), प्रोत्साहन पुरस्कार- अमन अब्बास, मो.मतीन (स्कूल ऑफ नर्सिंग) इत्यादि शामिल रहे। पुरस्कार में क्रमशः स्वर्ण, रजत एवं कांस्य मैडल और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता प्रमाणङ्कपत्र भी प्रदान किया गया।

-इस अवसर पर सीईओ अजय श्रीवास्तव, कुलसचिव डा. पीयूष पाण्डेय, डा. वी.एन.झा, डा. एस.एन.साहू, डा. राजेश सिंह, डा. एना एरिक ब्राउन, डा. योगेश्वर प्रसाद शर्मा, डा. आशुतोष सिंह, डा. ओमप्रकाश गोसाई, डा. दिनेश कुमार गौतम, डा. अनिल जायसवाल, डा. तेजपाल सिंह, डा. रीना जोशी, डा. आरती गुप्ता, डा. अंजली भारद्वाज, कुमारी तनुश्री व्यास, डा. स्नेहलता गोस्वामी, डा. विकास कुमार पाण्डेय, श्रीमती दीक्षा जादौन, कुमारी अंजली ठाकुर के साथ मेरठ परिसर से डा. प्रताप सिंह एवं मीडिया प्रभारी विश्वास राणा उपस्थित रहे।

विश्व कप में 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में पदक से चूकीं ओलंपिक पदक विजेता भाकर, सिमरनप्रीत को रजत

लीमा (पेरू)। भारत की 20 वर्षीय सिमरप्रीत ने 10 रेपिड फायर सीरीज में 33 हिट लगाए

और वह चीन की सुन युजी से सिर्फ एक शॉट पीछे रहीं जिन्होंने इस स्पर्धा में अपना लगातार दूसरा विश्व कप स्वर्ण जीता।

भारतीय निशानेबाज सिमरनप्रीत कौर बरार ने महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में रजत पदक के साथ अपना पहला सीनियर अंतरराष्ट्रीय पदक जीता, जबकि पेरिस ओलंपिक की दोहरी पदक विजेता मनु भाकर पेरू के लीमा में जारी आईएसएसएफ विश्व कप में सोमवार को चौथे स्थान पर रहीं और पदक से चूक गईं।

सिमरनप्रीत को रजत पदक

भारत की 20 वर्षीय सिमरनप्रीत ने 10 रेपिड फायर सीरीज में 33 हिट लगाए और वह चीन की सुन युजी से सिर्फ एक शॉट पीछे रहीं जिन्होंने इस स्पर्धा में अपना लगातार दूसरा विश्व कप स्वर्ण जीता। चीन की एक अन्य निशानेबाज याओ कियानशुन ने 29 हिट के साथ कांस्य पदक

स्वर्ण पदक

> युवा निशानेबाज सुरुचि इंदर सिंह ने मनु को हराकर लगातार दूसरा स्वर्ण पदक जीता था। 18 साल की सुरुचि ने हाल ही में ब्यूनस आयर्स में साल के पहले विश्व कप में स्वर्ण पदक अपने नाम किया था।

हासिल किया। यह भारत का प्रतियोगिता में चौथा रजत है। इसके अलावा दो स्वर्ण और एक कांस्य पदक भी भारत ने जीते हैं।

दिलचस्प रहा मुकाबला

अर्जेंटीना में पिछले विश्व कप में रजत पदक जीतने वाली ईशा सिंह छठे स्थान पर रहीं। पहली सीरीज के बाद ही चीन की खिलाड़ी शीर्ष पर पहुंच गईं जबकि भारतीय निशानेबाजों ने दूसरी सीरीज से ही अपनी लय हासिल कर ली। छठी सीरीज में मनु और सिमरनप्रीत दोनों ने पांच-पांच शॉट लगाए जबकि ईशा ने चार निशाने लगाए। इसके बाद मनु, ईशा और जर्मनी की डोरेन वेनकेम्प के बीच शूट ऑफ हुआ। ईशा सबसे पहले बाहर हो गईं। इसके बाद मनु ने दूसरे शूट ऑफ में डोरेन को पछाड़कर शीर्ष चार में जगह बनाई।

पदक से चूकीं मनु भाकर

मनु हालांकि अगली सीरीज के बाद एक अंक से पिछड़कर बाहर हो गईं। इससे पहले मनु, मिश्रित टीम पिस्टल विश्व चैंपियन ईशा और सिमरनप्रीत की तिकड़ी ने फाइनल में जगह सुनिश्चित की। मनु 585 अंक के साथ क्वालिफाइंग में दूसरे स्थान पर रहीं जबकि सिमरनप्रीत ने 580 अंक के साथ पांचवां स्थान हासिल किया। ईशा ने 575 अंक हासिल कर आठवां और अंतिम क्वालिफाइंग स्थान अपने नाम किया।

मनु को 10 मीटर एयर पिस्टल में मिला था रजत

इससे पहले मनु 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में भी स्वर्ण से चूक गई थीं। युवा निशानेबाज सुरुचि इंदर सिंह ने मनु को हराकर लगातार दूसरा स्वर्ण पदक जीता था।

18 साल की सुरुचि ने हाल ही में ब्यूनस आयर्स में साल के पहले विश्व कप में स्वर्ण पदक अपने नाम किया था। उन्होंने लीमा विश्व कप में 24 शॉट के फाइनल में 243.6 का स्कोर बनाया और मनु को 1.3 अंक से हराकर स्वर्ण पर कब्जा जमाया था।

पंचकुला नहीं, अब इस शहर में होगा नीरज चोपड़ा का मुकाबला, किस कारण किया गया परिवर्तन?

नई दिल्ली। भारत के स्टार भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा का मुकाबला अब पंचकुला के बजाए बंगलूरू में होगा। नीरज चोपड़ा क्लासिक प्रतियोगिता का पहला चरण पर्याप्त रोशनी की कमी के कारण 24 मई को बंगलूरू के कांतिरावा स्टेडियम में होगा। इस टूर्नामेंट में नीरज के अलावा कई स्टार एथलीट हिस्सा लेंगे जिसमें एंडरसन पीटर्स और थॉमस रोहलर शामिल हैं। विश्व एथलेटिक्स द्वारा इस प्रतियोगिता को श्रेणी ए का दर्जा दिया गया है।

नीरज ने अरशद नदीम को किया आमंत्रित

ग्रेनेडा के पीटर्स दो बार के विश्व चैंपियन हैं और रोहलर 2016 ओलंपिक के स्वर्ण पदक विजेता हैं। नीरज ने कहा कि उन्होंने पाकिस्तानी ओलंपिक चैंपियन अरशद नदीम को भी आमंत्रित किया है जिन्होंने अभी तक भागीदारी की पुष्टि नहीं की है। नीरज ने कहा, मैंने अरशद को निमंत्रण भेजा है और उन्होंने कहा है कि वह अपने कोच से चर्चा करने के बाद मुझसे संपर्क करेंगे। अभी तक उन्होंने भागीदारी की पुष्टि नहीं की है। नीरज ने कहा, मैं चाहता था कि यह प्रतियोगिता पंचकुला में आयोजित हो, लेकिन वहां स्टेडियम में रोशनी की व्यवस्था से संबंधित कुछ मुद्दे हैं। विश्व एथलेटिक्स 600 लक्स चाहती थी लेकिन पंचकुला में इतनी रोशनी उपलब्ध नहीं थी और इसे तैयार करने में समय लगेगा। इसलिए हमने प्रतियोगिता को बंगलूरू के कांतीरवा स्टेडियम में स्थानांतरित करने का फैसला किया है। हमारे पास वहां एक टीम है और वहां इसका आयोजन करना बहुत आसान होगा।

इस कार्यक्रम का आयोजन नीरज और जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स द्वारा भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) और विश्व एथलेटिक्स के सहयोग से संयुक्त रूप से किया जाएगा, जिसमें शीर्ष वैश्विक और भारतीय भाला फेंक खिलाड़ी भाग लेंगे। पीटर्स ने 2024 पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीता था और रोहलर के अलावा केन्या के जूलियस येगो (2016 रियो ओलंपिक में रजत पदक विजेता और 2015 विश्व चैंपियनशिप के स्वर्ण पदक विजेता भी हैं) और अमेरिका के कर्टिस थॉम्पसन ने भी भागीदारी की पुष्टि की है।

रिज मैदान पर 23 जून को बरसेंगे मुक्के, विदेशी मुक्केबाज भी आएंगे

नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश प्रो बॉक्सिंग एसोसिएशन की ओर से पूर्व सीएम दिवंगत वीरभद्र सिंह की जयंती पर प्रतियोगिता करवाई जाएगी।

हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला के रिज मैदान पर 23 जून को मुक्कों की बरसात होगी। हिमाचल प्रदेश प्रो बॉक्सिंग एसोसिएशन की ओर से पूर्व सीएम दिवंगत वीरभद्र सिंह की जयंती पर यह प्रतियोगिता करवाई जाएगी। इसमें देश ही नहीं विदेशों से मुक्केबाज हिस्सा लेंगे। एसोसिएशन के अध्यक्ष मोहिंद्र स्तान ने बताया कि प्रतियोगिता में रूस, दक्षिण कोरिया, फिलीपींस, उज्बेकिस्तान और थाईलैंड के मुक्केबाज भी दम दिखाएंगे। खास बात यह है कि प्रतियोगिता में महिला मुक्केबाज भी मुक्के बरसाएंगी। स्तान ने कहा कि प्रतियोगिता युवाओं को खेलों की ओर आकर्षित करेगी और भविष्य में और भी बड़े आयोजन करवाए जाएंगे। इस दौरान एसोसिएशन की नई कार्यकारिणी की भी घोषणा की गई। जिला शिमला से अरुण मेहता, सोलन से अजय कंवर, सिरमौर से दिनेश सिंगटा, किन्नौर से प्रताप नेगी, बिलासपुर से रजनीश मेहता, हमीरपुर से अखिलेश चौधरी, ऊना से सुमित शर्मा, चंबा से अजय ठाकुर, कांगड़ा से रोहित चौहान, मंडी से अजय मोदगिल, कुल्लू से हीरा लाल विभु और लाहौल-स्पीति से दीपक कुमार को जिला अध्यक्ष की जिम्मेवारी दी गई।

भारतीय युवा मुक्केबाजों के जीत का सिलसिला जारी

नई दिल्ली। एशियाई अंडर-15 और अंडर 17 मुक्केबाजी चैंपियनशिप के दूसरे दिन भी भारतीय मुक्केबाजों के जीत का सिलसिला जारी रहा। भारतीय मुक्केबाजों ने रविवार को भी अपने-अपने मुकाबले जीते थे और इस सिलसिले को सोमवार को भी जारी रखा। भारतीय स्कूल खेल महासंघ (एसजीएफआई) के स्वर्ण पदक विजेता टीकम सिंह (52 किग्रा) ने तीसरे दौर में रैफरी द्वारा मुकाबला रोकने (आरएससी) के बाद यूएई के अली अल्मेस्मारी के खिलाफ जीत दर्ज की।

टीकम के अलावा भारत के अन्य मुक्केबाज उधम सिंह (54 किग्रा) ने ईरान के मोहम्मदपरसा मोटेवालियनस्तानहसारी को 5-0 से हराकर शानदार जीत दर्ज की, जबकि राहुल गरिया (57 किग्रा) ने शुरुआती दौर में आरएससी के फैसले के साथ चीनी ताइपे के ली शू-जुन को हराया।

बीमारी के कारण सुदीरमन कप से हटी सात्विक-चिराग की जोड़ी, बीएआई ने की पुष्टि

नई दिल्ली। बीएआई ने सोमवार को कहा, पुरुष युगल जोड़ी सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने बीमारी के कारण बीडब्ल्यूएफ सुदीरमन कप फाइनल 2025 से नाम वापस ले लिया है। उनकी जगह टीम में किसी अन्य जोड़ी को नहीं भेजा जाएगा।

भारत की शीर्ष पुरुष युगल जोड़ी सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने सोमवार को बीमारी के कारण बीडब्ल्यूएफ सुदीरमन कप फाइनल्स से हटने का फैसला किया। ऐसे में 27 अप्रैल से चार मई तक चीन के शियामेन में होने वाली मिश्रित टीम चैंपियनशिप में देश की संभावनाओं को बड़ा झटका लगा है। एशियाई खेलों की स्वर्ण पदक विजेता और दुनिया की 11वें नंबर की भारतीय जोड़ी को चोट के बाद वापसी करनी थीस लेकिन भारतीय बैडमिंटन संघ (बीएआई) ने घोषणा की कि सात्विक और चिराग इस टूर्नामेंट

फैसला

> भारत की शीर्ष पुरुष युगल जोड़ी सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने सोमवार को बीमारी के कारण बीडब्ल्यूएफ सुदीरमन कप फाइनल्स से हटने का फैसला किया।

में हिस्सा नहीं लेंगे।

बीएआई ने सोमवार को कहा, पुरुष युगल जोड़ी सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने बीमारी के कारण बीडब्ल्यूएफ सुदीरमन कप फाइनल 2025 से नाम वापस ले लिया है। उनकी जगह टीम में किसी अन्य जोड़ी को नहीं भेजा जाएगा। चिराग को

मार्च में ऑल इंग्लैंड चैंपियनशिप के दूसरे दौर के दौरान पीठ में चोट लग गई थी।

हरिहरन अम्सकरुनन और रुबन कुमार रेथिनासबापति की युवा जोड़ी पुरुष युगल वर्ग में भारत का प्रतिनिधित्व करेगी। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पी वी सिंधू महिला एकल में अनुपमा उपाध्याय के साथ भारत की चुनौती का नेतृत्व करेंगी जबकि लक्ष्य सेन और एचएस प्रणय पुरुष एकल में जिम्मेदारी संभालेंगे।

प्रिया कोंजेंगबाम और श्रुति मिश्रा की जोड़ी महिला युगल में प्रतिस्पर्धा करेगी।

मिश्रित युगल में भारत दो जोड़ियां उतारेगा जिसमें ध्रुव कपिला और तनिषा क्रास्टो (एशिया चैंपियनशिप में क्वार्टर फाइनल तक पहुंची) तथा सतीश कुमार और आद्या वरियाथ शामिल हैं।

इससे पहले बीएआई ने चोट के कारण गायत्री गोपीचंद और त्रिसा जॉली की महिला युगल जोड़ी को बाहर कर दिया था। भारत ने अपनी समग्र विश्व रैंकिंग के आधार पर टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई किया है। देश को पूर्व चैंपियन इंडोनेशिया, दो बार के उपविजेता डेनमार्क और एक मजबूत इंग्लिश टीम के साथ चुनौतीपूर्ण ग्रुप डी में रखा गया है।

मैंने परवीन बाबी को मानसिक रूप से बीमार होते हुए देखा..

शबाना ने साझा कीं कई पुरानी यादें

नई दिल्ली। हिंदी सिनेमा की मशहूर अभिनेत्री शबाना आजमी ने अपने 50 साल के करियर में हर तरह के रोल निभाए हैं। छोटे बजट की फिल्मों से लेकर बड़े पर्दे की ब्लॉकबस्टर तक, उन्होंने अपनी एक्टिंग से सबका दिल जीता। उनकी पहली फिल्म अंकुर के लिए उन्हें नेशनल अवॉर्ड मिला और आज भी वह उतनी ही लोकप्रिय हैं। हाल ही में फिल्मफेयर के शो इन द रिंग विद फिल्मफेयर में शबाना ने खुलकर बात की। इसमें उन्होंने अपने करियर, रिश्तों, और जिंदगी के अनुभवों के बारे में बताया।

परवीन बाबी की परेशानी का दुखद किस्सा

शबाना ने अपनी दोस्त और अभिनेत्री परवीन बाबी के बारे में बात करते हुए एक दर्दनाक याद साझा की। उन्होंने कहा, हम फिल्म ज्वालामुखी की शूटिंग कर रहे थे। अचानक परवीन ने सेट पर लगे झाड़-फानूस को देखकर चिल्लाना शुरू कर दिया कि 'ये मेरे ऊपर गिरेगा। शबाना ने बताया कि फिल्म अशांति के समय भी परवीन का व्यवहार ठीक नहीं था। वह सिर्फ दो अंगूर खाती थीं और कहती थीं कि उनका पेट भर गया। परवीन

की मानसिक परेशानियों को देखना शबाना के लिए बहुत मुश्किल था।

स्मिता पाटिल के साथ रिश्ते की सच्चाई

शबाना और स्मिता पाटिल के बीच दुश्मनी की खबरें सालों तक फैलती रहीं। शबाना ने साफ किया, मीडिया ने हमारे बीच झगड़े की कहानियां बनाईं। स्मिता को लगता था कि मैंने उनके कुछ रोल छीने, लेकिन ऐसा नहीं था। उन्होंने बताया कि श्याम बेनेगल की फिल्म मंथन पहले उन्हें मिली थी, लेकिन समय न होने की वजह से वह रोल स्मिता को मिला। उन्होंने कहा, श्याम मुझसे नाराज हो गए थे। स्मिता के साथ मेरा रिश्ता जटिल था, लेकिन उनके मम्मी-पापा मेरे लिए बहुत अच्छे थे। स्मिता के अचानक चले जाने के बाद शबाना को बहुत अफसोस हुआ। उन्होंने कहा, मुझे उनके बारे में कभी कुछ गलत नहीं बोलना चाहिए था।

दिलीप कुमार की तारीफ

शबाना ने अपने पसंदीदा अभिनेता दिलीप कुमार को याद किया। उन्होंने कहा, उनमें गजब की सादगी थी। वह अपनी बातों से सबको मोह लेते थे। रोमांस में उनका कोई जवाब नहीं था। वह खाने के बहुत शौकीन थे। मैं उनकी बहुत बड़ी फैन थी। साथ ही शबाना ने अपने पति जावेद अख्तर के साथ रिश्ते पर कहा, हम एक-दूसरे की बहुत इज्जत करते हैं, लेकिन उससे भी बढ़कर, हम अच्छे दोस्त हैं। जावेद कहते हैं कि मेरी दोस्ती हमारी शादी से भी बड़ी है।

पृथ्वी दिवस पर दीया मिर्जा ने जलवायु संकट को लेकर जताई चिंता

अक्सर पर्यावरण को लेकर काफी सजग रहने वाली अभिनेत्री दीया मिर्जा ने आज पृथ्वी दिवस पर लोगों को कठोर चेतावनी दी है। साथ ही ग्लोबल वॉर्मिंग से निपटने के लिए मिलकर काम करने की अपील की है।

विश्व पृथ्वी दिवस है। इस मौके पर बॉलीवुड अभिनेत्री दीया मिर्जा ने संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) की ताजा रिसर्च और निष्कर्षों का उदाहरण देते हुए जलवायु संकट के बारे में कड़ी चेतावनी दी है और लोगों को आगाह किया है। अभिनेत्री ने वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में खतरनाक बढोत्तरी और इस पर तत्काल एक्शन की जरूरत पर जोर दिया है। इसके लिए उन्होंने सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट किया है। दीया मिर्जा ने अपने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया, जिसमें इस बात पर जोर दिया गया कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्लैनेट की रक्षा के लिए प्रोटेक्शन बेहद जरूरी हैं।

'डॉन 3' को लेकर बड़ा अपडेट, रणवीर सिंह की हीरोइन की तलाश में जुटे मेकर्स, ये एक्ट्रेस रेस में सबसे आगे

नई दिल्ली। रणवीर सिंह की फिल्म 'डॉन 3' फ्लोर पर आने को तैयार है, लेकिन अब तक फिल्म की लीड एक्ट्रेस फाइनल नहीं हो पा रही है। मेकर्स इसकी खोज में जुटे हुए हैं। अब एक नया नाम रेस में सामने आया है। जानिए कौन है वो अभिनेत्री।

फरहान अख्तर के निर्देशन में बनने वाली फिल्म 'डॉन 3' अपनी घोषणा के बाद से ही लगातार चर्चाओं में बनी हुई है। इस बार डॉन की प्रमुख भूमिका में शाहरुख खान की जगह रणवीर सिंह को कास्ट किया गया है। जिसको लेकर कई फैंस ने नाराजगी जताई थी। हालांकि, फिल्म की फीमेल लीड को लेकर अब तक कुछ तय नहीं हो पा रहा है। घोषणा के समय कियारा आडवाणी फिल्म की हीरोइन घोषित हुई थीं। हालांकि, प्रेग्नेंसी के चलते उनके फिल्म से हटने के बाद अब तक किसी नई एक्ट्रेस के नाम पर मोहर नहीं लग पाई है। अब फिल्म की हीरोइन को लेकर एक नई खबर सामने आ रही

है। जिसके मुताबिक मेकर्स ने बॉलीवुड की अन्य अभिनेत्री से संपर्क किया है।

शरवरी नहीं, अब कृति के संपर्क में मेकर्स

कुछ दिनों पहले ऐसी खबरें आई थीं कि कियारा के बाद अब शरवरी वाघ डॉन 3 में रणवीर सिंह की नई हीरोइन होंगी। लेकिन अब पिंकविला की रिपोर्ट्स में ये दावा किया जा रहा है कि शरवरी की जगह मेकर्स किसी और अभिनेत्री से बात कर रहे हैं। पिंकविला की रिपोर्ट्स की मानें तो 'डॉन 3' के मेकर्स अभिनेत्री कृति सेनन के संपर्क में हैं और उन्हें फिल्म की फीमेल लीड के लिए अप्रोच कर रहे हैं। इस रिपोर्ट के सामने आने के बाद ये तय है कि फिलहाल डॉन 3 की हीरोइन अब तक तय नहीं हो पा रही है।

मेकर्स को चाहिए अनुभवी अभिनेत्री

ताजा रिपोर्ट के मुताबकि, फरहान अख्तर और उनकी टीम अपनी फिल्म के लिए एक अनुभवी अभिनेत्री को कास्ट करना चाहती है। जिसकी स्क्रीन पर मौजूदगी अच्छी हो और किरदार की गंभीरता को समझ सके। इसीलिए शायद शरवरी की जगह अब कृति सेनन को अप्रोच किया जा रहा है। रिपोर्ट की मानें तो मेकर्स को ऐसा लगता है कि कृति सेनन 'डॉन 3' की लीड एक्ट्रेस की भूमिका के लिए बिल्कुल उपयुक्त हैं। उनमें स्क्रीन पर रोमा की भूमिका निभाने की क्षमता है और वे जल्द ही इस फिल्म को साइन करने के लिए उत्साहित हैं। हालांकि, अभी भी मेकर्स या कृति सेनन की ओर से इस बारे में आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

कॉन्सर्ट के बीच में अचानक फूटने लगे पटाखे, रेखा भारद्वाज ने रोकी परफॉर्मेंस, जताई नाराजगी

नई दिल्ली। दिग्गज गायिका रेखा भारद्वाज हाल ही में भोपाल में परफॉर्म कर रही थीं। दर्शक उनकी सुरीली आवाज के जादू में मगन थे कि अचानक पटाखों की आवाज गूंजने लगी। रेखा भारद्वाज ने इस पर गुस्सा जताया है।

दिग्गज गायिका रेखा भारद्वाज का हाल ही में भोपाल में कॉन्सर्ट हुआ। इस दौरान वे अपनी सुरीली आवाज से दर्शकों को बांधे हुए थीं कि कुछ ऐसा हुआ, जो रेखा भारद्वाज को अपनी परफॉर्मेंस रोकनी पड़ गई। इतना ही नहीं, उन्होंने इस पर नाराजगी भी जताई। दरअसल, रेखा के कॉन्सर्ट के बीच अचानक पटाखों की आवाज आने लगी।

आंख बंद किए खड़ी रहीं रेखा भारद्वाज

रेखा भारद्वाज वीकएंड में भोपाल में कॉन्सर्ट कर रही थीं। तभी अचानक पटाखे फूटने लगे। पटाखों का शोर इतना ज्यादा था कि वह संगीत परफॉर्मेंस के दौरान करकश लग रहा था। रेखा भारद्वाज ने अपना गाना रोक दिया और आंख बंद करके हाथ में माइक थामे पटाखों का शोर बंद होने का इंतजार करने लगीं। उनका वीडियो वायरल हो रहा है, जिसे @amazing_bhopal नाम के इंस्टाग्राम अकाउंट से शेयर किया गया है।

कॉन्सर्ट में जिस पल पटाखे फूट रहे थे, उस वक्त रेखा लंबाई जुदाई गाना गा रही थीं। उनकी सुरीली आवाज को सभी मंत्रमुग्ध होकर सुन रहे थे। अचानक पटाखों का शोर इसमें बाधा बना तो परफॉर्मेंस रुक गई। कुछ देर इंतजार के बाद रेखा भारद्वाज ने कहा, ये पटाखे बहुत ही अनम्यूजिकल हैं और बहुत ही गलत वक्त पर गए हैं। फिर उन्होंने आयोजकों से इस शोर को बंद कराने की अपील की। रेखा ने कहा, आसपास के लोग सो गए होंगे, प्लीज इसे बंद कर दीजिए।

परफॉर्मेंस के दौरान पटाखों के शोर से रेखा भारद्वाज को गुस्सा आया, मगर उन्होंने काफी धैर्य के साथ परिस्थिति को संभाला। यूजर्स उनके धैर्य और विनम्रता की तारीफ कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, आपने बहुत अच्छे से परिस्थिति को हैंडल किया है। एक अन्य यूजर ने लिखा, कितनी शांत रहकर हालात को काबू किया है आपने।

कार्तिक आर्यन-धर्मा प्रोडक्शन 'नागजिला' के लिए हुए ट्रोल

नई दिल्ली। करण जौहर प्रोडक्शन की फिल्म 'नागजिला' में कार्तिक आर्यन लीड रोल में नजर आएंगे। इस फिल्म के फर्स्ट को सोशल मीडिया पर ट्रोल किया जा रहा है। क्या है इस ट्रोलिंग की वजह, जानिए?

हाल ही में करण जौहर के प्रोडक्शन हाउस धर्मा ने सोशल मीडिया पर अपनी आने वाली फिल्म 'नागजिला' का लुक जारी किया। इसमें कार्तिक आर्यन एक इच्छाधारी नाग बनने वाले हैं। फिल्म के फर्स्ट लुक को देखकर सोशल मीडिया यूजर्स ने ट्रोलिंग शुरू कर दी। जानिए, क्या रहा फिल्म को लेकर यूजर्स का रिएक्शन।

एकता कपूर की 'नागिन' का असर

फिल्म 'नागजिला' के पहले लुक में एक गुफा में कई सांप नजर आ रहे हैं, उनके बीच में पीठ किए कार्तिक आर्यन खड़े हैं। फिर अचानक वह भी नाग में बदलते हुए नजर आते हैं। यह देखकर सोशल मीडिया यूजर्स ने अजब-गजब रिएक्शन दिए हैं। एक यूजर कहती हैं, 'ये क्या बना दिया? लगता है कि धर्मा प्रोडक्शन वालों

पर एकता कपूर का असर हो गया।' दरअसल, टीवी पर एकता कपूर ने एक सीरियल 'नागिन' बनाया था, जिसमें एक इच्छाधारी नागिन की कहानी थी। इस सीरियल के कई सीजन बन चुके हैं। अब बड़े पर्दे पर कार्तिक आर्यन भी इच्छाधारी नाग बनेंगे।

फर्स्ट लुक को बकवास बताया

कई यूजर ने फिल्म 'नागजिला' के पहले लुक को बकवास बताया। एक यूजर तो लिखता है, 'दुनिया खत्म होने वाली है?' वहीं एक दूसरा यूजर लिखता है, 'इससे अच्छा नागराज ही बना लेते।' नागराज एक पॉपुलर कॉर्टून कैरेक्टर है, जो 90 के दशक में काफी मशहूर हुआ था। एक और यूजर लिखता है, 'मुझे क्लासिक बॉलीवुड फिल्में याद आती हैं, जिनमें अच्छी कहानियां और गाने होते थे। आजकल ऐसी फिल्में बन नहीं रही हैं।'

कुछ यूजर्स ने फिल्म को सराहा

ऐसा नहीं है कि सभी सोशल मीडिया यूजर्स को फिल्म 'नागजिला' का पहला लुक बेकार लगा है। कई यूजर्स ने इसे सराहा भी है, कार्तिक आर्यन को इच्छाधारी नाग के तौर पर पसंद किया है। यह फिल्म अगले साल 14 अगस्त को रिलीज होगी।

रेट्रो का हिंदी में ट्रेलर जारी, उत्तर भारत के दर्शकों को रिझाएंगे सूर्या और पूजा हेगड़े

नई दिल्ली। साउथ के हीरो सूर्या की फिल्म रेट्रो का ट्रेलर अब हिंदी में भी जारी किया गया है। इसमें वह जबरदस्त एक्शन करते नजर आएंगे साथ ही पूजा हेगड़े के साथ रोमांस करते नजर आएंगे।

साउथ के सुपर स्टार सूर्या की फिल्म रेट्रो का ट्रेलर तीन दिन पहले जारी किया जा चुका है। अब इस फिल्म का ट्रेलर हिंदी में जारी किया गया है। इसका मतलब यह है कि फिल्म हिंदी में भी रिलीज होगी। ऐसें में उत्तर भारत के दर्शक भी फिल्म का आनंद उठा सकेंगे। रेट्रो एक मई 2025 को रिलीज होने वाली है।

रेट्रो के ट्रेलर में सूर्या जबरदस्त एक्शन में हैं। वह दुश्मनों के छक्के छुड़ा रहे हैं। सूर्या कभी लाठी तो कभी चाकू चलाते हैं। वह खास अंदाज में घुमाकर मुक्का मारते हैं जो उनके फैंस को खूब पसंद आने वाला है। ट्रेलर में पूजा हेगड़े को भी दिखाया गया है। वह पूजा हेगड़े के साथ इमोशनल होते हैं और कभी रोमांटिक होते हैं।

रेट्रो के ट्रेलर में दिखाया गया है कि सूर्या अपनी प्रेमिका (पूजा हेगड़े) से वादा करते हैं कि वह हिंसा छोड़ देंगे। लेकिन जब कुछ दिनों बाद दोनों दोबार मिलते हैं तो पूजा हेगड़े को पता चलता है कि सूर्या और ज्यादा हिंसक हो गए हैं।

आपको बता दें कि साउथ सुपरस्टार सूर्या काफी दिनों से अपनी आने वाली फिल्म %रेट्रो% को लेकर चर्चा में हैं। साउथ के साथ हिंदी के दर्शकों को भी फिल्म की रिलीज का बेसब्री से इंतजार है। इस बीच फिल्म के निर्माताओं ने रेट्रो का हिंदी ट्रेलर लॉन्च करके फैंस की बेचैनी को और बढ़ा दिया है।

रेट्रो में पूजा हेगड़े, जोजू जॉर्ज, जयराम, नास्सर, प्रकाश राज और करुणाकरण भी अहम भूमिकाओं में हैं। श्रेया सरन भी एक विशेष कैमियो भूमिका में दिखाई देंगी। संगीत संतोष नारायणन ने दिया है, जबकि कैमरा श्रेयस कृष्णा ने संभाला है। शफीक मोहम्मद अली इसके संपादक हैं। ज्योतिका और सूर्या ने 2डी एंटरटेनमेंट के बैनर तले रेट्रो का निर्माण किया है। यह फिल्म 1 मई 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

पेगासस पर 29 अप्रैल को सुप्रीम सुनवाई

नई दिल्ली। इस्राइली सॉफ्टवेयर से फोन हैकिंग के मामले में सुप्रीम कोर्ट 29 अप्रैल को सुनवाई करेगी। बता दें कि, पेगासस जासूसी मामले में दायर याचिकाओं में पत्रकारों समेत कई अन्य अनधिकृत निगरानी के आरोपों की जांच की मांग की गई है।

सुप्रीम कोर्ट ने पेगासस जासूसी मामले में दायर याचिकाओं पर सुनवाई के लिए 29 अप्रैल की तारीख तय की है। इन याचिकाओं में पत्रकारों और अन्य नागरिकों की अनधिकृत निगरानी के आरोपों की जांच की मांग की गई है। पेगासस एक इस्राइली सॉफ्टवेयर है जिसे मोबाइल फोन को हैक कर निगरानी के लिए इस्तेमाल किया जाता है। 2021 में कई मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया था कि भारत में पत्रकारों, नेताओं, और सामाजिक कार्यकर्ताओं के फोन की जासूसी की गई थी। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले की स्वतंत्र जांच के आदेश दिए थे।

2021 में सुप्रीम कोर्ट ने पेगासस मामले की जांच के लिए एक तकनीकी समिति और एक निगरानी समिति बनाई थी। तकनीकी समिति में साइबर सुरक्षा, डिजिटल फॉरेंसिक और नेटवर्क विशेषज्ञ - नवीन कुमार चौधरी, प्रभाहरण पी और अश्विन अनिल गुमास्ते शामिल थे। वहीं इस जांच की निगरानी पूर्व न्यायाधीश आर वी रवींद्रन कर रहे थे, जिनकी सहायता पूर्व आईपीएस अधिकारी आलोक जोशी और साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ संदीप ओबेरॉय कर रहे थे।

मामले में साल 2022 में अदालत को सौंपी गई रिपोर्ट के अनुसार, 29 में से पांच मोबाइल फोन में मैलवेयर मिला। लेकिन यह तय नहीं हो पाया कि वह पेगासस था

130 नहीं अब इस रफ्तार से दौड़ेगी ट्रेनें

सक्षम

रेलवे का इस समय सबसे ज्यादा फोकस 160 किलोमीटर से ज्यादा रफ्तार से चलने में सक्षम वंदे भारत ट्रेनों की संख्या बढ़ाने का है।

नई दिल्ली। रेलवे का इस समय सबसे ज्यादा फोकस 160 किलोमीटर से ज्यादा रफ्तार से चलने में सक्षम वंदे भारत ट्रेनों की संख्या बढ़ाने का है। लेकिन ये ट्रेनें अपनी फुल स्पीड में नहीं चल पा रही है। ऐसे में रेलवे ने ने करीब 3,700 किलोमीटर नेटवर्क को 130 किलोमीटर प्रति घंटे से ज्यादा रफ्तार से चलने योग्य बनाने का निर्णय लिया है। आने वाले दिनों में देशभर में चलने वाली अधिकांश ट्रेनें तेज रफ्तार से चलती हुई नजर आएगी। इसके लिए रेलवे ने तेजी से काम करना शुरू कर दिया है। मिशन रफ्तार का लक्ष्य हासिल करने के लिए रेलवे ने 2025-26 में अधिकतम रफ्तार की सीमा खत्म करने, ट्रैक के नवीकरण और पटरियों के किनारे चहार दीवारी बनाने की प्लानिंग तैयार की है। सूत्रों का कहना है कि, रेलवे मंत्रालय ने सभी रेलवे जोन से चर्चा कर ट्रैक और ट्रैक से जुड़े कामों को जल्द से जल्द पूरा करने का निर्देश दिया है। रेलवे ने वित्त वर्ष 2026 में 7,900 किलोमीटर ट्रैक का नवीनीकरण करने और उस पर गाड़ियों को पूरी गति के साथ चलाने का लक्ष्य रखा है।

रेलवे का इस समय सबसे ज्यादा फोकस 160 किलोमीटर से ज्यादा रफ्तार से चलने में सक्षम वंदे भारत ट्रेनों की संख्या बढ़ाने का है। लेकिन ये ट्रेनें अपनी फुल स्पीड में नहीं चल पा रही है। ऐसे में रेलवे ने ने करीब 3,700 किलोमीटर नेटवर्क को 130 किलोमीटर प्रति घंटे से ज्यादा रफ्तार से चलने योग्य बनाने का निर्णय लिया है। रेलवे ने वित्त वर्ष 2025 में 2,040 रूट किमी पर स्पीड 130 किमी प्रति घंटे तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा है। जबकि वित्त वर्ष 2024 में यह यह लगभग 2,400 रूट किमी था। वहीं रेलवे ने 2026 में 7,900 किलोमीटर ट्रैक का नवीकरण करने और उस पर गाड़ियों को पूरी गति के साथ चलाने का लक्ष्य रखा है। इस हिसाब से नया लक्ष्य पिछले लक्ष्यों से करीब दोगुना है।

इस बीच रेलवे ने वंदे भारत ट्रेनों की जानवरों के साथ टकराने की घटना को भी गंभीरता से लिया है। रेलवे ने जानवरों और यात्रियों की सुरक्षा के लिए पटरियों के किनारे चहारदीवारी बनाने का काम शुरू किया है। इससे ऐसी दुर्घटनाओं में कमी आएगी। जबकि वंदे भारत ट्रेनों पर पत्थर फेंकने जैसी घटनाओं पर भी रोक लग सकेगी। रेलवे ने चालू वित्त वर्ष में 11,000 किलोमीटर चहारदीवारी बनाने की योजना बनाई है, जो इसके पहले साल के लक्ष्य का करीब दोगुना है।

इसी तरह से मंत्रालय ने 208 स्थायी रफ्तार प्रतिबंधों (पीएसआर) को हटाने और 80 पीएसआर में ढील देने का लक्ष्य रखा है। इसकी वजह से भीड़ बढ़ती और रेल का परिचालन सुस्त होता है। पीएसआर सामान्यतः उन इलाकों में लागू होता है, जहां तेज मोड़ या क्रॉसिंग या भीड़भाड़ वाला इलाका होता है।

वक्फ कानून लागू करने को लेकर ममता पर बरसे किरेन रिजिजू

मुंबई। केंद्रीय अल्पसंख्यक मंत्री किरेन रिजिजू ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर निशाना साधा है। केंद्रीय मंत्री ने वक्फ कानून न लागू करने पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि कोई भी राज्य संसद से पारित कानून को रोक नहीं सकता है।

केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने मंगलवार को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर वक्फ (संशोधन) अधिनियम को लागू करने से इनकार करने को लेकर पलटवार करते हुए कहा कि संघीय ढांचे के तहत कोई राज्य संसद की तरफ से पारित कानून को रोक नहीं सकता है। इस दौरान केंद्रीय मंत्री ने कहा- कुछ गुमराह मुसलमान और वोट बैंक के तुष्टिकरण में लगे राजनेता वक्फ (संशोधन) अधिनियम का विरोध कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार जल्द ही इन तत्वों को बेनकाब करेगी।

बता दें कि, पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने पहले कहा था कि पश्चिम बंगाल में वक्फ अधिनियम लागू नहीं किया जाएगा और वह अल्पसंख्यकों और उनकी संपत्तियों की रक्षा करेंगी। उनकी टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया देते हुए अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री ने कहा, %हम संघीय ढांचे के तहत काम करते हैं। वह सैद्धांतिक रूप से अधिनियम का विरोध कर सकती हैं, लेकिन वह यह नहीं कह सकतीं कि वह राज्य में संसद की तरफ से पारित कानून को लागू नहीं करेंगी।%

उन्होंने वक्फ अधिनियम को लेकर मुर्शिदाबाद में हुई हिंसा के लिए भी टीएमसी प्रमुख की आलोचना की। उन्होंने कहा कि मुस्लिम समुदाय के कई सदस्य वक्फ अधिनियम लागू करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद देने के लिए आगे आए हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि यह सुनिश्चित करने के लिए नियम बनाए जाएंगे कि वक्फ संपत्तियों का इस्तेमाल गरीब मुसलमानों के कल्याण के लिए किया जाए।

उन्होंने आगे कहा, हम जल्द ही उन लोगों को बेनकाब करेंगे जिन्होंने गरीब मुसलमानों को लूटा और उन्हें कानून के प्रावधानों के बारे में गुमराह किया। ऐसे तत्व और वोट बैंक तुष्टिकरण में रुचि रखने वाले कुछ राजनेता झूठ फैला रहे हैं - कि मुसलमानों की कब्रगाह या मस्जिदें छीन ली जाएंगी और उनकी जमीन जब्त कर ली जाएगी। इस तरह के झूठ बोलना पाप है।

केंद्रीय मंत्री ने आरोप लगाया कि विपक्ष ने गलत सूचना फैलाई है कि नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) के तहत मुसलमानों की नागरिकता रद्द कर दी जाएगी। उन्होंने पूछा, क्या ऐसा कुछ हुआ है, जबकि सीएए एक साल से अधिक समय से लागू है? वहीं नेशनल हेराल्ड मामले पर एक सवाल का जवाब देते हुए मंत्री ने कहा कि कांग्रेस कार्यकर्ताओं को यह महसूस करना चाहिए कि उनके पैसे उनके ही नेताओं ने लूटे हैं।

बंगाल के राज्यपाल बोस को निजी अस्पताल शिफ्ट किया गया; बीते दिन बिगड़ी थी तबीयत

कोलकाता। राज्यपाल सीवी आनंद बोस की तबीयत शनिवार रात बिगड़ गई थी। मुर्शिदाबाद के दंगा प्रभावित क्षेत्रों के दौरे से लौटने के बाद उन्होंने सीने में तकलीफ की शिकायत की थी। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अस्पताल पहुंचकर उनका हालचाल जाना था। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस को निजी अस्पताल में शिफ्ट कर दिया गया है। बीते दिन सीने में जकड़न की वजह से उन्हें पूर्वी कमांड अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अब उन्हें मंगलवार को आगे की जांच के लिए एक निजी अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया है। राजभवन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि राज्यपाल बोस की स्वास्थ्य स्थिति स्थिर है। उन्हें पूर्वी मेट्रोपॉलिटन बाईपास पर स्थित निजी अस्पताल में ले जाया गया है। अधिकारी ने पीटीआई को बताया कि राज्यपाल को आज एक निजी अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया, क्योंकि डॉक्टरों ने कुछ चिकित्सा परीक्षण निर्धारित किए हैं। वह टेस्ट निजी अस्पताल में ही किए जाएंगे।

कोलकाता में नाले के पास लावारिस सूटकेस में मिला महिला का शव

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। राज्य की राजधानी कोलकाता के बागुईआटी में एक लावारिस सूटकेस में महिला का शव मिला है। पुलिस ने बताया कि मंगलवार सुबह कोलकाता के बागुईआटी इलाके में एक लावारिस सूटकेस में एक महिला का शव मिला। सूटकेस बागुईहाटी पुलिस स्टेशन के पास सड़क के किनारे एक नाले के पास पड़ा मिला। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। उसकी पहचान अभी नहीं हो पाई है। मामले की जांच शुरू कर दी गई है। स्थानीय लोगों ने दावा किया कि उन्होंने महिला के शरीर पर चोट के निशान भी हैं। महिला जहां शव मिला, उस इलाके की नहीं लग रही थी। इलाके के एक निवासी ने बताया कि हमें संदेह है कि शव को कल रात यहां फेंका गया है।

कानूनों का उल्लंघन करने वाली कंपनियों के निशाने पर खुदरा व्यापार, क्विक कॉमर्स के खिलाफ बिगुल

उल्लंघन

कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने देश के पारंपरिक खुदरा व्यापार को कानूनों का उल्लंघन करने वाले कंपनियों के निशाने पर बताया है।

नई दिल्ली। कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने देश के पारंपरिक खुदरा व्यापार को कानूनों का उल्लंघन करने वाले कंपनियों के निशाने पर बताया है। कैट ने मंगलवार को क्विक कॉमर्स व ई-कॉमर्स जैसी कंपनियों के खिलाफ विरोध का बिगुल बजा दिया है।

कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने देश के पारंपरिक खुदरा व्यापार को कानूनों का उल्लंघन करने वाले कंपनियों के निशाने पर बताया है। कैट ने मंगलवार को क्विक कॉमर्स व ई-कॉमर्स जैसी कंपनियों के खिलाफ विरोध का बिगुल बजा दिया है। कॉन्स्टिट्यूशन क्लब, नई दिल्ली में आयोजित क्विक कॉमर्स और ई-कॉमर्स का क्रूर चेहरा% विषय पर राष्ट्रीय कॉन्क्लेव आयोजित किया गया। सम्मेलन में सर्वसम्मति से यह बात कही गई है कि भारत का दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता, पारंपरिक खुदरा व्यापार, आज उन कंपनियों के निशाने पर है, जो खुलेआम कानूनों का उल्लंघन कर रही हैं। बाजार को विकृत कर रही हैं और छोटे व्यापारियों को योजनाबद्ध तरीके से बर्बाद कर रही हैं।

कैट ने ऑल इंडिया मोबाइल रिटेलर्स एसोसिएशन (एमरा), ऑल इंडिया कंज्यूमर प्रोडक्ट्स डिस्ट्रीब्यूटर्स फेडरेशन (आईसीपीडीएफ) और ऑर्गनाइज्ड रिटेलर्स एसोसिएशन (ओरा) के साथ मिलकर विदेशी फंड से संचालित ई-कॉमर्स कंपनियों और तथाकथित भारतीय क्विक कॉमर्स प्लेटफार्मों के बेलगाम, अनैतिक और कानून-विरोधी कार्यप्रणालियों के खिलाफ राष्ट्रव्यापी खतरे की घंटी बजाई। कैट के राष्ट्रीय महामंत्री और चांदनी चौक से सांसद प्रवीन खंडेलवाल ने कहा, जब हर गली-हर नुक्कड़ पर दुकानें हैं, तो 10 मिनट की डिलीवरी की क्या जरूरत है। उन्होंने एफडीआई के दुरुपयोग और उपभोक्ताओं की गणित आधारित मानसिकता से हो रही छेड़छाड़ पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि ये कंपनियां भारत को %केले गणराज्य% समझती हैं जहां कानूनों की कोई अहमियत नहीं है।

बतौर खंडेलवाल, बुनियादी ढांचा खड़ा करने की बजाए, एफडीआई का इस्तेमाल घाटा भरने, छोटे दुकानदारों को खत्म करने और पूरी आपूर्ति श्रृंखला पर कब्जा करने के लिए किया जा रहा है। यह अब व्यापार नहीं रहा, बल्कि यह वैल्यूएशन की दौड़ है, जिसमें भारतीय खुदरा व्यापारी कुचले जा रहे हैं।

कैट के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीसी भरतिया ने घोषणा की कि 1 मई 2025 से पूरे देश में एक निर्णायक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया जाएगा। इसमें हर राज्य और शहर की व्यापारिक संस्थाएं हिस्सा लेंगी। इस आंदोलन की रणनीति 25-26 अप्रैल को भुवनेश्वर में आयोजित कैट की नेशनल गवर्निंग काउंसिल मीटिंग में घोषित की जाएगी।

सऊदी में गूंजा ऐ वतन, ऐ वतन गीत, दो दिवसीय दौरे पर जेद्दा पहुंचे पीएम मोदी

जेद्दा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सऊदी अरब पहुंच गए हैं। प्रधानमंत्री मोदी सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस और प्रधानमंत्री प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के निमंत्रण पर 22-23 अप्रैल को सऊदी अरब की दो दिवसीय यात्रा पर जेद्दा पहुंचे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दो दिवसीय दौरे के तहत सऊदी अरब के जेद्दा पहुंच गए हैं। वहीं उनके जेद्दा पहुंचने पर एक स्थानीय शख्स ने उनके स्वागत में भारतीय गीत ऐ वतन, ऐ वतन... गाया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सऊदी अरब की दो दिवसीय राजकीय यात्रा के लिए जेद्दा पहुंचे, इस दौरान उनका स्वागत 21 तोपों की सलामी के साथ किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस और प्रधानमंत्री एचआरएच प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के साथ देश की अपनी यात्रा के दौरान भारत-सऊदी अरब रणनीतिक साझेदारी परिषद की दूसरी नेताओं की बैठक की सह-अध्यक्षता करेंगे।भारतीय प्रवासी समुदाय के सदस्य जेद्दा के एक होटल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी 22-23 अप्रैल को सऊदी अरब में रहेंगे। भारतीय प्रवासी समुदाय के सदस्यों ने कहा, ...मैं प्रधानमंत्री मोदी को देखने के लिए बहुत उत्साहित हूं... हम बहुत आभारी हैं कि हमें यह अवसर मिला।सऊदी अरब की दो दिवसीय यात्रा पर रवानगी से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दोनों देशों के मजबूत संबंधों पर जोर दिया। अरब न्यूज को दिए साक्षात्कार में पीएम मोदी ने कहा कि भारत-सऊदी अरब के संबंध काफी मजबूत हैं। उन्होंने दोनों देशों के संबंधों की ताकत पर जोर दिया। साथ ही साझेदारी को अनिश्चितताओं से भरे विश्व में स्थिरता का स्तंभ बताया। इसके अलावा उन्होंने क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के नेतृत्व और नियंत्रण की भी तारीफ की।

विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने रूस-यूक्रेन युद्ध पर कहा, यह चर्चा का एक अहम क्षेत्र होने जा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने पहले ही भारत का रुख स्पष्ट किया है कि इस मसले का हल बातचीत से निकलना चाहिए। सभी पक्षों को एक मेज पर बैठकर इसका समाधान ढूंढना चाहिए। हमें यह देखकर खुशी हो रही है कि ऐसा कुछ हो रहा है। यह अच्छा है कि सऊदी अरब जैसा साझेदार फिर से इसमें शामिल है। मैं पहले ही यह नहीं कह सकता कि बातचीत की प्रकृति कैसी होगी। लेकिन इतना जरूर कह सकता हूं कि यह मुद्दा दोनों नेताओं के बीच प्रमुख चर्चा का विषय होने जा रहा है।

आव्रजन एजेंट रिकर्स द्वीप जेल में नहीं कर सकेंगे काम, न्यायाधीश ने न्यूयॉर्क के मेयर के आदेश पर लगाई रोक

न्यूयॉर्क

संघीय आव्रजन एजेंट अब रिकर्स द्वीप जेल परिसर से काम नहीं कर सकेंगे। न्यूयॉर्क के संघीय न्यायाधीश ने मेयर एरिक एडम्स की ओर से आव्रजन एजेंटों को दी गई अनुमति पर अस्थायी रोक लगा दी है।

न्यूयॉर्क। न्यूयॉर्क मेयर एरिक एडम्स ने अमेरिकी आव्रजन और सीमा शुल्क प्रवर्तन और अन्य संघीय एजेंसियों को जेल परिसर में कार्यालय बनाए रखने की अनुमति दी थी। इसके खिलाफ न्यूयॉर्क सिटी काउंसिल ने न्यायालय में मुकदमा दायर करके कार्यकारी आदेश को रोकने की मांग की है। संघीय न्यायाधीश ने अनुमति पर अस्थायी रोक लगा दी है। संघीय आव्रजन एजेंट अब रिकर्स द्वीप जेल परिसर से काम नहीं कर सकेंगे। न्यूयॉर्क के संघीय न्यायाधीश ने मेयर एरिक एडम्स की ओर से आव्रजन एजेंटों को दी गई अनुमति पर अस्थायी रोक लगा दी है। एरिक एडम्स के आदेश के खिलाफ दायर मुकदमे पर 25 अप्रैल को सुनवाई होनी है। इससे पहले लिखित आदेश में न्यायाधीश मैरी रोसाडो ने मेयर को संघीय सरकार के साथ किसी भी समझौता ज्ञापन पर बातचीत, हस्ताक्षर या कार्यान्वयन की दिशा में कोई भी कदम उठाने से रोक दिया।

न्यूयॉर्क मेयर एरिक एडम्स ने अमेरिकी आव्रजन और सीमा शुल्क प्रवर्तन और अन्य संघीय एजेंसियों को जेल परिसर में कार्यालय बनाए रखने की अनुमति दी थी। इसके खिलाफ न्यूयॉर्क सिटी काउंसिल ने न्यायालय में मुकदमा दायर करके कार्यकारी आदेश को रोकने की मांग की है। मुकदमे में डेमोक्रेट एडम्स पर न्याय विभाग द्वारा उनके खिलाफ आपराधिक आरोपों को वापस लेने के बदले में ट्रंप प्रशासन के साथ भ्रष्ट सौदेबाजी में प्रवेश करने का आरोप लगाया गया है। इस मुकदमे की सुनवाई 25 अप्रैल को होनी है।

मुकदमे में कहा गया है कि जेल परिसर में आव्रजन एजेंटों और अन्य संघीय एजेंसियों की मौजूदगी उन्हें गिरोह और नशीली दवाओं से संबंधित जांच में सहायता करने की अनुमति देगी, लेकिन नागरिक आव्रजन प्रवर्तन में उनकी कोई भूमिका नहीं होगी। वहीं एडम्स के एक प्रवक्ता ने कहा कि सुनवाई से पहले शहर ट्रंप प्रशासन के साथ कोई समझौता नहीं करेगा। एडम्स ने पहले घोषणा की थी कि वह अपने पहले डिप्टी मेयर रैंडी मैस्ट्रो को रिकर्स द्वीप पर आव्रजन एजेंटों की वापसी पर सभी निर्णय लेने के लिए नियुक्त करेंगे ताकि किसी संघर्ष की स्थिति न बने। वहीं मैस्ट्रो ने पिछले सप्ताह कहा था कि योजना पर संघीय सरकार के साथ चर्चा जारी है।

चैट लीक होने पर डोनाल्ड ट्रंप ने रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ का किया बचाव

वॉशिंगटन। रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ पर आरोप लगा है कि उन्होंने यमन में हूतियों पर अमेरिकी हवाई हमले से संबंधित अहम जानकारी सिग्नल एप पर साझा की। उनके बचाव में डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि मुझे लगता है कि असंतुष्ट कर्मचारियों का काम है। सभी जानते हैं कि हेगसेथ को रक्षा विभाग में बुरे लोगों से छुटकारा दिलाने के लिए रखा गया था। वे वही कर रहे हैं। हूतियों को लेकर दूसरी बार चैट लीक करने के आरोपों का सामना कर रहे रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ का राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बचाव किया है। उन्होंने कहा कि यह असंतुष्ट कर्मचारियों का काम है। हेगसेथ अच्छा काम कर रहे हैं। इसलिए असंतुष्ट कर्मचारी उनको निशाना बना रहे हैं। व्हाइट हाउस ने भी हेगसेथ का समर्थन किया है।

पिछले दिनों रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ पर आरोप लगा है कि उन्होंने यमन में हूतियों पर अमेरिकी हवाई हमले से संबंधित अहम जानकारी सिग्नल एप पर साझा की। जिस चैट ग्रुप में ये अहम खुफिया जानकारी साझा की गई, उस ग्रुप में हेगसेथ की पत्नी और भाई भी शामिल हैं। इसे लेकर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हेगसेथ का बचाव किया। ईस्टर एग रोल कार्यक्रम में डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि मुझे लगता है कि असंतुष्ट कर्मचारियों का काम है। सभी जानते हैं कि हेगसेथ को रक्षा विभाग में बुरे लोगों से छुटकारा दिलाने के लिए रखा गया था। वे वही कर रहे हैं। इसलिए जब ऐसा होता है तो आपके हमेशा दोस्त नहीं बनते। हूतियों से पूछना चाहिए, कि यमन में कितनी अव्यवस्था फैली है। व्हाइट हाउस में भी विवाद को हेगसेथ और असंतुष्ट पेंटागन कर्मचारियों के बीच नौकरशाही लड़ाई बताया। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने कहा कि ऐसा तब होता है जब पूरा पेंटागन आपके खिलाफ काम कर रहा हो और उस बड़े बदलाव के खिलाफ काम कर रहा हो जिसे आप लागू करने की कोशिश कर रहे हैं। रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने चैट लीक करने के आरोपों को खारिज किया है।

पाकिस्तान में भीषण सड़क हादसा, खाई में गिरी वैन; 16 लोगों की मौत, 30 घायल

इस्लामाबाद। दक्षिणी पाकिस्तान में एक तेज रफ्तार वैन खाई में गिर गई। हादसे में महिलाओं और बच्चों सहित कम से कम 16 लोगों की मौत हो गई है। 30 अन्य लोग घायल बताए जा रहे हैं। दुर्घटना सोमवार को सिंध प्रांत के जमशोरो जिले में हुई। जानकारी के मुताबिक, दुर्घटना पहाड़ी क्षेत्र में उस वक्त हुई, जब वैन के चालक ने तेज गति के कारण वाहन पर नियंत्रण खो दिया और वैन खाई में गिर गई। वैन पंजाब प्रांत के लापरी से सिंध प्रांत के बादिन जा रही कोल्ही जनजाति के सदस्यों को ले जा रही थी। पुलिस और बचाव दल मौके पर पहुंचे और मृतकों और घायलों को नजदीकी अस्पताल पहुंचाया। डिप्टी कमिश्नर गजनफर कादरी ने बताया कि वैन में मजदूर सवार थे, जो बलूचिस्तान में गेहूं की कटाई का काम पूरा करके घर लौट रहे थे।

वैश्विक यात्राओं से लेकर कार्यकाल व संतों की रिकॉर्ड संख्या तक, पोप फ्रांसिस के नाम कई कीर्तिमान

वेटिकन सिटी फ्रांसिस के पोप का पद ग्रहण करने से पहले कई घटनाएं उनसे जुड़ी। वह अमेरिका या दक्षिणी गोलार्ध से आने वाले पहले पोप थे। सीरिया में जन्मे ग्रेगरी तृतीय की 741 में मृत्यु के बाद से रोम में कोई गैर-यूरोपीय बिशप नहीं था। वह सेंट पीटर के सिंहासन पर निर्वाचित होने वाले पहले जेसुइट भी थे। ऐतिहासिक तौर से रोम में जेसुइट्स को शक की नजर से देखा जाता था। उनके पूर्ववर्ती, बेनेडिक्ट 16 वें लगभग 600 वर्षों में स्वैच्छिक तौर से सेवानिवृत्त होने वाले पहले पोप थे।

पोप फ्रांसिस का 21 अप्रैल को 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्हें पीपुल्स पोप (लोगों के प्रिय पोप) के रूप में जाना जाता था। वे लैटिन अमेरिका से पोप बनने वाले पहले व्यक्ति थे। पोप के रूप में उनकी विरासत एक दशक से अधिक समय तक चली। इस दौरान उन्होंने शांति और करुणा का संदेश फैलाने के लिए कई देशों का दौरा किया। उन्होंने कई रिकॉर्ड भी अपने नाम किए। पोप फ्रांसिस की विरासत के बारे में कुछ आंकड़े...

13 मार्च, 2013 को लैटिन अमेरिका से पहले पोप के रूप में चुने जाने से पहले अर्जेंटीना के पूर्व कार्डिनल जॉर्ज मारियो बर्गोग्लियो फ्रांसिस नाम अपनाने वाले पहले पोप बने। वे 266वें पोप बने। पोप के रूप में उनका कार्यकाल 12 साल और 1 महीने तक चला, जो उनके 265 पूर्ववर्तियों के 7.5 साल के औसत कार्यकाल से अधिक था। वे इतिहास में दूसरे सबसे वृद्ध पोप बने। सबसे लंबे समय तक पोप रहने वाले पोप लियो XIII थे, जिनकी मृत्यु 1903 में 93 वर्ष की आयु में हुई। पोप बेनेडिक्ट XVI 95 वर्ष की आयु तक जीवित रहे, लेकिन 85 वर्ष की आयु में उन्होंने इस्तीफा दे दिया था। पोप फ्रांसिस ने पोप बेनेडिक्ट XVI के स्थान पर 2013 में पोप फ्रांसिस ने कार्यभार संभाला था। अपने 12 साल के कार्यकाल के दौरान पोप फ्रांसिस ने 109 कार्डिनल नियुक्त किए, जो अब अगले पोप के लिए वोट देने के पात्र हैं। वर्तमान में कुल 252 कार्डिनल (लाल टोपी वाले चर्च के राजकुमार) में से 135 80 वर्ष से कम आयु के हैं। इसलिए चर्च कानून के तहत अगले पोप का चुनाव करने के लिए एक सम्मेलन में प्रवेश करने के पात्र हैं। जो लोग वोट देने के पात्र हैं, उन्हें कार्डिनल इलेक्टर के रूप में जाना जाता है। अगले पोप का चुनाव करने के अलावा कार्डिनल अपने कार्यकाल के दौरान पोप को सलाह देते हैं। अक्सर वेटिकन नौकरशाही के भीतर शक्तिशाली विभागों का नेतृत्व करते हैं।

पृथ्वी की रक्षाकरना हमारा नैतिक कर्तव्यः प्रो. ध्रुवसेन

अवधनामा संवाददाता

- नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर बढ़ना होगाः प्रो. वंदना सिंह
- विश्व पृथ्वी दिवस 2025 के अवसर हमारी शक्ति, हमारा ग्रह विषयक ऑनलाइन राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित

जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,जौनपुर, उत्तरप्रदेश के अंतर्विषयक ऊर्जा एवं जल शोध संस्थान,भू एवं ग्रहीय विज्ञानविभाग एवं लोक दायित्व, आज़मगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में विश्व पृथ्वी दिवस 2025 के अवसर हमारी शक्ति, हमारा ग्रह विषयक ऑनलाइन राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया।कार्यक्रम के मुख्य वक्ता लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ के भू विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. ध्रुवसेन सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृति प्रकृति की रक्षा का संदेश देती है सभी ग्रहों में पृथ्वी पर ही जीवन है।इस ग्रह को मानव के क्रियाकलापों सेही सबसे बड़ा खतरा है। पृथ्वी के अलावा कोई ऐसा ग्रह नहीं है जो हमारे घर की तरह हो इसकी रक्षा करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि हम पानी बना नहीं सकते तो निरंतर प्रदूषित करने का अधिकार नहीं है। भारत मेंनदियों को माँ का दर्जा दिया गया। इसके किनारे सभ्यता और संस्कृति का विकास हुआ है. उन्होंने जल, वायु और स्थल मंडल को प्रदूषण मुक्त रखने के सुझाव दिए। उन्होंने कहा किप्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ाना होगा। यह जीवाश्म ईंधन कीतुलना में एक बेहतर विकल्प है और प्रदूषण से मुक्ति दिलाएगी।

अध्यक्षी यसंबोधन में कुलपति प्रो. वंदना सिंह ने कहा कि हम न केवल अपने विचारों में बदलावलाएं, बल्कि अपने कार्यों,शोध और नवाचारों मेंभी बदलाव लाएं ताकि हम पृथ्वी को एक संवेदनशील,स्वच्छ और सतत दिशामें आगे बढ़ा सकें।उन्होंने कहा कि हम एक ऐसी दुनिया का निर्माण कर सकते हैं जो नकेवल आज के लिए बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित और टिकाऊ है. उन्होंनेकहा कि नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर,पवन, औरजल विद्युत की ओर तेजी से बढ़ना होगा।

भगवान श्री परशुराम जन्मोत्सव पर भव्य शोभायात्रा की तैयारी जोरों पर

जौनपुर (महराजगंज) भगवान विष्णु के छठे अवतार भगवान श्री परशुराम के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा द्वारा विगत वर्षों की भांति 29 अप्रैल 2025 दिन मंगलवार को भव्य शोभायात्रा निकली जा रही है। जहां संगठन के जिला अध्यक्ष डॉ अतुल कुमार दुबे ने बताया कि इस बार की शोभायात्रा जिले के बॉर्डर से निकली जाएगी वही यह भी बताया कि महराजगंज ब्लॉक अध्यक्ष श्याम मिश्र की अगुवाई में यह शोभायात्रा बाबूगंज, पूरादूधी, राजापुर तिराहा, पडरी, कमला बाजार, लोहिंदा, महा,राजगंज तिराहा, गद्दोपुर, भगवान परशुराम मंदिर चारों, भीमपुर ढेमा, पहितियापुर पुल, बबूरा मोड, बदलापुर चौक तथा दीनदयाल उपाध्याय चौराहा सरोखनपुर पहुंचकर जौनपुर शहर के लिए प्रस्थान कर समापन किया जाएगा जहां भव्य झलकी एवं रथ डीजे पर यह शोभायात्रा निकाली जाएगी महेश शोभा यात्रा को लेकर संगठन के लोगों में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है जिनमें सुरेंद्रनाथ तिवारी, नागेंद्र कुमार मिश्र वशिष्ठ, जगदीश उपाध्याय, अमित पाण्डेय, राजेंद्र प्रसाद मिश्र, धीरज चौबे, अभितेद्र तिवारी, अमरपाल तिवारी, दीपक मिश्र, पंकज उपाध्याय, भैया लाल उपाध्याय, राजेश उपाध्याय, रमेश मिश्रा, निलेश मिश्रा, संदीप मिश्रा, भोला मिश्रा, अमित पांडे मुन्ना व प्रवीण दुबे आदि लोग लगे हुए हैं।

गर्मी बढ़ते ही उड़ी बिजली व्यवस्था की पोल, फुंके उपकरण

अवधनामा संवाददाता

बाँदा। जैसे ही तापमान ने चालीस के पार की सीमा लांघी, वैसे ही जिले की बिजली व्यवस्था का हाल %धड़ाम% हो गया। ट्रांसफॉर्मर जलने लगे, विद्युत लाइनों में फॉल्ट की भरमार हो गई, और जगह-जगह अघोषित कटौती ने आम जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया। बिजली विभाग के अधिकारी और कर्मचारी मानो 'भगवान भरोसे' काम कर रहे हैं। प्रदेश सरकार कटौती ना करने के लिये बारम्बार कह रही है परंतु स्थानीय बिजली विभाग के अधिकारी सरकार की छवि बिगाडकर आगामी चुनाव प्रभावित करना चाहते है।

तापमान बढ़ा, फुंक गए उपकरणः

हर साल गर्मी के मौसम में बिजली की खपत बढ़ती है, यह सबको मालूम है। बावजूद इसके, विभाग की पूर्व से कोई तैयारी नहीं दिखाई देती है , का वर्षा जब कृषी सुखानी वाले हाल है बिजली विभाग के। न ट्रांसफॉर्मरों की समय रहते मरम्मत हुई, न केबल और लाइनें बदली गई। नतीजा ङ्क जरा-सा लोड बढ़ते ही फुंके ट्रांसफॉर्मर, टूटे इंसुलेटर और चरमराई बिजली आपूर्ति।

शिकायतों का ढेर, समाधान नहींः

शहर से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक लोगों की शिकायतों की भरमार है। कई इलाकों में लगातार 8-10 घंटे तक बिजली गायब रहती है। टोल फ्री नंबरों और उपकेंद्रों पर कॉल करने के बावजूद न कोई फोन उठाता है, न कोई सुनवाई होती है। टोलफ्री नं. तो बस मजाक बन गये है कि आम आदमी के पास शिकायत करने का मौका दिया गया है परंतु जब टोलफ्री नं. उठेगा नही तो शिकायत कहां करोगे।

सदर विधायक प्रकाश द्विवेदी और राज्यमंत्री रामकेश निषाद भी जता चुके हैं नाराजगीःस्थानीय सदर विधायक और स्वयं प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री रामकेश भी विभागीय अधिकारियों की लापरवाही को लेकर कई बार सार्वजनिक मंचों पर और उनके कार्यालयो मे जाकर भी अपनी और जनता की नाराजगी जता चुके हैं। परंतु विभाग पर इसका कोई असर होता नहीं दिख रहा। बिजली विभाग ने अपने कानो मे रूई खोंस ली है अब चाहे जनता चिल्लाये या जनप्रतिनिधी उन्हे कुछ सुनना ही नही है।

सनातन धर्म और समरसता एक दूसरे का पूरक : मिथिलेशनंदिनी शरण

समरस विचार मंथनः वक्ताओं ने कहा-षड्यंत्रकारियों ने भारत पर राज करने के लिए पैदा किया अलगाव

अवधनामा संवाददाता

प्रयागराज। सनातन धर्म और समरसता एक-दूसरे का पूरक हैं। सनातन की मूल भावना सर्वे भवंतु सुखिनः, वसुधैव कुटुंबकम्, सियाराम मय सब जग जानी है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण महाकुंभ हैं। जिसमें हर जाति के लोग एक ही घाट पर एक ही धारा में स्नान बड़े ही श्रद्धा भाव के साथ करते हैं। यही नहीं देश के विभिन्न मंदिरों के भंडारे में भी ऊंच-नीच का भेद भाव देखने को नहीं मिलता है। यह बात अयोध्या की सिद्धपीठ हनुमन्निवास के आचार्य स्वामी मिथिलेशनंदिनी शरण महाराज ने समरस विचार मंथन कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मुख्य वक्ता की आसंदी से कही। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो.अरविंद कुमार शुक्ला ने की। विशिष्ट अतिथि लेखक, चिंतक एवं आलोट के विधायक चिंतामणि मालवीय, प्रख्यात विचारक मोहन नारायण, कोली समाज के राष्ट्रीय महामंत्री द्वारका प्रसाद अग्रवाल थे। प्रज्ञा प्रवाह मध्यभारत प्रांत, पुरुषार्थ सेवा संगठन एवं राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में मिथिलेशनंदिनी शरण महाराज ने हिंदू समाज की समरस परंपरा विषय पर कहा कि समाज सुव्यवस्थित तरीके से चले इसलिए मनु महाराज ने वर्ण व्यवस्था काम के आधार पर की थी। इसमें किसी का महत्व कम नहीं था। शरीर के अंगों की तरह सभी लोग एक-दूसरे के पूरक हैं। कोई किसी से कम नहीं है। महर्षि जावाल का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि वह दासी पुत्र थे। उनकी माता को नहीं पता था कि उनके पिता कौन है। उनकी योग्यता को देखते हुए उन्हें ऋषि ने दीक्षा दी थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो.शुक्ला ने कहा कि जिस तरह गुणवक्ता के आधार पर भूमि में अंतर होता है, उसी तरह व्यक्ति की क्षमता के अनुसार उसे कार्य करने का मौका मिलता है। लेकिन सभी जीवों में ब्रह्म तत्व एक ही है। कार्यक्रम के प्रारंभ में कार्यक्रम संयोजक सुधीर शर्मा ने कार्यक्रम की भूमिका के बारे में प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत में सभी को जोड़े रखने का आधार धर्म रहा है। अतिथियों का स्वागत प्रज्ञा प्रवाह के प्रांत संयोजक धीरेन्द्र चतुर्वेदी, मनीष राजौरिया, रीना सोलंकी, डॉ.कुसुम भदौरिया, आशीष पांडेय, जवाहर प्रजापति, वर्षा सुमन ने किया। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक शर्मा ने किया।

वित्त विधेयक 2025 से पेंशनर्स एवं शिक्षक सरकार से नाराज संघर्ष का एलान

अवधनामा संवाददाता

जौनपुर। केन्द्र सरकार से पारित वित्त बिधेयक 2025के बिरोध मे सेवानिवृत्त कर्मचारी एवं पेंशनर्स एसोसिएशन उत्तर प्रदेश के घोषित कार्यक्रम केअनुसार जनपद अध्यक्ष सी बी सिंह एवं प्राथमिक शिक्षक संघ के जनपद अध्यक्ष अरविन्द कुमार शुक्ला के संयुक्त अध्यक्षता कलेक्ट्रेट परिसर मे बिरोध सभा कर,प्रदर्शन धरना दिया गया। सभा को संबोधित करते हुए अध्यक्ष सी बी सिंह ने वित्त बिधेयक से पेंशनर्स को बेतन आयोग एवं महगाई राहत से डी लिकं (अलग) करने की सरकार की साजिश से आगाह करते हुए संघर्ष के लिए सभी पेंशनर्स शिक्षक को एकजुट होकर बिरोध करने का आह्वान किया।प्राथमिक शिक्षक संघ के जनपद अध्यक्ष अरविन्द कुमार शुक्ला ने सरकार के पेंशनर्स ,शिक्षक एवं कर्मचारी बिरोधी नितियो का बिरोध करते हुऐ, पेंशनर्स आन्दोलन को हर स्तर पर सहयोग करने का आश्वासन दिया गया।इसके साथ ही सरकार से तत्काल बित्त बिधेयक 2025 को वापस करने की मांग किया।माध्यमिक शिक्षक संघ के जनपद अध्यक्ष सन्तोष कुमार सिंह ने सरकार की पेंशनर्स ,कर्मचारी एवं शिक्षक के बिरोध मे किए जा रहे निर्णय की आलोचना करते हुए पेंशनर्स आन्दोलन को आगे बढ़ाने का संकल्प ब्यक्त किया। सेवानिवृत्त कर्मचारी एवं पेंशनर्स एसोसिएशन के जिला मन्त्री कृपाशंकर उपाध्याय ने मागो से सम्बन्धित ज्ञापन को पढ कर सभा मे पास कराया गया। सभा मे पारित ज्ञापन जिलाधिकारी के प्रतिनिधि नगर मजिस्ट्रेट इन्द्र नन्दन सिंह धरना-प्रदर्शन स्थल पर प्राप्त कर मा0 प्रधानमन्त्री जी भारत सरकार एवं माननीय मुख्य मन्त्री जी उत्तर प्रदेश सरकार को तत्काल भेजने का आश्वासन दिया गया। ज्ञापन को अध्यक्ष अरविन्द कुमार शुक्ला, अध्यक्ष सन्तोष कुमार सिंह अध्यक्ष सी बी सिंह ने संयुक्त रूप से प्रदान किया। सभा मे बक्ताओ ने वित्त बिधेयक2025 वापस लेने,केन्द्रीय आठवे बेतन आयोग के गठन की कार्रवाई पूर्ण कर पेंशनरो की पेंशन के पुनरीक्षण की तिथि एवं सिध्दांत मे समानता रक्खी जाए, अठारह माह के रोके गए महगाई राहत/भत्ता को तत्काल जारी करने के साथ महगाई राहत को महगाई भत्ते से डी लिंक न करने,पेंशन राशिकरण कटौती 15 वर्ष से घटाकर 10 वर्ष करने तथा एन पी एस और यू पी एस को समाप्त कर ओ पी एस लागू करने की मांग सरकार से करते हुए संघर्ष की घोषणा किए। सभा को मुख्य रूप से सर्व श्री राकेशकुमार श्रीवास्तव ,सत्यदेव सिह,ओकांर नाथ मिश्र, अशोक कुमार मौर्य, आशाराम, प्राथमिक शिक्षक संघ मन्त्री रविचन्द्र यादव, माध्यमिक शिक्षक संघ मन्त्री रमाशंकर पाठक,मन्जूरानी राय,कान्ति सिंह, अन्जू यादव ,भारती सिंह, वेचन मिश्र, बिनय कुमार गुप्ता ,शिवेंद्र सिंह रानू, नरेन्द्र त्रिपाठी, राम केश यादव, रामअवधलाल, कंचन सिंह, अवधेश सिंह, बिक्रम प्रकाश सिंह ,राजेन्द्र कुमार यादव, नन्दलाल, रमेश, सुनील कुमार यादव, राम दुलार, लक्ष्मीकांत,के के तिवारी, दशरथ राम, शारदा प्रसाद श्रीवास्तव, बिक्रमाजीत यादव, रमाशंकर सेठ चन्द्र शेखर सिंह आदि ने सम्बोधित किया। इस अवसर पर बडी संख्या मे पेंशनर्स शिक्षक उपस्थित रहे। सभा का संचालन मन्त्री कृपाशंकर उपाध्याय ने किया।

डीएम ने प्रा0वि0 सादनपुर, बक्शा का किया निरीक्षण

अवधनामा संवाददाता

जौनपुर। जिलाधिकारी डा0 दिनेश चन्द्र के द्वारा प्रा0वि0 सादनपुर, बक्शा का औचक निरीक्षण किया गया। विद्यालय में कुल नामांकन 55 के सापेक्ष 41 छात्र-छात्रायें उपस्थित पाये गये। जिलाधिकारी ने कक्षा 04 एवं कक्षा 05 में जाकर बच्चों से उनके कक्षा में चल रहे पाठ्यक्रम की जानकारी ली तथा ब्लैक -बोर्ड पर पूर्व में लिखे गये सामान्य ज्ञान के प्रश्नों जैसे -भारत के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, गृह मंत्री, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का नाम, आपके प्रदेश का नाम आपके जनपद का नाम एवं हमारे देश का नाम को पढ़वायें। जिसमें कक्षा- 04 की छात्रा रिया निषाद, सारिका शर्मा एवं कक्षा-05 की हर्षिता ने प्रश्नों का सही उत्तर दिया। जिससे प्रसन्न होकर जिलाधिकारी ने विद्यालय के सभी बच्चों को अपने हाथों से मिठाई खिलाया, साथ ही उन्होंने बच्चों के लिए ड्राई फरूट देते हुए इसका हलवा बनाकर सभी बच्चों को खिलाने एवं उसकी फोटोग्राफ भेजने हेतु प्रधानाध्यापक एवं उपस्थित रसोइयों को निर्देशित किया। इस अवसर पर ग्राम प्रधान मनीलाल यादव, प्रभारी प्रधानाध्यापक राजीव रतन अस्थाना सहायक अध्यापिका प्रियंका राजवंशी, उपासना यादव ,नन्दलाल व अन्य समस्त उपस्थित शिक्षक-शिक्षिकायें उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

डबल इंजन की सरकार डबल झटका दे रही हैं जनता को : उज्जवल

प्रयागराज। प्रयागराज सांसद उज्जवल रमण सिंह ने बिजली बिल बढ़ोत्तरी पर विरोध दर्ज करते हुए कहा कि डबल इंजन की सरकार में डबल झटके दिऐ जा रहे हैं। जनता को इस मंहगाई के दौर में केंद्र के द्वारा डीजल पेट्रोल की मूल्य वृद्धि विगत दिनों पूर्व किया गया। उसके सापेक्ष में 1.24 प्रतिशत फ्यूल सरचार्ज विद्युत बिल में लगाकर उत्तर प्रदेश सरकार जनता को झटके पर झटके दें रहे हैं। सांसद प्रतिनिधि विनय कुशवाहा ने बताया कि सांसद उज्जवल रमण सिंह आजकल मुम्बई में राज्यभाषा संसदीय समिति के संयोजक के तौर पर विभिन्न कम्पनी संस्थानों विभागों की मीटिंग ले रहे हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा फ्यूल सरचार्ज लगाने पर आपत्ति जताई और कहा कि बिजली बिल बढ़ोत्तरी जन विरोधी निर्णय हैं। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार से फायदे कम और जनता को नुकसान ज्यादा हो रहा है। केंद्र प्रदेश सरकार की गलत नीतियों के कारण मंहगाई दिन व दिन बढ़ती जा रही हैं। पर सरकार इसकों रोकने के उपाय ढूंढने की जगह रोज टैक्स पर टैक्स थोपे जा रही हैं।

प्रदेश में बिजली महंगी किये जाने की कांग्रेसियों ने निंदा की

प्रयागराज। प्रदेश में विद्युत उपभोक्ताओं की चालू माह से बिजली महंगी किये जाने की कांग्रेसजनों ने कड़ी निंदा की है। शहर कांग्रेस कमेटी की आपात बैठक अध्यक्ष फुज़ैल हाशमी की अध्यक्षता में पार्टी कार्यालय जवाहर स्क्वायर पर अपराह्न हुई। बैठक में बिजली बिलों पर 1.24 फीसदी ईंधन एवं ऊर्जा खरीद समायोजन अधिभार (एफपीपीएएस) लगाये जाने का राज्य विद्युत नियामक आयोग के फैसले पर कड़ा ऐतराज जताया है। कहा कि दुनिया भर में उत्तर प्रदेश में पहले से ही सबसे महंगी बिजली है ऐसे में उक्त सेस सरचार्ज अवैध है। पार्टी ने मुख्यमंत्री, ऊर्जामंत्री और पावर कारपोरेशन के राजस्व आवंटन ईकाई को पत्र भेज कर सेस तत्काल वापस लिये जाने की मांग की है। यह भी कहा कि सरकार को उपभोक्ताओं पर बढ़ोत्तरी न कर अपने खर्चों में कटौती करनी चाहिए। इस दौरान किशोर वार्ष्णेय, हरिकेश त्रिपाठी, मुकुंद तिवारी, तस्लीमउद्दीन आदि मौजूद थे।

वंचित को वरियता दे रही डबल इंजन की सरकार

प्रयागराज। भाजपा पिछड़ा मोर्चा एवं किसान मोर्चा के द्वारा मुट्ठीगंज एवं कीडगंज मंडल के सेवा बस्तियों में बस्ती जनसंपर्क अभियान चलाया गया। इस अवसर पर पिछड़ा वर्ग मोर्चा के महानगर अध्यक्ष आनंद जायसवाल ने कार्यकर्ताओं के साथ बस्ती में जनसंपर्क किया और सरकार की योजनाओं का पत्रक बांटते लोगों डबल इंजन की सरकार की योजनाओं से अवगत कराया। उन्होंने बाबा भीमराव अंबेडकर जी के लिए सरकार के द्वारा किए गए कार्य की जानकारी देते हुए कहा कि डबल इंजन की सरकार वंचितों को वरीयता दे रही है। संपर्क अभियान में घनश्याम मौर्य, राजेश केसरवानी, गौरी शंकर वर्मा, विवेक मिश्रा, राजू पटेल, शत्रुघ्न जायसवाल, आनंद मिश्रा, नीरज केसरवानी, अजय जायसवाल, पद्माकर, मधुर माथुर, राजेश शर्मा, लाल बाबू, ओम प्रकाश, किशन जयसवाल, सुशील निषाद, अजय अग्रहरि, दिव्यांशु, राजा निषाद आदि रहे।

पत्रकारों के हितों का पूरा ध्यान रखा जाएगाः पवन सिह

एनयूजे प्रयागराज इकाई विधान ने परिषद वितीय एवं प्रशासकीय विलंब समिति के सभापति पवन सिंह से की मुलाकात

अवधनामा संवाददाता

प्रयागराज। नेशनल यूनियन आँफ जर्नलिस्ट प्रयागराज जिला इकाई के अध्यक्ष कुन्दन श्रीवास्तव के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधि मंडल

उत्तर प्रदेश विधान परिषद की वित्तीय एवं प्रशासकीय विलंब समिति के सभापति एमएलसी पवन सिंह चौहान से सर्किट हाउस मे मुलाकात की। एनयूजे पदाधिकारियो ने पवन सिंह जी को बुके भेट कर प्रयागराज आगमन पर स्वागत किया। सर्किट हाउस में श्री सिंह तथा एनयूजे प्रयागराज के पदाधिकारियो की बीच एक बैठक हुई। इस बैठक मे पत्रकारो के विभिन्न समस्यो से अवगत कराया गया। पत्रकारो की सुरक्षा, हमला, फर्जी एफआईआर तथा महाकुंभ के दौरान पत्रकारो के विभिन्न परेशानियो को लेकर बैठक मे चर्चा हुई तमाम पत्रकार साथियों से समस्या सुनने के बाद श्री सिंह ने यह आश्वासन दिया कि सम्बंधित जिम्मेदार अधिकारियो से वार्ता कर पत्रकारो के हर समस्या का समाधान कराया जाएगा। श्री सिंह ने महाकुंभ के दौरान एनयूजे प्रयागराज टीम तथा सभी पत्रकारो को सकारात्मक सहयोग के लिए बधाई और धन्यवाद दिया। बैठक मे कुन्दन श्रीवास्तव, अखिलेश शुक्ला, राम बाबू, चित्रांशी यादव, नसीम खान, देवाशीष श्रीवास्तव, नफीस अहमद, अमित श्रीवास्तव, रवि शंकर पान्डेय आदि उपस्थित थे।

श्री श्री 108 श्री शुभम दास जी महाराज का हुआ राज्याभिषेक

अवधनामा संवाददाता

आजमगढ़। गहजी स्थित ब्रह्मलीन सिद्धसंत मौनी बाबा के आश्रम पर श्री विष्णु महायज्ञ में आश्रम महंत के लिए श्री श्री 108 श्री शुभम दास जी महाराज का राज्याभिषेक हुआ। यह राज्याभिषेक देवरिया के श्री श्री 108 श्री कौशलेंद्र दास पौहारी जी महाराज, मणिराम छावनी के श्री श्री 108 श्री कमल नयन जी महाराज, अयोध्या के श्री श्री 1008 श्री बृजमोहन दास जी महाराज, महंत श्री हरिप्रसाद दास जी महाराज आदि के सानिध्य में किया गया। जिसमे एस.डी.एम. बूढ़नपुर सुरेन्द्र नाथ त्रिपाठी की भी मौजूदगी रही। राज्याभिषेक पूर्ण होते ही हजारों श्रद्धालुओं ने जय जयकार किया। इस अवसर पर श्री श्री 1008 श्री रामकृष्ण दास जी महाराज ने कहा कि यह चमत्कारी सिद्धियों के स्वामी दुर्वासा महामण्डलेश्वर श्री श्री 1008 श्री रामलाल दास मौनी बाबा का आश्रम है। जिनके शिष्य पूरे देश में उनके नाम को आगे बढ़ा रहे है। श्री मौनी बाबा के शिष्यों में शुभम दास महाराज ने आशा की एक नई किरण जागृत की है। मुमुक्षु आश्रम अम्बेडकरनगर के महंत श्री श्री 108 श्री सत्यव्रत ब्रह्मचारी जी महाराज ने मौनी बाबा की महिमा का बखान करते हुए कहा कि संतों के आशीर्वाद से जीवन धन्य हो जाता है। उन्होंने कहा कि आत्मकल्याण करना जीवन का उद्देश्य है, इसलिए जितना समय मिले भगवत भक्ति में लगना चाहिए। दैवज्ञ दुर्वासा मंडल मुन्ना बाबा ने शुभम दास महाराज को बधाई देते हुए कहा कि वे सिद्धसंत मौनी बाबा के तपोमार्ग पर चलकर लोगों का कल्याण करें। संत सेवा संगठन के अध्यक्ष पं. सुभाष चन्द्र तिवारी कुंदन और उदयराज यादव ने संचालन किया। इस मौके पर बहिरादेव आश्रम के महंत प्रेमदास जी महाराज, काशी के आचार्य आकाश पांडेय, ब्लाक प्रमुख संतोष यादव, हाकिम बाबा, डॉ. दीवाकर सिंह, राममिलन सिंह, राजनाथ पांडेय, शिवचंद दास, लक्ष्मण दुबे, संजयदास महाराज, दुर्वेश्वरानंद महाराज, ठाकुरदास, हरिकेश चौबे, अंकितदास महाराज, वीरेंद्र दास महाराज, जनार्दन दास महाराज, राकेश सिंह प्रधान, महेंद्र पांडेय,उदय प्रकाश चौबे, कुलबुल सिंह, वेद प्रकाश तिवारी, सुभाष दुबे सहित भारी संख्या में लोग उपस्थित थे।

कार्यालय नगर पालिका परिषद एत्मादपुर (आगरा)

पत्रांक- 6086/न0पा0प0ए0/2025, दिनांक :- 23-04-2025

अल्पकालीन निविदा सूचना

उत्तर प्रदेश शासन के स्वीकृति पत्र संख्या- 115/2025/आर0एफ0-581/नौ-9-2025/003-ई-1913541 के क्रम में नगर पालिका परिषद एत्मादपुर (आगरा) पं0 दीन दयाल उपाध्याय नगर विकास योजना ''अनुदान संख्या - 37'' की प्राप्त धनराशि से शेष कार्य ओपन ई टेण्डरिंग के माध्यम से निकाय सीमान्तर्गत सी0सी0 सड़क व नाली निर्माण कार्य कराना चाहती है जो ईटेंण्डरिंग की बेबसाइट http://etender.up.nic.in के माध्यम से टेण्डर आमंत्रित करती हैं। धरोहर राशि नगर पालिका परिषद एत्मादपुर आगरा के कैनरा बैंक शाखा एत्मादपुर के खाता सं0-0371101013537, IFSC कोड CNRB0000371 में नगद जमा करनी होंगी व जमा रसीद कार्यालय में जमा करनी होगी। किसी भी निविदा को स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करने का अधिकार सक्षम अधिकारी को होगा। समय के उपरान्त प्राप्त निविदाओं पर व शसर्त निविदाओं पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

no. Sr.	नगर पालिका परिषद nppetmadpur 01@gmail.com	ठेकेदार/VEnder Stage	प्रारम्भ दिनांक एवं समय	अन्तिम दिनांक एवं समय
1	Tender Release		23/04/2025 1:30 PM	
2		Tender Download	23/04/2025 1:30 PM	
3		Bid submission	---	23/04/2025 1:30 PM
4	Close for Bid		---	29/04/2025 05:00 PM
5	Bid Opening		---	30/04/2025 10:00 AM

नोट– ठेकेदार ई-टेण्डरिंग प्रणाली के अन्तर्गत निधारित प्रपत्रों के मूल अभिलेख नगर पालिका में प्रस्तुत करने होगें तथा निविदा शुल्क 100 रूपये प्रति लाख नगर पालिका परिषद एत्मादपुर के खाते में जमा करने होंगे। किसी भी परिवर्तन संशोधन व अतिरिक्त सूचनाओं के लिए उक्त बेवसाइट पर देख सकते है।

अधिशासी अधिकारी
नगर पलिका परिषद
एत्मादपुर (आगरा)

अध्यक्ष
नगर पलिका परिषद
एत्मादपुर (आगरा)

ब्राह्मण जाति के लिए अभद्र टिप्पणी से जन आक्रोश

अवधनामा संवाददाता

आजमगढ़। पुलिस अधीक्षक आजमगढ़ कार्यालय में पुलिस अधीक्षक नगर को एक ज्ञापन सौंपते हुए आरोप लगाया कि विगत दिनों फिल्म निर्माता अनुराग कश्यप के द्वारा ब्राह्मण जाति को संबोधित कर अभद्र भाषा में ब्राह्मणों पर मैं मुतुंगा जैसी टिप्पणी की गई जिससे आम जनमानस काफी आहत व आक्रोशित है। इस प्रकरण का संज्ञान लेते हुए जनपद के विभिन्न राजनीतिक सामाजिक व्यापारिक संगठनों अधिवक्ताओं के द्वारा एक ज्ञापन पुलिस अधीक्षक कार्यालय में पुलिस अधीक्षक नगर शैलेंद्र लाल को सौंपा गया व सुसंगत धाराओं में भारतीय दंड संहिता के अनुसार केस पंजीकृत कर मुकदमा चलाने की मांग किया गया। चौरसिया समाज के अध्यक्ष अरुण कुमार चौरसिया ने संवाददाता से बातचीत में कहा कि हम भारत में वसुदेव कुटुंबकम की विचारधारा को आगे बढ़ते हुए एक दूसरे के साथ मिलजुल कर रहते हैं ऐसे में यदि कोई व्यक्ति दुर्भावना से प्रेरित होकर और सस्ती लोकप्रियता के लिए जाति विशेष पर टिप्पणी करता है तो इससे हम सभी मर्माहत हैं। कानून पर पूरा भरोसा है अन्यथा हम न्याय के लिए सड़कों पर भी उतरेंगे आजकल लोकप्रियता का यह पैमाना है कि किसी भी जाति विशेष पर टिप्पणी करके उसको आहत करो और लोकप्रिय हो जाओ समाजसेवी गोविंद दुबे ने कहा छिछोरे निर्माता निर्देशक अनुराग कश्यप के द्वारा ब्राह्मण समाज पर टिप्पणी अति निंदनीय है जिसके लिए उसके विरुद्ध कठोर कार्रवाई होनी चाहिए कि इस घटना से सर्व समाज में आक्रोश पैदा हुआ है हम सभी इस घटना से दुःखी हैं कोई इतनी ओछी हरकत कैसे कर सकता है आज इस घटना के विरोध स्वरूप हम सर्व समाज के लोग उपस्थित हुए हैं तो वहीं समाजसेवी गोविंद दुबे ने कहां है कि हम लोग कानून की शरण में हैं और सुसंगत धाराओं में केस दर्ज करने की मांग करते हैं जिससे कि समाजिक कि उसके खिलाफ एफ़्रआईवआरव दर्ज करके कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाए अन्यथा आमजन आक्रोशित होकर स्वयं उसको सजा देने का कार्य करेगा क्योंकि अगर हमारा आत्मसम्मान नहीं रहेगा तो फिर जीने का क्या फायदा प्रशासन इस बात को गंभीरता से ले और आवश्यक कार्रवाई करें अन्यथा हम सभी समाज स्वयं अनुराग कश्यप को हिन्दुस्तान में जहां कहीं भी हो उसे ढूंढकर उसके मुंह पे कालिख पोत उसको जूतों की माला पहनाएंगे वहीं उपस्थित सर्वसमाज ने एकस्वर में प्रशासन से मांग की है कि दोषी के विरुद्ध कठोर कार्रवाई हो मुकदमा पंजीकृत हो जिससे कि समाजिक् न्याय हो सके। प्रमुख रूप से उपस्थित रही सुजीत कुमार मिश्रा निषेचन तिवारी एडवोकेट अनिल तिवारी ज्योति प्रकाश श्रीवास्तव एडवोकेट उत्कर्ष सिंह नितिन उपाध्याय हर्षित तिवारी मनोज मिश्रा साहू आलोक पाठक अभिषेक उपाध्याय निक्की आदि।

टाटा मोटर्स और टाटा पावर रिन्यूवेबल एनर्जी ने 131 मेगावाट की पवन-सौर मिश्रित परियोजना विकसित करने के लिये भागीदारी की

ऊर्जा

यह महाराष्ट्र तथा गुजरात में टाटा मोटर्स की छह विनिर्माण सुविधाओं को हरित एवं किफायती ऊर्जा की भरोसेमंद आपूर्ति करेगा।

नई दिल्ली। भारत की जा प्रमुख ऑटोमोबाइल कंपनी टाटा मोटर्स और टाटा पावर की स्वच्छ ऊर्जा शाखा टाटा पावर रिन्यूएबल एनर्जी लिमिटेड (टीपीआरईएल) ने मिलकर एक महत?वपूर्ण साझेदारी की है। दोनों कंपनियों ने एक खास समझौते (पावर पर्चेस एग्रीमेंट) पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसके तहत वे साथ मिलकर 131 मेगावाट की एक पवन और सौर ऊर्जा पर आधारित परियोजना बनाएँगी। यह योजना साफ और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए एक अहम कदम मानी जा रही है। यह परियोजना सालाना आधार पर लगभग 300 मिलियन यूनिट शुद्ध बिजली पैदा करेगी और हर साल 2 लाख टन से ज्यादा CO_2 का उत्सर्जन होने से रोकेगी। यह एकीकृत पवन-सौर मिश्रित समाधान सह-निवेश और लंबे समय के पावर पर्चेस एग्रीमेंट (पीपीए) के माध्यम से संभव हुआ है। यह महाराष्ट्र तथा गुजरात में टाटा मोटर्स की छह विनिर्माण सुविधाओं को हरित एवं किफायती ऊर्जा की भरोसेमंद आपूर्ति करेगा। इससे कंपनी को वाणिज्यिक और यात्री वाहनों के उत्पादन में सहयोग मिलेगा। यह पहल टाटा मोटर्स को उसके 2030 के लक्ष्य से पहले ही क्लीन एनर्जी अपनाने की दिशा में काफी आगे बढ़ा रही है। इससे कंपनी को अपने कामकाज को जलवायु के अनुकूल बनाने में मदद मिल रही है। यह टाटा मोटर्स की पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और टिकाऊ विकास के रोडमैप में एक अहम कदम है। साथ ही, यह पहल कंपनी के उस बड़े लक्ष्य से भी जुड़ी है, जिसके तहत वह भविष्य में शून्य उत्सर्जन (नेट-ज़ीरो) हासिल करना चाहती है और ऐसे उत्पादन की दिशा में आगे बढ़ रही है जो पर्यावरण के लिए नुकसानदेह न हो। पीपीए पर हस्ताक्षर करते हुए टाटा मोटर्स के कमर्शियल व्हीकल्स बिजनेस के ऑपरेशंस वाइस प्रेसिडेंट श्री विशाल बादशाह ने कहा, ''भारत के ट्रांसपोर्ट और लॉजिस्टिक्स सेक्टर में अहम भूमिका निभाने वाली कंपनी के रूप में हमें टिकाऊ निर्माण (सस्टेनेबल मैन्युफैक्चरिंग) के क्षेत्र में मिसाल पेश करने पर गर्व है। यह नई परियोजना दिखाती है कि हम अपने कामकाज में साफ ऊर्जा को अपनाने और कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। साथ ही, यह हमारे उस बड़े मकसद को भी दर्शाती है जिसमें हम ऐसे ट्रांसपोर्ट समाधान देना चाहते हैं जो शुरुआत से लेकर इस्तेमाल तक, हर स्तर पर पर्यावरण के अनुकूल हों।''

टाटा मोटर्स के पैसेंजर व्हीकल विभाग में ऑपरेशंस के वाइस प्रेसिडेंट श्री प्रमोद चौधरी ने कहा, ''हम अपने ऑटोमोबाइल कारोबार को भविष्य के हिसाब से तैयार करने के लिए साफ और हरित ऊर्जा की ओर बढ़ने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। इस समझौते के ज़रिए महाराष्ट्र और गुजरात में मौजूद हमारे प्लांट्स हरित निर्माण की दिशा में एक बड़ा कदम आगे बढ़ाएंगे और देश की हरित विकास यात्रा को समर्थन देंगे। यह हमारे पैसेंजर व्हीकल कारोबार को और अधिक पर्यावरण के अनुकूल, स्मार्ट और टिकाऊ बनाने की दिशा में एक अहम और निर्णायक पहल है।''

रिवाह बाए तनिष्क की शानदार वेडिंग ज्वेलरी, अक्षय तृतीया को सुनहरा और यादगार बनाएगी

नई दिल्ली। अक्षय तृतीया के पवित्र पर्व के लिए तनिष्क का एक्सक्लूसिव वेडिंग सब-ब्रांड रिवाह अपने शानदार ब्राइडल ज्वेलरी कलेक्शन्स के साथ आने वाली समर इंडियन वेडिंग्स के लिए तैयार है। भारत में शादी से जुडी विभिन्न परंपराओं की गहरी समझ के साथ, रिवाह बाए तनिष्क अलग-अलग समुदायों की दुल्हनों के लिए बनाई गयी ज्वेलरी की विशाल श्रेणी प्रस्तुत कर रहा है। हल्दी से लेकर मेहंदी तक, संगीत से लेकर शादी तक, हर फंक्शन के अनुरूप आभूषण रिवाह में हैं। यहां हर आभूषण को न केवल परंपराओं को निभाने बल्कि दुल्हन की अपनी सोच, पसंद और शान को प्रतिबिंबित करने के लिए बनाया जाता है। रिवाह में विरासत और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का मिलाप है, जो दुल्हनों को उनके अपने ब्राइडल नरेटिव बनाने में मदद करता है। रिवाह बाए तनिष्क शादी के अनुभव के हर पहलू को और भी खूबसूरत बनाने के लिए प्रतिबद्ध है, ब्रांड सुनिश्चित करता है कि हर पल में कालातीत शान गूंजती रहें। भारत की विभिन्न संस्कृतियों को समझते हुए, रिवाह हर क्षेत्र के अनुरूप ब्राइडल ज्वेलरी कलेक्शन प्रस्तुत करता है, जो विभिन्न समुदायों की दुल्हनों की पसंद, ज़रूरतों को पूरा करते हैं। इसीलिए रिवाह बाए तनिष्क हर वेडिंग फंक्शन के लिए सबसे सही है। रिवाह के कलेक्शन्स स्थानीय परंपराओं और पसंद का आदर करते हैं, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड की नथ से लेकर, महाराष्ट्र की ठुशी और तोड़े कंगनों तक हर आभूषण यहां बनाया जाता है। बहुत ही सोच-समझकर बनाए गए इन आभूषणों में हर दुल्हन को ऐसे आभूषण मिलते हैं जो उसकी व्यक्तिगत स्टाइल और सांस्कृतिक विरासत को प्रतिबिंबित करते हैं, और परंपरा और आधुनिक शान का मिलाप करने वाले ब्रांड के रूप में रिवाह के स्थान को रेखांकित करते हैं। जैसे अक्षय तृतीया नयी शुरूआत का प्रतीक है, यह कलेक्शन परंपरा, असलियत, नयापन और दीर्घकालीन मूल्य का मिलाप करने वाले आभूषणों की बढ़ती मांग को पूरा करता है। शादी बहुत ही वैयक्तिक समारोह होता है और मैरिजेस क्राफ्टेड बाए यू व्यक्तिगत अभिव्यक्ति की भावना को दर्शाता है, दुल्हनों को उनकी परंपरा को सम्मानित करते हुए आधुनिक शान पाने का अवसर देता है। वेडिंग कलेक्शन का हर डिज़ाइन परंपरा और आधुनिकता की कहानी बयान करता है, और रिवाह बाए तनिष्क को हर दुल्हन के लिए विरासत के रूप संजोकर रखा जाने वाला निवेश बनाता है। तनिष्क की चीफ मार्केटिंग ऑफिसर पेल्कि त्शेरिंग ने कहा, ÷समर वेडिंग सीज़न के लिए रिवाह बाए तनिष्क ने विरासत और आधुनिकता को एक साथ पिरोने वाली ब्राइडल ज्वेलरी की बढ़ती मांग को पूरा करना जारी रखा है। अक्षय तृतीया का पर्व इस सीज़न की शुरूआत को दर्शाता है, हमारी रिवाह गोल्डन एडवांटेज स्किम और बेस्ट गोल्ड रेट से इस साल 2.7 लाख वेडिंग खरीदारों को मदद मिली है। हर क्षेत्र के अनुरूप आभूषण और प्राकृतिक हीरों के प्रति बढ़ते आकर्षण को देखते हुए रिवाह आधुनिक दुल्हनों की विभिन्न पसंद को पूरा करता है।

इस वर्ल्ड बुक डे पर ज़ी टीवी के सितारों ने सभी को किताबों की दुनिया में खो जाने के लिए किया प्रेरित

नई दिल्ली। हर साल 23 अप्रैल को दुनियाभर में वर्ल्ड बुक डे मनाया जाता है, ताकि लोग किताबें पढ़ने के सुकून का एहसास कर सकें। नॉवेल्स न सिर्फ हमें नई कहानियों की दुनिया में ले जाती हैं, बल्कि हमारे दिल और दिमाग दोनों को खुशी देती हैं। इससे तनाव कम होता है, ध्यान बढ़ता है, याददाश्त मज़बूत होती है और दूसरे के जज़्बातों को समझने की ताकत आती हैं किताबें पढ़कर हमारा बातचीत करने का तरीका भी सुधरता हैं किताबें हमें प्रेरणा देती हैं, सिखाती हैं और कभी-कभी हमारी ज़िंदगी भी बदल देती हैं। इस खास दिन पर ज़ी टीवी के कुछ चहेते कलाकार - 'भाग्य लक्ष्मी' की ऐश्वर्या खरे, 'जागृति - एक नई सुबह' के आर्य बब्बर, 'जमाई नं. 1' की पापिया सेनगुप्ता, 'कैसे मुझे तुम मिल गए' की आकांक्षा चमोला और 'वसुधा' के अभिषेक शर्मा ने पढ़ने के अपने पसंदीदा लम्हों और अपनी फेवरेट किताबों के बारे बताया। उन्होंने यह भी बताया कि पढ़ने की आदत ने उनकी ज़िंदगी में क्या-क्या अच्छे बदलाव लाए हैं। ज़ी टीवी के शो 'जागृति - एक नई सुबह' में कालीकांत ठाकुर का रोल निभा रहे आर्य बब्बर कहते हैं, ''जब भी मुझे अपने लिए थोड़ा वक्त मिलता है, मेरा मन खुद-ब-खुद किसी अच्छी किताब की ओर खिंच जाता है। मेरा शूटिंग का शेड्यूल चाहे जितना भी व्यस्त हो, पढ़ाई कभी बोझ नहीं लगती - बल्कि ये एक ऐसी चीज़ है जो मेरा मूड तुरंत अच्छा कर देती हैं। मेरा किताबों का पहला कलेक्शन बचपन में शुरू हुआ था जो वक्त के साथ बढ़ता चला गया। सच कहूं तो अब मुझे याद भी नहीं कितनी किताबें पढ़ चुका हूं। किसी कहानी में पूरी तरह खो जाने का अपना ही जादू होता है - हर चैप्टर एक नया सफर होता है और किरदार धीरे-धीरे अपने-से लगने लगते हैं। मुझे अलग-अलग तरह की किताबें पढ़ना पसंद है।

गो डैडी के शो इन बायो टूल के साथ अपने सोशल मीडिया प्रोफाइल को एक सेल्स कैटलॉग में बदलें

नई दिल्ली। किसी छोटे व्यवसाय के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह अपने उत्पाद और सेवाएँ कैसे प्रस्तुत करता है और बेचता है, क्योंकि यही सफलता और असफलता का अंतर पैदा करता है। छोटे व्यवसायों को सोशल मीडिया पर अपनी उपस्थिति बढ़ाने और बिक्री को बढ़ावा देने के लिए गो डैडी ने अपना नया टूलशो इन बायो लॉन्च किया है। यह सस्ता टूल छोटे व्यवसायों के मालिकों को लचीलापन प्रदान करता है, जो अभी वेबसाइट बनाने के लिए तैयार नहीं हैं। यह उन्हें सोशल मीडिया प्रोफाइल पर अपने उत्पादों या सेवाओं को प्रदर्शित करने और व्हाट्सएप जैसे चैनलों के जरिए ग्राहकों से जुड़कर बिक्री पूरी करने की सुविधा देता है।आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग करते हुए, यह टूल उत्पाद की जानकारी जैसे नाम, विवरण, और मूल्य को तुरंत तैयार करता है, जिससे एक व्यक्तिगत एक-पृष्ठ बिक्री कैटलॉग कुछ ही मिनटों में तैयार किया जा सकता है। इस टूल का इस्तेमाल करने के लिए किसी तकनीकी कौशल की आवश्यकता नहीं है। सोशल मीडिया पर कारोबार करने वाले एंटरप्रेन्योर एआई का उपयोग करने में अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं गो डैडी के 2025 ग्लोबल एंटरप्रेन्योरशिप सर्वे में पाया गया कि भारत में हर पांच में से एक (21%) छोटे व्यवसाय के मालिक अपना व्यवसाय मुख्य रूप से सोशल मीडिया पर चलाते हैं। छोटे व्यवसायों का सोशल मीडिया पर आधारित उद्यमियों की ओर यह बदलाव ऑनलाइन बिक्री की महत्ता को और बढ़ा देता है। गो डैडी के शोध के अनुसार, सोशल-फर्स्ट एंटरप्रेन्योर अधिक युवा होते हैं, अपने व्यवसाय की सफलता के लिए अधिक आशावादी होते हैं और एआई का उपयोग करने में अधिक आत्मविश्वासी होते हैं। यह ट्रेंड यह साबित करता है कि सोशल-फर्स्ट व्यवसायों का विकास क्षमता बहुत अधिक है और तकनीक - विशेषकर एआई - व्यवसायों को नवाचार, विस्तार और समृद्धि की ओर ले जाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कम खर्च में और बिना वेबसाइट बनाए सोशल मीडिया पर व्यवसाय शुरू करें। शो इन बायो में एंटरप्रेन्योर को कम खर्च में तेज़ी से व्यवसाय शुरू करने का अवसर प्रदान करता है, यहां तक कि व्यवसाय विचार को लॉन्च करने से पहले उसका परीक्षण भी किया जा सकता है। यह छोटे व्यवसाय मालिकों के लिए आदर्श है, जिन्होंने अभी तक वेबसाइट नहीं बनाई है, और यह टूल डोमेन इंटीग्रेशन को भी सपोर्ट करता है, जिससे जो पहले से ऑनलाइन मौजूद हैं, वे अपने डोमेन का उपयोग करके एक ब्रांडेड अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

मुख्य विशेषताएँ और लाभ निम्नलिखित हैं-

अपने लिंक को एकत्रित करें - अपनी सभी महत्वपूर्ण सामग्री को एक साझा लिंक में जोड़ें

एंगेजमेंट बढ़ाएं - अपने बायो लिंक को सोशल मीडिया चैनलों पर साझा करके तुरंत प्रमुख ऑफ़र और अपडेट्स के लिए ट्रैफ़िक बढ़ाएं।

शोकेस प्रोडक्ट - अपनी पेज पर इमेजेस और वीडियो के साथ एक आकर्षक कैटलॉग तैयार करें।

डोमेन इंटीग्रेशन - अपने खुद के डोमेन का उपयोग करके एक सहज और ब्रांडेड अनुभव प्राप्त करें

एआई के साथ समय बचाएं - तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता के बिना, उत्पाद जानकारी और प्रोफाइल बायो जल्दी और प्रभावी तरीके से बनाएं।

सैमसंगने वॉक-ए-थॉन इंडिया का दूसरा एडिशन लॉन्च किया, तीन लकी विजेताओं को मिलेगी गैलेक्सी वॉच अल्ट्रा

गुरुग्राम। सैमसंग, भारत के सबसे बड़ेकंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड, ने आज वॉक-ए-थॉन इंडिया के दूसरे एडिशनको लॉन्च किया है। यह देश में स्वास्थ्य और फिटनेस की भावना को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन की गई एक पहल है। आज से शुरू हुए इस चैलेंज में यूजर्स भाग ले सकते हैं और 20 मई, 2025 तक एक महीने की अवधि के लिए सैमसंग हेल्थ ऐप के माध्यम से अपने डेली स्टेप काउंट को ट्रैक कर सकते हैं। इस अवधि में 200,000 स्टेप्स पूरे करने वाले सभी यूजर्स पुरस्कारों के लिए पात्र होंगे। तीन भाग्यशाली विजेताओं को गैलेक्सी वॉच अल्ट्रा मिलेगी, जबकि 200,000+ स्टेप्स पूरे करने वाले अन्य सभी को गैलेक्सी वॉच अल्ट्रा पर 25% छूट मिलेगी। वॉक-ए-थॉन इंडिया का दूसरा एडिशन फरवरी 2025 में आयोजित पहले चरण को मिली जबरदस्त प्रतिक्रिया के बाद लाया गया है, जिसमें देश भर से 100,000 से अधिक उत्साही प्रतिभागियों ने भाग लिया था। 30 - दिनों के इस स?टेप चैलेंज की मेजबानी विशेष रूप से सैमसंग हेल्थ ऐप पर होगी, जो सैमसंग गैलेक्सी स्मार्ट फोन्स पर उपलब्ध है। प्रतिभागी सैमसंग हेल्थ ऐप में रीयल-टाइम लीडर बोर्ड के माध्यम से अपनी प्रगति की निगरानी कर सकते हैं, जिससे वे अपनी प्रगति की तुलना कर सकते हैं और चैलेंज के दौरान प्रेरित रह सकते हैं। पुरस्कारों के लिए पात्र होने के लिए, प्रतिभागियों को 30 दिनों की अवधि में कम से कम 200,000 स्टेप्स पूरे करने होंगे। चुनौती पूरी करने के बाद, फिनिशर्स को 26 मई से 15 जून, 2025 के बीच सैमसंग हेल्थ ऐप पर जाकर अपने पुरस्कार का दावा करना होगा।

स्पर्श सीसीटीवी ने भारत में एसटीक्यूसी प्रमाणन के साथ नेतृत्व शुरू किया

नई दिल्ली। भारत की अग्रणी सीसीटीवी कैमरा और इलेक्ट्रॉनिक सुरक्षा समाधान निर्माता स्पर्श ने आज घोषणा की कि वह भारत की पहली कंपनी बन गई है जिसने अपने सबसे विस्तृत सीसीटीवी उत्पाद पोर्टफोलियो के लिए एसटीक्यूसी (स्टैंडर्डाइजेशन टेस्टिंग एंड क्वालिटी सर्टिफिकेशन) प्राप्त किया है। यह उपलब्धि उस समय हासिल की गई है जब भारत सरकार ने 9 अप्रैल 2025 से सभी आईपी सीसीटीवी कैमरों की बिक्री के लिए एसटीक्यूसी प्रमाणन अनिवार्य कर दिया है। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि स्पर्श की गुणवत्ता, सुरक्षा और ÷आत्मनिर्भर भारत की पहल के प्रति शुरुआती प्रतिबद्धता को दर्शाती है। जहां नए नियम अब सभी सीसीटीवी कैमरों के लिए एसटीक्यूसी प्रमाणन को कानूनी रूप से आवश्यक बनाते हैं, वहीं स्पर्श का अग्रसक्रिय दृष्टिकोण इसे प्रमाणित समाधान प्रदान करने वाले पहले ब्रांड के रूप में स्थापित करता है, जिससे इसके ग्राहकों और भागीदारों को किसी भी प्रकार की रुकावट का सामना नहीं करना पड़ेगा। स्पर्श को गर्व है कि वह विश्व की पहली सीसीटीवी निर्माता कंपनी है जिसने अपने व्यापक उत्पाद पोर्टफोलियो के लिए एसटीक्यूसी प्रमाणन प्राप्त किया। यह प्रमाणन हमारे स्वदेशी डिजाइन, सख्त निर्माण मानकों और उच्च गुणवत्ता वाले सुरक्षित निगरानी समाधानों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। जैसे-जैसे उद्योग इस नए नियामक परिदृश्य के अनुसार ढल रहा है, स्पर्श पहले से ही प्रमाणित उत्पादों की सबसे बड़ी श्रृंखला के साथ तैयार है। स्पर्श की यह उपलब्धि - अपने व्यापक सीसीटीवी उत्पादों के लिए एसटीक्यूसी प्रमाणन - यह सुनिश्चित करती है कि व्यवसाय, सरकारी संस्थाएं और आम उपभोक्ता निश्चितता के साथ एक भरोसेमंद भारतीय निर्माता का चयन कर सकें, जिसके सभी उत्पाद पूरी तरह से अनुपालित और विश्वसनीय हैं। यह प्रमाणन विभिन्न अनुप्रयोगों और क्षेत्रों के लिए उपयुक्त कई प्रकार के आईपी कैमरों को शामिल करता है। यह विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि अब पुराने या गैर-प्रमाणित कैमरे भारत में बिक्री के लिए अयोग्य घोषित कर दिए गए हैं - चाहे वह कॉर्पोरेट क्षेत्र हो, सरकारी खरीद हो या खुदरा ग्राहक।

टाटा मोटर्स और टाटा पावर रिन्यूवेबल एनर्जी ने 131 मेगावाट की पवन-सौर मिश्रित परियोजना विकसित करने के लिये भागीदारी की

नई दिल्ली। भारत की जा प्रमुख ऑटोमोबाइल कंपनी टाटा मोटर्स और टाटा पावर की स्वच्छ ऊर्जा शाखा टाटा पावर रिन्यूएबल एनर्जी लिमिटेड (टीपीआरईएल) ने मिलकर एक महत्वपूर्ण साझेदारी की है। दोनों कंपनियों ने एक खास समझौते (पावर पर्चेस एग्रीमेंट) पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसके तहत वे साथ मिलकर 131 मेगावाट की एक पवन और सौर ऊर्जा पर आधारित परियोजना बनाएँगी। यह योजना साफ और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए एक अहम कदम मानी जा रही है। यह परियोजना सालाना आधार पर लगभग 300 मिलियन यूनिट शुद्ध बिजली पैदा करेगी और हर साल 2 लाख टन से ज्यादा CO_2का उत्सर्जन होने से रोकेगी। यह एकीकृत पवन-सौर मिश्रित समाधान सह-निवेश और लंबे समय के पावर पर्चेस एग्रीमेंट (पीपीए) के माध्यम से संभव हुआ है। यह महाराष्ट्र तथा गुजरात में टाटा मोटर्स की छह विनिर्माण सुविधाओं को हरित एवं किफायती ऊर्जा की भरोसेमंद आपूर्ति करेगा। इससे कंपनी को वाणिज्यिक और यात्री वाहनों के उत्पादन में सहयोग मिलेगा। यह पहल टाटा मोटर्स को उसके 2030 के लक्ष्य से पहले ही क्लीन एनर्जी अपनाने की दिशा में काफी आगे बढ़ा रही है। इससे कंपनी को अपने कामकाज को जलवायु के अनुकूल बनाने में मदद मिल रही है। यह टाटा मोटर्स की पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और टिकाऊ विकास के रोडमैप में एक अहम कदम है। साथ ही, यह पहल कंपनी के उस बड़े लक्ष्य से भी जुड़ी है, जिसके तहत वह भविष्य में शून्य उत्सर्जन (नेट-ज़ीरो) हासिल करना चाहती है और ऐसे उत्पादन की दिशा में आगे बढ़ रही है जो पर्यावरण के लिए नुकसानदेह न हो। पीपीए पर हस्ताक्षर करते हुए टाटा मोटर्स के कमर्शियल व्हीकल्स बिजनेस के ऑपरेशंस वाइस प्रेसिडेंट श्री विशाल बादशाह ने कहा, ''भारत के ट्रांसपोर्ट और लॉजिस्टिक्स सेक्टर में अहम भूमिका निभाने वाली कंपनी के रूप में हमें टिकाऊ निर्माण (सस्टेनेबल मैन्युफैक्चरिंग) के क्षेत्र में मिसाल पेश करने पर गर्व है। यह नई परियोजना दिखाती है कि हम अपने कामकाज में साफ ऊर्जा को अपनाने और कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं।

ऑस्टियोजेनेसिस इम्पर्फेक्टा से पीड़ित महिला को गंभीर पथरी से मिली राहत, मैक्स अस्पताल लखनऊ में हुई सफल सर्जरी

लखनऊ । मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, लखनऊ में डॉक्टरों ने ऑस्टियोजेनेसिस इम्पर्फेक्टा से पीड़ित 36 वर्षीय महिला - स्तुति उपाध्याय की जटिल किडनी स्टोन हटाने की सर्जरी को मिनिमली इनवेसिव तरीके से सफलतापूर्वक पूरा किया। यह एक दुर्लभ आनुवंशिक रोग है, जिसमें हड्डियां अत्यधिक नाजुक हो जाती हैं और मामूली हरकत भी फ्रैक्चर का कारण बन सकती है। महज तीन फीट लंबी स्तुति की हालत पारंपरिक सर्जरी को जोखिमपूर्ण बना रही थी। स्तुति को बाईं तरफ तेज़ दर्द और पेशाब में दिक्कत की शिकायत के साथ मैक्स हॉस्पिटल, लखनऊ में भर्ती कराया गया। जांच में दाहिनी किडनी में कई पथरी पाई गई। उनके छोटे कद, नाजुक हड्डियों और अंगों की सीमित गतिशीलता के कारण सामान्य सर्जरी नहीं कर सकते थे। इसके अलावा, उनकी स्थिति के कारण किडनी में हड्डियों के अवशेष भी जमा हो गए थे, जिससे मामला और जटिल हो गया।इस केस के बारे में बात करते हुए मैक्स हॉस्पिटल, लखनऊ में यूरोलॉजी के निदेशक डॉ. आदित्य के शर्मा, ने कहा, ÷ऑस्टियोजेनेसिस इम्पर्फेक्टा से पीड़ित मरीज का ऑपरेशन करते समय बेहद सावधानी रखनी होती है क्योंकि ज़रा सी गलत पोजीशनिंग से भी फ्रैक्चर हो सकता है। स्तुति की टेढ़ी रीढ़ और हड्डियों की समस्या के कारण किडनी तक पहुंचना बेहद मुश्किल था इसलिए हमें सर्जरी के दौरान बार-बार उनकी स्थिति को ध्यान से व्यवस्थित करना पड़ा। डॉ. शर्मा ने बताया, हमने लेस इनवेसिव सर्जरी - एंडोस्कोपिक कंबाइंड इंट्रारेनल सर्जरी करने का निर्णय लिया। इसमें हमने दो छोटे उपकरणों का उपयोग किया। फ्लेक्सिबल यूरीटेरोस्कोपी में एक लचीला कैमरा और लेज़र होता है जो पेशाब की नली के माध्यम से अंदर जाता है। साथ ही पर्क्यूटेनियस नेफ्रोलिथोटॉमी में एक छोटा चीरा पीठ पर किया जाता है जिससे किडनी तक सीधे पहुंचा जा सके। हमने यह सर्जरी मरीज़ के पीठ के बल लेटे रहने की स्थिति में करने की योजना बनाई, जिससे यह प्रक्रिया अधिक सुरक्षित रही और शरीर पर कम दबाव पड़ा।

सर्जरी के बाद स्तुति को स्थिर स्थिति में छुट्टी दे दी गई और उनकी रिकवरी संतोषजनक रही। डॉक्टर उनकी प्रगति पर निरंतर नजर बनाए हुए हैं।

टाटा मोटर्स और टाटा पावर रिन्यूवेबल एनर्जी ने 131 मेगावाट की पवन-सौर मिश्रित परियोजना विकसित करने के लिये भागीदारी की

नई दिल्ली। भारत की जा प्रमुख ऑटोमोबाइल कंपनी टाटा मोटर्स और टाटा पावर की स्वच्छ ऊर्जा शाखा टाटा पावर रिन्यूएबल एनर्जी लिमिटेड (टीपीआरईएल) ने मिलकर एक महत?वपूर्ण साझेदारी की है। दोनों कंपनियों ने एक खास समझौते (पावर पर्चेस एग्रीमेंट) पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसके तहत वे साथ मिलकर 131 मेगावाट की एक पवन और सौर ऊर्जा पर आधारित परियोजना बनाएँगी। यह योजना साफ और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए एक अहम कदम मानी जा रही है

यह परियोजना सालाना आधार पर लगभग 300 मिलियन यूनिट शुद्ध बिजली पैदा करेगी और हर साल 2 लाख टन से ज?यादा ष्टह्र2का उत?सर्जन होने से रोकेगी। यह एकीकृत पवन-सौर मिश्रित समाधान सह-निवेश और लंबे समय के पावर पर्चेस एग्रीमेंट (पीपीए) के माध?यम से संभव हुआ है। यह महाराष?ट्र तथा गुजरात में टाटा मोटर्स की छह विनिर्माण सुविधाओं को हरित एवं किफायती ऊर्जा की भरोसेमंद आपूर्ति करेगा। इससे कंपनी को वाणिज्यिक और यात्री वाहनों के उत?पादन में सहयोग मिलेगा।

राजकुमार राव बने सन किंग के ब्रांड एम्बेसडर अब भारत के हर कोने में फैलेगी रौशनी

लखनऊ। विश्व के अग्रणी सौर ऊर्जा और ऊर्जा दक्ष इलेक्ट्रॉनिक प्रोडक्ट्स ब्रांड सन किंग ने बॉलीवुड अभिनेता राजकुमार राव को अपना नया ब्रांड एम्बेसडर घोषित किया है। यह साझेदारी भारतीय सिनेमा के एक चर्चित चेहरे और स्वच्छ ऊर्जा के भरोसेमंद नाम को एकजुट करती है, जो ऐसे व्यावहारिक समाधान में विश्वास रखते हैं जो वाकई में लोगों की जिंदगी बदलें। सन किंग के सोलर और एनर्जी-एफिशिएंट प्रोडक्ट्स - जो भारत भर में लाखों लोग इस्तेमाल कर रहे हैं - उन घरों में रोशनी, ऊर्जा और आराम पहुंचाते हैं जहाँ बिजली की सुविधा या तो नहीं है या बहुत कम है। राजकुमार राव के जुड़ने से ब्रांड का लक्ष्य है और ज्यादा लोगों तक पहुंचना जो सस्ती, टिकाऊ और भरोसेमंद ऊर्जा चाहते हैं। स्त्री, न्यूटन, शाहिद और श्रीकांत जैसी फिल्मों में अपनी दमदार अदाकारी से मशहूर हुए

राजकुमार राव को उनकी सच्चाई, संवेदनशीलता और आम लोगों से जुड़ाव के लिए जाना जाता है - जो कि सन किंग के मूल्यों से मेल खाता है। राजकुमार राव ने कहा, मैं हमेशा उस बदलाव में विश्वास करता हूं जो लोगों की रोज़मर्रा की जिंदगी को बेहतर बनाए। सन किंग के सोलर और इलेक्ट्रिकल प्रोडक्ट्स यही करते हैं - ये भरोसे और सुकून देते हैं उन घरों को जिन्हें इसकी सबसे ज्यादा ज़रूरत है। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे ब्रांड से जुड़ा हूं जो भारत को रोशन कर रहा है - वो भी टिकाऊ तरीके से।

सन किंग के प्रोडक्ट्स - जैसे सोलर होम लाइटिंग सिस्टम, रूफटॉप सोलर सिस्टम, और एनर्जी सेविंग बल्ब और पंखे - खासतौर पर उन परिवारों के लिए बनाए गए हैं जो लंबी उम्र वाले, किफायती और भरोसेमंद ऊर्जा समाधान चाहते हैं। राजकुमार राव के साथ यह साझेदारी इन प्रोडक्ट्स की जानकारी और उनके असर को और ज्यादा लोगों तक पहुंचाएगी। सन किंग एशिया की मार्केटिंग हेड सुरभि शर्मा ने कहा, राजकुमार राव उन्हीं बातों के लिए खड़े हैं जिनके लिए हम - असली असर, भरोसा और सभी के लिए पहुंच। हम मिलकर भारत के घरों की उम्मीदों और सच्चाइयों की कहानियां सुनाएंगे और दिखाएंगे कि टिकाऊ ऊर्जा हर किसी के लिए है। एशिया और लैटिन अमेरिका के जनरल मैनेजर साहिल खन्ना ने कहा, बॉलीवुड भारत में लाखों लोगों को प्रेरित करता है, और राजकुमार राव अपनी सच्चाई और आम लोगों से जुड़े किरदारों के लिए खास हैं। वो हमारे लिए एकदम सही आवाज़ हैं यह दिखाने के लिए कि सोलर पावर और स्मार्ट, एनर्जी-एफिशिएंट डिवाइसेज़ कैसे रोज़मर्रा की जिंदगी को बदल सकते हैं।

यह ऐलान उस समय किया गया है जब सन किंग इस हफ्ते नई दिल्ली में होने वाले साउथ एशिया फोरम फॉर डिस्ट्रीब्यूटेड एनर्जी में अपनी उपभोक्ता-केंद्रित नई मुहिम शुरू कर रहा है।

देश के सबसे बड़े प्रॉब्लम-सॉल्विंग प्लेटफॉर्म, एचसीएल जिगसॉ के छठे एडिशन के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू

कानपुर। एचसीएल ने देश के सबसे बड़े प्रॉब्लम-सॉल्विंग प्लेटफॉर्म, एचसीएल जिगसॉ का छठा एडिशन पेश किया है। यह प्लेटफॉर्म खासतौर पर स्कूल के छात्रों के लिए तैयार किया गया है, ताकि उनमें नवाचार, विश्लेषण और तार्किक सोच को बढ़ावा दिया जा सके। एचसीएल जिगसॉ का उद्देश्य छात्रों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं को समझने और सुलझाने में सक्षम बनाना है। इसमें कक्षा 6 से 9 तक के छात्रों का मूल्यांकन 21वीं सदी की महत्वपूर्ण स्किल्स के आधार पर किया जाता है, जिनमें रिसर्च, क्रिटिकल थिंकिंग और कम्युनिकेशन शामिल है। प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक छात्र या स्कूल 222.hcljigsaw.comपर जाकर 31 जुलाई तक रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। इस पहल पर विचार करते हुए, रजत चंदोलिया, एसोसिएट वाइस प्रेसिडेंट और हेड-ब्रांड, एचसीएल ग्रुप,ने कहा, एचसीएल में, हमारा उद्देश्य युवाओं की क्षमता को बढ़ावा देना है, ताकि वे गतिशील दुनिया के साथ-साथ आगे बढ़ सकें।

एचसीएल जिगसॉ कोई क्विज़ या ओलंपियाड नहीं है, बल्कि यह एक लॉन्चपैड है, जो युवा विचारकों, सहयोगियों और रचनाकारों को समर्पित है। अब तक हमें मिली भागीदारी शानदार रही है। ऐसे में, अब हम इस एडिशन से और भी अधिक स्कूलों को प्रेरित करने के लिए उत्साहित हैं, ताकि वे अपने छात्रों की क्षमता को उजागर कर सकें, जहाँ कक्षाएँ वास्तविक दुनिया से मिलती हैं।

अवधनामा

कुशीनगर हादसा : इस लोक में आने से पहले परलोक चले गए पिता

गमगीन रंजीत के माता-पिता व भाई

हादसे के बाद गांव में पसरा सन्नाटा

शकील अहमद

कुशीनगर (अवधनामा ब्यूरो)। सड़क हादसे में जान गंवाने वाले रामकोला थाना क्षेत्र के नरायनपुर चरगहां निवासी छह युवकों में से रंजीत मद्धेशिया कि 2 वर्ष पहले शादी हुई थी। वह रगड़गंज पुल पर चाय की दुकान खोलकर परिवार का मदद करता था। उसकी पत्नी 8 माह की गर्भवती है। हादसे ने रंजीत को नवजात का मुंह देखने से पहले ही परलोक चला गया। रंजीत की हर अरमान अधूरी रह गई। परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है। हर कोई नियति को कोसते नजर आ रहे है। बता दें कि राजेंद्र मद्धेशिया के तीन संतानों में रंजीत उम्र 28 साल दूसरा नंबर का था उसका बड़ा भाई अनिल 38 साल तथा छोटा भाई पंकज 26 साल ये सब दिल्ली रहते हैं। घर पर रहने वाला रंजीत ही था जो रगड़गंज चौराहा पर चाय की दुकान चला कर परिवार की मदद करता था। पिता राजेंद्र वह दोनों भाइयों का रो रोकर बुरा हाल है। पत्नी माला देवी मां इंद्रावती देवी बार-बार बेहोश हो जा रही है। रंजीत के परिजनों ने बताया कि दो वर्ष पहले इसकी शादी हुई थी इस बीच उसकी पत्नी 8 माह से पेट से है। उसका बच्चा दुनिया में आने से पहले ही वह दुनिया ही छोड़ चला। ये कहकर रंजीत की मां इंद्रावती बेहोश हो जा रही है। पत्नी माला देवी बेसुध है कुछ भी बोलने से परहेज कर रही है। खैर जो नियति में था वह हो के रहा, नियति को कौन टाल सकता है।

हादसे के बाद नरायनपुर चरगहां गांव में पसरा सन्नाटा

नरायनपुर चरगहां निवासी छह युवकों की मौत के बाद पूरे गांव में सन्नाटा पसरा हुआ है। लोग अपने जेहन से ये हादसा भुला नहीं पा रहे है। युवकों की कार्य कुशलता का हर कोई गाथा गा रहा है। हादसे वाले मुहल्ले में मंगलवार को भी किसी के घर चूल्हे नहीं जले। इस हादसे ने पूरे क्षेत्रङ्कजवार को हिलाकर रख दिया है। गांव में सन्नाटा पसरा हुआ है, हादसे वाले मुहल्ले में चूल्हा नहीं जला। हर किसी के जुबा पर युवकों का नाम था। युवकों की कुशलता का जिक्र करते करते सबकी आंखें नम हो जा रही थी।

हादसे में मरे रंजीत की दो वर्ष पहले हुई थी शादी पत्नी है गर्भवती

मुर्गी फार्म पर दलित युवक की गला रेत कर हत्या

जामों। कोतवाली अंतर्गत अल्प का पुरवा में मुर्गी फार्म पर दलित युवक का निर्मम हत्या कर दी गई। हत्या का कारण पुरानी रंजिश सामने आया है। सोमवार की शाम करीब छः बजे शिवम कुमार कोरी पुत्र छोटेलाल कोरी निवासी अल्प का पुरवा मजरे कल्याणपुर का शव गांव के ही रितेश सिंह के मुर्गी फार्म पर पाया गया था जहां पर कुछ बदमाशो ने बांके के वार करके निर्मम हत्या कर दी गई। मृतक के पिता छोटेलाल ने बताया कि गांव से 200 मीटर की दूरी पर रितेश सिंह के मुर्गी फार्म पर गांव के ही मान सिंह पुत्र भुलई सिंह और व विकास सिंह उर्फ सूरज सिंह पुत्र बिहारी लाल तथा दो अज्ञात ने मेरे बेटे को धारदार हथियार से गला रेत कर हत्या कर दी। मृतक का गला, हाथ के अंगुलियों और गाल पर बांके से किए प्रहार के निशान थे।शरीर पर लगभग आधा दर्जन अधिक चोट के निशान थे। सूचना पर मय फोर्स के साथ एसपी अर्पणा रजत कौशिक और एडिशनल एसपी हरेंद्र सिंह मौके पर पहुंच जायजा लिया। युवक की हत्या से पूरे गांव में दहशत का माहोल बना हुआ है।

पुलिस और पशु तस्करों के बीच हुई मुठभेड़, दो तस्करों को लगी गोली

अवधनामा संवाददाता

तरयासुजान, कुशीनगर। तरयासुजान थाना क्षेत्र के बहादुरपुर पुलिस चौकी के पास पुलिस और पशु तस्करों के बीच मुठभेड़ हुई है। मुठभेड़ के दौरान दो पशु तस्करों के पैर में गोली लगी है। 25 हजार के इनामी पशु तस्कर सहित तीन अन्तर्राज्यीय पशु तस्करो को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। जनपद कुशीनगर में अपर पुलिस महानिदेशक गोरखपुर जोन एवं पुलिस उप-महानिरीक्षक गोरखपुर रेंज के निर्देशन में पुलिस अधीक्षक कुशीनगर संतोष कुमार मिश्रा द्वारा अपर पुलिस अधीक्षक कुशीनगर रितेश कुमार सिंह के नेतृत्व में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में मंगलवार को थाना तरया सुजान क्षेत्रान्तर्गत एक पशु तस्कर के होने की सूचना प्राप्त हुई। इस सूचना पर तत्काल योजना बनाते हुए पुलिस टीमों का गठन किया गया जिसमें थाना तरया सुजान, थाना तमकुहीराज, थाना तुर्कपट्टी व स्वाट की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा थाना तरया सुजान क्षेत्रान्तर्गत बहादुरपुर चौकी के पास घेराबंदी कर चेकिंग की जा रही थी।

चेकिंग के दौरान एक ट्रक कन्टेनर वाहन आते दिखाई दिया, जिसको पुलिस टीम द्वारा रोकने का प्रयास किया गया तो वाहन पर सवार व्यक्तियों द्वारा लक्ष्य साधकर पुलिस टीम पर जान मारने की नियत से फायर किया गया। जवाबी प्रतिरक्षा में पुलिस टीम द्वारा फायरिंग की गई, जिसमें दो व्यक्ति घायल हो गए जिनकी पहचान 25 हजार रुपए का ईनामी पशु तस्कर उस्मान पुत्र मो. यासीन निवासी वार्ड नंबर 07 अगलगा थाना स्वार जनपद रामपुर व जब्बार पुत्र शरीफ निवासी भवन थाना समसाबाद जनपद आगरा के रुप में हुई जिसको गिरफ्तार कर लिया गया। उनके एक अन्य साथी इमरान कुरैशी पुत्र इस्लाम कुरैशी निवासी तिमरसा थाना कोतवाली जनपद शामली को भी मौके से गिरफ्तार किया गया।

पुलिस गिरफ्त में घायल तस्कर

सेंट जेवियर्स स्कूल कप्तानगंज में विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया

अवधनामा संवाददाता

कप्तानगंज, कुशीनगर। हर साल की तरह इस वर्ष भी 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाया गया, जिसका उद्देश्य लोगों को पर्यावरण की समस्याओं के बारे में जागरूक करना है। इसकी शुरुआत 1970 में अमेरिका में हुई थी, जब प्रदूषण एक गंभीर समस्या थी। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हमें अपनी धरती को बचाना है और आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे सुरक्षित रखना है।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉक्टर वैभव ने की और आगे बताया की इस धरोहर की कीमत समझनी होगी और इसकी संरक्षण पर जागरूक होना होगा। पृथ्वी का आवश्यकता से अधिक दोहन किया जाने लगा है, जिससे धरती को नुकसान पहुंच रहा है। इस तरह के हो रहे दोहन के कारण पृथ्वी और इसका वातावरण दूषित हो रहा है। पृथ्वी दिवस मनाने का उद्देश्य धरती के हो रहे दोहन को रोकना और वातावरण को संरक्षित करने के लिए लोगों को जागरूक करना है। इस कार्यक्रम में विभिन्न कक्षाओं में पौधा रोपण, पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता, बोर्ड डेकोरेशन कराई गई जिसका उद्देश्य बच्चों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैल सके। इस आयोजन में अरविंद कुमार पांडेय और उप प्रधानाचार्य शशि कुमार चौरसिया ने भी पृथ्वी दिवस के प्रति जागरूक किया।

पृथ्वी दिवस पर वृक्षारोपण करते बच्चे

महावीर स्कूल में हर्षोल्लास के साथ मना पृथ्वी दिवस

महराजगंज, रायबरेली। कस्बा स्थित महावीर स्टडी इस्टेट सीनियर सेकेंडरी कॉलेज महराजगंज में छात्र-छात्राओं ने पृथ्वी दिवस बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया प्रधानाचार्य कमल वाजपेई ने एक दिन पूर्व ही बच्चों को पृथ्वी दिवस के बारे में बताया कि जननी मां के समान ही हमें अपने धरती मां से प्यार करना चाहिए। मां के सभी माँ के सभी गुण दया क्षमा सौहार्द प्यार वात्सल्य सुरक्षा भरण पोषण सभी पृथ्वी में निहित तत्वों से मिलता है। हमारे शरीर में मां का अंश रहता है वैसे ही हमारा शरीर पांच तत्व गगन समीर से बना होता है। प्रातः मां के चरण वंदन के समान धरती मां को भी प्रणाम करना चाहिए हम उसी की गोद में दिनभर रहते हैं बच्चों को बताया कि हमें पर्यावरण संरक्षण करना है। जल पेड़ पौधों को सुरक्षित रखना विनाशकारी अपशिष्ट पदार्थों को पृथ्वी में जाने से रोकना है।

कुशीनगर के नए डीएम होंगे आईएएस महेंद्र सिंह तंवर

अवधनामा ब्यूरो

कुशीनगर। संतकबीर नगर के डीएम रहे महेंद्र सिंह तंवर को अब कुशीनगर का डीएम बनाया गया है। महेंद्र सिंह तंवर 2015 बैच के आईएएस अधिकारी हैं। वे पिछले दो वर्षों से संतकबीरनगर के जिलाधिकारी के रूप में कार्यरत थे। कुशीनगर के डीएम विशाल भारद्वाज को विशेष सचिव, सीएम बनाया गया है। श्री तंवर गोरखपुर में सिर्फ एक साल के कार्यकाल में अवैध कॉलोनियों पर कार्रवाई से लेकर खोराबार मेडिसिटी, नौका विहार में विकास की विभिन्न परियोजनाएं खास रहीं। ऐसे ही, संतकबीर नगर में एक के बाद बखिरा में ईको पार्क, मुखलिसपुर तिराहे पर पुरानी मंडी हटाने, बरदहिया बाजार को विकसित करना, सेमरियावां ब्लाक में 5 हजार वर्ष पूर्व पुरातत्व संरक्षण समेत एक दर्जन विकास की योजनाओं को शुरू करवाने के साथ उनके प्रस्ताव शासन को भेजे थे। बखिरा के आस-पास के क्षेत्र को स्मार्ट सिटी के तौर पर विकसित करने की भी इनकी तैयारी थी। तंवर का प्रशासनिक अनुभव विविध रहा है। उन्होंने गाजियाबाद नगर निगम में नगर आयुक्त का पद संभाला है। बहराइच और एटा में संयुक्त मजिस्ट्रेट तथा शाहजहांपुर में मुख्य विकास अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं।

महेंद्र कुमार तंवर डीएम कुशीनगर

हरियाणा के रोहतक जिले के मूल निवासी है तंवर

हरियाणा के रोहतक जिले के मूल निवासी तंवर ने बी-टेक की पढ़ाई की है। सिविल सेवा में आने से पहले उन्होंने दो वर्ष निजी क्षेत्र में कार्य किया। कविता लेखन में भी उनकी विशेष रुचि है। इनके पिता ओम प्रकाश सिंह तंवर भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हैं।

देवरिया के धार्मिक स्थलों का बदलेगा स्वरूप

देवरिया। क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी गोरखपुर मण्डल रविन्द्र कुमार ने जानकारी दी है कि वित्तीय वर्ष 2023-24 एवं 2024-25 के अंतर्गत उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा जनपद देवरिया में विभिन्न धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों के सौंदर्यीकरण व विकास कार्यों को स्वीकृति दी गई है। इन परियोजनाओं पर करोड़ों रुपये खर्च किए जाएंगे।

पर्यटन अधिकारी ने बताया कि पथरदेवा के मछैला गांव स्थित शिव मंदिर के सौंदर्यीकरण एवं पर्यटन विकास कार्य के लिए 131.97 लाख रुपये स्वीकृत किए गए हैं। विकासखंड सलेमपुर के ग्राम मझौलीराज में दीर्घेश्वर नाथ मंदिर के विकास हेतु 125.91 लाख रुपये, ब्रह्मऋषि देवरहा बाबा आश्रम के पर्यटन विकास के लिए 250.06 लाख रुपये तथा रुद्रपुर स्थित मां दुर्गा मंदिर के सौंदर्यीकरण हेतु 71.67 लाख रुपये की स्वीकृति दी गई है।

एसडीएम के समझाने, बुझाने के बाद अंतिम संस्कार को तैयार हुए परिजन

अवधनामा संवाददाता

अमेठी। एस डी एम प्रीति तिवारी और सी ओ अभिषेक वर्मा, अतुल कुमार सिंह और डॉ अजय कुमार सिंह,एस ओ विनोद कुमार सिंह, अनिकेत सिंह और धीरेन्द्र कुमार यादव के लगभग चालीस मिनट तक समझाने बुझाने के बाद पीड़ित परिवार के लोग मंगलवार को मृतक शिवम् कोरी का अंतिम संस्कार करने को तैयार हुए।एस डी एम ने कहा है कि सभी आरोपी गिरफ्तार किए जाएंगे। परिवार की हरसंभव मदद की जाएगी।जब तक सभी आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होती, मृतक के घर पर सुरक्षा में पुलिस फोर्स तैनात रहेगी। जेल भेजे गए विकास यादव की पत्नी ने बच्चों के साथ एस डी एम से न्याय की गुहार की और कहा कि मेरे पति निर्दोष हैं, उन्हें झूठे फंसाया गया है।एस डी एम ने कहा कि न्याय किया जाएगा।

बसपा प्रदेश अध्यक्ष ने की एस डी एम से बात - बहुजन समाज पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष विश्व नाथ पाल ने मौके पर गये प्रतिनिधि मंडल के माध्यम से एस डी एम प्रीति तिवारी से बातचीत की। उन्होंने कहा कि प्रकरण बहन मायावती जी के संज्ञान में है। उन्होंने घटना पर गहरा दुःख जताया है। इस मामले में सभी हत्यारे शीघ्र गिरफ्तार किए जाएं। परिवार को पूरी सुरक्षा और न्याय प्रदान किया जाये। मोहन सिंह और ज्ञान सिंह का नाम सामने आया है। इनका आतंक गांव से खत्म होना चाहिए।

10 मई को राष्ट्रीय लोक अदालत को लेकर बैठक

देवरिया। राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार व जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, देवरिया देवेन्द्र सिंह के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय लोक अदालत की सफलता हेतु जनपद के समस्त खंड विकास के अधिकारियों के साथ जनपद न्यायालय के वीडियों कान्फ्रेन्सिंग भवन में प्री-ट्रायल बैठक आहूत की गयी। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण/अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, देवरिया मनोज कुमार तिवारी द्वारा निर्देशित किया गया, कि समस्त खंड विकास अधिकारी चिन्हित किये हुये मामलें को संदर्भित करें तथा अधिक से अधिक संख्या में मामलों को राष्ट्रीय लोक अदालत 10मई के दिन लगाकर मामलों का निस्तारण करावे। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण/अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने कहा कि न्यायालय में लघु वादों के निस्तारण हेतु विशेष लोक अदालत का आयोजन किया जायेगा। समस्त वादकारियों से अनुरोध है, कि आप विशेष लोक अदालत में अपने सुलहनीय मामलों को माननीय न्यायालय में नियत कराकर अपने वादों का निस्तारण करायें।

दुनिया के चमकते हुए सितारे हैं बाबा साहब डॉ अम्बेडकर : सूर्य प्रताप शाही

अवधनामा संवाददाता

अमेठी। मंगलवार को भाजपा जिलाध्यक्ष सुधांशु शुक्ला की अध्यक्षता में आयोजित संगोष्ठी आयोजित की गई। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि डॉ आंबेडकर भारत ही नहीं दुनिया के चमकते हुए सितारे हैं।भाजपा की डबल इंजन सरकार डॉ आंबेडकर के सपनों को साकार कर रही है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने भारत रत्न तक नहीं दिया।भाजपा सरकार आने पर डॉ आंबेडकर को भारत रत्न मिला।संसद के सेंट्रल हाल में उनका चित्र स्थापित किया।भाजपा ने दलित समाज को उनका हक और सम्मान देने का काम किया है।बाबा साहब ने शाम को समान रूप से शिक्षा देने के लिए संविधान में सम्मिलित किया था उन्होंने कहा था की 14 वर्ष तक सबको बिना भेदभाव के निशुल्क शिक्षा दी जाए लेकिन कांग्रेस की सरकार ने इसको कभी भी लागू नहीं किया जब अटल जी के नेतृत्व में सरकार आए तब बाबा साहब के सपनों को सरकार करके सर्व शिक्षा अभियान के तहत बाबा साहब का सपना पूरा किया।उन्होंने कार्यकर्ताओं से भाजपा द्वारा डॉ आंबेडकर के सम्मान और दलित समाज के उत्थान के लिए किए गए कार्यों को जन- जन के बीच पहुंचाने का आवाह्न किया। वही उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार दिनेश सिंह ने कहा बाबा साहब आदर्श, संघर्ष व योगदान भारत के लोगों को हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे।यह भी कहा भारतरत्न डॉ अम्बेडकर दुनिया के हर पीड़ित, शोषित की आवाज थे। कांग्रेस ने डॉ आंबेडकर को अपमानित करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। बाबा साहब को सबसे ज्यादा अपमानित करने वाली कांग्रेस आज संविधान की पुस्तक लेकर घूम रहे हैं उनको अपने गिरेबान में झांक कर भी देखना चाहिए इसके लिए भी हमें समाज को सजग रखना है बाबा साहब का अपमान करने वाले लोगों के झांसे में नहीं आना है। भाजपा जिलाध्यक्ष सुधांशु शुक्ला ने स्वागत भाषण दिया। कहा कार्यकर्ता विपक्ष के भ्रम व झूठ फैलाने का तथ्यों के साथ पर्दाफाश करे।

मुहम्मदा जमीन सिकटिया में अतिक्रमण से पटी नाली को सुदृढ़ कराया

जेसीबी से अतिक्रमण हटवाते तहसीलदार नरेंद्र

अवधनामा संवाददाता

मथौली बाजार, कुशीनगर। हाटा तहसील क्षेत्र के मुहम्मदा जमीन सिकटिया के बरवा पट्टी में करीब एक दर्जन घरों से निकलने वाले वाला गंदा पानी नाली के जरिए एक गड्ढे में जाता था लेकिन अगल-बगल के कुछ लोगों द्वारा मिट्टी डालकर उक्त नाली को पाट दिया गया था जिससे जल जमाव व ओवर फ्लो की समस्या उत्पन्न होती है। मंगलवार को तहसील प्रशासन ने उक्त नाली से अतिक्रमण हटाकर जल निकासी की व्यवस्था सुदृढ़ कराया। बता दें कि उक्त गांव में पिछले कई वर्षो से घरों से निकलने वाला गंदा पानी उसी के रास्ते जाता था। जिसके कुछ लोगों द्वारा पाटकर अतिक्रमण के दिया गया था। जिससे जल जमाव से संक्रामक बीमारियों एवं मच्छरों का प्रकोप भी तेजी से फैल रहा था। स्थानीय लोगों द्वारा बार-बार शिकायत करने के बावजूद तहसील एवं ब्लॉक के अधिकारी व कर्मचारी इसपर ध्यान नहीं दे रहे थे। ग्राम प्रधान विजय कुशवाहा ने तहसील प्रशासन में उक्त प्रकरण का शिकायती पत्र देकर कार्यवाही की मांग किया था जिसको गम्भीरता से लेते हुए तहसील प्रशासन ने मंगलवार दोपहर तहसीलदार हाटा नरेंद्र राम ने पुलिस बल एवं राजस्व टीम के साथ जेसीबी लेकर पहुंचे और अतिक्रमण को हटवाया। इसके बाद जल निकासी की व्यवस्था सुचारु रूप से शुरू हो गया।

पोषण माह के अन्तर्गत भादर में आयोजित किया गया गर्भवती महिलाओं की गोदभराई और अन्नप्राशन कार्यक्रम

अमेठी अवधनामा संवाददाता। पोषण माह के अन्तर्गत मंगलवार को भादर में गर्भवती महिलाओं की गोदभराई और अन्नप्राशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। बहादुरपुर विकास खंड में अभिभावक सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। खंड शिक्षा अधिकारी शिव कुमार यादव और प्रभारी सी डी पी ओ सीमा सिंह ने 22 गर्भवती और धात्री महिलाओं की गोद भरी और बच्चों का अन्नप्राशन किया। खंड शिक्षा अधिकारी ने कहा कि मां की गोद शिशु की प्रथम पाठशाला होती है।छः वर्ष तक बच्चों का शरीर कोमल होता है उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। गर्भावस्था में माताएं कुपोषण का शिकार न हों और स्वस्थ शिशु को जन्म दें, इसलिए सरकार आंगनबाड़ी केंद्रों के माध्यम से तरह तरह के पोषण के कार्यक्रम चला रही है। ब्लाक संसाधन केंद्र के विषय विशेषज्ञ जामवंत मौर्य ने कहा कि शिशुओं का अच्छा स्वास्थ्य तभी रहेगा जब माताएं छः महीने तक उन्हें अपना दूध पिलाएं।मां के दूध में कोलास्ट्राल की मात्रा अधिक होती है जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। बच्चों को बोतल का दूध पिलाने की बढ़ती प्रवृत्ति बहुत नुकसानदायक है। प्रभारी सी डी पी ओ सीमा सिंह ने पोषण माह के कार्यक्रमों की जानकारी दी और आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को केंद्र पर पंजीकृत बच्चों के साथ नवजात शिशुओं पर ध्यान देने के निर्देश दिए। कम्पोजिट विद्यालय भादर प्रथम के इं प्र अ संजीव कुमार, ईनर ह्वील संस्था की वर्कर स्निग्धा खरे, कार्यक्रम की मुख्य आयोजक आशा देवी,आभा सिंह लालती देवी, रेखा देवी, कलावती, कृष्णा देवी, सावित्री, नेहा रानी, किरन तिवारी , कंचन, आशा यादव,नीलम, कंचन सिंह,राजपती, शांति, सुनीता, मीना, सीमा, किरन तिवारी आदि मौजूद रहीं।

पुलिस अधीक्षक देवरिया विक्रान्त वीर के निर्देशन में जनपद के समस्त थानो की एण्टी रोमियों टीमों द्वारा चलाया गया मिशन शक्ति फेज-05 एवं शक्ति दीदी अभियान

देवरिया अवधनामा संवाददाता। महिलाओं एवं बलिकाओं को वितरित किये गये टेम्पलेट व विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरों से अवगत कराया गया। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं के सुरक्षार्थ व स्वावलंबन हेतु चलाए जा रहे मिशन शक्ति अभियान फेज-05 के तहत पुलिस अधीक्षक देवरिया श्री विक्रान्त वीर के निर्देशन में 22.अप्रैल को जनपद देवरिया के थाना गौरीबाजार की मिशन शक्ति टीम की महिला उ0नि0 कंचनलता, महिला आरक्षी कीर्ती अग्रहरी व महिला आरक्षी सारिका यादव द्वारा थाना क्षेत्रान्तर्गत विद्यालय की छात्र छात्राओं व उपस्थित स्टाफ को मिशन शक्ति फेज-5 के तहत सरकार द्वारा जारी विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरों जैसेः- डॉयल-112, हेल्प लाइन-181, वुमेन पावर लाइन-1090, चाइल्ड हेल्प लाइन-1098, सी0एम0 हेल्पलाइन-1076, वन स्टॉप सेन्टर-181, स्वास्थ्य सेवा हेल्पलाइन-102, एंबुलेंस सेवा-108 आदि के विषय में जानकारी देकर जागरुक किया गया। इसी क्रम में समस्त थानों की एण्टी रोमियो/मिशन शक्ति टीमों द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्रान्तर्गत सार्वजनिक स्थानों, धार्मिक स्थलों आदि स्थानों पर महिलाओं/बालिकाओं को टेम्पलेट वितरित करते हुए विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरों जैसेः- डॉयल-112, हेल्प लाइन-181, वुमेन पावर लाइन-1090, चाइल्ड हेल्प लाइन-1098, सी0एम0 हेल्पलाइन-1076, वन स्टॉप सेन्टर-181, स्वास्थ्य सेवा हेल्पलाइन-102, एंबुलेंस सेवा-108 आदि के विषय में जानकारी देकर जागरुक किया गया।

नगर पंचायत में तीन इंटरलॉकिंग एवं सीसी रोड का शिलान्यास

महराजगंज, रायबरेली अवधनामा संवाददाता। नगर पंचायत महराजगंज को विकास की ओर आगे बढ़ाते हुए नगर पंचायत अध्यक्ष व अधिशासी अधिकारी के अथक प्रयास से नगर पंचायत परिक्षेत्र में आज 20 लाख की लागत से बनने वाली तीन सीसी रोड व इंटरलॉकिंग मार्ग का हवन पूजन के पश्चात शिलान्यास किया गया बताते चले की नगर पंचायत महराजगंज द्वारा तहसील परिसर में इंटरलॉकिंग से बनने वाले मार्ग का शिलान्यास उपजिलाधिकारी सचिन यादव ने हवन पूजन व नारियल फोड़कर के बाद फावड़ा चलाकर शुभ आरंभ किया तो वही विद्युत उपकेंद्र महराजगंज में नगर पंचायत द्वारा नवनिर्मित रोड का अधिशासी अभियंता ओपी सिंह ने हवन पूजन कर शुभारंभ किया तो वही नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि प्रभात साहू व अधिशासी अधिकारी रामाशीष वर्मा ने कस्बे के बछरावां रोड स्थित राजकीय बालिका इंटर कॉलेज से लेकर घेरा मोड स्थित पुल तक बनने वाले मार्ग का शिला न्यास हवन पूजन कर फावड़ा चलाकर शुभारंभ किया उप जिलाधिकारी सचिन यादव ने कहा कि नगर पंचायत अध्यक्षा सरला साहू के अथक प्रयास से महराजगंज नगर पंचायत विकास की ओर अग्रसर है, और आज तीन इंटरलॉकिंग सीसी रोड का उद्घाटन किया गया है जिनकी कीमत 20 लख रुपए है, तथा 20 लाख के रुपए की लागत से गुणवत्ता परख मार्गो का निर्माण करवाया जाएगा इस मौके पर चेयरमैन प्रतिनिधि प्रभात साहू अधिशासी अधिकारी राम आशीष वर्मा वरिष्ठ लिपिक रामचंद्र जमुना प्रसाद मंडल अध्यक्ष अमित श्रीवास्तव भाजपा नेता सरोज गौतम सहित सभासद मौजूद रहे।

भागवत कथा के दूसरे दिन पं. वागीश रामचंद्र दास ने अमृतमयी कथा सुनाकर श्रोताओं को किया मंत्रमुग्ध

अवधनामा संवाददाता

महराजगंज, रायबरेली। शिवगढ़ क्षेत्र के अंतर्गत भवानीगढ़, देहली में सप्तवेदी, गणेश आंबिका, रूद्र हनुमत देव, सहित मोक्षदायिनी श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन यजमान कालिका प्रसाद मिश्रा, सपत्नीक राजेश्वरी मिश्रा, के यहां आनंद मिश्रा के द्वारा संकल्पित पांचवी श्रीमद् भागवत कथा का हो रहा भव्य आयोजन।

आपको बता दें कि, भवानीगढ़, देहली गांव में चल रही श्रीमद् भागवत कथा के दूसरे दिन मंगलवार को वृंदावन से पधारे कथा व्यास पंडित वागीश रामचंद्र दास ने बताया कि, राजा परीक्षित श्रापित होने के बाद सुखदेव महाराज के द्वारा मोक्षदायिनी श्रीमद् भागवत कथा का पान करते हुए अपने जीवन को सार्थक कर रहे हैं। कथा व्यास पंडित वागीश रामचंद्र दास ने यह भी बताया कि, मोक्षदायिनी श्रीमद् भागवत कथा जो की सुखदेव जी महाराज राजा परीक्षित को सुना रहे हैं वह पावन पुनीत कथा मानव के अंदर आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार करती है, और हम सब लोगों को पापों से मुक्त करती है। ऐसे ही विविध प्रसंगों पर कथा कहते हुए पंडाल में उपस्थित समस्त श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। विदित हो कि क्षेत्र के ग्राम सभा जिहवा के रहने वाले आनंद मिश्रा ने बताया कि, हर दूसरे महीने अलग-अलग स्थानों पर उनके द्वारा संकल्पित श्रीमद् भागवत कथाओं का आयोजन किया किया जा रहा है। यह उनके द्वारा आयोजित पांचवी श्रीमद् भागवत कथा है।

मानव सेवा माधव सेवा, जन सेवा जनार्दन सेवा ही संघ का मूल मंत्रः दत्तात्रेय होसबोले

■ मुख्यमंत्री योगी ने की एन एम ओ बहराइच कार्यकारिणी की प्रशंसा

अवधनामा संवाददाता

बहराइच। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरु गोरखनाथ स्वास्थ्य सेवा यात्रा में भागीदारी देने वाले बहराइच के चिकित्सकों को लखनऊ के गोमती नगर स्थित सीएमएस ऑडिटोरियम में सम्मानित किया है।

नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन की अध्यक्षा डॉ. सारिका साहू के उत्कृष्ट कार्यों के चलते उनके नेतृत्व में जिलेवासियों को बेहतर इलाज हेतु मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सम्मानित किया। मुख्यमंत्री ने एनएमओ बहराइच की अध्यक्ष डॉक्टर सारिका साहू एवं उनकी पूरी टीम को सुदूर सीमावर्ती क्षेत्र में जनजातीय समुदाय के बीच चल रहे स्वास्थ्य शिविर को सफल बनाने एवं उत्कृष्ट चिकित्सा सेवा में उनके योगदान के लिए प्रशंसा भी की।

उन्होंने बताया कि श्री गुरु गोरखनाथ स्वास्थय सेवा यात्रा 5.0 के कार्यकर्ता सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने मानव सेवा माधव सेवा जन सेवा जनार्दन सेवा के मूल मंत्र का अर्थ बताया। उन्होंने कहा हम सब बड़े ही भाग्यशाली हैं कि 2019 से सुदूर क्षेत्रों में रहने वाली जनजातियों की सेवा जो गुरु गोरखनाथ स्वास्थ्य सेवा यात्रा के माध्यम से जनसेवा का पवित्र कार्य कर रहे हैं वह वंदनीय है। इस अवसर पर बहराइच नेशनल मेडिकोज आर्गेनाइजेशन की जिलाध्यक्ष के साथ उनकी पूरी टीम जिसमें डॉक्टर बृजेश शुक्ला डॉक्टर दिव्येश बरनवाल डॉक्टर अमिताभ मिश्रा डॉक्टर रामेंद्र त्रिपाठी डॉक्टर मनीष शुक्ला डॉक्टर प्रभात मिश्रा डॉक्टर विवेक सिंह आदेश बरनवाल डॉ प्रज्ञा डॉक्टर डीके सिंह डॉक्टर शिशिर अग्रवाल एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह प्रांत सामाजिक समरसता प्रमुख राज किशोर विभाग प्रचारक कृष्ण कुमार जिला प्रचारक बहराइच अजय सेवा विभाग के जिला प्रमुख रमेश सहित अन्य स्वयंसेवक मौजूद रहे।

रैंचा ग्राम प्रधान की इलाज के दौरान हुई मौत

अवधनामा संवाददाता

बल्दीराय,सुल्तानपुर। विकास खंड क्षेत्र के रैंचा ग्राम प्रधान बिंद्रा प्रसाद यादव का इलाज के दौरान निधन होने से क्षेत्र में शोक की लहर व्याप्त हो गई। विकास खंड बल्दीराय के ग्राम पंचायत रैंचा के प्रधान बिंद्रा प्रसाद यादव (62) का लखनऊ के एक निजी अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया। वे पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। लखनऊ स्थित एक निजी अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। उनके निधन की खबर से पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई है। ग्रामवासियों की भारी भीड़ उनके आवास पर पहुंच रही है और लोग शोकाकुल परिवार को सांत्वना दे रहे हैं। बिंद्रा प्रसाद यादव ग्राम प्रधान होने के साथ-साथ जनमोर्चा अखबार से जुड़े एक सक्रिय पत्रकार भी थे। उनके निधन से न केवल राजनीतिक बल्कि पत्रकारिता जगत को भी गहरी क्षति पहुँची है। पत्रकार एसोसिएशन के बल्दीराय इकाई के अध्यक्ष पीर मोहम्मद की अध्यक्षता में क्षेत्र के पारा बाजार में एक शोक सभा आयोजित की गई। शोक सभा में शामिल पत्रकारों ने मिनट का मौन रखकर दिवंगत पत्रकार को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

उक्त मौके पर मुख्य रूप से वरिष्ठ पत्रकार निसार अहमद, इम्तियाज खान, सुहेल अहमद, लौलाक खान, प्रेम वर्मा सहित क्षेत्र के दर्जनों पत्रकार मौजूद रहे।

विश्व पृथ्वी दिवस पर पर्यावरण व नदी संरक्षण विषयक सांप-सीढ़ी प्रतियोगिता

अवधनामा संवाददाता

शाहजहाँपुर। जिला गंगा समिति ने प्रभागीय वनाधिकारी नवीन खण्डेलवाल के निर्देशन में वर्क संस्था के सहयोग से ऑल सेन्ट स्कूल, शाहजहाँपुर में विश्व पृथ्वी दिवस मनाया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रधानाचार्या साक्षी रस्तोगी एवं जिला परियोजना अधिकारी डा0 विनय कुमार सक्सेना ने किया। कार्यक्रम अन्तर्गत विद्यार्थियों के मध्य निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई साथ ही पर्यावरण एवं नदी संरक्षण विषयक सांप-सीढ़ी खेल खिलाया गया जिसमे खेल के साथ-साथ पर्यावरण व नदी संरक्षण के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को समझाया गया। निबन्ध प्रतियोगिता अन्तर्गत द्वैविक शुक्ला ने प्रथम, अर्शी राठौर ने द्वितीय व काव्या वर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया वही पर्यावरण व नदी संरक्षण विषयक सांप सीढ़ी प्रतियोगिता में अर्चित व काव्या विजेता रहे साथ ही मानवी व द्वैविक उप-विजेता रहे। समस्त विजयी प्रतिभागियों को प्रतीक चिन्ह, टी-शर्ट एवं चाचा चौधरी संग गंगा की बात विषयक कामिक्स देकर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि असिस्टेन्ट प्रोफेसर एस एस कॉलेज डा0 रूपक श्रीवास्तव ने पर्यावरण को बचाने हेतु छोटे-छोटे प्रयासों जैसे बिजली बचाना, जल बचाना, पेड़-पौधों को संरक्षित करना आदि से आरम्भ करने को प्रेरित किया जिससे कि छोटे प्रयासों से बड़ा परिवर्तन लाया जा सके व सम्पूर्ण पृथ्वी को बचाया जा सके। प्रधानाचार्या साक्षी रस्तोगी ने आयोजकगणों का आभार व्यक्त करते हुये युवाओं को अपने-अपने जन्मदिवस पर कम से कम 1 वृक्ष रोपित करने व उसका संरक्षण करने का संदेश दिया। वर्क संस्था के टीम लीडर मोहम्मद रेहान ने वसुधैव कुटुम्बकम की भावना के साथ सभी को अपना परिवार मानने व सभी के साथ मिलकर पृथ्वी जैसे अमूल्य गृह को बचाने हेतु आगे बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने हेतु प्रेरित किया।

दिशा द्विवेदी ने यूपीएससी में 672 वां रैंक ला कर जिले का किया नाम रोशन

सुल्तानपुर,कुड़वार। विकास खंड क्षेत्र के ऊँचगांव अजियाऊर देवी निवासी राघवेन्द्र प्रकाश द्विवेदी (पत्रकार) की भतीजी दिशा द्विवेदी पुत्री डॉ महेन्द्र प्रकाश द्विवेदी UPSC में 672 वां रैंक ला कर आपने गाँव व जिले का नाम रोशन किया। जिससे आस पास के क्षेत्रों में खुशी का माहोल है।

अज्ञात वृद्ध का शव मिला,पहचान के लिए पुलिस ने जारी की अपील

सुल्तानपुर। मंगलवार दिनांक 22.4.2025 को समय करीब 9~45 पर सूचना प्राप्त हुई कि वीसापुर मोड पकड़ी पुलिस चौकी प्रतापगंज थाना कोतवाली देहात सुल्तानपुर के पास एक अज्ञात व्यक्ति का शव मिला है।जिसकी उम्र लगभग 60 वर्ष है, जो दाहिने हाथ में सफेद कड़ा पहना हुआ है।उसके बाएं हाथ में कमला लिखा हुआ है व आसमानी कलर की फुल टीशर्ट पहन रखा है।

हज यात्रियों को रेड क्रॉस सोसाइटी ने किया सम्मानित

अवधनामा संवाददाता

शाहजहाँपुर। जनपद में हज यात्रियों की मेडिकल स्क्रीनिंग वैक्सीनेशन एवं मेडिकल प्रमाण पत्र निर्गत टीकारण कार्यक्रम किए जाने हेतु मंगलवार को अर्बन पीएससी जली कोठी की चिकित्सा टीम द्वारा पुराने जिला अस्पताल मुख्य चिकित्सा अधिकारी सभागार में आयोजित हुआ। इस अवसर पर डॉ0 विजय जौहरी सचिव इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी ने हज यात्रियों को शुभकामनाओं के साथ सम्मानित किया कि वह स्वस्थ जाए और स्वस्थ वापस आए रेड क्रॉस सोसायटी द्वारा सभी हज यात्रियों को रेड क्रॉस एवं धार्मिक स्थल काबा मदीना का प्रतीक चिन्ह पहनाकर अंग वस्त्र भेंट कर एवं मिष्ठान वितरण कर सम्मानित किया। उक्त कार्यक्रम का शुभारंभ जिला अल्पसंख्यक अधिकारी मोहम्मद खालिद द्वारा किया गया जिनमें हज यात्री जाने आलम, अब्दुल कादिर, सगीर अहमद आदि इस अवसर पर रेड क्रॉस सोसाइटी के जिला सचिव डॉ0 विजय जौहरी,खान मियां (प्लाजा लॉन), रेड क्रॉस के आजीवन सदस्य अवनी सक्सेना, अग्रज जौहरी डॉ0 उस्मान, डॉ0 फैजल, डॉ0 शाहिद, जावेद खान, अनुज जौहरी आदि लोग मौजूद रहे।

वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न

सुल्तानपुर। पृथ्वी दिवस के अवसर पर हमारी शक्ति, हमारा ब्रह्मांड थीम के अंतर्गत यूनीक फाउंडेशन सुल्तानपुर एवं पंचवटी प्ले स्कूल, अमहट के संयुक्त तत्वावधान में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 40 से अधिक पौधे रोपे गए।कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एसडीएम विदुषी सिंह रहीं। उन्होंने कहा, ÷प्रकृति का संरक्षण हमारा सामूहिक उत्तरदायित्व है। छोटे-छोटे प्रयासों से हम पृथ्वी को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित बना सकते हैं।÷ यूनीक फाउंडेशन के डॉ. अजय ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि, ÷हमारा ब्रह्मांड तभी बचेगा जब आज के बच्चे पर्यावरण के महत्व को समझेंगे और इसके संरक्षण की दिशा में प्रयासरत रहेंगे।÷पंचवटी प्ले स्कूल की ओर से डायरेक्टर कंचन कसौधन, इंचार्ज आशीष डीन एवं कोऑर्डिनेटर रजनी सिंह, परी सहित शिक्षकगण उपस्थित रहे। संस्था की अध्यक्ष अनुपमा द्विवेदी, उपाध्यक्ष विकास अग्रहरि एवं कोषाध्यक्ष अनुज गुप्ता ने पर्यावरण संरक्षण की महत्ता पर प्रकाश डाला। गौ रक्षा वाहिनी से सर्वेश सिंह सहित अभिभावकों एवं शिक्षकों ने भी बच्चों के साथ मिलकर पर्यावरण की रक्षा का संकल्प लिया। इस अवसर पर कोमल, आशुतोष, धर्मेंद्र सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

एनसीसी कैडेटों ने पोषण पखवाड़ा जागरूकता अभियान चलाया

अवधनामा संवाददाता

टूंडला। कृषक इंटर कॉलेज पचोखरा फिरोजाबाद की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयं सेवकों द्वारा पोषण पखवाड़ा जागरूकता अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान विज्ञान शिक्षक प्रदीप कौशिक ने स्वयंसेवकों से कहा कि स्वस्थ एवं संतुलित आहार के लिए ग्रामवासियों को जागरूक करना आपकी जिम्मेदारी है। सभी को प्रतिदिन 7 या 8 ग्लास पानी अवश्य पिए। संतुलित एवं पोषित आहार ले। खानपान का विशेष ध्यान रखें। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग निवास करता है। इस अवसर पर प्रधानाचार्य रंगेश कुमार उपाध्याय ने कहा कि संतुलित भोजन से कुपोषण दूर होता है। मौसमी फल, हरी सब्जियां, तरल पदार्थ, सलाद अवश्य लें एवं अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। भारत में कुपोषण संकट बना हुआ है, जो देश की भावी पीढ़ियों के भविष्य को प्रभावित करता है। हम सभी को कुपोषण दूर करने के लिए लोगों में जागरूकता फैलानी चाहिए। इस मौके पर कार्यक्रम प्रभारी सुनील कुमार जैन, सुरेश पचौरी, आलोक उपाध्याय, शीरध्वज शर्मा, हिमांशु भारद्वाज, रिचा गुप्ता, भूपेंद्र पाराशर, मुनेश बघेल, दिनेश राय, कौशल शर्मा, अमर तिवारी आदि उपस्थित रहे।

कार्यालय नगर पंचायत गोशाईगंज, अयोध्या

पत्रांक : 40/न0पं0गो0/वर्ष-2025-26 दिनांक : 22/04/2025

नगर पंचायत गोशाईगंज में नामान्तरण के लिये निम्नलिखित भवनों के सम्बन्ध में आवेदन पत्र प्राप्त हुए इन भवनो पर पूर्व से दर्ज भवन स्वामी हितबद्व को सूचित किया जाता है कि इस नामान्तरण में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो अपने प्रमाणित साक्ष्य के साथ प्रकाशित तिथि से 15 दिन के अन्दर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा की स्थिति में नामान्तरण की कार्यवाही कर दी जायेगी। जिसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व आपका होगा। जिसका विवरण निम्नवत है :-

क्रम सं.	भवन संख्या एवं वर्ष	पूर्व में दर्ज भवन स्वामी/ खारिज होने वाला नाम	दर्ज होने वाला नाम	नामान्तरण का आधार
मोहल्ला कटरा				
1	1082-2024	श्री उदय प्रताप सिंह पुत्र त्रिभुवन सिंह	श्री अनुपम सिंह व अनुप सिंह पुत्रगण स्व0 उदय प्रताप सिंह	वरासत
2	04-2024	श्री राम दुलारे गुप्ता पुत्र विन्दा प्रसाद	श्री राजेश कुमार गुप्ता, श्री संजय कुमार गुप्ता, पुत्रगण स्व0 राम दुलारे गुप्ता	वरासत
3	3291-2024	श्रीमती आशा सिंह. पत्नी स्व. सत्यवान सिंह आदि	श्रीमती आशा सिंह पत्नी स्व0 सत्यवान सिंह आदि	नक्सा स्वीकृति
मोहल्ला गोशाईगंज				
4	गाटा सं0 1137	श्री सूर्य लाल पुत्र स्व0 केशवराम	श्री सूर्य लाल पुत्र स्व0 केशवराम	नया भवन
5	379-2024	श्रीमती कैलाश पति पत्नी छेदी लाल	श्री ओम प्रकाश पुत्र छेदी लाल	वरासत

लिपिक
नगर पंचायत गोशाईगंज
अयोध्या

अधिशासी अभियन्ता
नगर पंचायत गोशाईगंज
अयोध्या

आवासों में व्यवस्थाएं पूर्ण न होने पर चार्जशीट के कड़े निर्देश

■ न्यू पीएचसी की बदहाल व्यवस्था पर चीफ फार्मासिस्ट निलम्बित

फिरोजाबाद। उसायनी में प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के तहत बने आवासों में व्यवस्थाऐं पूर्ण न होने पर विकास प्राधिकरण के ए0ई0 को चार्जशीट देने के जिलाधिकारी ने निर्देश दिए तथा न्यू पी0एच0सी0 नारखी में मिली बदहाल व्यवस्थाओं को देखते हुए चीफ फार्मासिस्ट को निलंबित करने के भी आदेश जारी किए। ग्राम पंचायत सचिवों को सरकार की योजनाओं के बारे में जानकारी न होना दुर्भाग्यपूर्ण बताया। जिलाधिकारी ने शासन की योजनाओं के संबंध में जानकारी देने के लिए मुख्य विकास अधिकारी कार्यशाला का आयोजन करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी रमेश रंजन ने आज जनपद की विभिन्न जनहितकारी कार्यों का निरीक्षण किया, जिलाधिकारी के साथ मुख्य विकास अधिकारी शत्रोहन वैश्य भी मौजूद रहें, जिलाधिकारी ने सर्वप्रथम उसायनी में 27 करोड़ की लागत से निर्मित और विकास प्राधिकरण द्वारा विकसित प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) का निरीक्षण किया, प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अंतर्गत कुल 568 आवास निर्मित किए गए हैं, परंतु भ्रमण के दौरान जिलाधिकारी ने पाया कि अभी भी यहां पर पानी, बिजली, जैसी मूलभूत सुविधाऐं उपलब्ध नहीं कराई जा सकीं हैं, यहां पर निर्मित बाथरूम में साफ-सफाई की व्यवस्था नहीं है, जिलाधिकारी इस पर अत्यंत नाराज दिखें, उन्होंने विकास प्राधिकरण के ए0ई0 को चार्जशीट देने की बात कहीं, साथ ही उन्होंने कहा कि निर्मित भवनों को जल्द ही संपूर्ण व्यवस्था कराकर लाभार्थियों को सौंपें, जिससे इसके उद्देश्य को पूरा किया जा सके। इसके पश्चात् जिलाधिकारी नारखी स्थित न्यू प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण करने गए, इस निरीक्षण के दौरान उनके साथ मुख्य चिकित्सा अधिकारी भी मौजूद रहें, जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान पाया कि यहां पर कोई डॉक्टर उपलब्ध नहीं है, साथ ही यहां पर बिजली, पानी, जैसी मूलभूत सुविधाएं भी नहीं है, यहां पर केवल मौके पर संविदा कर्मी ही मिलें, मौके पर कोई मरीज भी नहीं पाया गया, जिस पर जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 राम बदन राम को निर्देशित किया, कि यहां की बदतर व्यवस्थाओं को देखते हुए चीफ फार्मासिस्ट को तत्काल निलंबित करें, यहां पर मरीजों की उपलब्धता न होने के कारण उपलब्ध दवाओं का इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है, जिससे दवाईयां खराब या एक्सपायरी हो जा रहीं है, जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देशित किया कि सी0एच0ओ0 को यहां पर बैठाऐं, साथ ही साथ जनपद में जितनी भी न्यू पी0एच0सी0 बनी है, उनके संचालन की क्या स्थिति है, इसका निरीक्षण कर रिपोर्ट प्रस्तुत करें। इसके पश्चात् जिलाधिकारी ने ब्लॉक नारखी का निरीक्षण कर यहां पर विकास कार्यों की समीक्षा की, जिलाधिकारी ने सचिव पुष्पेंद्र, मानवेंद्र सिंह, कपिल गौतम से शासन की महत्वपूर्ण योजनाओं कन्या सुमंगला योजना, वृद्धावस्था पेंशन योजना, दिव्यांग पेंशन योजना इत्यादि के संबंध में जानकारी चाहीं, परंतु कोई भी सचिव इसका समुचित उत्तर नहीं दे पाया, जिलाधिकारी ने कहा कि यह स्थिति बेहद खराब है, अगर आप सबको ही योजनाओं की जानकारी नहीं होगी, तो आप सब इन योजनाओं के बारे में लोगों को कैसे बताएंगे, जिलाधिकारी ने मुख्य विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि सभी सचिवों को शासन की योजनाओं की जानकारी हेतु एक कार्यशाला का आयोजन करें।

करतार सिंह पौनिया बने मानवाधिकार परिषद के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव

टूण्डला। मानवाधिकार परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रशान्त गिरी ने करतार सिंह पौनिया निवासी सुजात नगर कोटकी टूण्डला फिरोजाबाद को राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव नियुक्त किया है। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रशान्त गिरी ने करतार पौनिया को बधाई और शुभकामनाएं दी, और अपनी आगे की टीम बनाने को निर्देशित किया। करतार सिंह पौनिया के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव वनाये जाने पर मानवाधिकार परिषद की पूरी टीम ने हर्ष व्यक्त किया व बधाई दी साथ ही क्षेत्रीय जनों ने भी उनको राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव बनाए जाने पर हर्ष व्यक्त कर बधाई दी। हर्ष व्यक्त करने वालों में शहजाद खान, गौरव यादव, दीपक सिंह पौनिया जीतकमल सिंह सोलंकी, ब्रजमोहन सिंह सिसोदिया आदि लोगों ने हर्ष व्यक्त किया है।

कार्यालय नगर पंचायत धौरहरा, लखीमपुर-खीरी

पत्रांक- 273/न0पं0धौ0/ई-निविदा/2024-25 दिनांक- 21 जनवरी, 2025

ई-निविदा सूचना

समस्त ठेकेदारों को सूचित किया जाता है कि वर्ष 2024-25 में नगर पंचायत धौरहरा को राज्य वित्त आयोग योजना के अन्तर्गत प्राप्त धनराशि से प्रस्तावित/स्वीकृत निर्माण कार्य कराने के लिए ई-टेण्टर पोर्टल के माध्यम से दिनांक - 22.04.2025 से दिनांक - 14.05.2025 को समय अपराह्न 12:00 बजे तक आनलाइन निविदायें आमंत्रित की जाती हैं जिनके निविदा प्रपत्र https://etender.up.nic.in पर उपलब्ध है जो निर्धारित समयान्तर्गत डाउनलोड/अपलोड किये जा सकते है, तदोपरान्त प्राप्त निविदाओं को दिनांक- 15.05.2025 को समय अपराह्न 03:00 बजे टेण्डर कमेटी द्वारा खोला जायेगा उक्त दिनांक को किसी कारणवश अवकाश पड़ने की दशा में अगले कार्य दिवस में निविदा खोली जायेगी।

नोट- कार्य का विवरण एवं निविदा से सम्बन्धित आवश्यक नियम एवं शर्तें वेबसाइट https://etender.up.nic.in पर उपलब्ध हैं।

अधिशाषी अधिकारी
नगर पंचायत धौरहरा
लखीमपुर-खीरी

अध्यक्ष
नगर पंचायत धौरहरा
लखीमपुर-खीरी

कार्यालय : ग्राम पंचायत- परसिया प्रथम विकास खण्ड- मिठवल जनपद-सिद्धार्थनगर

पत्रांक-मेमो/निविदा/सामग्री आपूर्ति-वित्तीयवर्ष2025-26/ दिनाँक-22.04.2025

अल्पकालीन निविदा आपूर्ति सूचना

ग्राम पंचायत परसिया प्रथम विकास खण्ड- मिठवल द्वारा महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना/पंचम राज्य वित्त/पंद्रहवा केन्द्रीय वित्त/राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान/स्वच्छ भारत मिशन/एकीकृत बाल विकास योजना/ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन/ODF प्लस एवं अन्य सभी योजनाओं से प्राप्त अनुदान निधि योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 में स्वीकृत तथा कराये जाने वाले कार्यो हेतु प्रथम श्रेणी ईट, इण्टर लाकिंग ईट, बालू, सीमेन्ट, मोरंग, सरिया, पेन्ट, टायल, वायरिंग, पत्थर, बोर्ड, ईट का टुकड़ा, पत्थर की गिट्टी, ह्यूमपाइप, स्ट्रीट लाइट, सोलर लाइट, हैण्डपम्प मरम्मत में प्रयुक्त सामग्री, हार्डबेयर की सामाग्री, डस्टबीन, आफिस उपयोग हेतु सभी सामाग्री, प्रशासनिक कार्यो मे उपयोग हेतु सभी सामाग्री, ग्राम पंचायत के साफ सफ़ाई से संबंधित सभी सामाग्री एवं ग्राम पंचायत मे उपयोग होने वाली अन्य सभी सामाग्री इत्यादि की आपूर्ति हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता जो आयकर एवं व्यापारकर में पंजीकृत हो फर्म त्नस्ञ्ज के अन्तर्गत रजिस्टर हो, के द्वारा प्रकाशन के दिनांक से लेकर दिनांक 28-04-2025 तक अपरान्ह 12 बजे तक सामग्री आपूर्ति हेतु अपनी निविदा दर तथा वांछित प्रपत्र बन्द लिफाफे में ग्राम पंचायत कार्यालय परसिया प्रथम के निविदा बाक्स/ग्राम पंचायत में ड़ाली जायेगी। निविदा दिनांक 28-04-2025 अपरान्ह 2 बजे ग्राम पंचायत कार्यालय में खोली जायेगी तथा समस्त औपराचिकताएं पूर्ण की जायेंगी। धरोहर की राशि मु0-5000/रूपये (पाँच हजार) होगी।

नियम व शर्ते :-

1.जिस आपूर्तिकर्ता की दर सबसे कम होगी उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराये जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा।
2.आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स मे रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है तथा वह आयकर देता हो। प्रमाणित प्रति संलग्न करना अनिवार्य है तथा तीन वर्ष का आयकर क्लीयरेन्स संलग्न करना होगा।
3.ग्राम पंचायत/ग्राम प्रधान द्वारा नामित अधिकारी/कर्मचारियों द्वारा आपूर्तिकर्ताओ की उपस्थिति में टेन्डर खोला जायेगा।
4.सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत के परिधि में स्वीकृत दर से निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी।
5.प्रस्तुत दरें वैट तथा कार्टेज चार्ज तथा अन्य कर जोड़कर प्रस्तुत की जाये।
6.सामग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत/ग्राम प्रधान के आदेश पर ही की जायेगी।
7.सामग्री की मात्रा घटायी या बढ़ायी जा सकती है।
8.प्रस्तुत दरें पी0डब्लू0डी0 द्वारा स्वीकृत दर से अधिक मान्य नहीं होगी।
9.आपूर्तिकर्ता को 2.24 प्रतिशत आयकर देना होगा।
10.ग्राम पंचायत के ग्राम प्रधान, सचिव, सदस्य, बीडीसी, जिला पंचायत, तकनीकी सहायक आदि कर्मचारियों के सगे सम्बन्धी एवं रिश्तेदार द्वारा दरें प्रस्तुत नहीं किये जायेंगे। उक्त आशय की नोटरी, शपथ पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
11.सीमेंट की आपूर्ति हेतु संबंधित के पास डीलरशिप/एजेंसी होना अनिवार्य है अन्यथा की दशा में आपूर्तिकर्ता को आपूर्ति हेतु खरीदी गई सीमेंट का पक्का बिल प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा।
12.निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत सचिव/ग्राम प्रधान के पास होगा।
13.स्वीकृत आपूर्तिकर्ता को भुगतान तकनीकी सहायक/अवर अभियन्ता द्वारा सामग्री की गुणवक्ता प्रमाणित होने तथा मापन के उपरान्त किया जायेगा। गुणवत्ता खराब होने पर भुगतान नहीं किया जायेगा।
14.धरोहर की धनराशि नकद, राष्ट्रीयकृत बैंक के एफडीआर एवं डाकघर बचत पत्र के रूप में ग्राम पंचायत परसिया प्रथम के नाम बन्धक हो, संलग्न करना अनिवार्य है।
15.आपूर्ति दर स्वीकृत होने तथा ग्राम पंचायत द्वारा आपूर्ति आदेश देने के सात दिवस के अन्दर सामग्री आपूर्ति न करने की दशा में धरोहर राशि जब्त कर ली जायेगी।
16.निविदा फार्म ग्राम पंचायत परसिया प्रथम कार्यालय से प्राप्त प्रपत्र जिसका मूल्य 100 रूपया है, पर ही स्वीकार किया जायेगा।
17.सामाग्री की आपूर्ति के संबंध में शर्ते व अन्य जानकारी किसी भी कार्यदिवस में ग्राम पंचायत परसिया प्रथम के कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
नोट :- निविदा का भुगतान फर्म मे ही किया जाएगा तथा निविदा उपरोक्तानुसार शब्दसह प्रकाशित न होने पर ग्राम पंचायत के द्वारा भुगतान करना सम्भव नही होगा।

प्रधान - शिवशहाय चौरसिया
ग्राम पंचायत - परसिया प्रथम
वि.ख.-मिठवल, सिद्धार्थनगर।

सचिव - राजेश चौधरी
ग्राम पंचायत - परसिया प्रथम
वि.ख.-मिठवल, सिद्धार्थनगर।

कार्यालय : ग्राम पंचायत- परसिया प्रथम विकास खण्ड- बांसी जनपद-सिद्धार्थनगर

पत्रांक-मेमो/निविदा/सामग्री आपूर्ति-वित्तीयवर्ष2025-26/ दिनाँक-22.04.2025

अल्पकालीन निविदा आपूर्ति सूचना

ग्राम पंचायत फूलपुर विकास खण्ड- बांसी द्वारा महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना/पंचम राज्य वित्त/पंद्रहवा केन्द्रीय वित्त/राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान/स्वच्छ भारत मिशन/एकीकृत बाल विकास योजना/ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन/ODF प्लस एवं अन्य सभी योजनाओं से प्राप्त अनुदान निधि योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 में स्वीकृत तथा कराये जाने वाले कार्यो हेतु प्रथम श्रेणी ईट, इण्टर लाकिंग ईट, बालू, सीमेन्ट, मोरंग, सरिया, पेन्ट, टायल, वायरिंग, पत्थर, बोर्ड, ईट का टुकड़ा, पत्थर की गिट्टी, ह्यूमपाइप, स्ट्रीट लाइट, सोलर लाइट, हैण्डपम्प मरम्मत में प्रयुक्त सामग्री, हार्डबेयर की सामाग्री, डस्टबीन, आफिस उपयोग हेतु सभी सामाग्री, प्रशासनिक कार्यो मे उपयोग हेतु सभी सामाग्री, ग्राम पंचायत के साफ सफ़ाई से संबंधित सभी सामाग्री एवं ग्राम पंचायत मे उपयोग होने वाली अन्य सभी सामाग्री इत्यादि की आपूर्ति हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता जो आयकर एवं व्यापारकर में पंजीकृत हो फर्म त्नस्ञ्ज के अन्तर्गत रजिस्टर हो, के द्वारा प्रकाशन के दिनांक से लेकर दिनांक 25-04-2025 तक अपरान्ह 02 बजे तक सामग्री आपूर्ति हेतु अपनी निविदा दर तथा वांछित प्रपत्र बन्द लिफाफे में ग्राम पंचायत कार्यालय फूलपुर के निविदा बाक्स/ग्राम पंचायत में ड़ाली जायेगी। निविदा दिनांक 28-04-2025 अपरान्ह 03 बजे ग्राम पंचायत कार्यालय में खोली जायेगी तथा समस्त औपराचिकताएं पूर्ण की जायेंगी। धरोहर की राशि मु0-5000/रूपये (पाँच हजार) होगी।

नियम व शर्ते :-

1.जिस आपूर्तिकर्ता की दर सबसे कम होगी उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराये जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा।
2.आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स मे रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है तथा वह आयकर देता हो। प्रमाणित प्रति संलग्न करना अनिवार्य है तथा तीन वर्ष का आयकर क्लीयरेन्स संलग्न करना होगा।
3.ग्राम पंचायत/ग्राम प्रधान द्वारा नामित अधिकारी/कर्मचारियों द्वारा आपूर्तिकर्ताओ की उपस्थिति में टेन्डर खोला जायेगा।
4.सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत के परिधि में स्वीकृत दर से निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी।
5.प्रस्तुत दरें वैट तथा कार्टेज चार्ज तथा अन्य कर जोड़कर प्रस्तुत की जाये।
6.सामग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत/ग्राम प्रधान के आदेश पर ही की जायेगी।
7.सामग्री की मात्रा घटायी या बढ़ायी जा सकती है।
8.प्रस्तुत दरें पी0डब्लू0डी0 द्वारा स्वीकृत दर से अधिक मान्य नहीं होगी।
9.आपूर्तिकर्ता को 2.24 प्रतिशत आयकर देना होगा।
10.ग्राम पंचायत के ग्राम प्रधान, सचिव, सदस्य, बीडीसी, जिला पंचायत, तकनीकी सहायक आदि कर्मचारियों के सगे सम्बन्धी एवं रिश्तेदार द्वारा दरें प्रस्तुत नहीं किये जायेंगे। उक्त आशय की नोटरी, शपथ पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
11.सीमेंट की आपूर्ति हेतु संबंधित के पास डीलरशिप/एजेंसी होना अनिवार्य है अन्यथा की दशा में आपूर्तिकर्ता को आपूर्ति हेतु खरीदी गई सीमेंट का पक्का बिल प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा।
12.निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत सचिव/ग्राम प्रधान के पास होगा।
13.स्वीकृत आपूर्तिकर्ता को भुगतान तकनीकी सहायक/अवर अभियन्ता द्वारा सामग्री की गुणवक्ता प्रमाणित होने तथा मापन के उपरान्त किया जायेगा। गुणवत्ता खराब होने पर भुगतान नहीं किया जायेगा।
14.धरोहर की धनराशि नकद, राष्ट्रीयकृत बैंक के एफडीआर एवं डाकघर बचत पत्र के रूप में ग्राम पंचायत फूलपुर के नाम बन्धक हो, संलग्न करना अनिवार्य है।
15.आपूर्ति दर स्वीकृत होने तथा ग्राम पंचायत द्वारा आपूर्ति आदेश देने के सात दिवस के अन्दर सामग्री आपूर्ति न करने की दशा में धरोहर राशि जब्त कर ली जायेगी।
16.निविदा फार्म ग्राम पंचायत फूलपुर कार्यालय से प्राप्त प्रपत्र जिसका मूल्य 100 रूपया है, पर ही स्वीकार किया जायेगा।
17.सामाग्री की आपूर्ति के संबंध में शर्ते व अन्य जानकारी किसी भी कार्यदिवस में ग्राम पंचायत फूलपुर के कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
नोट :- निविदा का भुगतान फर्म मे ही किया जाएगा तथा निविदा उपरोक्तानुसार शब्दसह प्रकाशित न होने पर ग्राम पंचायत के द्वारा भुगतान करना सम्भव नही होगा।

प्रधान - सुनिता
ग्राम पंचायत - फूलपुर
वि.ख.-बांसी, सिद्धार्थनगर।

सचिव - शेषदत्त मिश्र
ग्राम पंचायत - फूलपुर
वि.ख.-बांसी, सिद्धार्थनगर।

वर्ल्ड अर्थ डे पर नारायन कालेज के बच्चों ने किया जागरूक

अवधनामा ब्यूरो

इटावा। नारायन कालेज ऑफ साइंस एण्ड आर्ट्स में ''वर्ल्ड अर्थ डे''के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें नर्सरी से कक्षा 2 तक के बच्चों ने ''आओ अपना देश बचायें'' थीम पर विभिन्न रंगो के माध्यम से अपनी नन्हीं कल्पनाओं को उजागर किया।

कक्षा 3 से कक्षा 8 के बच्चां ने''सेव अर्थ''थीम पर ड्राइंग कम्पटीशन तथा पोस्टर मेकिंग कम्पटीशन में भाग लिया तथा प्रकृति और पृयावरण से सम्बन्धित विभिन्न चित्र बनाये। कक्षा 9 से कक्षा 12 के बच्चों ने''सेव अर्थ''थीम पर ही इण्टर हाउस भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया तथा अपने विचारों के माध्यम से टेगोर सभागार में उपस्थित छात्र-छात्राओं को जागरूक किया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य डा.धर्मेन्द्र शर्मा ने बच्चों को सम्बोधित करते हुये कहा कि हमें प्लास्टिक की चीजों का प्रयोग न करके मिट्ठी, कागज़, जूट आदि से बनी चीज़ों को प्रयोग करना चाहिये, जिससे पर्यावरण को दूषित होने से बचाया जा सके। उनहोने बताया कि विश्व पृथ्वी दिवस ग्लोबल स्तर पर 190 से भी अधिक देशों द्वारा मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि इस दिन हम लोगों को जलवायु परिवर्तन के कारणों तथा उससे निदान पाने के सम्बन्ध में जागरूक करते हैं। साथ ही उन्होने कहा कि प्लास्टिक जैसे हानिकारक पदार्थ का प्रयोग हमें रोक देना चाहिये तथा वृक्षारोपण के द्वारा पर्यावरण को संरक्षित करके पृथ्वी को बचाने का संकल्प लेना चाहिये। इण्टर हाउस भाषण प्रतियोगिता में यूनिटी हाउस के छात्र वंश दुबे एवं आर्यान्शी त्रिपाठी प्रथम, फेथ हाउस के छात्र अविरल अग्निहोत्री एवं फलोरिश वर्मा द्वितीय तथा डिसिपिलिन हाउस के छात्र आदित्य जोशी एवं अग्रिमा दीक्षित तृतीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय की सी.सी.ए.इंचार्ज प्रियल अग्रवाल एवं ऋतु कनौजिया, हाउस कोर्डिनेटर एंजिल तोमर तथा टोनी सायमन आदि का विशेष योगदान रहा।

सर्वसम्मति से प्रेस क्लब डाला के अध्यक्ष बने शशी चौबे

अवधनामा संवाददाता

डाला/सोनभद्र। स्थानीय नगर में सोमवार को प्रेस क्लब डाला की एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। बैठक वरिष्ठ पत्रकार डॉ.बी.पी. शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ इस बैठक मे प्रेस क्लब के भविष्य और संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करने पर गहन चर्चा हुई। बैठक मे शशी चौबे जी को सर्वसम्मति से प्रेस क्लब डाला के अध्यक्ष के रूप में चयन हुआ।सभी उपस्थित सदस्यों ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष शशी चौबे को नई जिम्मेदारी के लिए बधाई व मुबारकबाद दी। बैठक में प्रेस क्लब के सदस्यों ने स्थानीय पत्रकारिता को लेकर सभी ने अपने विचार व्यक्त किया सदस्यों ने अपने विचार साझा करते हुए प्रेस क्लब को एक सशक्त मंच के रूप में स्थापित करने की बात कही। इस दौरान नव निर्वाचित अध्यक्ष शशी चौबे ने अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करते हुए कहा कि वे प्रेस क्लब डाला को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने सभी से सहयोग की अपील करते हुए कहा कि पत्रकारिता के माध्यम से डाला और अन्य आस पास के क्षेत्र में विकास के प्रति योगदान देना उनकी प्राथमिकता होगी। वरिष्ठ पत्रकार डॉ.बी.पी. शर्मा ने शशी चौबे के चयन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्रेस क्लब को पत्रकारिता के क्षेत्र में सभी सदस्यों से एकजुट होकर संगठन के लिए कार्य करने का आह्वान किया। बैठक में प्रेस क्लब के सदस्यों ने भी नई कार्ययोजना पर विचार-विमर्श किया।इस मौके पर वरिष्ठ पत्रकार डाक्टर बी पी शर्मा,राज किशोर गुप्ता, योगेश कृष्ण, सुरेश नारायण सिंह, डा.एके.गुप्ता,अशोक चौबे, गुड्डू पटेल, शहनवाज शाह, अभिषेक शर्मा, शशि चौबे,शोएब अहमद आदि लोग मौजूद रहे।

निर्विरोध: कामना सिंह महिला शिक्षक संघ की जिलाध्यक्ष व अर्चना चौधरी जिला महामंत्री बनी

वहाज अली निहाल

इटावा। महिला शिक्षक संघ की जिला मीडिया प्रभारी श्वेता चंदेल ने जानकारी देते हुए बताया कि राजकीय इंटर कॉलेज के सभागार में महिला शिक्षक संघ के द्वारा महिला शिक्षक संघ का प्रथम अधिवेशन तथा शैक्षिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें अखिल भारतीय महिला शिक्षक संघ की राष्ट्रीय एवं प्रदेश अध्यक्ष सुलोचना मौर्य, सदर विधायक सरिता भदौरिया, मंडल अध्यक्ष रुचि त्रिवेदी, मैनपुरी अध्यक्ष प्रिया चौहान, एसएसपी की पत्नी नीलम राय, विनीता गुप्ता प्रदेश कार्यसमिति सदस्य भाजपा महिला मोर्चा, कवयित्री रिचा राय, नमिता तिवारी समस्त जिला कार्यकारिणी, ब्लॉक अध्यक्ष तथा ब्लाक कार्यकारिणी और दो सैकड़ा महिला शिक्षक सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन तथा स्वागत गीत से हुआ। सभी को तिलक वंदन पट्टिका माला अर्पण कर सम्मानित किया गया। कामना सिंह को निर्विरोध महिला शिक्षक संघ का जिलाध्यक्ष तथा अर्चना चौधरी को जिला महामंत्री के रूप में चयनित किया गया। सभी लोगों ने कर तल ध्वनि से अपना समर्थन दिया। सभी महिला शिक्षकों के बीच खुशी की लहर दौड़ गई। कामना सिंह तथा अर्चना चौधरी को बधाई देने वालों का तांता लग गया। कार्यक्रम में जिला कार्यकारिणी की घोषणा हुई और उनको प्राधिकार पत्र वितरित किए गए औरअंत में सभी अतिथियों को प्रतीक चिन्ह देकर कार्यक्रम का समापन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन जिला कार्यकारिणी की उपाध्यक्ष अर्चना पांडे तथा ब्लाक कार्यकारिणी की कुसुम शर्मा के द्वारा किया गया। अंत में कार्यक्रम की जिला संयोजक मीनाक्षी पांडे के द्वारा महिला शिक्षक संघ के बारे में विस्तार से बताया गया तथा उसके उद्देश्य और कार्यों के बारे में भी चर्चा की गई अंत में उन्होंने सबका धन्यवाद प्रेषित किया और एक बहुत ही सुनियोजित तथा उत्कृष्ट कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की गई।

राठ पुलिस ने जुआरियों पर की बड़ी कार्रवाई

हमीरपुर। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में अपराध नियंत्रण अभियान के तहत राठ थाना पुलिस ने जलालपुर रोड पर राजेंद्र गुप्ता के मकान में जुआ खेल रहे 8 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया। मौके से 1,03,000 रुपये (मालफड़), 9,000 रुपये (जामातलाशी), कुल 1,12,000 रुपये और 52 ताश के पत्ते बरामद किए गए। **गिरफ्तार अभियुक्त:** राजेंद्र गुप्ता (50), पठानपुरा, राठ, धनपत सिंह (50), पठानपुरा, राठ मोहित कुमार (33), कुल्हेड़ा, मझगवां, नीरज कुमार (45), बुधौलियाना, राठ, सुरेश (55), पठानपुरा, राठ, अमरकांत (26), इटैलिया बाजा, जरिया, दर्शन यादव (35), मगरौल, जरिया महेंद्र (38), मगरौल, जरिया, बरामदगी: मालफड़: 1,03,000 रुपये, जामातलाशी: 9,000 रुपये, कुल: 1,12,000 रुपये, ताश के पत्ते: 52, पुलिस कार्रवाई:, थाना राठ में मुकदमा संख्या 182/2025, धारा 3/4 सार्वजनिक जुआ अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर वैधानिक कार्रवाई शुरू। गिरफ्तारी टीम: उपनिरीक्षक विनेश गौतम, उपनिरीक्षक मनोज पाण्डेय, कांस्टेबल जितेंद्र यादव, कांस्टेबल अंशुल सिंह, पुलिस का यह अभियान क्षेत्र में अपराध और जुआ जैसी गतिविधियों पर अंकुश लगाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

एसएमजीआई के छात्रों का मैक्लॉइड्स फार्मास्युटिकल्स में चयन

अवधनामा ब्यूरो

इटावा। एसएमजीआई के फार्मेसी विभाग द्वारा आयोजित प्लेसमेंट ड्राइव में बी.फार्मा और डी.फार्मा के चार छात्रों का चयन देश की प्रतिष्ठित फार्मा कंपनी मैक्लॉइड्स फार्मास्युटिकल्स में किया गया है।

चयनित छात्रों में अभय सिंह भदौरिया, अमन तिवारी, अंशु शाक्य और आलोक कुमार प्रमुख हैं इन चारों छात्रों को प्रोडक्शन और क्वालिटी कंट्रोल विभाग में अच्छे वेतन पैकेज के साथ नियुक्ति मिली है। संस्थान के निदेशक डॉ. उमा शंकर शर्मा ने बच्चों की इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि, यह सफलता छात्रों की मेहनत और संस्थान की गुणवत्तापूर्ण उत्कृष्ठ शिक्षा व्यवस्था का ही परिणाम है उन्होंने बताया कि, सभी चयनित छात्रों को कंपनी की ओर से नियुक्ति पत्र भी प्राप्त हो चुका है। उन्होंने चयनित छात्रों को उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। संस्थान के चेयरमैन डॉ.विवेक यादव ने इस प्लेसमेंट ड्राइव के सफल आयोजन और छात्रों के चयन के लिए संस्थान के निदेशक सहित सभी स्टाफ को बधाइयाँ दीं ओर कंपनी के अधिकारियों में गोविंद सिंह(सीनियर मैनेजर, कॉर्पोरेट रोल्स) सुनील कुमार (मैनेजर) एवं वैभव शुक्ला (जूनियर ऑफिसर, मैक्लॉइड्स फार्मास्युटिकल्स) का संस्थान के छात्रों को कम्पनी में चयन के लिए विशेष आभार व्यक्त किया।

डीएम ने सुनी शिकायतें

हमीरपुर। जिलाधिकारी घनश्याम मीना ने कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनसुनवाई कर जन सामान्य की शिकायतों को सुना एवं संबंधित अधिकारियों को प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण करने के निर्देश दिए। जनसुनवाई में लगभग 90 शिकायते प्राप्त हुई जिनमें से अधिकांश का जिलाधिकारी ने त्वरित ढंग से मौके पर निस्तारण कर दिया। शेष शिकायतों के निस्तारण हेतु जिलाधिकारी ने समस्त एसडीएम , खंड विकास अधिकारी व अन्य संबंधित अधिकारियों के साथ वर्चुअल/ जूम एप के माध्यम से बैठक कर उनके तत्काल निस्तारण हेतु निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि सभी एसडीएम ,बीडीओ व अन्य संबंधित अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से अपने कार्यालय में जनसुनवाई कर जन समस्याओं का त्वरित ढंग से निस्तारण किया जाए इसमें किसी भी तरह किसी शिथिलता न बरती जाए। जिलाधिकारी ने कहा की जनसुनवाई, आईजीआरएस व अन्य माध्यमों से प्राप्त होने वाले प्रकरणों का सभी संबंधित अधिकारियों द्वारा मौके पर जाकर गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारण कर उसकी समय से आख्या दी जाए।

163 नवचयनित आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को मिले नियुक्ति पत्र

पारदर्शी चयन प्रक्रिया की सराहना

अवधनामा संवाददाता

हमीरपुर। जनपद हमीरपुर के अंतर्गत 8 बाल विकास परियोजनाओं में 163 आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के पदों के लिए 21 सितंबर 2024 को जारी ऑनलाइन विज्ञप्ति के तहत चयन प्रक्रिया पूरी पारदर्शिता के साथ संपन्न हुई। आज, 22 अप्रैल 2025 को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम सभागार, हमीरपुर में आयोजित एक गरिमामय समारोह में नवचयनित आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए गए। नियुक्ति पत्र वितरण समारोह में सदर विधायक मनोज कुमार प्रजापति और राठ विधानसभा की विधायक मनीषा अनुरागी ने नवचयनित कार्यकर्ताओं को अपने करकमलों से नियुक्ति पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर जिलाधिकारी घनश्याम मीना, चयन समिति के अध्यक्ष चंद्र शेखर शुक्ला, जिला समाज कल्याण अधिकारी, जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी और सदस्य/सचिव शैलेंद्र प्रताप सिंह, जिला कार्यक्रम अधिकारी सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। चयन प्रक्रिया की पारदर्शिता और निष्पक्षता की सराहना करते हुए विधायकों ने नवचयनित कार्यकर्ताओं को बधाई दी और उनके कार्यों के माध्यम से बाल विकास और पोषण योजनाओं को मजबूती प्रदान करने का आह्वान किया। जिलाधिकारी घनश्याम मीना ने कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की भूमिका बच्चों, गर्भवती महिलाओं और धात्री माताओं के कल्याण में अहम है, और नवचयनित कार्यकर्ताओं से पूरी निष्ठा के साथ दायित्व निर्वहन की अपेक्षा की। यह समारोह न केवल नवचयनित कार्यकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण था, बल्कि जिले में बाल विकास सेवाओं को और सुदृढ़ करने की दिशा में एक सकारात्मक कदम भी साबित हुआ।

संक्षिप्त समाचार

डीएम, एसएसपी ने केंद्रीय कारागार इटावा का किया निरीक्षण

इटावा, अवधनामा ब्यूरो। जिलाधिकारी शुभ्रान्त कुमार शुक्ल एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संजय कुमार वर्मा द्वारा केंद्रीय कारागार इटावा का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कैदियों की बैरिक, भोजनालय, चिकित्सालय आदि का निरीक्षण कर संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। इस दौरान जेल प्रशासन, पुलिस तथा प्रशासन के अन्य अधिकारी/कर्म.गण उपस्थित रहे।

सांसद जितेंद्र दोहरे ने इटावा रेलवे स्टेशन पर हो निर्माण कार्यो का किया औचक निरीक्षण

इटावा, अवधनामा ब्यूरो। रेलवे स्टेशन पर हो निर्माण कार्यो का औचक निरीक्षण करने पहुंचे सांसद जितेंद्र दोहरे ने रेलवे के अधिकारियों से वार्ता कर रामनगर फाटक रेलवे ओवर ब्रिज की गुणवत्ता, समय सीमा, रेलवे स्टेशन और उसके आस पास व्याप्त गन्दगी की सफाई तथा इटावा रेलवे स्टेशन पर राजधानी एक्स्प्रेस, अजमेर सियालदह एक्स्प्रेस, इटावा से भिंड रतलाम उज्जैन एक्स्प्रेस, इटावा से माता वैष्णो देवी जी के लिए जम्बू तवी एक्स्प्रेस ट्रेनों के ठहराव और नव निर्मित तीन मंजिल भवन में केंटीन, हाल और टिकट बुकिंग काउंटर से सम्बंधित महत्वपूर्ण विषय पर वार्ता कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। इस अवसर पर रेलवे अधिकारी आर पी सिंह ADEN, अरविंद यादव ADST, जे के दुबे AXEN, अमर गुप्ता RE/GSU, पुरनमल मीणा SS, नरेश मीणा CMI, प्रशांत तिवारी TI, अभिषेक कुमार सैनी SSE WORK /GSU, कमलेश पंडित SSàß WORK, रवि प्रकाश SSE WORKS/GSU, विक्की गुप्ता प्रवक्ता/ मीडिया प्रभारी, राजकुमार गौतम, रोहित जाटव, अन्नू पाल, मिथुन पाण्डे, पंकज कन्हैया आदि साथ रहे। यह जानकारी विकास विक्की गुप्ता सांसद मीडिया प्रभारी ने दी है।

सादा निकाह अपनाएं, फ़िज़ूलख़र्ची से बचें: इमरान

इटावा, अवधनामा ब्यूरो। जमीयत-उर-राईन कमेटी के युवा शहर अध्यक्ष मोहम्मद इमरान राईन ने राईन समुदाय से सादा निकाह को अपनाने की पुरज़ोर अपील करते हुए कहा कि इस्लाम में निकाह को एक पाक और आसान इबादत करार दिया गया है, न कि दिखावे और फिजूल खर्ची का मैदान। मोहम्मद इमरान राईन ने कहा आज हमारे समाज में निकाह को इतना मुश्किल बना दिया गया है कि ग़रीब तबके के लिए यह एक बोझ बन गया है। हमें चाहिए कि हम नबी की सीरत से सबक लें, जिन्होंने अपनी बेटी हज़रत फातिमा का निकाह बेहद सादगी से किया था। सादा निकाह के लाभों पर ज़ोर देते हुए, उन्होंने कहा कि इससे फिजूलखर्ची रुकेगी, ग़रीब परिवारों को राहत मिलेगी, नौजवानों की शादियां आसान होंगी और समाज में बराबरी और भाईचारा बढ़ेगा। उन्होंने राईन समुदाय से अपील की कि वे इस नेक पहल का हिस्सा बनें और इस्लामी उसूलों के मुताबिक निकाह को आसान और सादा बनाकर समाज में एक अच्छा उदाहरण पेश करें।

संगठन की मजबूती के लिए अभय शुक्ला बने जिला अध्यक्ष

हमीरपुर। हमीरपुर स्थित माँ चौरा देवी के प्रांगण में सनातन धर्म सेना के सदस्यों और राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारियों के साथ हुई बैठक मे अभय शुक्ला को सनातन धर्म सेना का हमीरपुर जिला अध्यक्ष नियुक्त किया गया है जनसेवा को समर्पित और हमीरपुर के विभिन्न वर्गों में लोकप्रिय सनातन धर्म सेना के सदस्यों को पदाधिकारियों ने विभिन्न पद देकर संगठन को मजबूत करने का आव्हान किया है हमीरपुर जनपद में युवाओं के बीच लोकप्रिय अभय शुक्ला को हमीरपुर जिला अध्यक्ष बनाया गया वही घंटों तक चली इस बैठक मे संगठन को मजबूत करने को लेकर चर्चा की गई जिसमें संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंकज यादव कोषाध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह, रोहित तिवारी, दीपक मिश्रा, बृजेश शुक्ला, गगन मिश्रा, रजोल मिश्रा, अभिषेक मिश्रा, अवधेश मिश्रा सहित कई दर्जन संगठन के पदाधिकारी और सदस्य मौजूद रहे

एनटीपीसी सिंगरौली के बाल भवन वार्षिक उत्सव में बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुतियों से बिखेरे रंग

सोनभद्र/शक्तिनगर। एनटीपीसी सिंगरौली के वनिता समाज द्वारा संचालित बाल भवन का वार्षिक उत्सव दिनांक 20 अप्रैल 2025 की शाम स्थानीय मनोरंजन केंद्र ऑडिटोरियम में हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम का शुभारंभ एनटीपीसी सिंगरौली के परियोजना प्रमुख राजीव अकोटकर द्वारा दीप प्रज्वलन एवं एनटीपीसी गीत के साथ किया गया। बाल भवन प्रभारी वंदना यादव ने अपने स्वागत संबोधन में बाल भवन की उपलब्धियों की जानकारी दी तथा अभिभावकों के सहयोग हेतु आभार प्रकट किया। उन्होंने बताया कि बाल भवन द्वारा हजारों बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा दी गई है और वर्तमान में 70 बच्चे यहाँ शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इस वर्ष का वार्षिकोत्सव ÷उत्सव÷ शीर्षक पर आधारित था, जिसमें भारतीय कैलेंडर के प्रमुख पर्वों ङ्क होली, ईद, दीपावली, स्वतंत्रता दिवस आदि पर आधारित गीत, नृत्य और नाट्य प्रस्तुतियाँ शामिल रहे। बच्चों की मनमोहक प्रस्तुतियों ने दर्शकों का दिल जीत लिया।

हिण्डाल्को में मनाया गया विश्व पृथ्वी दिवस

अवधनामा संवाददाता

सोनभद्र/रेणुकूट। हर वर्ष दिनांक 22 अप्रैल को मनाया जाने वाला 'विश्व पृथ्वी दिवस', हिण्डाल्को, रेणुकूट में पूरे जोश से मनाया गया। हिण्डाल्को इन्वायरमेंट सेल द्वारा हिण्डाल्को मानव संसाधन भवन लॉन में आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के मुखिया समीर नायक, क्लस्टर एच.आर. हेड जसबीर सिंह सहित बड़ी संख्या में वरिष्ठ अधिकारियों एवं सहकर्मियों ने भाग लिया। इस वर्ष की पृथ्वी दिवस की थीम ''हमारी शक्ति-हमारा ग्रह'' के अनुरूप सभी ने पृथ्वी को अधिक से अधिक पौधरोपण कर हरा-भरा रखने तथा पेड़ लगाकर, प्लास्टिक का प्रयोग कम करके, ऊर्जा की बचत एवं प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर हम भी इस अभियान में अपना योगदान सुनिश्चित करने का अपना संकल्प दोहराया। इस मौके पर जागरुकता रैली का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर इन्वारमेंट सेल के प्रमुख सत्यजीत आचार्या ने हिण्डाल्को में पर्यावरण को संरक्षित करने हेतु किये जा रहे प्रयासों के बारे में बताया। साथ ही वार्षिक पौधरोपण के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी। वहीं इस मौके पर समीर नायक ने कहा कि विश्व पृथ्वी दिवस पर ही नहीं बल्कि हर दिन हम सभी को सकारात्मक बदलाव लाने में अपनी भूमिका का निर्वहन सुनिश्चित करना होगा तभी हम इस धरा को हरा- भरा रखने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। हमारा उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना, प्रदूषण को कम करना, प्राकृतिक संसाधनों की बचत और उचित उपयोग, रीसायक्लिंग को बढ़ावा देना और पेड़-पौधों को लगाकर धरती को हरा-भरा बनाना है।

फर्स्ट जिला एथलेटिक मीट हुआ समापन

अवधनामा संवाददाता

सोनभद्र/सिंगरौली। सोमवार को एनसीएल की निगाही परियोजना स्थित ग्राउंड मे 1st जिला एथलेटिक मीट अंडर 14 ×16 बालक/ बालिका, जिला खेल एवं युवा कल्याण, एनसीएल, एनटीपीसी एवं जिला एथलेटिक्स संघ के समन्वय से संपन्न हुआ। इस एथलेटिक मीट में 240 बालक/ बालिकाओ ने अपनी अपनी प्रतिभाओ का जौहर दिखाया, साथ ही साथ जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत संदेश दिया गया जल को संयोजित रखने के तरीकों के बारे में भी उपस्थित सभी को जागरूक किया गया। ये स्पर्धाएं हुई, ये रहे अतिथि प्रतियोगिता के दौरान अंडर-14 में 60 मी. दौड़, किड्स जेवलिन, लॉन्ग जंप, हाई जंप व अन्य गेम्स आयोजित किए गए। इसी प्रकार से अंडर-16 में 600 मी. दौड़, 60 मी. दौड़, शॉटपुट, हाई जंप, जेवलीन थ्रो व अन्य गेम्स का भी आयोजन किया गया। इस दौरान प्रतियोगिता में बतौर मुख्य अतिथि जिला पंचायत के अतिरिक्त कार्यपालन अधिकारी, अनुराग मोदी उपस्थित रहे एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में महाप्रबंधक (निगाही), सुमन सौरभ, स्टाफ अधिकारी (एचआर), गौरव वाजपेयी, प्राचार्य (डीपीएस निगाही), सुखवंत सिंह थापर, उप प्रबंधक (एचआर), आदित्य द्विवेदी और नेहरू शताब्दी चिकित्सालय से डॉ. सुखसागर वैश्य उपस्थित रहे।

इस दौरान अतिथियों ने खिलाड़ियों से मुलाकात कर आगामी 17 से 21 जून 2025 तक) तिरुपति, आंध्र प्रदेश में आयोजित राष्ट्रीय अंतर जिला एथलेटिक मीट (NIDJAM के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित की।

आंध्रप्रदेश में होगी राष्ट्रीय प्रतियोगिता- सोमवार को आयोजित हुई इस जिला स्तरीय प्रतियोगिता के विजेताओं को सीधे राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में हिस्सा लेने का मौका मिलेगा। ये सभी आंध्रप्रदेश के तिरूपति में 17 से 21 जून तक आयोजित होने वाली राष्ट्रीय अंतर जिला एथलेटिक्स मीट (NIDJAM) में हिस्सा लेंगे।

ये रहे विजेता / उपविजेता व ओवरऑल चैम्पियनशिप- प्रतियोगिता दौरान अंडर-14 के बालक वर्ग में डी पॉल (विध्यनगर) विजेता व सेपिएंट इंटरनेशनल स्कूल उपविजेता रहा। अंडर-14 के बालिका वर्ग मे डी पॉल विजेता व काइट्स राइज स्कूल, वैढन उपविजेता रहा। इसी कड़ी में अंडर-16 के बालक वर्ग में डीपॉल विध्यनगर विजेता व डीपीएस निगाही उपविजेता रहा। वहीं, इस पूरे प्रतियोगिता के ओवर ऑल चैम्पियनशिप के खिताब को भी डी पॉल, विध्यनगर ने अपने नाम किया और ओवरऑल रनरअप डीएवी, अमलोरी रहा।

प्रतियोगिता सम्पन्न कराने मे मुख्य भूमिका रही

इंदु बाला, यशिका कुजूर, रमाशंकर प्रसाद, नौशाद आलम, केपी शर्मा, अविनाश विश्वकर्मा, सत्य प्रकाश, यूपी सिंह, आशुतोष सिंह, महली कश्यप, जसवीर सिंह, गोवर्धन, पी कौशल, धर्मेंद्र सिंह, राकेश कुमार यादव, अंचल सिंह, सुरेश रजक, अश्विन कुमार शुक्ला, अशरफ अली, संजय सिंह, अजय पटेल, अर्पित गुप्ता, सैफ अली, रोहित कुमार , शिवांग अस्थान, फिरोज अहमद, विनोद कुमार गंजू, सुखविंदर सिंह, राजू दास, आशु कौर, शिखा आहूजा, स्वाति कुशवाहा, एनटीपीसी से एल. बी. सिंह, रमाकांत सिंह, खेल एवं युवा कल्याण से धीरज डोंगरे व राकेश मिश्रा, विल्सन के जे भी उपस्थित रहे। पूरे प्रतियोगिता के दौरान फर्स्ट एड व अन्य मेडिकल सेवाओं के लिए मेडिकल टीम के साथ एम्बुलेंस की व्यवस्था सिंगरौली हॉस्पिटल द्वारा मुरैया कराई गई और एनसीएल निगाही।

अग्नि सेवा सप्ताह का किया भव्य समापन

अवधनामा संवाददाता

सोनभद्र/विंध्यनगर। एनटीपीसी विंध्याचल ने केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) फायर विंग के सहयोग से अग्नि सेवा सप्ताह का भव्य समापन एक प्रेरणादायक समारोह के साथ किया, जो उपस्थित सभी लोगों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव बन गया। एकजुट होकर करें प्रज्वलन÷ अग्नि-सुरक्षित भारत÷ की थीम पर आधारित इस सप्ताह भर चले कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल आग से बचाव के प्रति जागरूकता फैलाना था, बल्कि टाउनशिप और आसपास के समुदायों में आपातकालीन स्थितियों से निपटने की तैयारी को भी सशक्त बनाना था। समापन समारोह का मुख्य आकर्षण सीआईएसएफ फायर विंग द्वारा प्रस्तुत रोमांचक लाइव अग्नि प्रदर्शन रहा, जिसमें उच्च इमारतों से रेस्क्यू ऑपरेशन, त्वरित अग्निशमन तकनीकें और अग्नि सुरक्षा पर आधारित नाट्य प्रस्तुति शामिल थी। यह प्रदर्शन केवल मनोरंजन नहीं बल्कि एक शिक्षाप्रद अनुभव भी था, जिसने दर्शकों को आपदा की स्थिति में सतर्कता और त्वरित प्रतिक्रिया की महत्ता समझाई। पूरे सप्ताह के दौरान सीआईएसएफ फायर यूनिट ने कर्मचारियों, स्थानीय निवासियों, स्कूल के बच्चों और ग्रामीणों के बीच जागरूकता अभियान, प्रशिक्षण सत्र और प्रतियोगिताएं आयोजित कर अग्नि सुरक्षा की जानकारी प्रसारित की। समापन समारोह में इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को वरिष्ठ प्रबंधन द्वारा सम्मानित किया गया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि कर्मचारियों, उनके परिवारों और स्थानीय समुदाय में सुरक्षा को लेकर सक्रिय सहभागिता बढ़ रही है। इस अवसर पर कार्यकारी निदेशक (विंध्याचल) ई. सत्य फणि कुमार ने कहा कि औद्योगिक वातावरण में अग्नि सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है और ऐसे आयोजन लोगों को जागरूक तथा सक्षम बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। वहीं, सीआईएसएफ के अग्नि निरीक्षक गगन सैनी ने अग्नि सुरक्षा को केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि एक जिम्मेदार आदत के रूप में अपनाने की अपील की। समापन समारोह में एनटीपीसी और सीआईएसएफ के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति रही, जिनमें संजीब कुमार साहा, महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण), डॉ. बी.सी. चतुर्वेदी, मुख्य महाप्रबंधक (चिकित्सा), राजशेखर पाला, महाप्रबंधक (प्रचालन), ए.जे. राजकुमार, महाप्रबंधक (मेंटीनेंस एवं एडीएम), राकेश अरोड़ा, मानव संसाधन प्रमुख(विंध्याचल), मनीष कुमार और सदा राम यादव प्रमुख थे। यह आयोजन न केवल एक साहसिक प्रदर्शन था।

डीएम के निर्देश पर पेयजल समस्या के समाधान के लिए जिला इमरजेंसी आपरेशन सेंटर सक्रिय

हमीरपुर। जिलाधिकारी के निर्देश पर आम जनमानस की पेयजल समस्या के समाधान के लिए जनपद स्तर पर जिला इमरजेंसी आपरेशन सेंटर/आपदा राहत कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। यह कंट्रोल रूम जिलाधिकारी कार्यालय के कक्ष संख्या 05 में संचालित हो रहा है। पेयजल समस्या या अन्य दैवीय आपदा से संबंधित शिकायतों के लिए आम नागरिक कंट्रोल रूम के नंबर 05282-225662 पर फोन के माध्यम से अपनी समस्या दर्ज करा सकते हैं। कंट्रोल रूम में प्राप्त सभी शिकायतों का त्वरित संज्ञान लिया जाएगा और संबंधित विभाग के अधिकारियों द्वारा उनका शीघ्र निस्तारण सुनिश्चित किया जाएगा। यह पहल आम जनता को राहत प्रदान करने और आपदा प्रबंधन को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से की गई है। नागरिकों से अपील की गई है कि वे अपनी समस्याओं को दर्ज कराने के लिए कंट्रोल रूम से संपर्क करें, ताकि समयबद्ध तरीके से समाधान किया जा सके।

बाबा साहब का पूरा जीवन ही एक सन्देश है : केशव मौर्य

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश केशव प्रसाद मौर्य मंगलवार को तारा रिजार्ट देवकाली अयोध्या में आयोजित भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती समारोह में शामिल हुये और कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये। डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन और कार्यो को याद किया और उनके योगदान को सराहा। उन्होंने लोगों को डॉ. अम्बेडकर के आदर्शो को अपनाने का आह्वान किया और समाज में समानता और न्याय को बढ़ावा दिये जाने के लिए प्रेरित किया। कहा कि बाबा साहब कि पूरा जीवन ही एक सन्देश है। इसके साथ-साथ उन्होंने सरकार द्वारा चलायी जा रही लाभार्थीपरक व जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में भी लोगों को जागरूक किया।

कार्यक्रम के पश्चात उपमुख्यमंत्री ने हनुमानगढ़ी महाराज व प्रभु श्रीरामलला का दर्शन पूजन किया। इसके बाद उपमुख्यमंत्री सर्किट हाउस पहुंचे, जहां उन्होंने स्थानीय जनप्रतिनिधियों मुलाकात की। तदोपरांत विभागीय अधिकारियों के साथ मनरेगा, एनआरएलएम, ग्रामीण अभियंत्रण विभाग की समीक्षा करते हुये अब तक हो चुके भुगतान तथा लम्बित भुगतानों की जानकारी ली तथा लम्बित भुगतानों के लिए आवश्यक कार्यवाही हेतु निर्देशित किया। इस दौरान विधायक रुदौली रामचंद्र यादव, महापौर अयोध्या महंत गिरीशपति त्रिपाठी, संजीव सिंह, कमलेश श्रीवास्तव, मुख्य विकास अधिकारी कृष्ण कुमार सिंह, जिला विकास अधिकारी, परियोजना निदेशक सहित सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

मनरेगा श्रमिकों के खातों में शीघ्र भेजी जाएगी धनराशि : उपमुख्यमंत्री

- मनरेगा मजदूरों के लिए उत्तर प्रदेश को रू 2300 करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि प्राप्त हुयी
- श्रमांश मद हेतु रू 2343.80 करोड़ किए अवमुक्त

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने ग्राम्य विकास विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि मनरेगा श्रमिकों की बकाया धनराशि उनके खातों में तत्काल भेजने की कार्यवाही की जाय। उत्तर प्रदेश के मनरेगा मजदूरों के लिए केंद्र सरकार द्वारा रू 2300 करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि प्रदान की गई है। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) भारत की सबसे महत्वपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजनाओं में से एक है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब और जरूरतमंद परिवारों को रोजगार की गारंटी प्रदान करती है। केंद्र सरकार ने उत्तर प्रदेश के मनरेगा मजदूरों के लिए रू 2300 करोड़ रुपये से ज्यादा की धनराशि अवमुक्त की है। यह धनराशि बकाया भुगतानों को पूरा करने और समय पर मजदूरी सुनिश्चित करने में मदद करेगी। केंद्र सरकार से मनरेगा श्रमिकों के भुगतान हेतु करीब रू 2343.80 करोड़ की राशि जारी की जा चुकी है। इससे बकायेदारी भी दूर होगी। केंद्र सरकार से यूपी मनरेगा के लिये श्रमांश मद हेतु वर्तमान वित्तीय वर्ष 2025-26 की पहली किस्त के रूप में कुल रू 2343.80 करोड़ रुपए केंद्र से जारी किये गये हैं।

आयुक्त, ग्राम्य विकास उ.प्र. जी.एस प्रियदर्शी ने बताया कि मनरेगा योजना के लिए मांग के क्रम में केंद्र सरकार द्वारा श्रमांश मद हेतु करीब रू 2343.80 करोड़ की धनराशि अवमुक्त की गई है। इस धनराशि से मनरेगा श्रमिकों के बकाये का भी भुगतान किया जाएगा।

इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में 55वें विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर अर्थडे का आयोजन

अवधनामा ब्यूरो

- पृथ्वी और पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों की क्षति को कम किया जाये : डॉ. अरूण कुमार

लखनऊ। प्रदेश के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. अरूण कुमार सक्सेना ने कहा कि पृथ्वी हमारी मॉ है। पृथ्वी और पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों की क्षति को कम किया जाये एवं पेड़ों की कटान पर रोक लगाया जाये। प्रदूषण ना करना, प्लास्टिक का कम इस्तेमान करना और पृथ्वी को खुशहाल बनाए रखने के लिए लोगों को जागरूक करना होगा।

उक्त बातें उन्होंने आज इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान स्थित प्लूटो हॉल में आयोजित पृथ्वी दिवस के मौके अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि इस साल पृथ्वी दिवस की थीम आवर पावर- आवर प्लानेट है। आज बढ़ते तापमान को देखते हुए हमें रिन्यूबल एनर्जी को लगभग तीन गुना बढ़ाना होगा। उन्होंने कहा कि पृथ्वी का संतुलन बिगड़ना सभी के लिए एक बड़ी समस्या है। हर किसी को पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने चाहिए। आज 55वें विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर सभी को पर्यावरण को बेहतर बनाने व पेड़ लगाने का संकल्प लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज 55वें पृथ्वी दिवस की थीम थी हमारी शक्ति, हमारा ग्रह (व्नत च्वूमतए व्नत च्संदमज) ये थीम हमारे अंदर चेतना जगाती है।

कार्यशाला में मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने रिन्व्यूबल एनर्जी को बढ़ावा देने हेतु प्रोत्साहित करने पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि प्रकृति का दिया हुआ संसाधन पानी और हवा फ्री ऑफ कास्ट हमारे पास उपलब्ध है। वर्तमान समय में वायु प्रदूषण एवं जल प्रदूषण सभी गम्भीर समस्या है। इसके समाधान हेतु रिन्यूबल एनर्जी पर फोकस करना होगा। कार्यशाला के दौरान विषय विशेषज्ञों द्वारा अपने विचार व्यक्त किये गये। पर्यावरण निदेशालय के सहायक निदेशक मो. राहिब ने ग्रीन एनर्जी पर तथा कंसल्टेण्ट पंकज आर्य ने मिशन लाईफ पर प्रस्तुतीकरण किया। इसके अतिरिक्त बी. प्रभाकर, वन विभाग द्वारा कार्बन सिक्एसटेंशन पर, यूपी नेडा के गिरीश कुमार ने रिन्व्यूबल एनर्जी पर तथा गिरीश आर्या, उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने अपशिष्ट प्रबंधन पर प्रस्तुतीकरण किया।

इस अवसर पर अनिल कुमार, प्रमुख सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग तथा घनश्याम सिंह, निदेशक/विशेष सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग तथा चन्द्र भषण, सी.ई.ओ., आई. फॉरेस्ट उपस्थित रहे।

ट्रैवल मार्ट के जरिए विदेशी धरती पर दिखेगी उत्तर प्रदेश पर्यटन की खास झलक

अवधनामा ब्यूरो

- दुबई, थाईलैंड, फ्रांस, जापान, सिंगापुर, ब्रिटेन सहित अन्य देशों में दिखेगी यूपी टूरिज्म की धमक

लखनऊ। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से दुनियाभर में मार्ट/एक्सपो के माध्यम से राज्य पर्यटन का प्रचार करेगा। पर्यटन विभाग विशेष पंडाल बनाकर प्रमुख पर्यटन सर्किट, स्थलों, हस्तशिल्प आदि को प्रदर्शित करेगा। पर्यटन विभाग के इस कदम का उद्देश्य राज्य में इनबाउंड टूरिज्म को बढ़ावा देना और विदेशी पर्यटकों को उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व धार्मिक विरासत से रूबरू कराना है। यह जानकारी प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि उप्र. पर्यटन विभाग के इस पहल की शुरुआत दुबई में अरेबियन ट्रैवल मार्केट (एटीएम) से होने जा रहा है, जो 28 अप्रैल से एक मई तक होना है। विभाग ने थाईलैंड, फ्रांस, जापान, सिंगापुर, ब्रिटेन, स्पेन, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी और रूस में आयोजित होने वाले ट्रैवल मार्ट/एक्सपो के लिए संभावित तिथियों की घोषणा भी की है। उन्होंने बताया कि विभाग का प्रयास है कि अंतरराष्ट्रीय मार्ट के माध्यम से उत्तर प्रदेश की विविध पर्यटन संभावनाओं को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया जाय। विभाग विदेशी टूर ऑपरेटरों, ट्रैवल एजेंट्स और निवेशकों को आमंत्रित करेगा, ताकि वे राज्य में पर्यटन से जुड़ी संभावनाओं को समझ सकें और निवेश के नए रास्ते खुल सकें। हमारा प्रयास प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों जैसे- अयोध्या, वाराणसी, मथुरा-वृंदावन, लखनऊ व विंध्याचल के उन गंतव्यों को विशेष रूप से प्रदर्शित करना है, जो विदेशी पर्यटकों की पहली पसंद रहें हैं। उल्लेखनीय है कि ट्रैवल मार्ट विदेशी धरती पर उत्तर प्रदेश की कारीगरी, हस्तशिल्प, खानपान और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के सामने प्रस्तुत करने का एक मंच प्रदान करता है। हाल के वर्षों में विभिन्न देशों में आयोजित एक्सपो में प्रदेश के पवेलियन पर भारी भीड़ देखने को मिली।

यूरिया के छिड़काव के लिए ड्रोन उपलब्ध कराये जायें : चौधरी

- स्थाई समिति की बैठक में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय
- सभी चीनी मिलें बीमारी और शादी की स्थिति में किसानों को तत्काल गन्ना मूल्य का भुगतान सुनिश्चित करें

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग मंत्री लक्ष्मी नारायण चौधरी की अध्यक्षता में आज विधान भवन स्थित उनके कार्यालय कक्ष में चीनी उद्योग की स्थाई समिति की बैठक हुई। बैठक में विस्तार से विचार-विमर्श किया गया और किसान हित में महत्पूर्ण निर्णय लिये गये। गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग मंत्री ने निर्देशित किया कि सभी सहकारी गन्ना समितियों में कीटनाशक दवाओं और यूरिया के छिड़काव के लिए किसानों के प्रयोग हेतु एक-एक ड्रोन उपलब्ध कराया जाये। सभी चीनी मिलों को निर्देशित किया जाय कि वे बीमारी और शादी की स्थिति में किसानों को तत्काल गन्ना मूल्य का भुगतान सुनिश्चि करें। स्थाई समिति के सभी सदस्यों को स्ट्रीट लाइट एवं हैण्डपम्प चीनी मिलों से दिलाने के लिए उद्योग बंधु तथा नकली कीटनाशकों के प्रयोग पर रोकथाम के लिए कृषि विभाग को पत्र लिखा जाय। साथ ही सभी समितियों में सही कीटनाशक की उपलब्धता सुनिश्चित कराई जाय, जिससे किसानों को नकली कीटनाशकों से निजात मिल सके। यह भी सुनिश्चित किया जाय कि सभी चीनी मिलें पहले अपने निर्धारित क्षेत्र के किसानों का गन्ना खरीदें। उन्होंने प्रमुख सचिव को निर्देश दिए कि लोक निर्माण विभाग से बनाई जा रही गन्ना विभाग की सड़कों की सूची उपलब्ध करायें तथा प्रदेश में प्रेसमड से कंप्रेस्ड बायोगैस के प्लांट लगाने के लिए भी आवश्यक कार्यवाही की जाये।गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग मंत्री ने कहा कि प्रदेश सराकर की जीरो टॉलरेंस की नीति के तहत विभाग में पारदर्शी व्यवस्था लागू की गई है। चीनी मिलों में घटतौली की समस्या को जड़ से समाप्त किया जा रहा है। सघन चेकिंग अभियान चलाकर चीनी मिलों पर 74 लाख रुपये की घटतौली का अर्थदण्ड आरोपित किया गया है और अब तक 30 लाख रुपये की वसूली भी की जा चुकी है।

पोप फ्रांसिस के निधन पर सैयद हमीदुल हसन दुखी

लखनऊ। पोप जार्ज मारियो फ्रांसिस के निधन की खबर तमाम आलिम-ए-इंसानियत के लिए एक शोक है। उन्होंने भिन्न भिन्न महत्त्वपूर्ण अवसर पर अपने बयानात से दुनिया को बताया कि मजहब और अन्य धर्म के आपसी मतभेद मानवता को बेहतर बनाने और इंसान को सही राह पर चलने में मदद के लिए होते हैं। उनका सफर इराक और मुरज्जा तशीअ आयतुल्लाह अल-उज़्मा अल-सैयद अली अल-सीस्तानी से मुलाकात करना भी उसकी रहनुमाई करता है।

नए वक्फ कानून के खिलाफ दिल्ली में विरोध प्रदर्शन

हमें सांप्रदायिकता और धार्मिक कट्टरता के खिलाफ एकता की शक्ति का उपयोग करना होगा: मौलाना कल्बे जवाद नक़वी

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड सहित देशभर के राष्ट्रीय संगठनों द्वारा नए वक्फ कानून के खिलाफ दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में ऐतिहासिक विरोध प्रदर्शन आयोजित किया गया, जिसमें प्रमुख राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक हस्तियों ने भाग लिया। मजलिस-ए-उलेमा-ए-हिंद के महासचिव मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद नक़वी ने अपने संबोधन में शांति और एकता का आह्वान करते हुए कहा कि जिस तरह महात्मा गांधी ने अपने समय की अत्याचारी ब्रिटिश सरकार को अहिंसा के जरिए हराया था, उसी तरह हम भी बिना किसी हथियार के मौजूदा सरकार को हरा देंगे। उन्होंने कहा कि दुनिया की सबसे बड़ी ताकत एकता है। हमें हर मोर्चे पर सफलता के लिए एकजुट होना होगा। मौलाना ने कहा कि हमें अपनी शक्ति का प्रयोग किसी संप्रदाय या धर्म के खिलाफ नहीं, बल्कि संप्रदायवाद और धार्मिक कट्टरता के खिलाफ करना चाहिए। उन्होंने अल्लामा इक़बाल के शेर की रौशनी में कहा कि जब मर्दे मोमिन की निगाह से तक़दीर बदल सकती है तो हुकूमत क्या चीज़ है। उन्होंने मजलिस-ए-इत्तेहाद-उल-मुस्लिमीन के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी को संबोधित करते हुए कहा कि हमें ओवैसी साहब की तरह कानूनी लड़ाई लड़नी होगी और दिफ़ाई अंदाज़ छोड़ना होगा। ये दिफ़ा का वक़्त नहीं है बल्कि हमलावर होने का वक़्त है और इस राह में पहाड़ो से ज़्यादा मज़बूती की ज़रूरत है इंशाल्लाह कामयाबी ज़रूर मिलेगी। मौलाना ने कहा कि नए वक्फ कानून को लागू हुए ज़्यादा दिन नहीं बीते हैं, लेकिन लखनऊ में पुलिस मस्जिदों में जाकर दस्तावेज मांग रही है। उन्होंने कहा कि पिछले पच्चीस वर्षों में सैकड़ों मंदिर अवैध रूप से बन गए हैं जिनकी जांच की मांग की जानी चाहिए। इस संबंध में एक कानूनी प्रकोष्ठ होना चाहिए जो इस दिशा में काम करे। औक़ाफ़ की ज़मीनों पर अनगिनत मंदिर बनाये गये हैं, जिनके अनेक उदाहरण लखनऊ में मौजूद हैं। हुसैनाबाद ट्रस्ट की ज़मीनों पर मंदिर बन गए हैं। कर्बला तालकटोरा के रस्ते में हाल ही में कितने मंदिर बन गए हैं, जो ग़ैर क़ानूनी हैं, हमें इन सभी की जांच की मांग करनी चाहिए ताकि असामाजिक तत्व के हौसले पस्त हो सके।मौलाना ने आगे कहा कि अब हर मस्जिद में मंदिर और हर फव्वारे में शिवलिंग नज़र आ रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसा कोई थाना, पुलिस कोतवाली या सरकारी भवन नहीं है जहां मंदिर न बना हो। क्या केवल हिंदुओं को ही सरकारी भूमि पर अपने पूजा स्थल बनाने का अधिकार है? यदि सरकारी जमीन पर मंदिर बनाए जा सकते हैं तो अन्य धर्मों के धार्मिक स्थल क्यों नहीं बनाए जा सकते? इसके लिए लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए एक आंदोलन शुरू करने की जरूरत है। मौलाना ने आगे कहा कि हमने हमेशा ही औकाफ की रक्षा के लिए सरकार के खिलाफ लड़ाई लड़ी है, जिसमें हमारी क़ौम के लोगों ने कुर्बानियां दी हैं।

प्रोत्साहन हेतु पुरस्कृत होंगी उत्कृष्ट ग्रामोद्योग इकाइयाँ

लखनऊ। उत्तर प्रदेश खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड, लखनऊ द्वारा संचालित पुरस्कार योजना के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 में मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना एवं प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के अन्तर्गत वित्तपोषित, उत्कृष्ट कार्य करने वाली इकाइयों/लाभार्थियों को पुरस्कृत किया जाएगा। इस योजना के तहत उन इकाइयों का चयन किया जाएगा, जिन्होंने विगत तीन वर्षो में उत्पादन, बिक्री, ऋष्ा भुगतान एवं रोजगार सृजन में निरंतर अच्छा प्रदर्शन किया है। बोर्ड द्वारा ऐसे लाभार्थियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान कर प्रोत्साहित किया जाएगा। जिला ग्रामोद्योग कार्यालय, 8 कैन्ट रोड, कैसरबाग, लखनऊ में 30 अप्रैल 2025 को सायं 5:00 बजे तक समस्त आवश्यक प्रपत्रों के साथ आवेदन-पत्र जमा किया जा सकता है। आवेदन के साथ इकाई की प्रगति रिपोर्ट, उत्पादन, बिक्री, प्राप्त ऋण की जानकारी एवं रोजगार सृजन से जुड़े आंकड़े संलग्न करना अनिवार्य है।

एरा यूनिवर्सिटी ने कैरियर परामर्श सत्र का किया आयोजन

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। एरा यूनिवर्सिटी, लखनऊ के बायोटेक्नोलॉजी विभाग ने प्राकद्रित एडटेक (ओपीसी) प्राइवेट लिमिटेड के तहत एक प्रमुख अकादमिक-उद्योग इंटरफेस ब्रांड कौस्तव केरियरिका, लखनऊ के सहयोग से एक कैरियर परामर्श सत्र का सफ्लतापूर्वक आयोजन किया, जिसका उद्देश्य बायोटेक्नोलॉजी के छात्रों को सूचित और रणनीतिक कैरियर पथ की ओर मार्गदर्शन करना था।

सत्र के बाद संस्थान और परामर्शदाता के बीच कैरियर विकास पहलों में दीर्घकालिक साझेदारी को औपचारिक रूप देने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर आधिकारिक रूप से हस्ताक्षर किए गए। एरा यूनिवर्सिटी के मिनी ऑडिटोरियम में आयोजित इस सत्र में 200 से अधिक बायोटेक्नोलॉजी यूजी, पीजी और पीएचडी छात्रों और संकाय सदस्यों ने भाग लिया। इसमें उभरते उद्योग रुझानों, कौशल विकास, उच्च शिक्षा के अवसरों और छात्रों की आकांक्षाओं के अनुरूप व्यक्तिगत मार्गदर्शन पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस कार्यक्रम में कौस्तव केरियरिका की संस्थापक और सीईओ डॉ. प्रतिमा त्रिपाठी द्वारा मुख्य भाषण और संवादात्मक सत्र आयोजित किए गए, बायोटेक्नोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. तबरेज जाफ़र ने स्वागत भाषण दिया और एरा यूनिवर्सिटी, लखनऊ के प्लेसमेंट मैनेजर अजहरुद्दीन ने एक व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने नौकरी के बाजार और करियर नियोजन रणनीतियों के बारे में बहुमूल्य जानकारी साझा की। छात्रों को उपयुक्त करियर पथों का पता लगाने और अपने लक्ष्यों पर विशेषज्ञ प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए आमने-सामने चर्चा में शामिल होने का अवसर मिला। कौस्तव केरियरिका भारत में प्रमुख कैरियर मार्गदर्शन और परामर्श मंच है, जो व्यक्तिगत सहायता और विशेषज्ञ अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। ऐसे युग में जहाँ शिक्षा और व्यावसायिक विकास की सीमाओं को लगातार पुनर्परिभाषित किया जा रहा है, कौस्तव केरियरिका व्यक्तियों को उनकी पूरी क्षमता को अनलॉक करने के लिए सशक्त बनाने के लिए समर्पित है। कैरियर मार्गदर्शन, परामर्श और प्रमाणन के अग्रणी प्रदाता के रूप में, वे एक परिवर्तनकारी शिक्षण अनुभव बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो व्यापक और व्यक्तिगत दोनों है।

चित्रकूट की तर्ज पर नैमिष के विकास का निर्णय स्वागत योग्य: डॉ. अम्मार रिज़वी

- मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर की ऐतिहासिक पहल की सराहना

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के पूर्व कार्यवाहक मुख्यमंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता डॉ. अम्मार रिज़वी ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा नैमिषधाम को चित्रकूट की तर्ज पर विकसित किए जाने के निर्णय का हार्दिक स्वागत किया है। इस संबंध में डॉ. रिज़वी ने मुख्यमंत्री को एक पत्र भेजकर इस ऐतिहासिक निर्णय को अत्यंत सराहनीय बताया। डॉ.अम्मार रिज़वी ने पत्र में स्मरण कराया कि वर्ष 1980 में जब वी.पी. सिंह प्रदेश के मुख्यमंत्री थे, तब उनकी सरकार में वह संस्कृति विभाग सहित कई विभागों के मंत्री थे। उस दौरान उन्होंने नैमिषधाम में स्थित मंदिरों, घाटों और तालाबों के सौंदर्यीकरण एवं संरक्षण का कार्य प्रारंभ कराया था। डॉ. रिज़वी ने कहा कि नैमिषधाम एक अत्यंत प्राचीन धार्मिक स्थलों में से एक है, यहां पर एक संस्कृति एवं एक युग का इतिहास रचा गया था। प्राचीन भारत के दार्शनिक, विद्वान, बुद्धिजीवी महापुरुषों ने कई साल तक परिश्रम और प्रयास करके वेद और पुराणों की रचना की। यह स्थान आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से प्रदेश ही नहीं, बल्कि देश के लिए विशेष महत्व रखता है। मैंने इससे पहले भी चित्रकूट की भांति सीतापुर को भी कमिश्नरी का दर्जा दिए जाने का निवेदन किया था। जनपद सीतापुर हर प्रकार से बहुत महत्वपूर्ण है। महर्षि व्यास जी यहीं के रहने वाले थे। यहीं हरगांव में पांडव ने अज्ञातवास का समय गुज़ारा, यहीं अर्जुन से युद्ध हुआ, यहीं महर्षि दधीचि ने मानव परोपकार के लिए असुरों का संहार करने के लिए अपनी अस्थियां तक दान कर दीं। यहां पर हर धर्म के पवित्र स्थान हैं। यही वह ज़िला है जहां पर हजारों साल पहले वेद और पुराणों की रचना हुई थी। अयोध्या से गोस्वामी तुलसीदास जी घाघरा नदी पार करके मथुरा रामपुर आते थे और यहीं पर रुक कर उन्होंने श्री राम चरित मानस के एक अध्याय की रचना की थी।

डॉ. रिज़वी ने पत्र के माध्यम से सुझाव दिया कि नैमिषधाम को चित्रकूट की भाँति एक स्वतंत्र कमिश्नरी के रूप में विकसित किया जाए।

वाराणसी हेतु 231.46 लाख रूपये मंजूर

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। प्रदेश सरकार ने वित्तीय वर्ष 2025-26 में संतुलित क्षेत्रीय विकास (पूर्वांचल) निधि योजना के अंतर्गत जनपद वाराणसी में सड़क निर्माण से संबंधित 04 कार्यों हेतु कुल 231.46 लाख रूपये मंजूर किए हैं। प्रथम किश्त के रूप में मंजूर की गई यह धनराशि जिलाधिकारी, वाराणसी के निवर्तन पर रखी गई है। इस संबंध में जारी शासनादेश की प्रति जिलाधिकारी, वाराणसी को प्रेषित कर दी गई है। शासनादेश के अनुसार ग्रामसभा कुरू में पिच रोड निर्माण कार्य हेतु 34.21 लाख रूपये, ग्रामसभा कुड़ी में सड़क नव निर्माण कार्य हेतु 30.67 लाख रूपये, ग्राम सभा मलहथ में सड़क नव निर्माण कार्य हेतु 25.48 लाख रूपये तथा वार्डसुन्दरपुर में सीवर केसी ड्रेन व इण्टरलॉकिंग निर्माण कार्य हेतु 141.10 लाख रूपये मंजूर किए गए हैं। इन कार्यों के लिए ग्रामीण अभियंत्रण विभाग को कार्यदायी संस्था नामित किया गया है।

कैरम खेलने के लिए उम्र की नहीं, धैर्य की जरूरत: इं. एजाज

- 85 दिनों तक चले कैरमबोर्ड प्रतियोगिता का हुआ भव्य समापन

अवधनामा ब्यूरो

अम्बेडकरनगर/लखनऊ। टांडा में सम्राट क्लब काजीपुरा द्वारा कैरमबोर्ड का शानदार पांचवा फाइनल मैच सम्पन्न हुआ जिसके विजेताओ को इंजीनियर एजाज अहमद अंसारी ने ट्रॉफी भेंट कर पुरस्कृत किया। कार्यक्रम में सपा से टांडा नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष पद के दावेदार रह चुके इंजीनियर एजाज अहमद अंसारी भी थे। उन्होंने कहा कि खेल प्रतियोगिताओं से मानसिक विकास होता है। कैरम एक ऐसा खेल है, जिसे बच्चे बूढ़े सभी आसानी से कहीं भी खेल सकते हैं। कैरम जैसे खेल के लिए उम्र नहीं, बल्कि धैर्य की जरूरत होती है। इस तरह के आयोजन से खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ने के साथ ही आपसी सौहार्द और प्रेम को बढ़ावा मिलता है। औद्योगिक बुनकर नगरी टांडा जहां टेरीकॉट कपड़ों के उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है वहीं विभिन्न तरह के खेलों में भी युवाओं का रुचि जुनूनी है। टांडा को जहां फुटबॉल प्रेमी कहा जाता है वहीं क्रिकेट, बैटमिंटन, वालीबाल व कैरमबोर्ड सहित अन्य खेलों को भी बड़ी निपुणता के साथ खेला जाता है। नगर क्षेत्र के काजीपुरा में सम्राट क्लब द्वारा पांचवा शानदार कैरमबोर्ड प्रतियोगिता आयोजित किया गया जिसका फाइनल मैच रविवार देर रात्रि में भारी दर्शकों के सामने सम्पन्न हुआ। सम्राट कैरम क्लब के पांचवां फाइनल मैच ज़ारा क्लब व अलमास क्लब के बीच खेला गया जो काफी रोचक रहा। ज़ारा क्लब के मुजीब यजदानी व मो. सोनू एवं अलमास क्लब के मो. जमाल व मो. अखलाक द्वारा खेला गया। जिसमें जारा क्लब ने शानदार जीत हासिल किया। समाजवादी पार्टी के सिम्बल पर टांडा नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष पद के दावेदार रह चुके इंजीनियर एजाज अहमद अंसारी के हाथों विजेता व रनर टीमों को सम्मानित कराया गया। एजाज ने कहा कि कैरमबोर्ड खेलना एक चुनौतीपूर्ण खेल है, जो मस्तिष्क में तंत्रिका कनेक्शन के विकास को बढ़ावा देता है। उन्होंने खिलाड़ियों के उज्वल भविष्य की कामना किया। सम्राट कैरम क्लब के फैज़ान गुडलक, ज़ीशान अकरम, फखरे आलम, तारिक, इसरार आननद, मुजस्सम, शाहिद, फ़राज, नईमुद्दीन, नदीम, फहीम, अर्जुन, अतहर आदि प्रतियोगिता को व्यवस्थित करने में लगे रहे। डॉ.क्टर आतिफ अंसारी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए फाइनल मैच के मुख्य अतिथि इंजीनियर एजाज अहमद अंसारी व विशिष्ट अतिथि के रूप में मो. अतहर धागा वाले, हाजी तारिक, मोहम्मद खालिद उर्फ न्यूटन, कुतुब आलम, नदीम, सईद अख्तर, हानि आफताब, रईस अहमद, हाजी गुमनाम, मो. इसराइल, हाजी ग्यास अंसारी, मो. इस्माइल आदि ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।